Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुदत्त साहित्य

कुमकुम

ऐतिहासिक उपन्यास

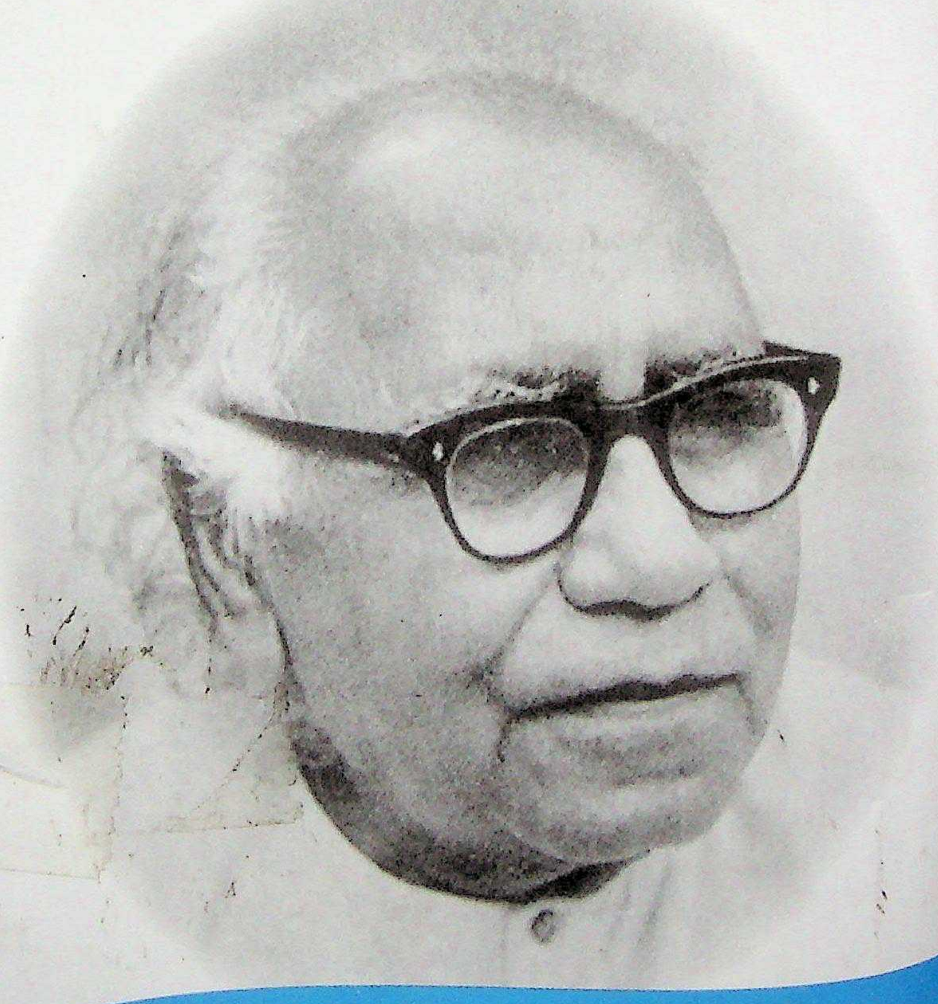

गुरुदत्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

167894

श्री गुरुदत्त के कुछ चुने हुए उपन्यास

राजनीति पर आधारित

स्वाधीनता के पथ पर, पथिक, स्वराज्यदान, विश्वासघात, देश की हत्या, दो लहरों की टक्कर, दासता के नये रूप।

पौराणिक कथाओं के आधार पर

कुमार सम्भव, उमड़ती घटाएं, (राम कथा पर आधारित) अमृत-मंथन, परम्परा, अग्नि परीक्षा, (महाभारत पर) परित्राणाय साधूनाम्।

ऐतिहासिक पृष्ठ-भूमि पर

कुमकुम, विक्रमादित्य, पुष्यमित्र, लुढ़कते पत्थर (अशोक-कालीन), पत्रलता (हर्षवर्धन पर), गंगा की धारा (अकबर कालीन), खण्डहर बोल रहे हैं (औरंगजेब के काल पर)

सामाजिक उपन्यास

अनदेखे बन्धन, एक और अनेक, मानव, गुण्ठन, आवरण, यह संसार, धरती और धन, भगवान भरोसे, घर की बात।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्ष साहित्य
Complete Vedic Books Store
Yog, Vedic, Ayurvedic, Relegious
All Yog & Organic Products
(M) 9541317278, 8869821468
Web.: aarshsahitya.com

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुमकुम

उसने एक कहारिन की कोख से जन्म लिया था। उसे राजाओं के ज़माने के सुख मिलने लगे थे। एक विद्वान गुरु से उसे गहन गंभीर शिक्षा पाने का अवसर प्राप्त हुआ था। भगवान ने उसे रूप-रंग भी अप्सरा का-सा दिया। नारी से विरक्त बौद्ध महाप्रभु तक उस पर मुग्ध रह गए। लेकिन वह तो इतिहास का कलंक होने का कर्म-फल लेकर बड़ी हुई थी! क्या वह अपना कलंक धो सकी?

श्री गुरुदत्त

का यह हिन्दी उपन्यास इतिहास की एक लुका-छिपी कहानी पर से पर्दा उठाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुमकुम

गुरुदत्त का एक कालजयी उपन्यास

Central Library
167894
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

गुरुदत्त

आर्ष साहित्य
Complete Vedic Books Store
Yog, Vedic, Ayurvedic, Relegious
All Yog & Organic Products
(M) 9541317278, 8869821468
Web.: aarshsahitya.com

081
167894

हिन्दी साहित्य सदन
नई दिल्ली-110005

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

R
029.9143
GUR-K

Central Library
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar
157584

© प्रकाशकाधीन

मूल्य 250/-
I.S.B.N. 81-88388-84-X
संस्करण 2015
प्रकाशक हिन्दी साहित्य सदन
2 बी.डी. चैम्बर्स , 10/54 देश बन्धु गुप्ता रोड,
करोल बाग पुलिस स्टेशन के पास, नई दिल्ली-110005
दूरभाष 011-23553624, 011-23551344, 09213527666
मुद्रक गोयल एन्टरप्राईज़िस , दिल्ली

Website www.hindisahityasadan.com
E-mail indiabooks@rediffmail.com
hindisahityasadan@gmail.com

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रथम परिच्छेद

: 1 :

फाल्गुण पूर्णिमा का दिन था। नगर-भर में होली का उत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा था। नगरवासी अबीर, गुलाल और कुमकुम के बादल उड़ाते हुए राजपथ पर से जा रहे थे। पथ के दोनों ओर के गृहों के छज्जों, छतों एवं मुंडेरों पर खड़ी अथवा बैठी ललनाएं इस फाल्गुन की मदमाती ऋतु में प्रसन्नता में नाचते-गाते बाल, वृद्ध एवं युवकों को मंडलियों में जाते देख उल्लास अनुभव कर रही थीं।

राजप्रासाद की ड्योढ़ी राजपथ पर ही थी। ड्योढ़ी के ऊपर की छत पर राजप्रासाद में रहनेवाली बालिकाएं राजपथ पर जा रहे लोगों को होली मनाते तथा गाते-बजाते हुए निकलते देखकर रस ले रही थीं। इन बालिकाओं में एक ग्यारह-बारह वर्ष की कुमारी ने अपने समीप खड़ी एक अन्य बालिका की कमर में हाथ डाले हुए कहा, "कुमकुम, वह देखो!"

"कहां?"

"अरी, वह देख न! उन पुरुषों की भीड़ में एक युवती भी!"

कुमकुम ने देखा, वहां लगभग तीस वर्ष की एक युवती थी। हाथ में डफरी लिये नाचती-गाती पुरुषों की मण्डली में जा रही थी।

"कोई वेश्या होगी!" कुमकुम ने कहा।

कुमकुम अपनी सखी से एक वर्ष छोटी थी। सखी उजले रंग की थी और कुमकुम कुछ साँवलापन लिये थी। परन्तु नख-शिख में वह सखी से अधिक सुन्दर थी। सखी का नाम मुक्ता था, राजकुमारी मुक्ता।

राजकुमारी ने कुमकुम से पूछ लिया, "वेश्या? वह क्या होती है?"

कुमकुम ने आश्चर्य से कहा, "तो राजकुमारी नहीं जानती कि वेश्या क्या होती है?"

"नहीं कुमकुम, मेरी अध्यापिका ने इस विषय में कुछ नहीं बताया।"

इस समय नीचे राजपथ पर एक मण्डली जा रही थी, जिसमें कुछ युवक एक लड़की को, जिसने स्त्रियों के वस्त्र पहन रखे थे, घेरे हुए नाच रहे थे। कुमकुम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने राजकुमारी की बात का उत्तर नहीं दिया और उस स्त्री की वेशभूषा में लड़के को देख हंस पड़ी। उसने राजकुमारी की वेश्या- संबंधी ज्ञान की वृद्धि नहीं की।

राजकुमारी ने पूछ लिया, "हंसी क्यों हो?"

"स्त्री के वेश में वह पुरुष कितना कुरूप दिखाई दे रहा है!"

"इसमें कुरूपता क्या है?"

"वेश स्त्रियों का बनाया है, परन्तु मूंछ तो कटाई नहीं!"

"तो मुख पर मूंछे कुरूपता का लक्षण होती हैं?"

"नहीं राजकुमारी, पुरुषों के नहीं, परन्तु एक स्त्री के मुख पर मूंछ अस्वाभाविक है और अस्वाभाविकता ही कुरूपता कहलाती है।"

"तुम तो बहुत-कुछ जानती हो।"

"यह इस कारण कि राजकुमारी की अध्यापिका अनपढ़ है।"

"ओह!" राजकुमारी मुक्ता कुछ कहना चाहती थी, परन्तु इसी समय राजपथ पर एक अन्य स्वांग आता दिखाई पड़ा और राजकुमारी का ध्यान उस ओर चला गया।

एक हाथी के बच्चे की पीठ पर लकड़ी का हौदा रखा था। उस पर चार वर्ष का एक बालक सिर पर काग़ज़ का मुकुट धारण किये और गले में टूटे-फूटे पुराने जूतों का हार पहने बैठा था। लोग उसे घेरे हुए 'महाराज की जय हो, भूरे महाराज की जय हो' के समाघोष कर रहे थे। सभी लोगों के वस्त्र नीले-पीले और लाल रंगों से रंगे हुए थे।

अब मुक्ता ने पूछ लिया, "और ये क्या कह रहे हैं?"

कुमकुम ने कहा, "लोग कह रहे हैं, भूरे महाराज की जय हो।"

"वह कौन होता है?"

"तो सखी को यह भी विदित नहीं है?"

"मुझे विदित होता तो पूछती क्यों?" राजकुमारी ने मुस्कराते हुए कहा।

कुमकुम उत्तर देने ही वाली थी कि बालिकाओं के पीछे खड़े एक लड़के के हंसने का शब्द हुआ। सब लड़कियां घूमकर पीछे देखने लगीं। यह मुक्ता का बड़ा भाई राजकुमार राहुल था। वह खड़ा कुमकुम के मुख पर मुग्ध हुआ उसे निहार रहा था।

"भैया, तुम यहां क्यों आये हो?" मुक्ता ने पूछा।

"तो मुझे यहां आने की अनुमति नहीं है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परन्तु तुम्हें लज्जा नहीं आती जो लड़कियों में खड़े उनकी हंसी उड़ा रहे हो?"

"हंसने में लज्जा लगनी चाहिये क्या? और फिर आज हंसने-खेलने का दिन ही तो है!"

"परन्तु लड़के लड़कों में और लड़कियां लड़कियों में खेलते भले लगते हैं।"

"यह किस विधि-विधान के ग्रंथ में लिखा है?"

"यह विधि-विधान क्या होता है?"

"तो एक राजा की लड़की विधि-विधान नहीं जानती कि क्या होता है?"

इस पर कुमकुम ने कह दिया, "राजकुमारी तो वेश्या का अर्थ भी नहीं जानती हैं।"

"और तुम जानती हो?" राजकुमार ने कुमकुम से पूछ लिया।

"जानती क्यों नहीं! वेश्याएं वही तो होती हैं जो कभी-कभी महाराज को संगीत सुनाने अथवा नाच दिखाने आती हैं।"

राजकुमार राहुल हंस पड़ा। हंसते हुए ही वह बोला, "जानती तो तुम भी नहीं। गानेवाली को गायिका और नाचनेवाली को नर्तकी कहते हैं। वे वेश्या नहीं भी हो सकतीं।"

अब मुक्ता ने पूछ लिया, "और भैया, वेश्या क्या होती है?"

"यह तुम आज से तीन-चार वर्ष उपरान्त जान सकोगी।"

राजकुमार राहुल इस समय सोलह वर्ष की वयस् का कुमार था। उसने कुमकुम से ही पूछा, "कुमकुम! कुछ समझी हो?"

मुक्ता ने बात बीच में रोककर कहा, "भैया, तुम जाओ।"

"पर मैं भी तो लोगों को उत्सव मनाते देखने आया हूं।"

"तुम किसी अन्य स्थान पर जाकर देखो न!"

"पर मैं तो तुमसे होली खेलने आया हूं।"

कुमकुम की आंखों में चमक दौड़ गई। उसकी आंखें प्रसन्नता से नाचती प्रतीत हो रही थीं। राजकुमार ने उसकी आंखों में देखा और अपने उत्तरीय के नीचे से कपड़े की पोटली निकाली। उसने उस पोटली में से रोली निकालकर कुमकुम के गालों पर मल दी।

समीप खड़ी सब लड़कियां हंसने लगीं। इस पर राजकुमार ने रोली वाला हाथ दूसरी लड़कियों की तरफ बढ़ाया, परन्तु वे सब हंसती हुई वहां से दूर भाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गई।

अब राहुल ने एक चुटकी-भर रोली कुमकुम की मांग में भर दी।

राजकुमारी हंस पड़ी। राहुल भी हंसने लगा। कुमकुम लज्जा से लाल होने लगी। जहां रोली नहीं लगी थी, वहां भी मुख लाल हो उठा।

राजकुमार ने रोली की पोटली मुक्ता को देते हुए कहा, "मुक्ता! यह लो और भाग जानेवाली अपनी सखियों के मुख पर लगा दो। इससे सबके मुख रंग जाएंगे।"

मुक्ता को यह खेल भला लगा और वह भाई के हाथ से रोली की पोटली ले सखियों की ओर भाग गई। वहां अब राजकुमार और कुमकुम ही रह गये थे। कुमकुम भी राजकुमारी के पीछे-पीछे जाने लगी थी कि राजकुमार ने उसकी बांह पकड़ ली और पूछने लगा, "कुमकुम! जानती हो, यह मैंने क्या किया है?"

"हां भैया, यही तो चाचा जी चाची की मांग में भरा करते हैं।"

"और चाची जी चाचा की क्या लगती हैं?" राहुल ने मुस्कुराते हुए पूछ लिया।

"चाचा जी चाची के पतिदेव हैं।"

"बस, यही मैं तुम्हारा बनना चाहता हूं।"

"तो मैं माँ से कह दूं?"

"अभी नहीं।"

"तो कब?"

"जब तुम सोलह वर्ष की हो जाओगी।"

"अभी तों मैं दस वर्ष की हूं।"

"हां। आज से छः वर्ष के उपरान्त मैं तुम्हें राजप्रासाद में ले जाकर कुंवरानी अर्थात् महाराज की पुत्रवधू बनाकर रखूंगा।"

"यह मैं अपनी माँ से कह दूं?"

"क्या कहोगी?"

"माँ को सिर पर लगी रोली दिखाकर कहूंगी कि यह राहुल भैया ने भर दी है।"

राहुल हंस पड़ा और लालसा-भरी दृष्टि से कुमकुम की ओर देखता रहा। अब कुमकुम ने पूछ लिया, "मैं कहने जाऊं क्या?"

इतना कह कुमकुम राजकुमारी के पीछे, जो अपनी अन्य सखियों के मुख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रंगने गई थी, चली गई।

मध्याह्नोत्तर कुमकुम अपने घर लौटी तो उसके चाचा तथा चाची, सिर से पांव तक नीले-पीले-लाल रंग में सराबोर घर के प्रांगण में खड़े थे। कुमकुम उनको इस अवस्था में देख हंस पड़ी। उसके अपने मुख पर भी रंग पड़ा हुआ था, परन्तु केवल रोली। चाचा-चाची पर तो सूखा-गीला हर प्रकार का रंग पड़ा हुआ था।

"हंस क्यों रही हो?" कुमकुम की चाची लक्ष्मी ने पूछ लिया।

"तुम्हें रंग-बिरंगा देखकर।" कुमकुम ने हंसते हुए कहा।

"तुम भी तो रंगी हुई हो।"

"चाची, अपना-आप तो दिखाई नहीं पड़ता। परन्तु तुम तो सर्वथा चुड़ैल-सी दिखती हो।"

चुड़ैल शब्द सुन कुमकुम का चाचा मदन भी हंस पड़ा। उसने कहा, "बहुत सुन्दर! आज इस चुड़ैल का भुर्था बनाऊंगा।"

लक्ष्मी ने बातों का विषय बदल दिया। उसने कहा, "अब शीघ्रता से नहा-धो लीजिये। भूख लग रही है।"

कुमकुम, मोहन कहार की एकमात्र सन्तान थी और मोहन अपने महाराज के लिए पान लगाने पर नियुक्त था। वह राजप्रासाद में सेवक नियुक्त हुआ था महाराज के जूते इत्यादि साफ करने के लिए, परन्तु जब उसका विवाह देहात के एक कहार की लड़की रामी से हुआ और रामी महारानी की सेवा में रखी गई तो मोहन की पदोन्नति हो गई। वह जूता साफ करने के स्थान पर महाराज के लिए पान लगाने पर नियुक्त हो गया।

मोहन की पत्नी रामी को महारानी की सेवा में आये अभी एक वर्ष भी पूरा नहीं हुआ था कि कुमकुम का जन्म हो गया। राजप्रासाद में कार्य करनेवाले प्रायः यह सन्देह करने लगे थे कि जूता साफ करने वाले से पान लगाकर देनेवाले काम पर मोहन की पदोन्नति में रामी का विशेष हाथ है।

कुमकुम अभी तीन वर्ष की ही थी कि उसकी रूपरेखा में निखार आने लगा था और सब दर्शक 'दाल में काला' का अनुमान लगाने लगे थे। महारानी दुर्गा को भी सन्देह हुआ था। रामी, महारानी की निजी सेविका थी और अपना काम वह बहुत सुघराई से करती थी।

एक दिन महारानी ने रामी से पूछ ही लिया। रामी के समीप उसकी लड़की कुमकुम खड़ी थी। महारानी ने पूछा, "रामी! यह किसकी लड़की है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामी ने मुस्कराते हुए उत्तर दे दिया, "महारानी की दासी रामी की कोख से जन्मी है।"

"मैं यह नहीं पूछ रही। मैं इसके पिता के विषय में पूछ रही हूं।"

रामी ने आंखें नीची किये हुए कहा, "अवन्ति के महाराज शूरसेन को पान लगाकर देने वाले सेवक मोहन इसके पिता कहे जाते हैं।"

"कहे जाते हैं, अर्थात...है नहीं। मोहन-जैसा कुरूप पुरुष ऐसी सुन्दर लड़की कैसे बना सकता है?"

"महारानी जी! यह तो प्रभु की माया है। मुझ-जैसी तुच्छ स्त्री इस विषय में क्या कह सकती है!"

"तब तो अवश्य कुछ गड़बड़ है। महामंत्री की पत्नी सर्वप्रिया कह रही थी कि मोहन की राजप्रासाद में उन्नति का इस लड़की से सम्बन्ध है।"

रामी ने अभी भी महारानी के पांवों की ओर देखते हुए कहा, "महारानी जी, यही तो कह रही हूं। इस जन्म के सम्बन्ध पूर्वजन्म के कर्मों का फल ही होते हैं। पंडित लोग कहते हैं कि कर्म-फल परमात्मा की कृपा से ही होते हैं।"

महारानी दुर्गा, रामी के मुख पर देखती हुई विचार करने लगी कि यदि सर्वप्रिया का अनुमान सत्य है, तो क्या रामी उससे अधिक सुन्दर है जो महाराज ने उसको इस लड़की का प्रसाद दिया है?

एक बात वह समझ रही थी कि रामी बातें करने में उससे अधिक चतुर है।

उसने रामी को किसी कार्य पर भेज दिया और स्वयं अपने शयनागार में जा, वहां लगे दर्पण में अपना मुख निहारने लगी। अपने प्रतिबिम्ब की रामी की आकृति से वह तुलना करने लगी थी।

उसने उस सायंकाल स्नान किया और शृंगार करना आरम्भ कर दिया। आज इस कार्य में वह तन्मय होकर लग गई। वह इसमें इतनी लीन हुई कि भूल ही गई कि तीन घड़ी समय इसमें व्यतीत हो गया है। गले में उसने रत्नजड़ित हार पहना, कानों में हीरक-जड़ित कर्णफूल धारण किये। इस प्रकार पूर्ण शृङ्गार करके वह दर्पण में स्वयं को देखने लगी तो देखती ही रह गई।

उसका ध्यान भंग हुआ दर्पण में अपने पीछे पति महाराज का प्रतिबिम्ब देखकर।

"क्या बात है, महारानी?" मुस्कराते हुए महाराज ने महारानी के मुख पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देख पूछ लिया।

दुर्गा चौंक उठी और घूमकर महाराज को देख मुस्करा उठी।

महाराज ने पुनः पूछा, "क्या बात है, महारानी! आज कहीं जा रही हैं क्या?"

"हां श्रीमन्!"

"कहां? और ये भूषणादि धारण कर?"

"मेरे मन में ईर्ष्या उत्पन्न हो रही है। कोई मुझे शय्या से नीचे धकेल रहा प्रतीत होता है। मैं देखने लगी थी कि मैं अपनी रक्षा किस प्रकार कर सकती हूं।"

"ओह! तो ये शस्त्रास्त्र उस विजय-समर के लिए धारण किये जा रहे हैं?"

"हां देव! यह प्रयास इसी कारण है परन्तु, देख रही हूं कि मैं सफल नहीं हो रही।"

"और वह कौन वीर योद्धा है जो इन शस्त्रास्त्रों को निस्तेज करने की सामर्थ्य रखता है?"

"तो आपको मैं बहुत बलशाली दिखाई दे रही हूं?"

"कम-से-कम मैं तो पराजित हो गया अनुभव कर रहा हूं। इस समय भूख लग रही है, अन्यथा अभी अपनी पराजय घोषित कर महारानी की कठपुतली बन जाता।"

"तो चलिये, आज मैं इन शस्त्रास्त्रों को धारण किये ही भोजन करूंगी।"

"महारानी को कष्ट होगा।"

रणभूमि में जाते हुए इस किंचित असुविधा को सहन किया जा सकता है।"

दोनों हंसने लगे। महाराज ने महारानी को गाढ़ आलिंगन में बद्ध करके अपनी पराजय भोजनागार में जाने से पहले ही स्वीकार कर ली।

महारानी दुर्गा इस विजय पर प्रसन्न थी। परन्तु, इस विजय के उपरान्त विजय का लाभ प्राप्त करने के लिए सन्धि-वार्ता भोजन के समय में करने के विचार से महाराज को भोजनागार में ले गई।

दोनों भोजनागार में पहुंचे।

दासियां चौकियों पर स्वर्ण और चांदी के पात्रों में भोजन परोसकर एक ओर खड़ी प्रतीक्षा कर रही थीं। उन्होंने महारानी को सोलह शृंगार किये भोजनागार में आते देख पहले तो समझा कि वह किसी विवाहोत्सव पर जाने के लिए तैयार हुई होंगी, परन्तु इन दिनों किसी भी उच्च अधिकारी के घर विवाह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होने की कोई सूचना नहीं थी। अतः वे आश्चर्यवत् खड़ी रह गईं।

महाराज तथा महारानी हाथ धोकर जब चौकियों के सम्मुख आसनों पर बैठे तो दासियां आगार से निकल गईं। यही प्रथा थी। इस प्रकार भोजन के समय अन्तरंग बातें भी हो सकती थीं।

भोजन के उपरान्त महाराज प्रायः संगीत-नृत्य इत्यादि देखने के लिए चले जाया करते थे और महारानी शयनागार में विश्राम करने चली जाती थीं। आज महाराज ने महारानी का निमंत्रण स्वीकार कर लिया था और महारानी उस उद्देश्य को पूर्ण करने का उपाय विचार करने लगी थीं जिसके लिए उसने शस्त्रास्त्र ध ारण किये थे।

खाना खाते हुए महारानी ने पूछ लिया, ''श्रीमन्! यदि कोई ऐसा दुष्ट व्यक्ति हो जो आपकी धर्मपत्नी पर कुदृष्टि डाले तो आप उसके साथ कैसा व्यवहार करेंगे?''

''उसे बन्दीगृह में डाल दिया जायगा।''

''और यदि आपकी प्रिय पत्नी के साथ कोई बलात्कार करे तो क्या दण्ड होगा उसके लिए?''

''अपने खड्ग से उसको यमलोक का द्वार दिखा दूंगा।''

''और यदि कोई आपकी प्रिय रानी के प्रिय पति से यही व्यवहार करे तो उसके लिए भी यही दण्ड होगा न?''

अब महाराज शूरसेन के कान खड़े हो गए। महाराज का सम्बन्ध रनिवास से बाहर कई स्त्रियों से था। इस कारण उन्होंने पूछ लिया, ''महारानी! कौन है जिसने इतनी धृष्टता की है कि आपके पति का अपहरण हो गया है?''

''एक है, नाम है रामी। जाति की कमीन और मुझसे मीठी-मीठी बातें करनेवाली।''

''उसने आपके पति का अपहरण नहीं किया, महारानी जी! तनिक सावधानी से बात करनी चाहिए, जिससे किसी निर्दोष को दण्ड न मिल जाय। आपका पति तो आपके समीप बैठा आपके साथ भोजन कर रहा है। उसके अपहरण का भ्रम हो गया है आपको।''

''तो उसकी लड़की कुमकुम में आपका स्वरूप किस प्रकार चला गया है?''

''महारानी जी! जनसाधारण महापुरुषों का अनुकरण करते ही हैं। कुमकुम की मां ने भी यही किया प्रतीत होता है और वह मेरे रूप-रंग की पुतली बना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकी प्रतीत होती है। मैं उसे बहुत ही योग्य शिल्पी कहूंगा। मैं उसे कहूंगा कि अपना कौशल हमें भी दिखाए। यदि आपकी बात सत्य हुई तो हम उसे पुरस्कृत करेंगे।''

''बात तो ठीक है। मैंने उस लड़की को ध्यानपूर्वक देखा है। वह सर्वांग रूपेण आपकी प्रतिलिपि प्रतीत हुई है।''

''बहुत विचित्र है! अच्छा, कल पूजा के उपरान्त उसे लड़की को लेकर उपस्थित होने के लिए कह देना। मैं स्वयं उसे देखकर निर्णय करूंगा।''

''परन्तु महाराज! सब लोग कह रहे हैं कि आपने उसे पहले ही पुरस्कृत कर रखा है।''

''नहीं महारानी! आपकी उस दासी को हमने एक छदाम भी पुरस्कार में नहीं दिया। अब यदि उसकी लड़की हमारी रूपराशि की प्रतिलिपि हुई तो अवश्य उसे कुछ पुरस्कार में देना होगा। कुशल शिल्पियों को राजा लोग पुरस्कृत करते ही रहते हैं।''

महारानी ने खाना छोड़ गम्भीर भाव में महाराज के मुख पर देखा। इस पर महाराज ने मुस्कराकर कहा, ''हमारी महारानी क्या विचार कर रही हैं?''

''यही कि या तो आप महापातकी हैं अथवा वह स्त्री महाधूर्त है।''

''हम समझते हैं कि दोनों में से एक भी बात नहीं है। कम-से-कम मैं अपने विषय में निश्चय से कह सकता हूं कि महापातकी होना तो दूर, साधारण पापी भी मैं नहीं हूं। जहां तक उस दासी का सम्बन्ध है, उसे कल प्रातःकाल बुलाकर पूछूंगा कि उसने अपने जीवन में क्या पाप किया है।''

भोजन समाप्त हुआ तो महारानी को ऐसा अनुभव हुआ कि उसने शृंगार व्यर्थ में नहीं किया था। दो-तीन घड़ी के परिश्रम का फल उसे सन्तोष जनक मिला था।

: 2 :

महारानी को अपनी धारणा तथा महामंत्री की पत्नी सर्व प्रिया के अनुमान पर सन्देह हो गया था। रात उसने महाराज से जो प्रेमप्रसाद प्राप्त किया था, उसके समक्ष उसके मन का सन्देह टिका नहीं रह सका। इस कारण उसने रामी तथा कुमकुम का साक्षात्कार महाराज से नहीं कराया।

उक्त घटना के कई मास उपरान्त पुनः एक दिन रामी अपनी लड़की कुमकुम के साथ दिखाई दी। रामी सुन्दर तथा अति आकर्षक स्त्री थी, मानो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भिखमंगे की गुदड़ी में एक हीरा हो। महारानी ऐसा पहले भी अनुभव करती रहती थीं, परन्तु इस रूपराशि के साथ उसकी लड़की की रूपराशि देख पुनः उसके मन में सर्वप्रिया का व्यंग स्मरण आ गया। सर्व प्रिया ने कहा था, 'महारानी जी, यह आपकी दासी आपकी सर्वप्रिय वस्तु पर अधिकार कर रही प्रतीत होती है।'

महारानी का कहना था, 'मेरी सर्व प्रिय वस्तु तो मेरे महाराज हैं।'

'उन्हीं के विषय में कह रही हूं। ऐसी सर्व प्रिय वस्तु पर किसी दासी का अधिकार शोभायुक्त नहीं होता। वह किसी समय सर्पिणी भी सिद्ध हो सकती है।'

'सखि! मैं समझी नहीं?' दुर्गा का प्रश्न था।

'आप उसकी लड़की को देखिएगा तो विदित हो जाएगा। उसके पति की पदोन्नति मेरे इस कथन का प्रमाण समझिए।'

इस संकेत की पृष्ठभूमि पर दुर्गा ने कुमकुम को देखा तो उसने महाराज से पूछ लिया। महाराज ने उसका समाधान करा दिया था, अपनी बातों से और अपने व्यवहार से।

एक बार रामी की लड़की कुमकुम का जन्म-दिवस था और रामी उसे नये वस्त्र पहनाकर महारानी के पास उनका आशीर्वाद प्राप्त कराने के लिए ले आई।

महारानी भोजनोपरान्त अपने आगार में विश्राम के लिए जा रही थीं कि रामी ने कुमकुम को आगे करके कहा, 'बेटी! महारानी जी के चरण स्पर्श करो और इनसे आशीर्वाद मांगो।'

कुमकुम उस समय केवल तीन वर्ष की थी, इस पर भी बात को वह समझ गई। उसने आगे बढ़कर महारानी के चरण स्पर्श किये और फिर हाथ माथे पर लगाकर हाथों की अंजुलि सामने कर दी।

महारानी ने समझा कि कुछ भेंट पाना चाहती है। अतः उसने एक स्वर्णमुद्रा निकाल उसके हाथ में डालनी चाही, परन्तु कुमकुम ने हाथ पीछे कर लिया और सिर हिला दिया।

'क्यों, क्या चाहती हो?' महारानी ने समझा कि कदाचित् एक स्वर्णमुद्रा कम होने के कारण उसने हाथ पीछे कर लिया है।

कुमकुम ने तोतली भाषा में कहा, 'आशीष।'

अब रामी ने कहा, 'महारानी जी! यह स्वर्ण नहीं मांगती। यह तो इसका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रयोग भी नहीं जानती। यह आपका आशीर्वाद मांग रही है। आशीर्वाद का अर्थ यह प्यार समझती है।'

महारानी समझ गई। उन्होंने कुमकुम की पीठ पर हाथ फेर उसे प्यार देते हुए कहा, 'प्यार भी और भेंट भी।' इतना कह उन्होंने पुनः स्वर्ण उसके हाथ पर डाल दिया।

अब महारानी ने रामी से कहा, 'लड़की बहुत प्यारी लग रही है।'

'हां महारानी जी! यह प्यारी है और बहुत समझदार भी है। स्वर्ण इसने खिलौना समझकर ले लिया है, अन्यथा यह किसी से कुछ भी नहीं लेती।'

एकाएक दुर्गा को सर्वप्रिया की बात पुनः स्मरण हो आई। उन्होंने रामी के मुख पर देखते हुए कहा, 'रामी! मुझे यह मोहन की लड़की प्रतीत नहीं होती।'

'महारानी जी! मुझे भी कुछ ऐसा ही प्रतीत होता है।'

'क्या प्रतीत होता है?'

'यही कि मेरा विवाहित पति इतनी सुन्दर, प्यारी तथा मीठी-मीठी बातें करने वाली लड़की का पिता नहीं हो सकता।'

'तो तुम्हारा किसी अन्य से भी सम्बन्ध है?'

'सम्बन्ध बनाया तो नहीं था, इस पर भी हो गया था। सम्बन्ध की पुनरावृत्ति भी होती रहती है, परन्तु कह नहीं सकती कि उस सम्बन्ध का ही यह परिणाम है।'

'वाह! जब सम्बन्ध हो गया, तो उस सम्बन्ध के परिणाम पर सन्देह क्यों है?'

'महारानी जी! आप स्वामिनी हैं, इस कारण आपसे अनृत भाषण नहीं करूंगी। इस लड़की के पेट में आने पर मैंने पुनः सम्बन्ध से इन्कार कर दिया था। परन्तु अब एक वर्ष से ऊपर हो गया है पुनः सम्बन्ध बने हुए, इस पर भी अब कुछ उत्पन्न नहीं हुआ। इस प्रकार इस लड़की के उस स्रोत से होने में सन्देह होने लगा है।'

महारानी को अपनी बात स्मरण हो आई। उनके दो सन्तान हो चुकी थीं। बड़ा लड़का था राहुल और दूसरी लड़की थी मुक्ता। अब तो मुक्ता भी चार वर्ष की हो चुकी थी और उसके बाद कोई सन्तान नहीं हुई। दुर्गा इसका अभिप्राय यह समझी थीं कि अब महाराज सन्तान उत्पन्न करने की आयु से ऊपर हो चुके हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्होंने रामी से पूछा, 'और जिससे सम्बन्ध बना था, वह क्या-कुछ देता है इसके प्रतिकार में?'

'वह तो बड़े ही दयालु हैं, परन्तु महारानी जी! मैंने आज तक उनसे एक छदाम भी प्राप्त नहीं किया, न ही कुछ पाने की इच्छा है।'

'तो यह सम्बन्ध प्रेम का है?'

'नहीं, महारानी जी! प्रेम इत्यादि तो कुछ भी नहीं होता। मेरे गुरुदेव प्रेम को माया का रूप ही मानते थे और मैं भी कुछ ऐसा ही समझती हूं।'

'तो फिर इस सम्बन्ध में कारण क्या है?'

'कृतज्ञता। उन्होंने मुझे यह लड़की दी है, इसके लिए मैं उनकी कृतज्ञ हूं। लड़की इतनी प्यारी है कि यदि वह इसके लिए मुझे जीवन-भर अपनी दासी बनी रहने को कहेंगे तो मैं इन्कार नहीं करूंगी।' रामी ने आगे कहा, 'महारानी जी! यदि आपके पास अवकाश है तो मैं आपको अपनी पूर्ण कथा सुना सकती हूं और साथ ही अपने मन के भाव बता सकती हूं।'

'तो कुछ बहुत लम्बी बात है?'

'जी हां, और नहीं भी। लम्बी बात मन के भावों की है। कर्म तो बहुत छोटा-सा है।'

'अच्छा भीतर आ जाओ।' महारानी ने अपने शयनागार में प्रवेश करते हुए रामी को भीतर आने का संकेत करते हुए कहा, 'तुम्हारे मन की लम्बी बात आराम से सुन सकूंगी।'

रामी लड़की की अंगुली पकड़े हुए महारानी के पीछे-पीछे उनके शयनागार में चली गईं। जब महारानी अपने पलंग पर बैठ गई तो भूमि पर बैठ रामी ने अपनी कथा सुना दी। उसने कहा, 'महारानी जी! मैं एक कहार मां की एक अति विद्वान् ब्राह्मण से सन्तान हूं। मेरी मां विवाह के कुछ ही काल बाद विधवा हो गई थी। गांव के ब्राह्मण पण्डित विश्वेश्वरनाथ मिश्र के घर पर मेरी मां के पतिदेव काम करते थे। उनका देहान्त होने पर मां को अपने पति के स्थान पर पण्डित जी के घर सेवा-कार्य स्वीकार करना पड़ा।...

'पण्डित जी अति चरित्रवान् और भारी विद्वान व्यक्ति थे। उन्होंने मां की अवस्था का ध्यान कर उसे घर पर सेवा-कार्य के लिए नियुक्त कर लिया।

'मां ने बताया था कि पण्डित जी के दो लड़के थे। एक उस समय सात वर्ष का था और दूसरा पांच वर्ष का था। दोनों बहुत ही मेधावी, सुन्दर और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वस्थ थे। उनको देख मां के मन में भी वैसी ही एक सन्तान की लालसा उत्पन्न हुई तो उन्होंने एक दिन पंडित जी से पूछ लिया—पंडित जी, एक स्त्री के मन में सन्तान की इच्छा क्यों होती है?

'पंडित जी का कहना था—यह स्वाभाविक है। यह परमात्मा ने स्त्री के मन में उत्पन्न की है। परमात्मा ने रचना आरम्भ करते समय यह सृष्टि का यज्ञ आरम्भ किया था और परमात्मा चाहते हैं कि यह यज्ञ सृष्टि के अन्त तक चलता रहे जिससे उसके इस रचना-कार्य का प्रयोजन पूर्ण हो सके। इसी निमित्त सन्तान की लालसा स्त्रियों में परमात्मा ने बनायी है और स्त्री प्रसव की वेदना सहते हुए भी इस कार्य की लालसा रखती है।...

'इस पर मां ने अपनी इच्छा पंडित जी के सम्मुख रख दी। मां ने कहा—पंडित जी! यहां क्षेत्र तैयार है। आप इसमें बीज डालें जिससे मैं भी परमात्मा के इस यज्ञ में भागीदार बन सकूं।...

'पंडित जी ने कुछ विचारकर कहा—अपने किसी सजातीय से कहो कि वह तुमसे विवाह कर ले।...

'परन्तु मां का कहना था—इसमें दो बाधाएं हैं। एक यह कि किसी भी सजातीय से इतनी सुन्दर तथा मेधावी सन्तान नहीं मिल सकेगी जिसकी मुझे अभिलाषा है। मैं तो विष्णु तथा राम-जैसी सुन्दर सन्तान की अभिलाषा रखती हूं। दूसरी बाधा यह है कि मैं किसी पर-पुरुष की पत्नी नहीं बन सकती। धर्मपूर्वक मेरा पाणिग्रहण हो चुका है और वह इस जन्मकाल के लिए तो है ही। वह धर्म-बन्धन मैं तोड़ना नहीं चाहती।...

'पंडित जी ने विचार किया और फिर कहा—मोहनी! इसके लिए तुम्हें विष्णु की मां से स्वीकृति लेनी होगी। जैसे तुम धर्म के बन्धन में व्यवधान नहीं आने देना चाहतीं, वैसी ही मेरी भी धारणा है। मैं तुम्हें एक सन्तान दे सकता हूं, परन्तु यह विष्णु की मां की स्वीकृति से ही होगी।'...

'इस पर मां ने पंडित जी की धर्मपत्नी के समक्ष अपनी याचिका उपस्थित कर दी, परन्तु पंडिताइन को स्वीकृति देने में संकोच होता था। बहुत विनय-अनुनय करने पर ही उन्होंने स्वीकृति दी और एक मास के लिए अपने पति को छुट्टी दे दी। एक मास में गर्भ ठहर गया और समय पर मेरा जन्म हो गया। ईश्वर की अनुकम्पा से मां की यह संतान पंडित जी के लड़कों से कम सुन्दर नहीं हुई।'

'मैं जब पांच वर्ष की हुई तो पंडित जी ने मेरी शिक्षा-दीक्षा अपने हाथ में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ले ली।...

'पंडित जी की सेवा में रहते हुए मां की संतान का जन्म ग्रामवासियों से छुपा नहीं रह सका। परिणामस्वरूप पंडित जी की पुरोहिताई शून्य-समान हो गई। इस पर भी पंडित जी ने कभी मेरी मां से इस बात की शिकायत नहीं की। न ही मां ने पुनः पंडित जी से सम्बन्ध बनाने का यत्न किया। वास्तव में उसका यह सम्बन्ध सन्तान की लालसा में था, किसी प्रकार की वासना-तृप्ति के लिए नहीं था। यह लालसा पूर्ण होने पर मां ने कभी पंडित जी से पुनः सम्बन्ध की इच्छा व्यक्त नहीं की।...

'पंडित जी को महाराज की ओर से कुछ भूमि कर-मुक्त प्राप्त थी, इस कारण निर्वाह में कोई विघ्न नहीं पड़ा।'...

'पंडित जी ने मुझे सब प्रकार से शिक्षा-दीक्षा से विभूषित करने का यत्न किया। वह मुझसे अपनी सन्तान के समान ही स्नेह रखते थे।...

'मैं इक्कीस वर्ष की हुई तो मां का देहान्त हो गया। इस पर पंडित जी को मेरे विवाह की चिन्ता होने लगी। पंडित जी के लड़के मुझ पर लालसा भरी दृष्टि रखने लगे थे और पंडित जी इस बात का ध्यान रखते थे कि वे मुझसे बलात्कार न करें।...

'इन्ही दिनों महाराज का सेवक गांव आया। उसने मुझे देखा तो मुझसे विवाह की इच्छा करने लगा। वह पंडित जी के पास पहुंचा। पंडित जी अपने लड़कों के मनोभावों को समझ मेरा विवाह मोहन से करने को तैयार हो गये।

'विवाह के उपरान्त मैंने पतिदेव को देखा तो परमात्मा से प्रार्थना करने लगी कि उस-जैसी मेरी सन्तान न हो। इस पर मेरे मन में प्रश्न उठने लगा कि कैसी सन्तान होनी चाहिये? अवन्ति के महाराज के मैं दर्शन कर चुकी थी। मुझे वह एक आदर्श व्यक्ति दिखाई पड़े, परन्तु वह जूता साफ करनेवाले की पत्नी से बहुत ऊंचे थे।...

'मैंने इसके लिए एक आयोजन किया। मैं अपने पति से विनती करने लगी की मुझे आपकी सेवा में भेजा जाये। जब मैं आपकी सेवा में नियुक्त हुई तो महाराज ने कृपा करके मुझे कुमकुम की भेंट दी।

'सन्तान के लक्षण पेट में प्रकट होते ही मैंने आपसे अवकाश ग्रहण कर लिया और घर पर बैठ अपने कर्म के फल की प्रतीक्षा करने लगी।

'अवन्ति के महाराजा ने मेरी सेवा के लिए पहली रात्रि ही मुझे एक सौ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वर्ण-मुद्राएं देनी चाही थीं, परन्तु मैंने वे स्वीकार नहीं कीं। मैंने उनसे कहा था कि मैं वेश्या नहीं हूं, मैंने इस कर्म का व्यवसाय नहीं किया और फिर मुझे धन की आवश्यकता भी नहीं। महाराज से मेरे पति पर्याप्त वेतन प्राप्त करते हैं। मैंने महाराज से इस कर्म के प्रतिकार में कभी भी कुछ प्राप्त नहीं किया।...

'लड़की का जन्म हुआ और वह मेरे मन की लालसा के अनुरूप ही निकली। मैंने निश्चय किया कि मैं आपकी सेवा में पुनः नहीं लौटूंगी, परन्तु जब लड़की एक वर्ष की हो गई और मैं पुनः आपके पास नहीं आई तो आपने मुझे बुला भेजा। आपके आग्रह पर ही मैंने पुनः आपकी सेवा स्वीकार कर ली। महाराज ने मुझे राजप्रासाद में देख पुनः अपनी शय्या पर आने का निमंत्रण देना आरम्भ कर दिया।...

'महारानी जी! इच्छा न रहते हुए भी यहां के नरेश की विनती को मैं टाल नहीं सकी। अब जब भी महाराज की इच्छा होती है, मैं उनकी सेवा में उपस्थित हो जाती हूं, परन्तु अन्य सन्तान के लिए मेरी कदापि इच्छा नहीं हुई। परमात्मा की यह कृपा है कि दो वर्ष से ऊपर हो चुके हैं, मेरे कोई सन्तान नहीं हुई।'

'पर रामी!' महारानी ने कहा, 'ऐसा क्यों? मैं जानती हूं कि महाराज संगीत-नृत्य इत्यादि कला-प्रदर्शन के लिए अथवा अन्य स्त्रियों की संगत के लिए पर्याप्त भेंट दिया करते हैं।'

'ठीक है, महारानी जी! परन्तु वह तो उन कलाकारों अथवा स्त्रियों का व्यवसाय है। मैं व्यवसाय नहीं करती। मैं तो निष्काम भाव से देश के महाराज की सेवा करती हूं और मुझे इसमें प्रसन्नता प्राप्त होती है।'

'और मोहन?'

'मेरा पति इस बात को जानता है। उसका सेवा-कार्य भी उन्नत हुआ है, परन्तु मेरा उससे कोई सरोकार नहीं। मैं तो कहार की बेटी और कहार की पत्नी हूं।'

इस कथा को सुनकर महारानी दुर्गा के मन में रामी के प्रति सद्भावना बढ़ गई। वह विचार करती थी उन नर्तकियों से, जो रात-भर के कला-प्रदर्शन के प्रतिकार में एक सौ स्र्वण-मुद्रा ले जाती हैं, यह रामी बहुत श्रेष्ठ है।

इस पर महारानी उत्सुक्ता से देख रही थी कि रामी के और सन्तान होती है अथवा नहीं, और होती है तो किस रूप-रेखा की। परन्तु रामी के और सन्तान नहीं हुई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: 3 :

तब से रामी का महारानी से कुछ समीप का सम्बन्ध बनने लगा। महारानी चकित रह गई। जब रामी के साथ वार्तालाप में महारानी को पण्डित विश्वेश्वरनाथ की शिक्षा-दीक्षा के दर्शन होने लगे। महारानी को प्रतीत होने लगा कि रामी न केवल पढ़ी-लिखी एक विदुषी स्त्री है, वरन् विचारों में भी श्रेष्ठ है। उसकी विद्वत्तापूर्ण तथा ज्ञानवर्धक बातें सुन महारानी को विस्मय होने लगा। एक दिन महारानी ने उससे पूछ लिया, 'रामी! तम्हें दुःख नहीं होता यह देखकर कि महाराज की एक प्रिया देश की महारानी है और सब प्रकार की शोभा तथा सुख-सुविधा प्राप्त कर रही है, जबकि दूसरी प्रिया एक कहार के घर पर रहती है और महाराज की रखैल-मात्र समझी जाती है?'

'महारानी जी!' रामी ने गम्भीर भाव में कहा, 'जब एक बार मन में विश्वास बैठ जाए कि जो कुछ भी एक व्यक्ति है, अपने कर्मफल के कारण ही है तो फिर मन में शोक तथा दुःख नहीं रहता। जब कर्मफल में मुझे मोहन की पत्नी रहना लिखा है तो फिर मन को दुःखी क्यों करूं?'

'परन्तु तुम अवन्तिराज की रखैल जो हो?'

'नहीं महारानी जी! मैं रखैल नहीं हूं। मैं उनकी सेविका हूं, अवैतनिक सेविका।'

'अर्थात् दासी और वह भी बिना किसी प्रकार का मूल्य चुकाये।'

'जी नहीं, स्वेच्छा से सेवा करनेवाली। जो भी सेवा मैं करती हूं उसका मूल्य प्राप्त नहीं करती और न ही किसी प्रकार के मूल्य की मैं इच्छा रखती हूं। इस कारण इस कार्य को मैं यज्ञ-मय समझती हूं। इसका फल वही मिलेगा जो यज्ञ-कार्य का मिलता है।'

'रामी! तुम्हें लज्जा नहीं आती इस प्रकार की बातें मुझसे करते हुए?'

'महारानी जी! एक दिन महाराज ने मुझे बताया था कि आपने उनसे एक दिन कुमकुम के विषय में पूछा था अेर उन्होंने युक्ति से वास्तविक बात बताने से आपको टाल दिया था। मुझे उनका यह व्यवहार पसन्द नहीं आया। मैंने उन्हें कहा था कि यह पाप हो गया है। इस पर महाराज ने पूछा—तो तुम क्या चाहती हो?...

'मेरा कथन था—मैं स्वयं के लिए कुछ नहीं चाहती। मैं उनके समक्ष आत्म-समर्पण किसी वासना अथवा किसी अन्य विचेषणा के अधीन नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

R 089.9143
GUR-K
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करती। यह कृतज्ञतावश है। उन्होंने मुझे वह-कुछ दिया है जो उन-जैसा श्रीमान् ही दे सकता था। कुमकुम के लिए मैं आपकी जीवन भर कृतज्ञा रहूंगी।...

महाराज का प्रश्न था—परन्तु यह तुमने हमसे मांगी थी क्या?'

'मेरा उत्तर था—इसकी इच्छा अवश्य की थी और परमात्मा ने आपके मन में प्रेरणा दी तो मुझे मन-वांछित फल मिल गया है। कुमकुम के जन्म के उपरान्त मैं सन्तुष्ट और तृप्त थी, इस पर भी जब महाराज ने पुनः आग्रह किया तो मैं कृतज्ञतावश ही मानी थी।...

'जब मैंने उनको अपने मन के भाव बताये तो इसके उपरान्त उन्होंने मुझे कभी कुछ देने का प्रयास नहीं किया। वह मुझे सेवा के लिए बुलाते हैं—वासना-तृप्ति के लिए अथवा किसी अन्य प्रेरणा के अधीन, मुझे विदित नहीं, परन्तु मैं तो कृतज्ञता से भरी हुई ही उनके पास जाती हूं।

'परन्तु रामी, पर-पुरुष से सम्बन्ध अर्धम नहीं है क्या?'

'महारानी जी! मैं इसे इस प्रकार नहीं समझती। मैंने यह बात अपने विवाहित पति से कभी गुप्त नहीं रखी। वह मुझसे रुष्ट रहता है, परन्तु मुझ-जैसी सुन्दर स्त्री के भोग की लालसा का संवरण नहीं कर सकता। मैं उसके प्रति भी कर्तव्य से बंधी हुई हूं और उसकी सेवा करती हूं।'

'तुम्हारे व्यवहार को मैं ठीक नहीं समझती।'

'आप ठीक कहती हैं और आपको ऐसा व्यवहार स्वीकार भी नहीं करना चाहिये, परन्तु मैंने बताया है न कि मैं कृतज्ञता से भरी हुई ही यह कार्य करती हूं। इस कार्य को मैं केवल शरीर का सम्बन्ध समझती हूं और अपनी आत्मा इसमें लिप्त न हो, इसका मैं सतत प्रयास करती हूं।'

दुर्गा इस जीवन-मीमांसा पर विचार करती हुई रामी का मुख देखती रह गई।

कुछ देर बाद उन्होंने बात को बदलते हुए, 'तुम्हारे पंडित जी ने तुम्हें क्या-कुछ पढ़ाया है?'

'मैंने पाणिनी की 'अष्टाध्यायी' कण्ठस्थ कर उसका प्रयोग करना सीखा है। साथ ही भगवद्गीता, महाभारत, रामायण, वायुपुराण और अग्निपुराण का अध्ययन भी किया है। पंडित जी मुझे वेदाध्ययन भी कराना चाहते थे, परन्तु तभी मेरी मां का देहान्त हो गया और पंडित जी ने अपने लड़कों की मनोवृत्ति देख मेरा विवाह कर मुझे गांव से बाहर भेज दिया।'

Central Library
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar
167894

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'और आजकल भी स्वाध्याय चलता है?'

'हां महारानी जी! गुरु जी के घर पर रहते हुए मैंने व्यास कृत महाभारत की अपने लिए एक प्रतिलिपि तैयार की थी। विवाह के उपरान्त वह प्रति मैं अपने साथ ले आयी थी और दो-ढाई घड़ी-भर नित्य मैं उसमें से स्वाध्याय किया करती हूं।'

'अच्छा, मेरे साथ आओ।'

महारानी उसे राजप्रासाद के पुस्तकालय में ले गईं। पुस्तकालय में सहस्त्रों ही ग्रंथ, हस्तलिखित, रेशमी वस्त्रों में लिपटे हुए विधिवत् रखे थे। सब ग्रंथों के नाम उन वस्त्रों के ऊपर बड़े सुन्दर ढंग से लिखे थे जिनमें वे लिपटे हुए थे।

रामी ने एक ग्रन्थ उठाया और उस पर नाम पढ़ा। लिखा था—बाल्मीकीय रामायण। रामी ने नाम पढ़ा और फिर पुस्तक को माथे से लगाकर उसका सत्कार कर पुनः उसी स्थान पर रख दिया।

अब महारानी ने पूछ लिया, 'यह पुस्तक पढ़ी है तुमने?'

'हां, महारानी जी! इसी कारण इसके रचियता महर्षि को नमस्कार किया है।'

'तो इसे ले आओ और मुझे नित्य इसमें से पढ़कर सुनाया करो।'

'जैसी आज्ञा हो।'

अब रामी और महारानी दुर्गा में एक नवीन सम्बन्ध बन गया। महारानी ने रामी के कार्य पर एक अन्य सेविका को नियुक्त कर दिया और इस प्रकार एक कहार की बेटी एक ब्राह्मण का कार्य करने लगी।

रामायण का पाठ समाप्त हुआ तो उपनिषद् का पाठ होने लगा। ईशवास्योपनिषद् से आरम्भ करके एक-एक कर ग्यारहों उपनिषद् पूरे हुए।

रामी की लड़की कुमकुम ग्यारह वर्ष की वयस् की हो चुकी थी, जब होलिका-उत्सव वाली घटना हो गई। राहुल कुमकुम को जानता था। दोनों के गुरु एक ही थे। कुमकुम की शिक्षा-दीक्षा में महारानी दुर्गा विशेष रुचि लेने लगी थीं।

इस समय तक महाराज शूरसेन का रामी के प्रति आकर्षण भी शिथिल पड़ चुका था। हां, अब राहुल का कुमकुम के प्रति आकर्षण शुरू हो गया था।

यद्यपि गुरु जी राहुल तथा कुमकुम को पृथक्-पृथक् समयों पर पढ़ाते थे, इस पर एक दिन दोनों का सामना हो गया और राहुल कुमकुम को देखते ही उसकी ओर आकर्षित हो गया। उसने कुमकुम के विषय में पूर्ण जानकारी प्राप्त

167894

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की–गुरु जी से, अपनी बहन राजकुमारी मुक्ता से और फिर मोहन से। जब वह गुरु जी से यह जान गया कि कुमकुम प्रतिभायुक्त शिष्या है, तो वह उसे अपने मनोभावों का परिचय देने का विचार करने लगा। यह अवसर उसे होली के उत्सव के दिन प्राप्त हुआ।

होली के दिन कुमकुम, राजकुमारी मुक्ता तथा उसकी सखियां राजप्रासाद की ड्योढ़ी के ऊपर छत पर खड़ी राजपथ पर जा रहे नागरिकों को देख रही थीं कि राजकुमार राहुल वहां आ गया और उसने अपने मनोभाव कुमकुम पर प्रकट कर दिये। कुमकुम ने राहुल के मनोभावों का स्वागत किया तो मन में अति प्रसन्न हो राहुल उसके सज्ञान होने तक प्रतीक्षा करने का संकल्प बनाता हुआ अपने आगार में चला गया। कुमकुम भी अपने घर को लौट गई।

कुमकुम की शिक्षा में महारानी तथा महाराज भी विशेष रुचि ले रहे थे। इसका परिणाम यह हो रहा था कि कुमकुम की राजप्रासाद में तथा घर पर विशेष रूप में प्रतिष्ठा बढ़ गई थी। रामी अपने वेतन के अतिरिक्त महारानी से कुछ भी प्राप्त नहीं करती थी। इस पर भी उसकी तथा उसके परिवारवालों की सुविध ा का विशेष ध्यान रखा जाता था। जब रामी ने रामायण का पाठ करना आरम्भ किया था, तब एक बार महारानी ने उससे पूछा था, ''रामी! अब जो कार्य तुम कर रही हो, उसके लिए क्या वेतन उचित समझती हो?''

रामी का कहना था, ''महारानी जी! इस कार्य का कुछ भी वेतन मैं नहीं लूंगी।''

''क्यों?''

''इस कारण कि मेरे गुरु जी ने मुझमें इस योग्यता को उत्पन्न करने का कुछ मूल्य मुझसे नहीं लिया। इस कारण मैं भी इसका कुछ मूल्य नहीं लूंगी।''

''परन्तु रामी! मैं तुम्हारी विद्या को मोल नहीं ले रही। मैं तो तुम्हारा समय ले रही हूं और उसका ही वेतन देना चाहती हूं।''

''वह तो आप देती ही हैं। बीस रजत प्रतिमास आप मुझे दे रही हैं।''

''परन्तु तुम्हारा कार्य पूर्वापेक्षा उन्नत हो गया है।''

''महारानी जी! उसका मैं कुछ भी नहीं लूंगी।''

''विचित्र हो तुम! न तो महाराज की सेवा का कुछ लेना चाहती हो और न यहां शास्त्र पढ़कर सुनाने का कुछ ले रही हो। मैं समझती हूं तुम मोती कौड़ियों के मूल्य पर लुटा रही हो।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं, महारानी जी! यह तो मैं अपना ऋण उतार रही हूं। एक गुरु जी का और दूसरे अपने को जन्म देनेवाली का। यही तो गृहस्थ है।"

इस समस्या पर दुर्गा की महाराज से बात हो गई। महाराज का सुझाव था कि यदि रामी अतिरिक्त वेतन इत्यादि नहीं लेना चाहती तो वेतन के स्थान पर उसकी सुख-सुविधा में वृद्धि कर देनी चाहिये।

परिणामस्वरूप एक दिन राजप्रासाद के अधिकारी रामी के घर जा पहुंचे और कहने लगे, "हमें महारानी जी की आज्ञा मिली है कि आपका यह गृह नये ढंग से बनाया जाये। यह सब कार्य लगभग एक मास में हो जायेगा, तब तक के लिए आपको राजप्रासाद के पिछवाड़े में बने गृहों में से किसी एक में जाकर रहना होगा।"

"परन्तु ऐसा क्यों?" रामी ने पूछ लिया।

"यह हमें विदित नहीं। आप महारानी जी से पूछ सकती हैं।"

रामी अपनी लड़की, अपने पति तथा देवर व घर-गृहस्थी का सारा सामान लेकर उस आवास में चली गई जो उनके लिए निश्चय हुआ था।

उसी सायंकाल रामी महारानी की सेवा में पहुंची तो महारानी ने पूछ लिया, "रामी! नये गृह में चली गई हो?"

"हां, महारानी जी! परन्तु यह कुछ उचित नहीं हुआ। राजप्रासाद के कर्मचारियों में कुमकुम के बिगड़ने की सम्भावना हो सकती है।"

"परन्तु रामी! यह सब एक मास के लिए है। तब तक तुम्हारा पुराना गृह ठीक करा दिया जायेगा। मुझे ऐसा समझ में आया कि महारानी को रामायण की कथा सुनानेवाली विदुषी स्त्री के निवास के लिए वह स्थान ठीक नहीं है। इसी कारण उसे ठीक तथा सुविधायुक्त बनाने के लिए आदेश दिया गया है।"

रामी चुप रही और निर्माण-कार्य चलता रहा। एक मास उपरान्त रामी को पुनः अपने पुराने गृह में भेज दिया गया। परन्तु उसमें इतने परिवर्तन हो चुके थे कि रामी, उसका पति तथा उसका देवर विस्मय में खड़े रह गये। गृह में सात आगार बन गये थे, तीन स्नानागार थे, एक बैठक पृथक् थी। मोहन अपनी पत्नी से पूछने लगा, "रामी! कहीं हम किसी अन्य के गृह में तो नहीं आ गये?"

रामी गृह के बाहर गयी तथा आस-पड़ोस के गृहों को देख तथा पहचानकर बोली, "स्थान तो वही है, परन्तु अब यह किसी उच्च अधिकारी का निवास प्रतीत होता है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हां, यह एक पान लगानेवाले अथवा जूता साफ़ करनेवाले का निवास नहीं हो सकता।"

एक सेविका वहां सामान ढंग से लगा रही थी। रामी ने उससे पूछ लिया, "तुम कौन हो?"

"मैं सुग्गी हूं। मुझे आपकी सेवा के लिए महारानी जी ने भेजा है।"

"क्या सेवा करोगी?"

"खाना बनाने के कार्य के साथ-साथ जो आप कहें। एक अन्य सेविका भी है। वह यहां सफ़ाई करने के लिए और बाज़ार से सामान इत्यादि लाने के लिए है।"

"परन्तु मैं दो सेविकाओं का वेतन नहीं दे सकूंगी।"

"परन्तु देवी! हम आपकी सेवा में नहीं हैं। हम तो राज्य की सेवा में हैं और वहीं से हमें वेतन मिलेगा। यह महारानी जी ने बता दिया है।"

रामी चुप रही। उस दिन जब वह महारानी जी के पास पहुंची तो महारानी ने ही पूछा, "आवास पसन्द आया?"

"महारानी जी! गृह तो बहुत बढ़िया बन गया है, परन्तु हम-जैसे निर्धनों के वह योग्य नहीं।"

"ठीक है। रामी कहारिन का गृह नहीं है। वह महारानी के लिए कथावाचिका रामी का भवन है। जहां तक उस भवन के रखाव का सम्बन्ध है, उसके लिए मैंने सेविकाएं भेजी हैं। जब वे कुछ मांगेंगी और तुम्हारे पास देने को नहीं होगा तो बताना। मैं समझती हूं कि उनको देने योग्य तुम्हारे पास होगा।"

गृह के अतिरिक्त एक बात और होने लगी। सुग्गी घर के लिए सब्जी, अनाज, घी, दूध, तैल इत्यादि, अभिप्राय यह कि सब-कुछ स्वयं ही लाती थी और उसके लिए वह रामी से कुछ भी नहीं मांगती थी।

रामी समझ गयी कि अब उसके वेतन में वृद्धि हो गयी है। क्योंकि वह नकद कुछ नहीं लेती थी, इस कारण उसके निर्वाह और सुख सुविधाओं के साधन उपलब्ध करा दिये थे। यह ऐसे ही था जैसे उसके गुरु जी को कर-मुक्त भूमि दी हुई थी और वह अपना निर्वाह स्वतन्त्रता पूर्वक कर रहे थे।

: 4 :

जब कुमकुम को राहुल ने बताया कि वह उसका वही कुछ बनना चाहता है जो उसका चाचा उसकी चाची का है, तो कुमकुम अत्यन्त प्रसन्न होकर घर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लौटी थी। परन्तु जब पिता के आगार में गयी और पिता को गम्भीर भाव में बैठे उसने देखा तो वह भी गम्भीर हो गयी, यदि मां होती तो वह यह समाचार मां को देती। परन्तु पिता को यह कहने का वह साहस नहीं कर सकी।

मोहन ने पूछ लिया, ''कहां से आयी हो?''

''राजकुमारी के साथ होलिका-उत्सव देख रही थी।''

''और यह रंग उसी ने लगाया है क्या?''

कुमकुम ने झूठ कह दिया, ''हां, और दूसरी सखियों ने भी।''

''कुमकुम! मैंने तुम्हें कई बार कहा है कि तुम उनके साथ खेलने न जाया करो। वे अच्छी लड़कियां नहीं हैं।''

''क्या बुराई है उनमें?''

''तुम समझ नहीं सकतीं। जब तुम सोलह वर्ष की हो जाओगी तो पता चलेगा। अभी तो तुम्हें मेरा कहा मानना चाहिये।''

''परन्तु मां उनसे खेलने को मना नहीं करतीं।''

''वह मूर्ख है। वह स्वयं राजप्रासाद में रहती है और तुम्हें भी अपनी भांति ही राजप्रासाद का पक्षी बना देगी।''

''तो यह कोई बुरी बात होगी?''

''हां, यही तो कह रहा हूं।''

रामी और उसके पति में मतभेद उनके विवाह-काल से ही चला आ रहा था। जब अभी मोहन रामी को विवाह कर लाया ही था, तभी रामी ने कहा था, 'मैं महारानी जी से मिलने जाना चाहती हूं।'

मोहन ऐसा नहीं चाहता था। उसका कहना था, ''वहां कहीं महाराज से भेंट हो गयी तो बहुत बुरा होगा।'

'क्या बुरा होगा?'

'क्या आयु है तुम्हारी?' मोहन ने उत्तर देने के स्थान पर पूछ लिया।

''इक्कीस वर्ष की हो रही हूं।'

'और तुम्हारा विवाह किसलिए किया गया है?'

'जो कर्म आपने विवाह की पहली रात ही किया था, उसके लिए।

'बस, वही कर्म कोई दूसरा भी कर सकता है।'

'क्यों? उसकी अपनी पत्नी नहीं है क्या?'

'तुम महामूर्ख हो! इतनी बड़ी हो गयी हो और कुछ समझती ही नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजप्रासाद में कदापि न जाना। वहां गन्दगी भरी हुई है।'

उन दिनों मोहन जूते साफ़ करने पर ही नियुक्त था। वह सदैव महाराज के साथ रहता था और जब भी महाराज अपने आगार से निकल दूसरे अगारों में जाते थे, वह समयोचित जूते झाड़-पोंछकर पहनने के लिए देता था। साथ-साथ रहने के कारण ही वह महाराज के स्वभाव तथा स्त्रियों से उनके सम्बन्ध के विषय में जानकारी रखता था। इसी कारण वह रामी को राजप्रासाद में ले-जाना नहीं चाहता था।

इस पर भी रामी एक दिन राजप्रासाद में महारानी से भेंट करने जा पहुंची।

रामी को अवन्ति की राजधानी उज्जयिनी में अभी तीन दिन हुए थे कि वह घर में बैठी-बैठी ऊब गयी। एक दिन उसने अपने सबसे अच्छे वस्त्र पहने और राजभवन के द्वार पर जा पहुंची। मोहन का घर तो था राजप्रासाद के प्रांगण में, परन्तु राजभवन से कुछ दूर पेड़ों के पीछे छुपा हुआ था।

प्रतिहार ने रामी को भवन के द्वार पर रोक लिया और पूछने लगा 'कहां जा रही हो?'

'महारानी जी से मिलने।'

'तो उधर जाओ, इधर उनका कार्यालय है।'

रामी उधर ही चल पड़ी। वही बात वहां पर भी हुई। इस बार द्वार पर खड़े प्रतिहार ने गम्भीर भाव में पूछा, 'देवी! किनसे मिलना है?'

'महारानी जी से।'

'उन्होंने बुलाया है?'

'नहीं। मैं स्वयं नमस्कार करने आयी हूं।'

'तो अपना नाम-धाम लिखा दो, भीतर भेज दिया जायेगा। महारानी जी चाहेंगी तो भीतर जा सकोगी।'

देहात की रहनेवाली रामी यही समझती थी कि जिस प्रकार पंडित विश्वेश्वरनाथ से गांव में लोग मिलने आते थे और उनकी घर की बैठक के बाहर से पुकारकर भीतर चले आते थे, वैसा ही यहां होगा। परन्तु यहां का नियम विलक्षण देख वह एक क्षण तक ही रुकी और फिर बोली, 'कहां लिखूं अपना नाम?'

द्वारपाल ने द्वार के एक ओर रखी एक संदूकची में से लिखने का सामान निकाला और पूछने लगा, 'नाम बताओ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामी स्वयं लिखना चाहती थी, परन्तु द्वारपाल ने इसका अवसर दिया ही नहीं और स्वयं लिखने लगा।

'लिखो।' रामी ने गम्भीर भाव में कहा, 'रामी, रामकुट्टी गांव, की रहनेवाली, राजप्रासाद में नियुक्त मोहन की नव-विवाहिता पत्नी।'

प्रतिहार मोहन का नाम सुन रामी के मुख पर देखने लगा।

'क्यों? क्या देख रहे हो? मैं सच लिखा रही हूं।'

'विश्वास नहीं होता।'

'लिख लो। महारानी जी को विश्वास हो जायेगा।'

नाम भीतर गया और चौथाई घड़ी में एक दासी आयी और रामी को लेकर भीतर चली गई।

महारानी सामान्य रूप-रेखा की स्त्री थी, परन्तु जिन वस्त्रादि से आच्छादित थी, उनसे स्पष्ट ही था कि वह अवन्ति की महारानी है।

रामी ने झुककर और हाथ जोड़कर प्रणाम किया और आज्ञा के लिए सामने खड़ी हो गयी।

महारानी ने भी विस्मय में रामी के मुख पर देख पूछ लिया, 'किस मूर्ख ने तुम्हारा विवाह मोहन से कर दिया है?'

'महारानी जी! मूर्ख नहीं। एक अति विद्वान मेरे संरक्षक हैं। मेरे माता-पिता नहीं थे और उन्होंने यहां के सेवक मोहन को पसन्द किया है।'

'बैठो।' महारानी जी ने कहा।

उसी दिन से रामी को महारानी जी के पास सेवा-कार्य मिल गया और बीस रजत प्रतिमास उसका वेतन नियत हो गया।

उसी रात रामी ने अपने पति को बताया तो वह बीस रजत वेतन की बात सुन प्रसन्न हो गया। उसका अपना वेतन केवल दस रजत प्रतिमास था। परन्तु उसके मन का संशय वैसे ही बना रहा, जैसे किसी निर्धन के पास से मूल्यवान् रत्न के गुम हो जाने का भय रहता है।

मोहन ने रामी के कार्य के विषय में न पूछ यह प्रश्न कर दिया, 'वहां कोई पुरुष था?'

'नहीं! महारानी जी ही थीं।'

'और काम क्या बताया है?'

'यही कि प्रातः दिन निकले ही वहां जाना होगा। महारानी जी के दिनभर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के पहनने के वस्त्र निकालकर नियत स्थान पर रखना। जब वह स्नानादि से अवकाश पायें तो उनको वस्त्र पहनने में सहायता देना, तदनन्तर उनके शयनकक्ष के वस्त्र इत्यादि ढंग से समेटना। बस, यह प्रातःकाल का कार्य है। इसी प्रकार सायंकाल को भी उनके पहनने के वस्त्र और शयनागार में पलंग इत्यादि ठीक करना। इस कार्य करने के लिए पहले एक सेविका मुझे एक सप्ताह तक कार्य सिखाएगी। वह छुट्टी पर जा रही है। उसके अनन्तर मैं स्वतन्त्रतापूर्वक कार्य करने लगूंगी।'

मोहन गम्भीर भाव में बैठा रहा। फिर कहने लगा, 'वहां महाराज से भेंट हो जायेगी और वह तुम्हें अपनी पत्नी बना लेंगे।'

'कैसे बना लेंगे? मेरा तो विवाह आपसे हो चुका है।'

'बिना विवाह के भी ऐसा हो सकता है।'

परन्तु यह कार्य चलता रहा।

इस बात को आज बारह वर्ष हो चुके थे। रामी का महाराज से सम्बन्ध तो उनके प्रासाद में सेवा-कार्य पाने के दूसरे मास में ही बन गया था। इसमें भी पहल रामी ने ही की थी।

वह महाराज के सौन्दर्य की तुलना करती थी अपने पति से और पति के रूप का ध्यान कर भयभीत थी कि कहीं उसकी सन्तान भी वैसी ही भद्दी और कुरुप न हो जाये। वह तो महाराज की रूपरेखा की सन्तान चाहती थी।

उसे अपनी मां की बात स्मरण हो आयी। उसकी मां ने उसके जन्म की कथा जो उसे बतायी थी। यह भी एक श्रेष्ठ सन्तान के लिए लालसा करने लगी थी।

यह रामी भी जानती थी कि बीज पर ही सन्तान उत्पन्न होती है। स्त्री तो सन्तान के पालन में माध्यम ही होती है।

रामी-जैसी सुन्दर स्त्री को सन्तान देने के लिए महाराज को तैयार करने में कठिनाई नहीं हुई। परन्तु जब गर्भ स्थित हो गया तो रामी ने महाराज को कह दिया, 'मुझे अभीष्ट फल मिल गया प्रतीत होता है; इसके लिए अब क्षमा चाहती हूं।'

परन्तु महाराज शूरसेन, गांव का पंडित विश्वेश्वरनाथ नहीं था। इस कारण कुमकुम के जन्म के उपरान्त वह पुनः रामी से सम्पर्क बनाने के लिए यत्न करने लगे। महाराज के बहुत विनय-अनुनय करने पर रामी तैयार हो गयी। पुनः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्बन्ध बने को भी अब आठ वर्ष हो चुके थे।

मोहन कुमकुम को डांटने ही वाला था कि जब उसे उन लड़कियों से खेलने को मना किया था तो वह क्यों वहां गई थी, कि उसी समय रामी भी वहां आ पहुंची।

कुमकुम के मुंह से निकल गया, "मां! ..." वह आगे कहते-कहते रुक गयी।

"क्या बात है?" रामी ने पूछा।

"बाबा कह रहे हैं..." कहती-कहती वह पुनः रुक गयी।

रामी ने पति के मुख पर देख लड़की से पूछा, "क्या कह रहे हैं?"

"पिता जी कह रहे हैं कि मेरी मां मूर्ख है।"

"हां, यह तो है ही। देखो कुमकुम, सब पति पत्नियों को यही कहा करते हैं।"

"पर मां, तुम तो मूर्ख नहीं हो?"

"देखो बेटी, जो स्वयं मूर्ख होते हैं, उन्हें सब अपने-समान दिखाई देते हैं।"

कुमकुम हंस पड़ी।

मोहन के माथे पर त्योरी चढ़ गयी, परन्तु बात रामी ने बना दी। उसने कुमकुम को वहां से टालने के लिए कह दिया, "जाकर देखो, लक्ष्मी और मदन स्नान कर चुके हैं या नहीं?"

कुमकुम गयी तो रामी ने पति से कहा, "मैंने पहले भी कई बार कहा है कि लड़की के सामने मेरी निन्दा मत किया करो।"

"परन्तु आज तो तुमने प्रतिकार ले लिया है।"

"यह इसलिए कि मैं लड़की की दृष्टि में मूर्ख बनना नहीं चाहती।"

"मगर महाराज के सब सेवक मेरी हंसी उड़ाते हैं।"

"क्या कहते हैं?"

"यही कि तुम महाराज की सेवा में हो।"

"तो यह मिथ्या है क्या और तुम उनकी सेवा में नहीं हो क्या।"

"परन्तु सेवा-सेवा में अन्तर है।"

"किसी ने ऐसा देखा है, जो नहीं होना चाहिए?"

मोहन भौंचक्का हो उसे देखने लगा।

रामी ने अब डांट दिया, " यदि तुमने पुनः ऐसी बात लड़की के सामने कही तो बहुत बुरा होगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या बुरा होगा?"

"आपका शव क्षिप्रा में तैरता दिखाई देगा।"

"कौन करेगा यह?"

"कोई भी, जिसे मैं कहूंगी।"

"ओह! अब तुम आज्ञा भी देने लगी हो?"

"हां, यह महारानी जी की कृपा का फल है। वह मुझे अपने गुरु-पद पर मानने लगी हैं। देखते नहीं, यह सब-कुछ कहां से आ रहा है?"

मोहन चुप रह गया। रामी स्नान करने चली गई।

स्नान के उपरान्त भोजन हुआ और भोजन के उपरान्त नये वस्त्र पहन रामी होली की सभा में जाने को तैयार हो गयी।

मोहन से नहीं रहा गया। उसने पूछा, "रामी! कहां जा रही हो बन-ठनकर?"

"होली की सभा में।"

"क्यों? किसके कहने पर?"

"महारानी जी की आज्ञा से। पहनने के ये वस्त्र भी उन्होंने दिये हैं।"

"कुमकुम को भी?"

"हां!"

"और मैं?"

"आपको तो जाना ही चाहिए। महाराज के पान लगानेवालों को उनके साथ ही रहना चाहिए।"

कुमकुम राजकुमार से कही बात मां से बता नहीं सकी। समय ही नहीं मिला। साथ ही वह इस प्रकार की बात पिता के सम्मुख करना नहीं चाहती थी।

जब रामी और कुमकुम घर से निकल गईं तो मोहन भी तैयार हो राजप्रासाद को चल पड़ा।

: 5 :

इस कथा का काल है जब मगध में महाराज अशोक राज्यासीन हो भारत के अनेक देशों को पराजित और उन्हें अपने अधीन कर बौद्ध-धर्म के उपासक बन चुके थे। अभी कई देश स्वतंत्र थे। इनमें कश्मीर, सौराष्ट्र, अवन्ति तथा दक्षिण के राज्य थे।

ये राज्य वैसे तो अभी पराजित नहीं हुए थे। परन्तु अशोक-जैसे शक्तिशाली सम्राट् से युद्ध करने की क्षमता भी नहीं रखते थे। अशोक बौद्ध उपासक बना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो उसने शस्त्र रख दिये। इस पर भी विजय-समर चल रहा था। अब सैनिक नहीं, वरन् बौद्ध भिक्षु दूर राज्यों में जाते थे और धर्म की विजय करते थे।

अवन्ति की राजधानी उज्जयिनी में भी बौद्ध विहार स्थापित हो चुका था। इस विहार में बीस से ऊपर भिक्षु तथा भिक्षुणियां आकर रहने लगी थीं। नगर में और आसपास के गांवों में भी 'बुद्धं शरणं गच्छामि' के घोष सुनाई देने लगे थे। भिक्षुओं के अशुद्ध उच्चारण पर लोग हंसते थे, इस पर भी उनका अपमान करने का साहस किसी को नहीं होता था।

बौद्ध विहार में भी यह सूचना मिली कि उज्जयिनी में होली के अवसर पर राज्य की ओर से एक सभा होती है और इस सभा में प्रजागण आमंत्रित होते हैं। प्रजा स्वेच्छा से सभा में जाती है और सब अपनी-अपनी सामर्थ्यानुसार महाराज तथा महारानी को भेंट देते हैं।

राजप्रासाद के सबसे विशाल भवन में इस सभा का आयोजन किया जा रहा था और राजभक्त नागरिक इसमें एकत्रित होने के लिए दूर-दूर स्थानों से आ रहे थे। भवन में दो सहस्र के लगभग लोगों के बैठने के लिए स्थान बना था। प्रायः सभा में आनेवाले लोगों की संख्या इतनी होती थी कि भवन पूरा भरने पर भी लोगों को बाहर खड़ा होना पड़ता था।

सभा-भवन में एक ओर ऊंचाई पर महाराज तथा महारानी के बैठने के लिए स्थान होता था। उनके पीछे उनकी रक्षा तथा मान के लिए सुभट्ट नग्न खड्ग लिये खड़े रहते थे। मंच के दोनों ओर राज्य के प्रतिष्ठित तथा धनी-मानी व्यक्तियों के बैठने के लिए स्थान निश्चित था। मंच के सामने प्रजा बैठती थी। मंच के पीछे के द्वार से महाराज तथा महारानी भवन में प्रवेश करते थे।

दिन के ढाई पहर के व्यतीत होते ही लोग आ-आकर अपने-अपने स्थानों पर बैठने लगे थे।

तीसरा प्रहर अभी चल ही रहा था कि भवन भर गया महाराज के राजप्रासाद के अधिकारी प्रजा को विधिपूर्वक बैठा रहे थे, जिससे भेंट देते समय वे लोग मंच के समीप जा सकें।

इसी समय भवन के बाहर हलचल मच गई। मुख्य संरक्षक विक्रमदेव मंच पर से उठा। उसे भीड़ के पीछे पीले वस्त्रों की झलक दिखाई दे रही थी। वह लपककर भवन के बाहर जा पहुंचा। वहां एक बौद्ध भिक्षु और एक भिक्षुणी को खड़े देखकर वह उन्हें भीतर ले आया और मंच के एक ओर प्रतिष्ठित व्यक्तियों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिए नियत स्थानों पर लाकर उसने उनको बिठा दिया।

मंच का एक कक्ष स्त्रियों के लिए नियत था। वहां नगर के प्रतिष्ठित नागरिकों तथा प्रमुख राजकर्मचारियों के घर की स्त्रियां बैठाई जा रही थीं। रामी और कुमकुम आकर उनमें जा बैठीं।

कुमकुम का राजसभा में आने का यह पहला अवसर था। इस कारण वह उत्सुकता से अपने चारों ओर देख रही थी। उसकी दृष्टि राजकुमार राहुल पर गई तो वह उसे मंच पर एक विशिष्ट स्थान पर बैठे देख प्रसन्नता अनुभव करने लगी।

महाप्रभु और भिक्षुणी नंदिनी को अपने स्थान पर बैठे अभी चौथाई घड़ी भी नहीं हुई थी कि प्रतिहार जो चौब लिये मंच पर खुलनेवाले द्वार पर खड़ा था, उच्च स्वर में घोषणा करने लगा—'अवन्तिनरेश महाराज शूरसेन पधार रहे हैं!'

सब उपस्थितगण, जो पीत-वस्त्रधारी भिक्षुओं को आदरपूर्वक बिठाया जाता देख रहे थे, प्रतिहार की घोषणा सुन उठ खड़े हुए। सबका ध्यान भिक्षुओं की ओर से हटकर महाराज की ओर हो गया।

जब तक महाराज और महारानी सिंहासन पर बैठ नहीं गए, सभा में उपस्थित सब लोग खड़े रहे। महाराज और महारानी के बैठने पर सब बैठे तो सभा की कार्यवाही आरम्भ हुई।

सर्वप्रथम राजकवि ने अवन्तिराज की प्रशंसा में एक प्रशस्ति पढ़कर सुनाई। तदनन्तर महामंत्री रामानुज ने महाराज तथा महारानी की ओर से सब प्रजागण का स्वागत किया और सबको होली की बधाई देने लगे। अन्त में वह बौद्ध भिक्षुओं को सम्बोधित कर बोले, "आज हमारी सभा में एक नए मत के प्रवर्तक महात्मा शाक्यमुनि गौतम के अनुयायी पधारे हैं। मैं राज्य की ओर से उनका स्वागत करता हूं और सबके साथ उनके लिए नववर्ष के शुभ और कल्याणकारी होने की कामना करता हूं।...

'महाराज के आदेशानुसार मैं सब प्रजागण को यह आश्वासन देना चाहता हूं कि अवन्ति राज्य में पूर्ण रूप से स्वतन्त्रता है। सबको यह स्वतन्त्रता उस सीमा तक प्राप्त है, जहां तक उनकी स्वतन्त्रता किसी दूसरे नागरिक की स्वतन्त्रता पर आघात नहीं पहुंचाती। यह नियम सबके लिए है और राज्य सबका समान ध्यान रखता है। हम सब महाराज और महारानी के लिए इस नववर्ष के शुभ और कल्याणकारी होने की कामना करते हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इतना कह महामंत्री अपने स्थान से, जहां वह खड़ा था, आगे आ गया। उसने महाराज और महारानी के सम्मुख खड़े हो झुककर उनको प्रणाम किया और उनके चरणों में पड़े स्वर्ण-पात्र में ग्यारह स्वर्णमुद्राएं तथा कुछ पुष्प रख, पीछे हटकर अपने स्थान पर चला गया।

उसके उपरान्त राज्य के अन्य मंत्रिगण बारी-बारी से आए और भेंट चढ़ाते गए। मंत्रियों के उपरान्त नगर और राज्य के धनी सेठ और साहुकार भेंट अर्पण करने लगे। नगर के धनी लोगों में से एक सौ स्वर्ण से कम कोई नहीं दे रहा था, पर इससे अधिक देनेवाले भी थे।

सबके पीछे प्रजा में से लोग आने लगे। वे भी एक स्वर्ण से लेकर पांच-पांच स्वर्ण तक देते थे। कुछ ऐसे भी थे जो रजत ही दे रहे थे। और कुछ जन केवल पुष्पांजलि ही पात्र में रख रहे थे।

जब सब लोग महाराज को भेंट दे चुके तो महाप्रभु नारायण और भिक्षुणी नंदिनी भी सम्मुख आए और पुष्प-मात्र ही भेंट करके आशीर्वाद देने लगे।

इस पर महाराज ने कह दिया, "भगवन्, अभी जाइएगा नहीं। हम आपको अल्पाहार के लिए सादर आमंत्रित करते हैं।"

महाप्रभु केवल मुस्कराए और सिर हिला, निमंत्रण स्वीकार कर अपने स्थान पर लौट गए।

इस भेंट-पूजा के कार्यक्रम को चलते हुए चार घड़ी व्यतीत हो गईं। तब महाराज अपने आसन से उठे और अपनी प्रजा को सम्बोधित कर कहने लगे, "प्रजागण! हमारे देश में होली का पर्व एक पवित्र पर्व माना जाता है। इस दिन सब मित्र और शत्रु मिलकर नया वर्ष प्रसन्नतापूर्वक आरम्भ करते हैं। पहला वैमनस्य भूलकर आगे मित्रता का भाव रखने का संकल्प करते हैं।...

"हमारे राज्य की नीति हमारे महामंत्री ने आपको बताई है। हम विचारों और भावनाओं में स्वतन्त्र हैं। इस स्वतन्त्रता पर जो प्रतिबन्ध है वह भी महामंत्री ने आपको बताया है।...

"राज्य किसी मत-मतान्तर से सम्बन्ध नहीं रखता। सब मत-मतान्तर हमारे देश में स्वतन्त्रतापूर्वक अपना प्रचार करते हैं। राज्य किसी मत पर प्रतिबन्ध नहीं लगाता।...

"हां, राजा का अपना एक मत है। परन्तु, राजा भी अन्य नागरिकों की भांति इस स्वतन्त्रता का भोग करता है। राज्य सबके साथ एक-समान व्यवहार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करता है। हम सबके कल्याण की कामना करते हैं।...

"प्रजा की कठिनाई यह है कि राज्य के सर्वोत्कृष्ट अधिकारी, अर्थात् राजा और एक नागरिक के भीतर एक दीवार है। वह दीवार है राज-कर्मचारियों की। एक सामान्य नागरिक इस दीवार को फांदकर ही राजा तक पहुंच सकता है।

"परन्तु, हमने इस दीवार में प्रवेशद्वार रखे हुए हैं जो सामान्य नागरिक के लिए सदैव खुले रहते हैं।

"हर नागरिक को विदित होना चाहिए कि वे द्वार कहां हैं। कदाचित् किसी को ज्ञान न हो तो हम बताते हैं कि राजप्रासाद के कार्यालय के द्वार पर पात्र लगे हुए हैं। यदि हम तक किसी को पहुंचने में बाधा प्रतीत हो तो वह दो पंक्तियां लिखकर उस पात्र में डाल दे। वह हम तक पहुंच जाती है। तब उस पर हम उचित कार्यवाही करने का यत्न करते हैं।

"हम अपनी प्रजा को सुखी, प्रसन्न और सम्पन्न रखना चाहते हैं। हम उनके इन तीनों अधिकारों की प्राप्ति के लिए सदा यत्नशील रहने का वचन देते हैं।

"आज होली के उपलक्ष्य में राज्य की ओर से सब नागरिकों को जो यहां आये हैं, प्रसाद बाहर मिल रहा है। यह होली के पर्व के उपलक्ष्य में है। यह इस बात का सूचक है कि इस वर्ष भी राज्य के लिए हम सुख-सुविधा और सम्पन्नता की तथा सबके सहयोग की कामना करते हैं।"

महाराज ने अपना वक्तव्य समाप्त किया तो सभा समाप्त हुई। सब उठ खड़े हुए। जब तक महाराज और महारानी भवन से निकल नहीं गये, तब तक वे अपने स्थान पर खड़े रहे। वह पात्र, जिसमें भेंट का धन था, महामंत्री खड़े हुए नागरिक ने उठवाकर राजभवन के भीतर भिजवा दिया। यह धन राजा की अपनी निजी वस्तु मानी जाती थी।

इस उत्सव में मोहन भी महाराज के चरणों में बैठा था, परन्तु रामी और कुमकुम स्त्री-वर्ग में पृथक् बैठी थीं। उत्सव की समाप्ति पर कुमकुम ने देखा कि राजकुमार भवन के द्वार पर खड़ा है। लोग भवन से निकल रहे थे, परन्तु राजकुमार वहीं खड़ा था। जब कुमकुम मां के साथ निकलने लगी तो वह कुमकुम की ओर देखता हुआ खड़ा रहा। उसे देख कुमकुम को स्मरण हो आया कि राजकुमार ने उसकी मांग में रोली भरी थी तथा वह उसे यह कहकर आई थी कि अपनी मां को यह बात बता देगी। साथ ही वह कहता है कि वह उससे वही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्बन्ध रखना चाहता है जो उसका चाचा उसकी चाची से रखता है।

जब मां और बेटी भवन के द्वार से निकलीं तो राजकुमार उनकी ओर मुस्कराता हुआ देख रहा था। रामी को यह सदा से कुछ भिन्न प्रतीत हुआ।

वैसे राजप्रासाद में कई बार उससे भेंट हुई थी, परन्तु वह कभी मुस्कराता नहीं था। इस बार राहुल के मुस्कराने पर उसे विस्मय हुआ। अतः वह भवन से निकल राजप्रासाद की ओर जाती हुई कुमकुम से पूछने लगी, "राजकुमार तुम्हारी ओर देखकर मुस्करा क्यों रहा था?"

"मां! उसने मुझे आज एक बात कही है।"

मां चलती-चलती रुक गयी। लड़की की आंखों में देखते हुए उसने पूछ लिया, "क्या कहा है?"

"मैं राजकुमारी मुक्ता के साथ छत पर खड़ी लोगों को होली का उत्सव मनाते देख रही थी कि राजकुमार वहां आया। रोली से भरे हाथ मेरे मुख पर लगाकर उसने कुछ रोली मेरी मांग में भर दी और पूछने लगा—'जानती हो, यह किसलिए भरी जाती है?'

"मैंने बताया कि मेरे चाचा प्रायः चाची की मांग में रोली भरते हैं। राजकुमार ने कहा—'मैं तुम्हारा वही बनना चाहता हूं जो तुम्हारा चाचा चाची का है।' "

रामी के माथे पर त्योरी चढ़ गयी। उसने पूछा, "तब तुमने क्या कहा?"

"मैंने पूछा था कि अपनी मां से कह दूं? वह कहने लगा, कह सकती हो, परन्तु एक दिन महारानी मेरी मां से बात करेंगी।"

रामी विचार करती हुई चल पड़ी। कुमकुम भी उसके साथ चल पड़ी। रामी विचार कर रही थी कि यह सम्भव नहीं; यह उचित भी नहीं। ये दोनों बहन-भाई हैं। परन्तु इन्हें मना कैसे किया जाये?

रामी महारानी के आगारों में नये वर्ष की शुभ कामना प्रकट करने जा रही थी। उसने कुमकुम से कहा, "मैं महारानी जी के आगार में जा रही हूं। तुम भी चलो, वहां जाकर महारानी जी के चरण स्पर्श करना।"

"मुझे स्मरण है, पिछले वर्ष भी ऐसा ही किया था।"

मां-बेटी, दोनों महारानी दुर्गा के आगार में प्रवेश करने लगीं तो भीतर से मोहन आता मिला। वह इनको देखकर ठहर गया और कहने लगा, "चलो, महारानी जी बुला रही हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''किस लिये?''

''यह तो बताया नहीं। महाराज भी भीतर हैं।''

रामी खड़ी हो विचार करने लगी कि मोहन के द्वारा क्यों बुलाया गया है? वह तो सदा की भांति स्वयं ही शुभ कामना प्रकट करने आ रही थी। उसने आगे बढ़ने से पूर्व पूछा, ''तो कुमकुम को साथ ले चलूं अथवा नहीं?''

''रामी! तुम क्या समझती हो कि मैं महाराज और महारानी जी का मुख्यमंत्री हूं जो वे सब बातें मुझे बताते हैं? जितना महारानी जी ने कहा, उतना कह दिया है।''

रामी कुमकुम को साथ लिये चल पड़ी। मोहन उनके पीछे था।

: 6 :

महारानी के आगार में रामी प्रविष्ट हुई। महाराज और महारानी आगार में खड़े होकर रामी की प्रतीक्षा कर रहे थे।

रामी ने दानों को हाथ जोड़कर प्रणाम किया तो महाराज बोले, ''रामी! सभा में देखा था, दो पीत वस्त्रधारी आये थे?''

''हां महाराज! वे बौद्ध भिक्षु हैं।''

''मैंने उन्हें अल्पहार के लिए आमंत्रित किया है। महारानी जी की इच्छा है कि तुम उस समय वहां उपस्थित रहो। कदाचित् वे कुछ अपने धर्म का उपदेश देने लगें तो तुम उनके धर्म को समझो और उनसे अपने धर्म के बारे में चर्चा करो।''

रामी ने महाराज का आदेश सुना तो उसने उत्तर में कुछ नहीं कहा। इसी आगार में वह पात्र रखा था जिसमें महाराज को प्राप्त हुई भेंट पड़ी थी। महाराज ने महारानी से कहा, ''इसे यहीं पड़ा रहने दो। महाप्रभु से मिलकर जब हम आयेंगे, तब इसका प्रबन्ध करेंगे।''

महारानी के साथ महाराज उस आगार में चले गये जहां महाप्रभु प्रतीक्षा कर रहे थे। रामी और मोहन भी उनके पीछे-पीछे थे।

राजप्रासाद के उस आगार में, जहां अभ्यागतों से भेंट की जाती थी, महाप्रभु और भिक्षुणी नन्दिनी महाराज की प्रतीक्षा में बैठे थे। महाराज तथा महारानी के प्रवेश करने पर महाप्रभु और नन्दिनी उठ खड़े हुए। महाप्रभु ने हाथ उठाकर दोनों को आशीर्वाद दिया। प्रथा के अनुसार महाराज तथा महारानी, दोनों महाप्रभु के सम्मुख बैठ गये। रामी और मोहन पीछे हट खड़े रहे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बैठते ही महारानी ने रामी से कहा, ''सेवकों को कहो कि अल्पाहार ले आएं।''

रामी आगार के बाहर खड़ी सेविकाओं को आवश्यक निर्देश देकर पुनः मोहन के समीप आ खड़ी हुई। महाप्रभु ने वार्तालाप आरम्भ करते हुए कहा, ''महाराज! आपका वक्तव्य प्रथा के विपरीत था।''

''हां, महाप्रभु! परन्तु यह शाश्वत धर्म के अनुसार था। काल की प्रथा शाश्वत धर्म के विपरीत हो रही है।''

''परन्तु महाराज! संसार में कुछ शाश्वत है भी क्या? दीपक की शिखा एक स्थिर आकार तथा विस्तारवाली वस्तु दिखाई देती है, परन्तु इसका यह रूप तो आभास-मात्र है। प्रतिक्षण इसमें तैल के नये कण आते हैं और प्रज्वलित होते हैं। इस प्रकार शिखा को बनानेवाले कण प्रतिक्षण बदल रहे हैं। यही बात समाज की है। समाज एक स्थिर-अविचल रूपवाला दिखाई देता है। वस्तुस्थिति यह है कि इसके विधि-विधान प्रतिक्षण बदल रहे हैं।''

महाराज ने मुस्कराकर कहा, ''भगवन्! समाज नहीं बदलता। ठीक उसी प्रकार, जैसे दीप-शिखा नहीं बदलती। हां, दीप-शिखा के भीतर रहनेवाले परमाणु प्रतिक्षण नये और नये आते हैं और पूर्व में आये परमाणु समाप्त होते जाते हैं।''

''परन्तु महाराज! दीप-शिखा स्वयं तो कुछ है नहीं। इसी प्रकार समाज स्वतः कुछ नही। इसमें उत्पन्न होनेवाले मनुष्य ही समाज हैं। और वे मनुष्य जो कल थे आज नहीं, और जो आज हैं कल नहीं रहेंगे।''

महारानी ने रामी को वार्तालाप में सम्मिलित करने के लिए पूछ लिया, ''रामी देवी! तुम तो कहा करती थीं कि शाश्वत धर्म इस लोक की उत्पत्ति से भी पूर्वकाल से चले आ रहे हैं और प्रलय के उपरान्त भी रहेंगे?''

रामी ने कह दिया, ''महारानी जी! महाप्रभु अनजाने में कुछ भ्रम उत्पन्न कर रहे हैं। दीप-शिखा के परमाणु स्वयं में एक स्थिर पदार्थ हैं। प्रत्येक परमाणु एक स्थिर रूप-रंगयुक्त है। वह ऐसे ही दीप-शिखा में जाता है और बाहर हो जाता है। परमाणु कभी नहीं बदलते, केवल वे दृष्टि से ओझल हो जाते हैं। महाप्रभु का यह कथन तो ठीक है कि दीप-शिखा के परमाणु बदल रहे हैं, परन्तु परमाणु विनष्ट नहीं होते, केवल दृष्टि से ओझल हो जाते हैं। यह सिद्ध भी किया जा सकता है कि वे विनष्ट नहीं होते हैं।''

''कैसे?'' महाप्रभु ने रामी के मुख पर देख पूछा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामी ने कहा, "दीपक की लौ पर शीतल जल से भरा पात्र रखने से पात्र के बाहर कालिख चिपट जाती है और पात्र का जल गर्म हो जाता है।"

महाप्रभु ने रामी से पूछ लिया, "तुम कोई विदुषी प्रतीत होती हो। तुम कौन हो?"

उत्तर महारानी ने दिया, "यह हमारी शिक्षिका हैं।"

"तो यह खड़ी क्यों है?"

'आपके प्रति आदर के भाव में।"

"परन्तु महारानी जी! आप तो बैठी हैं। आप हमारा आदर नहीं करतीं क्या?"

"हम आपका अनादर नहीं कर रहे। आपको आपके मत का प्रतिनिधि मानकर और आपको उचित स्थान पर बैठाकर हम अपने स्थान पर बैठे हैं।"

इस समय सेविकाएं स्वर्ण-पात्रों में मिष्ठान्न और दूध लेकर आ गईं। पात्रों को देख महाप्रभु मुस्कराकर बोले, "ऐसा प्रतीत होता है कि आप हमारे मगध-सम्राट् से अधिक धन-धान्य से युक्त हैं।"

"नहीं भगवन्!" महाराज ने महाप्रभु के अनुमान को अस्वीकार करते हुए कहा, "ये पात्र मगध-नरेश से स्पर्धा के सूचक नहीं हैं, प्रत्युत आपके प्रति आदर में वृद्धि के सूचक हैं।"

"अभिप्राय यह है कि आप हमारा महाराज प्रियदर्शी से भी अधिक आदर करते हैं।"

"यही कह रहा हूं। मैं समझता हूं कि महाराज मगध-नरेश बौद्ध धर्म का तो बहुत मान करते हैं परन्तु आपका, मेरा अभिप्राय है कि महाप्रभु नारायण का कुछ अधिक आदर नहीं करते।"

"तो आपने मुझमें मगध-नरेश की अपेक्षा कुछ अधिक गुण देखे हैं? जब-जब भी मैं महाराज प्रियदर्शी के पास गया हूं, मेरा स्वागत कांसे के पात्रों में भोजन द्वारा ही हुआ है।"

"तब तो बात विचारणीय है। ऐसा प्रतीत होता है कि वह आपसे अपना सामर्थ्य छिपाकर रखते हैं।"

"छिपाने में कारण क्या हो सकता है?"

"उनके मन की भावना बताना कठिन है। सम्भावना यही प्रतीत होती है कि राजाओं को अपनी सामर्थ्य कुछेक के सम्मुख छिपानी आवश्यक समझी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाती है। कदाचित् वह आपके सम्मुख यह प्रकट करना नहीं चाहते कि उनकी सामर्थ्य कितनी है।"

"और आप अपनी सामर्थ्य हमें दर्शाने में हानि नहीं समझते?"

"नहीं, मैं आपको साधु समझता हूं। आपके कुछ भी यहां से उठाकर ले-जाने का मुझे भय नहीं है।"

"यह आप मगध-नरेश का अपमान कर रहे हैं।"

"नहीं भगवन्! यह उनका अपमान नहीं, वरन् स्वयं को उनसे तुच्छ समझ रहा हूं। हां, उनके आपके प्रति व्यवहार में तथा आपके प्रति अपने व्यवहार में तुलना कर रहा हूं।"

महाप्रभु ने बात बदल दी। उन्होंने रामी की ओर देख पूछ लिया, "देवी! आपने कहां शिक्षा प्राप्त की है?"

"रामकुट्ट के पण्डित विश्वेश्वरनाथ जी के चरणों में बैठकर।"

"ओह! पण्डित विश्वेश्वरनाथ एक बार पाटलिपुत्र भी आये थे। यह आज से दो वर्ष पूर्व की बात है। वे बौद्ध मीमांसा के प्रकाण्ड विद्वान् प्रतीत हुए थे। महाराज अशोकवर्द्धन ने उनको सम्मानित भी किया था।"

"भगवन्! मुझे ग्राम छोड़े तथा उनका दर्शन किये ग्यारह वर्ष के लगभग व्यतीत हो चुके हैं।"

"परन्तु देवी! तुम तो उनकी बात का खण्डन कर रही हो?"

"नहीं भगवन्! मैं तो आपकी बात का खण्डन कर रही थी। पण्डितवर भी आपकी बात को सत्य नहीं मानते।"

"परन्तु यह उन्होंने अपने मुखारविन्द से कभी नहीं कहा।"

"यह उनका स्वभाव है। वे शास्त्र का वर्णन तो करते हैं, परंतु बिना पूछे अपनी बात नहीं कहते। उन्होंने मगध-नरेश की अध्यक्षता में प्रस्तुत प्रवचन पढ़ा था और कदाचित् उस समय की बात ही आप बता रहे हैं। एक बार उन्होंने कहा था कि विवाह के अवसर पर श्मशान-घाट की चर्चा नहीं की जाती। दाह-संस्कार के मंत्र विवाह की वेदी पर उच्चारण करने वर्जित हैं।"

इस तुलना को सुन महाप्रभु गम्भीर हो गये। उन्होंने पूछा, "तो वह पण्डितवर क्या यह समझते थे कि महाराज की धर्म-सभा में बैठे कोई लोग दाह-संस्कार करा रहे थे?"

इस पर तो महाराज, महारानी, भिक्षुणी नन्दिनी तथा महाप्रभु हंसने लगे,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परन्तु रामी गम्भीर भाव में बैठी रही।

महाप्रभु ने अपने हंसने का कारण बता दिया। उन्होंने कहा, "देवी! किसका दाह-संस्कार करने वह पाटलिपुत्र गये थे?"

"भगवन्! उनके मन की बात तो मैं जानती नहीं। मैं तो केवल यह कह रही थी कि उन्होंने बौद्ध धर्म की व्याख्या वही की होगी जो प्रथम पिटक में वर्णित है। अपनी वाणी-प्रगल्भता से उन्होंने पिटक में वर्णित बात को और अधिक योग्यता से ही प्रकट किया होगा। इसी पर प्रसन्न हो मगध-नरेश ने उनको सम्मानित किया होगा। परन्तु भगवन्! आपमें से किसी ने उनके मन की बात भी पूछी थी क्या? वे पिटक में वर्णित बात ही कहते रहे होंगे?"

"देवी! तुमने वह पिटक देखी है क्या?"

"जी, भली-भांति उसका अध्ययन किया है।"

"और देवी का इसमें क्या मत है?"

"भगवान् बुद्ध के शिष्यों ने जैसा भगवान् को देखा-समझा, वैसा ही वर्णन किया है।"

"तो वह अद्वितीय नहीं है?"

"अद्वितीय तो हैं, परन्तु श्रेष्ठ नहीं हैं। अद्वितीय का अर्थ है वैसा कोई अन्य न हो। भगवान् तथागत की वाणी इस विचार से अद्वितीय थी, क्योंकि वैसी प्रभावपूर्ण वाणी किसी अन्य आचार्य की नहीं होगी, परन्तु वह सत्य और श्रेष्ठ होगी, कहा नहीं जा सकता।"

"तो उसमें कुछ अनृत भी है?"

"बहुत-कुछ। उदाहरण के रूप में लिखा है कि सब जीव-जन्तुओं पर भगवान् तथागत दया का भाव रखते थे, परन्तु तथ्य यह है कि वे मांस खाते थे। यह जो जन्तुओं के प्रति क्रूरता का भाव ही समझा जाएगा।"

अल्पाहार समाप्त हो चुका था। इस कारण महाराज ने पूछ लिया, "भगवन! हाथ यहीं धोयेंगे क्या?"

महाप्रभु तो रामी के आरोप का उत्तर विचार रहे थे। वह उसे निरुत्तर करना चाहते थे, इस कारण महाराज का कथन उन्होंने सुना नहीं। वह विचारमग्न हो रामी का मुख देख रहे थे।

महाराज ने समझा कि हाथ वहीं धोये जा सकते हैं। अतः उन्होंने मोहन को संकेत कर दिया। मोहन ने द्वार पर खड़ी सेविका को कहा और वह पात्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेकर भीतर आ गई।

महाप्रभु ने हाथ धोये और फिर रामी से पूछ लिया, 'देवी! कहां रहती हो?''

''यहीं राजप्रासाद में महारानी जी ने निवास के लिए एक गृह दे रखा है।''

''हम भिक्षुणी नन्दिनी से कहेंगे कि वह देवी से मिलकर कुछ धर्म की शिक्षा दिया करे।''

''अति अनुग्रह होगा। भगिनी नन्दिनी का सदैव स्वागत होगा।''

महाप्रभु तथा नन्दिनी को राजभवन के द्वार तक छोड़ने महाराज स्वयं गए। मोहन, रामी तथा महारानी आगार में ही खड़े रहे। जब महाप्रभु आगार से बाहर निकल गए तो महारानी ने रामी से पूछ लिया, ''कैसे लगे हैं यह महाप्रभु?''

''सुन्दर रूप, परन्तु एक निकृष्ट आत्मा।''

''क्या निकृष्टता देखी है तुमने?''

''बुद्धि की हीनता। महाप्रभु ने जो कुछ कहा है, वह एक बातें करनेवाले खिलौने से अधिक कुछ भी नहीं था। खिलौना उतना-कुछ ही बोल सकता है जितना बोलने के लिए बनाया जाता है। यही बात इन महाप्रभु की है।''

महारानी हंस पड़ीं।

इसी समय महाराज आ गए।

: 7 :

जब महाराज और महारानी तथा रामी महाप्रभु से भेंट के लिए गए थे तो कुमकुम उसी आगार में ठहर गई थी। वह अभी विचार ही कर रही कि वहां मां की प्रतीक्षा करे अथवा अपने निवास को लौट जाए कि उसी समय राजकुमार राहुल वहां आ गया।

प्रतिवर्ष होली के अवसर पर महाराज को जो भेंट प्राप्त होती थी, वह राजकोष में जमा नहीं की जाती थी। वह महाराज की निजी सम्पत्ति मानी जाती थी। महाराज उसमें से कुछ अपने सेवकों को भेंट में दिया करते थे तथा शेष अपने निजी प्रयोग में लाते थे। इसी भेंट में से राजकुमार राहुल तथा राजकुमारी मुक्ता को भी उनका भाग मिला करता था। राजकुमार इसी लालसा में महारानी को ढूंढता हुआ उस आगार में आया था, परन्तु वहां महाराज और महारानी नहीं थे; प्रत्युत कुमकुम अकेली खड़ी थी। कुमकुम को देख प्रसन्नता अनुभव करता हुआ राहुल पूछने लगा, ''तो तुम यहां हो?''

''हां। महाराज और महारानी उन बौद्ध भिक्षुओं से भेंट करने गए हुए हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो सभा-भवन में पधारे थे। मां भी उनके साथ गई हैं और मैं यहां मां के लौटने की प्रतीक्षा कर रही हूं।"

"तुमने अपनी मां को बताया है जो मैंने तुम्हें कहा था?"

"हां, भैया!"

"देखो, एक बात मैं तुम्हें बता दूं।"

"क्या?"

"जिनमें परस्पर विवाह होनेवाला हो, उनको परस्पर भाई-बहन नहीं कहना चाहिए। वे पति-पत्नी होते हैं।"

कुमकुम को यह बात आज पता चली कि भाई-बहन का पति पत्नी से पृथक सम्बन्ध है। वह राजकुमार का मुख देखती रह गई।

राहुल तो उसका सुन्दर मुख देख मुग्ध हो रहा था। एकाएक उसने कहा, "मेरा चित्त करता है कि मैं तुम्हारा मुख चूम लूं।"

"यह माता-पिता किया करते हैं। तुम भी कर सकते हो। परन्तु भैया..." कहते-कहते कुमकुम चुप कर गई।

राहुल उसके भाव समझकर वोला, "तुम मुझे प्रीतम कह सकती हो।"

"अच्छा तो प्रीतम, तुम मेरा मुख चूम सकते हो।"

राहुल आगे बढ़ा और कुमकुम को आलिंगनबद्ध कर उसने उसका मुख चूम लिया।

कुमकुम ने कहा, "यह अच्छा ही लगा है, परन्तु अब छोड़ो मुझे। तुमने मुझे इतना कसकर पकड़ रखा है कि मेरा दम घुटने लगा है।"

राहुल ने उसे छोड़ दिया। अब दोनों वहीं एक ओर बैठ बातें करने लगे। बातों का विषय आलिंगन, चुम्बन इत्यादि से उत्पन्न मन के भावों का विश्लेषण था। इस प्रकार बातें करते हुए उन्हें दो घड़ी-भर वहां बैठना पड़ा। तब महाराज और महारानी वहां आगार में प्रविष्ट हुए। वे महाप्रभु को विदा करके आ रहे थे। रामी भी उनके साथ थी।

रामी ने राहुल तथा कुमकुम को परस्पर बातों में संलग्न देखा तो गम्भीर हो गई। उसे कुमकुम की वह बात स्मरण हो आई थी जो उसने होली की सभा से लौटती हुए कही थी। वह विचार कर रही थी कि यदि महाराज और महारानी आपत्ति न करें तो यह सम्बन्ध ठीक ही है। उसके गुरु जी ने कहा था कि मनुष्य उत्कर्ष की इच्छा रखता है। यह भी उत्कर्ष ही है। इसमें वह पाप नहीं करता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस कारण वह समझती थी कि वह स्वयं अति सुन्दर होते हुए भी महाराज की प्रेमिका-मात्र ही बन सकी है। यदि कुमकुम पटरानी बन सके तो क्या हानि है!

इस पर भी यह सब महाराज तथा महारानी की इच्छा के विरुद्ध नहीं हो सकता था।

आगार में वह स्वर्ण-पात्र, जिसमें महाराज को भेंट मिली थी, अभी तक पड़ा हुआ था। अब महाराज ने रामी तथा मोहन को कहा कि सब धन गिन दिया जाये।

धन गिना गया। लगभग दस सहस्र स्वर्ण-मुदाएं थीं।

महाराज ने उनमें से दो सहस्र-मुद्रा पृथक् करके महारानी को देते हुए कहा, "यह राजप्रासाद के सेवकों में वितरण के लिए विक्रमदेव को पहुंचा दो।" मोहन को महाराज ने स्वयं तीस स्वर्ण-मुद्राएं दे दीं।

मोहन ने आगे बढ़कर महाराज की जय बोली और मुद्राएं स्वीकार कर लीं।

तदुपरान्त महाराज ने एक सौ स्वर्ण-मुद्राएं राजकुमार राहुल को दे दीं और कुछ विचारकर इतनी ही उन्होंने कुमकुम को दे दीं।

जब महाराज कुमकुम को दे रहे थे तो कुमकुम ने मां के मुख पर देखा।

रामी नीचे भूमि की ओर देख रही थी। कुमकुम ने भेंट स्वीकार कर ली।

अब महाराज ने जो धन शेष बचा था उसे दो भागों में बांट दिया। वह महारानी से कहने लगे, "देवी! यह एक भाग तुम्हारे लिए है तथा दूसरा भाग रामी के लिए।"

इस पर रामी चौंकी। उसने कहा, "इस वर्ष यह नई प्रथा किस लिये? मैं समझती हूं कि यह सब महारानी जी का भाग है।"

"रामी! यह एक भाग तुम्हारे लिए ही है।"

"परन्तु महाराज! ऐसा क्यों?"

"यह इस कारण कि तुमने एक ही वाक्य में महाप्रभु को निरुत्तर कर दिया है।"

"महाराज! यह कोई कारण नहीं कि महारानी जी का भाग किसी अन्य को दे दिया जाये।"

इस पर महारानी ने कह दिया, "परन्तु रामी! मैं अपने भाग का धन किसी को भी दे सकती हूं अथवा नहीं?"

"हां, इस पर भी पात्र-कुपात्र का विचार तो करना ही चाहिये।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हां, यह तो है ही। मैं समझती हूं कि इस विषय पर तुमसे पृथक् में बात करूंगी।"

"महारानी जी! मैंने अपनी कुछ भी वस्तु विक्रय के लिए नहीं रखी हुई। मैं स्वेच्छा से, बिना प्रतिकार के ही अपने गुणों का वितरण करती हूं।"

इस पर महाराज ने कहा, "इस विषय पर हमने महारानी से विचार किया है और इस परिणाम पर पहुंचे हैं कि होली के पर्व पर मिली भेंट हम बिना प्रतिकार के देते हैं। तब तुम्हें इसमें से एक भाग बिना प्रतिकार के क्यों नहीं दे सकते?"

अब महारानी ने कह दिया, "रामी! इस विषय पर हम किसी अन्य समय पर विचार करेंगी। आज कथा नहीं होगी, इस कारण अब तुम जा सकती हो।"

मोहन और रामी चलने लगे तो रामी ने कुमकुम और कुमार को परस्पर बातें करने में संलग्न देखा। रामी ने आवाज दी, "कुमकुम! चलो।"

कुमकुम ने मां से कहा, "मां, राजकुमार मुझे अपने भाग की मुद्राएं देना चाहते हैं।"

"क्यों?" रामी ने कुमार की ओर देख पूछ लिया।

"अभी महाराज ने बताया है कि अपना भाग किसी को भी देने की हमें स्वतन्त्रता है।"

"परन्तु कुमार, पात्र-कुपात्र का विचार तो होना ही चाहिये।"

"मैं कुमकुम को पात्र मानता हूं।"

"राजकुमार! अभी आप अल्प-व्यस्क हैं। आपको अपनी माता जी से पूछकर ही पात्र-कुपात्र का निश्चय करना चाहिये।"

"मुझे विश्वास है कि माता जी मना नहीं करेंगी।"

इस समय तक महाराज और महारानी वहां से जा चुके थे। इस पर रामी ने कुमार को कहा, "मुझे कुमकुम ने उसके प्रति आपकी इच्छा बताई है। मैं समझती हूं कि आप यह बात महारानी जी से कहेंगे तो उचित रहेगा।"

कुमकुम राहुल की एक सौ मुद्राएं लेने वाली थी, परन्तु उसने अब नहीं लीं और कुमार को नमस्कार कर मां के साथ चल पड़ी।

राजकुमार मोहन इत्यादि को जाते हुए देखता ही रह गया। वह समझा था कि कुमकुम की मां का विचार है कि उसके कुमकुम से विवाह को महारानी जी स्वीकार नहीं करेंगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मार्ग में मोहन ने पूछा, "देवी! तुमने इतना धन लेने से न क्यों कर दी है? मैं तो यह विचार करने लगा था कि यदि तुम ले लेतीं तो हम राजप्रासाद से यह कार्य छोड़ गांव में चले जाते। मेरा मन इस सेवा-कार्य से ऊब रहा है।"

"किसलिये?"

"तुम्हारा पद बढ़ता देख राजप्रासाद के सेवक-सेविकाएं तुमसे ईर्ष्या करने लगे हैं। सब, जब भी तुम कहीं आती-जाती हो तो खड़े हो तुम्हारी ओर देखने लगते हैं। तुम्हारी पदोन्नति देख सेविकाएं चकित हो रही हैं।"

"हां, यह बात तो मुझे भी अनुभव हो रही है। सेवक-सेविकाएं जब मैं एक आगार से किसी दूसरे आगार में जाने लगती हूं, तो मार्ग से एक ओर हटकर खड़ी हो जाती हैं। परन्तु यह सब इस कारण है कि महारानी जी मुझसे अब अपने स्वाध्याय में सहायता लेने लगी हैं। आठ वर्ष पूर्व उन्होंने मुझसे सेवा कार्य छुड़ाकर कथा सुननी आरम्भ की थी। अब दो वर्ष से मुझे महाराज ने अपने पुस्तकालय के प्रयोग की सुविधा दे रखी है। इससे मेरा स्वाध्याय, जो गांव से आने पर छूट गया था, पुनः आरम्भ हो गया है। अब मैं ज्ञान में उन्नति कर रही हूं। आज महाराज को इसका प्रत्यक्ष प्रमाण मिला है। परन्तु आपको यह विदित हो कि मैंने अपना कुछ भी विक्रय के लिए नहीं रखा। केवल सेवाकार्य जो महारानी जी लेती हैं, उसी का वेतन लेती हूं। कथा सुनाने का अथवा आजकल उनको उपनिषद् पढ़ाने का मूल्य नहीं लेती।"

"परन्तु अब सेवा-कार्य तो तुम करती नहीं, इस पर भी तुम्हें वेतन तो मिलता ही है?"

"नहीं। मैंने लेने से इन्कार किया हुआ है।"

"परन्तु तुम्हारा वेतन मोदी मुझे दे जाता है।"

"कब से?"

"दो वर्ष हो चुके हैं। प्रतिमास मेरे वेतन के साथ तुम्हारा वेतन भी दे देता है और मैं उससे ले लेता हूं।"

"परन्तु आपने बताया नहीं? दो वर्ष से मेरा वेतन लेकर क्या करते रहे हैं?"

"वह मैं अपने कोष में रख रहा हूं। उसमें इस समय तक दो सहस्र रजत से अधिक संचय हो चुका है।"

"और मोदी क्या वेतन देता है मेरे नाम से?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पचास रजत प्रतिमास।"

इस समय वे अपने निवासगृह में पहुंच गए। मोहन ने कहा, "महाराज रात्रि को होली के उत्सव के उपलक्ष्य में नृत्य करा रहे हैं। वहां मैं भोजनोपरान्त जाऊंगा। उस समय वहां पान लिये हुए उपस्थित रहना मेरा कार्य है। इस कारण सुग्गी से कह दो, भोजन तैयार कर दे।"

रामी अपने पति और कुमकुम को गृह में अपने आगारों की ओर जाता छोड़ स्वयं पाक-शाला की ओर चल पड़ी। वहां सुग्गी एक अन्य दासी के साथ खड़ी बातचीत कर रही थी। रामी ने उस दासी की ओर प्रश्नभरी दृष्टि से देखा तो सुग्गी ने कहा, "घर की सफ़ाई के लिए यह नयी सेविका आयी है। पहली को तो गये दस दिन हो चुके हैं।"

"क्या नाम है तुम्हारा?" रामी ने सेविका की ओर देखकर पूछा।

सेविका ने कहा, "यहां राजप्रासाद में मुझे लूनी कहते हैं।"

"बहुत विचित्र नाम है!"

"हां। परन्तु यह मेरा वह नाम नहीं है जो मेरे माता-पिता ने रखा था।"

"उन्होंने क्या नाम रखा था?"

"सुन्दरी। मुझे पसन्द था, पर राजप्रासाद में सब सेवक-सेविकाएं सुन्दरी कहकर मेरी हंसी उड़ाती थीं। इस कारण मैंने अपना नाम बदलकर लूनी रख लिया है।"

"परन्तु सुन्दरी नाम तो बहुत अच्छा है। हंसी क्यों उड़ाते थे?"

"पंडिताइन, इस कारण कि मैं सुन्दर हूं नहीं। यह तो आप भी देख सकती हैं।"

"हां, परन्तु मैं तो तुम्हें सुन्दरी ही कहूंगी।"

लूनी ने कुछ उत्तर नहीं दिया। इस पर रामी ने बात समाप्त कर सुग्गी को कहा, "कुमकुम के पिता महाराज की सेवा में शीघ्र जाना चाहते हैं। भोजन तैयार होना चाहिये।"

"वह तैयार है। आप आज्ञा दें तो अभी परोस दूं।"

"ठीक है। हम शीघ्र ही भोजन के लिए आ रहे हैं।"

जब मोहन महाराज की सेवा में गया तो रामी ने कुमकुम को बुला लिया! वह अपने आगार में बैठी गुरु जी से पिछले दिन पढ़ा पाठ स्मरण कर रही थी। वह आयी तो रामी ने पूछा, "क्या कर रही हो?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पाणिनी स्मरण कर रही थी।"

"कितना स्मरण कर चुकी हो?"

"पांचवां अध्याय चल रहा है।"

"और कौन-सा ग्रन्थ चल रहा है?"

"आजकल रामायण का पाठ हो रहा है।"

"देखो, मैंने तुम्हें यह बताने के लिए बुलाया है कि तुम्हें राजकुमार से एकान्त में नहीं मिलना चाहिये।

"क्यों?"

"वह महारानी की आज्ञा के बिना तुमसे विवाह नहीं कर सकता। यदि महारानी जी ने स्वीकृति दे दी, तो भी विवाह से पूर्व लड़के-लड़कियों को एकान्त में नहीं मिलना चाहिये।"

"क्यों?"

"इस कारण कि यह पाप होता है।"

कुमकुम विस्मय में मां का मुख देखने लगी। फिर बोली, "मां! आज उसने मेरा मुख चूमा है।"

"ओह! कब?"

"जब तुम महाराज और महारानी के साथ उन भिक्षुओं से मिलने गयी थीं।"

"और तुमने उसे चूमने दिया?"

"क्या नहीं चूमने देती?"

"नहीं।"

"पर तुम और पिता जी तो मुख चूम लेते हो?"

"पर हम तो तुम्हारे माता-पिता हैं, और वह तुम्हारा पति बनना चाहता है। अच्छा, देखो, फिर कभी ऐसा करना चाहे तो कहना—महारानी जी से कहो कि तुम्हारी मां से बात करे।"

"परन्तु मां! मैंने जब तुम्हें बताया था कि उसने मेरी मांग में रोली भरी है और कहा है कि मुझसे विवाह करेगा, तब तो तुमने मना नहीं किया था।"

"तब मैं विचार ही कर रही थी कि किस प्रकार मना करूं। तुम्हें भोजनोपरान्त समझानेवाली थी।"

"तो अब क्या होगा?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इसके लिए तुम्हें प्रायश्चित्त करना पड़ेगा, नहीं तो यह पाप भी तुम्हारे सिर लगा रहेगा।"

"क्या प्रायश्चित्त करना होगा?"

"मेरा विचार है कि कुछ दिन व्रत रखना पड़ेगा और भगवद्-भजन करना पड़ेगा।"

कुमकुम मां का मुख देखती रह गयी।

रामी ने उसे कहा, "फिर कभी राजकुमार मिले तो उसे कहना कि महारानी जी को कहकर मुझे आज्ञा दिलायें कि मैं तुम्हारा विवाह उससे कर दूं। इस पर भी कुमकुम, अभी तो तुम्हारा विवाह हो नहीं सकता। तुम बहुत छोटी हो।"

"तो मां! कब हो सकेगा?"

"जब तुम कम-से-कम सोलह वर्ष की हो जाओगी।"

कुमकुम मौन खड़ी रह गयी।

मां ने कह दिया, "अभी जाओ, अपना पाठ स्मरण करो।"

कुमकुम गयी तो रामी इस नये झंझट के विषय में विचार करने लगी।

वह अभी विचार कर ही रही थी कि महारानी जी की भेजी एक दासी आयी। उसके साथ एक प्रतिहार था जो स्वर्ण-मुद्राओं की गठरी उठाये हुए था।

रामी ने दासी की ओर देख पूछा, "यह क्या है?"

"महारानी जी ने कहा है कि आप अभी इसे रखें। कल प्रातः अल्पाहार के उपरान्त और कथा से पूर्व वह इसके विषय में विचार करेंगी। उन्होंने कहा है कि इसे अभी उनकी धरोहर के रूप में रखा जाये।"

रामी ने प्रतिहार को कह दिया, "इसे भीतर मेरे पलंग के नीचे रख दो।"

महारानी से रामी की बात अगले दिन कथा से पूर्व हुई। कथा छान्दोग्य-उपनिषद् की हुआ करती थी। रामी पढ़ती थी और फिर उस पर व्याख्यान भी करती थी। आज के दिन कथा तथा पाठ से पूर्व ही महारानी ने कहा, "रामी, मेरी एक वस्तु कल रात तुम्हारे पास पहुंची थी?"

"हां महारानी जी! मीना कहती थी कि आप उसके विषय में आज इस समय आज्ञा करनेवाली हैं।"

"आज्ञा नहीं। देखो रामी! हमारे यहां यह रीति है कि कथा करनेवाले आचार्य को कथा-समाप्ति पर भेंट-पूजा दी जाती है। पिछले आठ वर्षों से तुमने पांच ग्रन्थों की कथा की है, और मैंने कुछ भी भेंट नहीं दी। कल मुझे स्मरण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आया था और मैं उसके अनुरूप तुम्हें देना चाहती थी। मैंने ही महाराज से कहा था कि होली की भेंट का मेरे इस वर्ष का आधा धन कथावाचक को भेंट में दे दिया जाये। महाराज ने यही किया था। यह कथावाचक को भेंट है। इससे तुम्हें इन्कार नहीं करना चाहिये। इसका सम्बन्ध तुम्हारी किसी सेवा से नहीं है। यह तुम्हारे आचार्य के आसन पर बैठकर उपदेश देने के लिए तुम्हारी पूजा है।''

''परन्तु महारानी जी, जहां से मैंने यह विद्या सीखी थी, मैंने उनको कुछ नहीं दिया।''

''यह इसलिये कि उस समय तुम्हारे पास देने के लिए कुछ नहीं था। आज ईश्वर की कृपा से तुम्हारे पास कुछ हो गया है। इसमें से जितना उचित समझो, अपने गुरु जी को दे दो।''

रामी यह सुझाव सुनकर विचारगग्न हो गयी। कुछ विचार कर उसने कहा, ''महारानी जी! भेजने से कार्य नहीं बनेगा। यदि मुझे एक सप्ताह का अवकाश दें तो मैं स्वयं उनको भेंट देने के लिए चली जाऊं।''

''हां, जा सकती हो। कब जाना चाहती हो?''

''आज्ञा करें तो कल ही जाना चाहूंगी।''

''ठीक है, जा सकती हो।''

रामी ने एक बात और कह दी, ''महारानी जी! मुझे यह ज्ञात हुआ है कि आप पचास रजत प्रतिमास मेरे वेतन का मेरे पति को दिलवा रही हैं। पर यह मैं नहीं चाहती।''

''कारण?''

''मैं अब आपकी सेवा नहीं करती, इस कारण वेतन की अधिकारिणी नहीं हूं। कुमकुम के पिता कहते हैं कि मोदी उनको पचास रजत प्रतिमास देता है। मैं इस कार्य को, जो यहां आकर करती हूं, सेवा कार्य समझकर नहीं करती।''

''ठीक है। मना कर दूंगी। मैं तो तुम्हें पिछले दो वर्ष से अपना सेवक नहीं मानती। तुम तो मुझे ज्ञान देती हो।''

''एक बात और निवेदन करना चाहती हूं। मुझे ज्ञात हुआ है कि राजकुमार राहुल कुमकुम को अपनी पत्नी की दृष्टि से देखने लगा है। उसने अपने मन की भावना कुमकुम से भी कही है। मैं समझती हूं कि यह ठीक नहीं हो रहा है।''

''मुझे राहुल ने बताया है। कदाचित् तुमने कल राहुल को कहा है कि वह मुझे कहे और यदि मैं स्वीकार करूंगी तो विवाह होगा।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हां। वह उत्सव की भेंट में से मिली एक सौ स्वर्ण-मुद्राएं कुमकुम को दे रहा था। कुमकुम ने मुझे बताया और मैंने राजकुमार से पता किया तो वह बोला कि मैं कुमकुम को अपनी पटरानी बनाना चाहता हूं। मैंने कहा था कि वह जो कुछ भी इस दिशा में करे, आपसे पूछकर करे। मेरा अभिप्राय था कि आप और महाराज भी इसे पसन्द नहीं क़रेंगे।"

"मुझे कुमकुम रानी बनने के योग्य प्रतीत होती है। मेरा विचार है कि महाराज इसे नापसन्द नहीं करेंगे।"

"परन्तु आप तो जानती हैं," रामी ने आंखें नीची किये कह दिया, "कि वे बहन-भाई हैं।"

"यह लोक-रीति के विपरीत तो है, परन्तु न तो कोई यह विश्वास से कह सकता है कि वे बहन-भाई हैं, न ही राजकुमार और राजकुमारी यह जानते हैं। इससे यह समाज की प्रथा भंग नहीं मानी जा सकती।"

"इसपर भी यह तो है। मुझे यह ठीक प्रतीत नहीं हुआ। इसी कारण मैंने राजकुमार को आपके पास भेजा था।"

"मैं महाराज से इस विषय में राय करूंगी। मैं इसे उचित ही मानती हूं। एक ब्राह्मण की कन्या से एक राजकुमार का विवाह हो जाये तो हानि नहीं।"

"परन्तु मैं ब्राह्मण हूं क्या?"

"तुमने स्वयं ही एक दिन बताया था कि तुम पंडित विश्वेश्वरनाथ जी की सन्तान हो।"

"परन्तु हूं तो एक कहारिन की लड़की।"

"नहीं। तुम जन्म से भी ब्राह्मण हो। सन्तान बीज पर जाती है।"

"यही तो कह रही हूं कि राजकुमार और कुमकुम एक ही बीज की उपज हैं।"

महारानी समझती थी कि बहन-भाई में विवाह पर प्रतिबंध समाज का है, परन्तु रामी और रामी की लड़की जो समाज के प्रतिबंधों को तोड़कर इस संसार में आयी हैं। इस कारण समाज का प्रतिबंध उन पर नहीं लग सकता।

परन्तु रामी इस विषय में मन में योजना बनाती हुई घर गयी। उस समय मोहन भी मध्याह्न का भोजन करने आया हुआ था। उसने रामी के आने पर प्रसन्नता प्रकट करते हुए कहा, "मैं समझता हूं कि तुमने कुछ तो बुद्धिमत्ता की बात की है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या की है?"

"तुमने महाराज का भेजा धन स्वीकार कर लिया है।"

रामी समझ गयी कि वह पलंग के नीचे रखा धन देख आया है। इस कारण उसने पूछ लिया, "तो आपने पलंग के नीचे रखी गठरी देख ली है?"

"हां। मगर वहां से वह चोरी हो सकती है। उसे मोदी के पास जमा करा देना चाहिये। मेरा अभिप्राय है कि जिसके पास मैं अपने वेतन से बचा धन जमा कराता हूं।"

"परन्तु वह धन मेरा नहीं है।"

"तो वह किसका है?"

"मैंने अपने गुरु जी को दक्षिणा नहीं दी थी। महारानी जी ने कहा है कि यह पाप है मुझ पर। इस कारण उन्होंने यह धन गुरु जी को पहुंचाने के लिए दिया है।"

मोहन का मुख उतर गया।

इस पर रामी ने कहा, "महारानी जी ने एक सप्ताह की छुट्टी भी दी है, जिससे मैं यह दक्षिणा की राशि पंडित जी को दे आऊं।"

"वे इतने धन से क्या करेंगे? उस गठरी में पांच सहस्र मुद्राएं हैं। इसका अभिप्राय है कि एक लाख रजत। गांव में रहते हुए उनको इतने धन की क्या आवश्यकता है?"

"देखूंगी। यह धन गुरु जी के लिए है। मैं उनको पहुंचा दूंगी। वह इसका जो चाहे करें। मुझे इसमें न तो कुछ कहना है, न ही कुछ विचार करना है।"

: 8 :

महाप्रभु नारायण और नंदिनी विहार को लौट पड़े। जब वे राजप्रासाद से निकले तो उन्होंने देखा कि सब सेवक-सेविकाएं उनको आदरपूर्वक झुक-झुककर नमस्कार कर रहे हैं। इससे महाप्रभु बहुत प्रसन्नता अनुभव कर रहे थे।

विहार क्षिप्रा नदी के तट पर एक विशाल अहाते में था। विहार का फाटक ऐसा बनाया गया था कि उसमें से हाथी सुगमता से अपनी पीठ पर सवारियां लेकर निकल जायें।

फाटक के भीतर एक बड़ा-सा खुला मैदान था। इसके एक ओर पाकशाला और भोजनालय थे और उसके साथ ही एक विशाल प्रार्थनाभवन था। इस भवन के साथ ही महाप्रभु का आगार था। मैदान के दूसरी ओर भिक्षु तथा भिक्षुणियों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिए आगार थे। ये आगार पुरुषों के लिए, स्त्रियों के आगारों से पृथक् थे। इस पर भी दोनों के बीच आने-जाने की किसी प्रकार की बाधा नहीं थी।

नंदिनी महाप्रभु नारायण की शिष्या थी। यह विहार के सब सेवक-सेविकाओं को विदित था। इस विषय में एक बार एक अन्य भिक्षुणी कल्याणी ने भी कहा था, ''भगवन्! नंदिनी आपके आगार में प्रायः देखी जाती है।'

'तो क्या हुआ?'

'आपके उदाहरण से कुछ भिक्षु मुझे परेशान करने लगे हैं।'

'यह तुम्हारे अपने विचार करने की बात है। कोई तुमको विवश नहीं कर सकता।'

'परन्तु भगवन्! इस प्रकार की छूट से मन चंचल हो उठता है।'

'देखो कल्याणी! यह शरीर का धर्म है। जब इसका आवेग हो तो इससे छुट्टी पा लेनी चाहिये। इसके उपरान्त शान्ति से उपासना में चित्त लगा रहता है। यदि इस आवेग को रोकने का यत्न किया जाय तो चित्त में अशान्ति बनी रहती है और मनुष्य उपासना में चित्त नहीं लगा सकता।'

कल्याणी अधेड़ अवस्था की स्त्री थी और गृहस्थ-जीवन में वह चार बच्चों की मां थी। विधवा होने पर संसार से विरक्त होकर वह कौशाम्बी के विहार में दीक्षा लेकर प्रविष्ट हो गई। कौशाम्बी विहार के महाप्रभु एक वृद्ध व्यक्ति थे और वह उनके व्यवहार तथा नियंत्रण से चित्त में शान्ति अनुभव करती हुई रह रही थी।

जब उज्जयिनी में विहार का भवन तैयार हो गया, तो गया की बौद्ध महासमिति ने भिन्न-भिन्न स्थानों के भिक्षु तथा भिक्षुणियों को वहां भेज दिया। कल्याणी को भी आज्ञा मिली तो वह उज्जयिनी विहार में आ गयी। यहां कल्याणी और नंदिनी को एक ही आगार मिला था। जब से आयी थी, वह देख रही थी कि कभी-कभी रात्रि के समय नंदिनी अपने आगार से लापता होती है। एक दिन उसने पूछ लिया, 'नंदिनी! रात कहां थी?'

'महाप्रभु उपासना का ढंग सिखा रहे थे।'

जब यह सप्ताह में एक-दो बार होने लगा तो कल्याणी ने महाप्रभु से इस विषय में चर्चा छेड़ दी।

अपने प्रश्न के उत्तर में महाप्रभु की व्याख्या सुनकर वह भौंचक्की होकर उनका मुख देखती रह गयी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसी रात उसने अपने आगार की साथिन नंदिनी से कहा, 'नंदिनी, विहार के प्राणी तुम्हारी चर्चा करते हैं।'

'कौन करता है?'

'मैं ही करती हूं। तुम्हें चाहिए कि रात्रि को अपने आगार में सोया करो।'

नंदिनी हंस पड़ी। वह बोली, 'भगिनी! मैं इस समय इक्कीस वर्ष की आयु की स्वस्थ युवती हूं। जब मन चंचल हो जाता है तो मैं इसे नियंत्रण में रख नहीं सकती। इस कारण उसे शान्त करने चली जाती हूं। मन का आवेग जब शान्त हो जाता है तो मैं भगवान् तथागत की शरण में चली जाती हूं और अपने चित्त को स्थिर करने का यत्न करती हूं।

कल्याणी नंदिनी का मुख देखती रह गयी। यह उसके विहार में आने के कुछ ही दिन पीछे की बात थी। अब उसे विहार में आये हुए छः मास हो चुके थे।

होली की सभा में महाप्रभु नंदिनी को साथ ले राजप्रासाद में गये। वहां अप्रत्याशित बात यह हुई कि महाराज शूरसेन ने दोनों को अल्पाहार के लिए आमंत्रित किया।

इस समय रामी और महाप्रभु के मध्य हुए वार्तालाप से नंदिनी अति प्रभावित हुई। वह देख रही थी कि महाप्रभु उस स्त्री के प्रश्नों का उत्तर नहीं दे सके। इस कारण जब दोनों रथ पर सवार हो विहार को जाने लगे तो मार्ग में नंदिनी ने पूछ लिया, "भगवन्! यह महारानी जी की शिक्षिका बहुत ही योग्य प्रतीत हुई है।"

"हां! उसका गुरु बहुत ही योग्य विद्वान् है। जब हम अभी गया में ही थे तो रामकुट्टी के पंडित विश्वेश्वरनाथ जी की बहुत महिमा सुनी थी। जब तक वे पाटलिपुत्र में रहे, महाराज स्वयं इनके उपदेश सुनने आते रहते थे। सुना है कि इनको पाटलिपुत्र से विदा करते समय महाराज ने पांच सौ स्वर्ण-मुद्रा भेंट में दी थीं।"

इस सूचना ने नंदिनी के मन में और भी अधिक उत्सुकता उत्पन्न कर दी। वह रामी के विचार में निमग्न चुपचाप रथ में बैठी रही।

विहार में जाकर महाप्रभु ने नंदिनी को कहा, "मैं चाहता हूं कि तुम कल महारानी की इस अध्यापिका से मिलने जाओ और उसको प्रेरणा दो कि वह भगवान् बुद्ध की शरण में आ जाये।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परन्तु भगवन्! इतनी विदुषी स्त्री को मैं कैसे प्रेरणा दे सकूंगी?"

"उसके मन में भगवान् तथागत के लिए भक्ति उत्पन्न करने का यत्न करो। यदि ऐसी विदुषी स्त्री भिक्षुणी बनके विहार में आ जाये तो बौद्ध धर्म की महिमा बढ़ जायेगी।"

नंदिनी ने टेढ़ी दृष्टि से महाप्रभु की ओर देखकर कह दिया, "और यदि इतनी सुन्दर स्त्री भिक्षुणी बन जाये तो महाराज प्रियदर्शी देवानांप्रिय नंगे पांव चल इस विहार की यात्रा करने चले आयेंगे।"

महाप्रभु हंस पड़ा।

इस पर नंदिनी ने गम्भीर हो कह दिया, "साथ ही आप मुझे भूल जायेंगे।"

"नंदिनी! तुमसे मेरा सम्बन्ध अति पुराना है। वह छूट नहीं सकता।"

महाप्रभु नारायण और नंदिनी दोनों गया-विहार से उज्जयिनी आये थे।

नंदिनी अभी बालिका ही थी कि भिक्षुणी बन गयी थी। वह माता-पिता-विहीन होने से विहार में आ पहुंची थी।

गया में स्त्रियों और पुरुषों के विहार एक ही अहाते में होते हुए भी पृथक्-पृथक् थे। भिक्षुणियों के कक्ष की अध्यक्षा एक स्त्री थी। इस कारण पन्द्रह वर्ष की आयु तक नंदिनी अध्यक्षा के सुप्रबन्ध के कारण अपनी ध्यान-उपासना में लीन रही। परन्तु एक दिन अध्यक्षा ने उसे कुछ धन लेने के लिए विहार के कोषाध्यक्ष के पास भेजा तो वहां भदन्त नारायण से सामना हो गया। नारायण तक्षशिला से शिक्षा ग्रहण कर गया में आकर भिक्षु बन गया था। उसके एक शिक्षित भिक्षु होने के कारण उससे कोषाध्यक्ष का काम लिया जाता था।

नंदिनी ने अध्यक्षा की मांग कोषाध्यक्ष के सम्मुख रखीं तो नारायण इस कुमारी को देख विचलित हो गया। उसने पूछ लिया, "भगिनी, क्या नाम है?"

"नंदिनी।"

"बहुत सुन्दर नाम है।"

नंदिनी धन ले शीघ्र लौट जाना चाहती थी, परन्तु नारायण उसे रोक रखना चाहता था। वह पूछने लगा, "कहां से विहार में आयी हो?"

"यहीं गया से।"

"क्यों आयी हो?"

"मेरे माता-पिता का देहान्त हुआ तो निस्सहाय हो विहार में आयी थी। यहां भगिनी सरोजिनी ने मुझ पर कृपा करके मुझे ये पीत वस्त्र दिये हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कुछ पढ़ी हो?"

"कुछ-कुछ। मेरे पिता विद्वान् ब्राह्मण थे। शेष शिक्षा यहां मिली है।"

"देखो, मैं तुम्हें यहां कार्यालय में काम देना चाहता हूं। करोगी?"

"क्या लाभ होगा?"

"यह तो बताया नहीं जा सकता। जब कार्य करोगी तो स्वयं यहां का लाभ समझ में आने लगेगा।"

नंदिनी कार्यालय में कार्य करने लगी तो परिणाम यह हुआ कि दोनों में सम्बन्ध बना और वह भदन्त नारायण से लगाव अनुभव करने लगी।

कुछ ही समय में उसे गर्भ ठहर गया। इस पर नारायण ने उसके लिए विहार से बाहर प्रसव का प्रबन्ध कर दिया। नंदिनी को बच्चे का मुख देखने नहीं दिया गया। दो मास विहार से बाहर रह वह पुनः विहार को लौट आयी।

पहले कुछ काल तक वह पुनः गर्भ-स्थिति से भयभीत, भदन्त नारायण से एकान्तवास करने से डरती रही, परन्तु यह संयम कुछ अधिक काल तक नहीं रह सका और इसको भी अब तीन वर्ष से अधिक हो चुके थे। जब नारायण को उज्जयिनी भेजा गया तो वह भी वहीं आ गयी।

आज महाप्रभु को रामी बहुत ही सुन्दर दिखाई देने लगी थी और वह किसी-न-किसी प्रकार उसे भिक्षुणी बनाने की योजना पर विचार करने लगा था। इस कार्य का प्रथम पग वह यह समझा था कि नंदिनी और रामी में सम्बन्ध बनाया जाये। अतः अगले दिन नंदिनी उज्जयिनी के राजप्रासाद को चल पड़ी।

राजप्रासाद के द्वार पर पहुंच जब उसने द्वारपाल से कहा कि वह रामी देवी से मिलने आयी है तो द्वारपाल ने उसे वहीं रोक लिया और प्रतिहार द्वारा भीतर रामी के निवास-स्थान पर सूचना भेज दी कि एक भिक्षुणी उसे मिलना चाहती है।

आधी घड़ी में प्रतिहार लौटा और भिक्षुणी को लेकर रामी के द्वार पर जा पहुंचा। रामी उस समय राजप्रासाद से लौटकर अपने पति से स्वर्ण-मुद्राओं के विषय में बातचीत कर रही थी। नंदिनी के आने पर रामी ने द्वार तक आकर भिक्षुणी का स्वागत किया। वह उसे भीतर बैठकघर में ले आयी।

मोहन उठकर अपने आगार में चला गया।

रामी ने उसे बैठाकर कहा, "भागिनी ने बहुत कृपा की है जो आज पुनः दर्शन दिये हैं। बताओ, भिक्षा लोगी अथवा भोजन करोगी?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"दोनों। वैसे तो अल्पाहार लेकर विहार से चली थी, परन्तु दो कोस की यात्रा से पुनः भूख लग गयी है।"

रामी ने सुग्गी को भोजन लाने की आज्ञा दे दी और पुनः पूछने लगी, "विहार में कितने प्राणी हैं?"

"पाचकों और सेवकों को छोड़कर भिक्षु-भिक्षुणियां इस समय बीस हैं। परन्तु सुना है कुछ और भी शीघ्र यहां आ रहे हैं।"

"वहां आपकी दिनचर्या क्या होती है?"

"प्रायः सूर्योदय से दो मुहूर्त पूर्व उठने का घंटा बज जाता है। हम सब उठकर, स्नानादि में लग जाते हैं। एक मुहूर्त में इस कार्य से अवकाश प्राप्त कर हम उपासना-भवन में एकत्रित हो जाते हैं। वहां उपासना होती है। यह एक मुहूर्त तक चलती रहती है।"

"तदनन्तर?"

"हम सब मिलकर स्वर-सहित अपना महामंत्र-गान करते हैं—बुद्धं शरणं गच्छामि। धम्मं शरणं गच्छामि। संघं शरणं गच्छामि।' इसके उपरान्त महाप्रभु का उपदेश होता है। तब हम अल्पाहार लेते हैं। प्रायः जौ-बाजरे का दलिया मिलता है। इसमें ही साग-भाजी मिली होती है। तदुपरान्त हम अपना-अपना कमण्डलु ले भिक्षा के लिए चल देते हैं। तीसरे प्रहर हम लौट आते हैं और अपनी भिक्षा महाप्रभु को दिखाते हैं। धन तो सब विहार के कोष में चला जाता है और खाने-पीने वाले पदार्थ कुछ महाप्रभु ले लेते हैं और कुछ भिक्षा लानेवाले भिक्षुओं को मिल जाता है। सायंकाल पुनः उपासना होती है और फिर हम विश्राम करते हैं। उस समय विहारांगण में एक वृहत् अग्निशिखा जलती रहती है। उस समय सब दीपक बुझा दिये जाते हैं।"

रामी ने मुस्कराते हुए पूछ लिया, "यह विख्यात है कि आप उस समय अपनी वासना-तृप्ति करती हैं, क्या यह सत्य है?"

नन्दिनी रामी का मुख देखती रह गई।

रामी मुस्करा रही थी।

कुछ विचारकर नन्दिनी ने कहा, "यह तो जैसे अन्य तृष्णाओं, भूख प्यास इत्यादि की हम तृप्ति करते हैं, वैसे ही आवश्यकता पर यह भी होता है। जैसे हम लोग भूख-प्यास मिटाकर उसे भूल जाते हैं, वैसे ही इस तृष्णा को भी भूल जाते हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हां, यह बात आपकी गृहस्थों से विशेष है। गृहस्थी वासना-तृप्ति के सुख को स्मरण कर आनन्द अनुभव करते हैं और आप उसे भूल जाते हैं। भगिनी! आप पर तो महाप्रभु मुग्ध प्रतीत होते हैं।"

नन्दिनी इस कथन पर विस्मय में रामी का मुख देखती रह गई। एकाएक उसने पूछ लिया, "तो देवी जी को यह महाप्रभु के मुख पर लिखा दिखाई दिया है?"

"हां, और मुझे ऐसा समझ में आया है कि भगिनी उस सुख को प्राप्त भी कर चुकी हैं। वह सुख बार-बार प्राप्त करने की इच्छा भी रखती हैं।"

नन्दिनी ने पूछा, "तो यह भी मेरे मुख पर लिखा दिखाई देता है?"

"हां, भगिनी!"

"बहुत विचित्र!"

"इसमें वैचित्र्य कुछ भी नहीं हैं। जो देखने का अभ्यास रखता है, वह दूसरे के मुख पर लिखा पढ़ लेता है। देखो भगिनी, यह मनुष्य-जन्म अति दुर्लभ है। इसको तुम व्यर्थ ही नाली में बहा रही हो। अपने पितरों के किये प्रयास से प्राप्त इस मनुष्य-जन्म से लाभ उठाओ।"

नन्दिनी उसका मुख देखती रह गई। वह इसका अर्थ नहीं समझी। इस पर रामी ने उसे मानव-धर्म के सम्बन्ध में बताया। उसने नन्दिनी के सामने मानव-जन्म की उत्कृष्टता कां भी वर्णन किया।

यह बातचीत आरम्भ हुई तो भोजन के काल तक चलती रही। भोजनोपरान्त भी चली। नन्दिनी इस स्त्री की वाक्-प्रगल्भता पर मुग्ध होकर सुनती रही।

एकाएक रामी ने कहा, "भगिनी ने बहुत दूर जाना है और कुछ भिक्षा नहीं मिली।" इतना कह उसने कुमकुम को पुकारा। जब कुमकुम आई तो रामी ने उससे कहा, "जाओ, अपने पिता से एक रजत भिक्षा देने के लिए ले आओ।"

कुमकुम गई तो नन्दिनी ने पूछा, "यह आपकी लड़की है?"

"हां।"

"बहुत सुन्दर है।"

"भगवान् की कृपा है।"

"इस सुख से हम वंचित हैं।"

"किस सुख से?"

"सन्तान-सुख से। मेरे एक सन्तान हो चुकी है, परन्तु मुझे उसके दर्शन भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं करने दिये गए। मैंने उसका रोना ही सुना था और बस।''

''बहुत बुरा किया था। यह किसने किया था?''

''मैं उनको नहीं जानती। जब गर्भ ठहर गया और विहार की अध्यक्षा को विदित हुआ तो उसने मुझे नगर में एक स्त्री के घर पर भेज दिया। मैं वहां पर तीन मास तक रही—एक मास प्रसव के उपरान्त तक। उस स्त्री के अतिरिक्त और किसी के दर्शन नहीं हुए और विहार आने के उपरान्त पुनः उस स्त्री के पास जाने का अवसर नहीं बना।''

''यह गृहस्थ का दुःख और सुख है। तुमको कष्ट तो हुआ, परन्तु उस कष्ट के परिणामस्वरूप मिलनेवाला सन्तान-सुख नहीं भोगने दिया गया।''

इस समय कुमकुम आई और उसने एक रजत नन्दिनी के कमण्डलु में डाल दिया। नन्दिनी ने कुमकुम से पूछ लिया, ''बेटी, कुछ पढ़ती हो?''

''हां! पाणिनि-व्याकरण और साथ ही वाल्मीकि रामायण।''

''क्या वयस् है तुम्हारी?''

''दस वर्ष पार कर चुकी हूं।''

नन्दिनी ने उठते हुए रामी से कहा, ''आज का दिन जीवन में विस्मरण नहीं कर सकूंगी।''

''क्या विशिष्टता देखी है आज के दिन में?''

''आपका मधुर ज्ञान-युक्त उपदेश। इच्छा होती है कि कल पुनः आऊं।''

''मैं कल नहीं मिलूंगी। अपने गांव को जा रही हूं।''

''कब तक लौटेंगी?''

''एक सप्ताह के उपरान्त।''

''इतने दिन आपके कथन पर मनन करती रहूंगी।''

''और मैं समझती हूं कि तुम एक सप्ताह उपरान्त मुझे पुनः उपदेश देने आ सकती हो।''

''मैं क्या उपदेश दे सकूंगी?''

''मनुष्य-योनि से किसी ऊपर की योनि में जाने की योग्यता प्राप्त करने का उपदेश।''

''मां!'' नन्दिनी के चले जाने पर कुमकुम ने पूछ लिया, ''यह किसलिए आई थी?''

''मुझे उपदेश देने।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या उपदेश दे गई है?"

"कुछ नहीं। वह तो मेरी बात सुनती रही है। स्वयं कुछ नहीं बोली। मैं समझती हूं कि जो कुछ सुन गई है, उस पर चितन करेगी तो इसका कल्याण होगा।"

: 9 :

नन्दिनी विहार को जाती हुई विचार कर रही थी कि रामी देवी ने उसे विदा करते हुए जो कहा है कि वह एक सप्ताह उपरान्त आकर उसे अपनी शिक्षा का दूसरा पाठ पढ़ाए, क्या यह उसने हंसी नहीं की? नन्दिनी अनुभव कर रही थी कि वह तो कुछ भी उस देवी को बता नहीं सकी। वास्तव में वह उससे कई बातें सीखकर आई है।

वह उन बातों को स्मरण कर रही थी, जो उसने आज रामी से सुनी थीं। रामी ने कहा था कि दस इन्द्रियों के अतिरिक्त तीन अन्य कारण शरीर में हैं। एक आभ्यन्तरिक इन्द्रिय है। इन ग्यारह इन्द्रियों के अतिरिक्त दो अन्य कारण हैं। एक है मन और दूसरी है बुद्धि। इन कारणों से वह अपने इष्टदेव को जानती है।

वह मन में विचार कर रही थी कि क्या ये कारण उसके शरीर में भी हैं? रामी ने कहा था कि हैं। परन्तु वह उनका प्रयोग न करने से उनको शिथिल किये हुए है।

रामी ने एक विशेष बात यह कही थी कि महामुनि तथागत भगवान् बुद्ध ने स्वयं कोई पुस्तक नहीं लिखी। उनके शिष्यों ने ही उनके वचनों का संकलन किया है। साथ ही वचनों का यह संग्रह तथागत के निर्वाण के उपरान्त किया था। संग्रह में वह कोई बात भूल भी सकते थे अथवा अपने मन से जोड़ भी सकते थे।

रामी ने यह कहा भी था कि जैसे वह अथवा नन्दिनी मां के पेट में बनी और उत्पन्न हुई हैं, वैसे ही तथागत के शिष्य भी उत्पन्न हुए थे। वे इतने ही विश्वास-योग्य हो सकते हैं, जितने हम हैं।

अन्य भी कई बातें हुई थीं और ये बातें पूर्ण मार्ग-भर नन्दिनी के मस्तिष्क में चक्कर लगाती रही।

जब वह विहार में पहुंची तो सीधे महाप्रभु नारायण के आगार में पहुंची।

"आओ नन्दिनी! आज किस ओर गई थीं?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"महाप्रभु! आपकी अनुमति से राजप्रासाद में भगिनी रामी देवी के निवास पर।"

"तो कुछ बात हुई उससे?"

"हां भगवन्! बहुत बातें हुई हैं। परन्तु जैसे कल आप उसकी बात का उत्तर नहीं दे सके थे, वैसे ही मेरे साथ भी हुआ है। उसे सीख देने के स्थान मैं कुछ उससे ही सीखकर आई हूं।"

"सत्य?"

"हां महाप्रभु! वह जो कहती है, सत्य ही कहती है कि भगवान् तथागत के शिष्यों ने जो बातें उनके विषय में कही हैं, वे तब तक विश्वास-योग्य नहीं हो सकती, जब तक उनकी मन और बुद्धि द्वारा परीक्षा न कर ली जाए।"

"किसकी बुद्धि से? बुद्धियां सबकी भिन्न-भिन्न होती हैं। इस कारण बुद्धि द्वारा परीक्षा का परिणाम भी भिन्न-भिन्न होगा।"

"परन्तु महाप्रभु! वह बातें ऐसे करती है कि उसका उत्तर देते नहीं बनता। आप भी तो उसकी किसी बात पर ठहर नहीं सके थे!"

"मैं तो महाराज के सम्मुख उसका अनादर नहीं करना चाहता था। वह महारानी की अध्यापिका है। अवश्य भारी वेतन लेती होगी। यदि मैं उसे पराजित और निरुत्तर कर देता तो उसका कार्य वहां से समाप्त हो सकता था। यह मैं नहीं चाहता था।"

"उसकी एक लड़की है, नाम है कुमकुम। बहुत ही प्यारी है। बातें भी मीठी-मीठी करती है।"

"तो उसे वहां से भगा लाओ और बौद्ध भिक्षुणी बना दो।"

"कहना सुगम है, परन्तु करना बहुत कठिन है। वह लड़की अपनी मां से कम बुद्धिमती नहीं है। मुझे देख पूछने लगी, 'यह आपको पीलिया का रोग कब से हुआ है?"

"मैं उसका अर्थ नहीं समझी। इस पर हंसते हुए उसने अपनी बात का अर्थ बता दिया। उसने पूछा—'मेरा अभिप्राय है कि आप कब से भिक्षुणी बनी हैं और ये पीले वस्त्र कब से पहने हैं?"

"मैंने पूछा—'तो तुम इसे रोग कहती हो?"

"इस पर वह कहने लगी—'रोग नहीं तो और क्या है? यह भी तो रोग ही होता है!'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं मौन हो गई। मुझे अपना वह काल स्मरण आ गया था जब मैंने सर्वप्रथम आपके पास समर्पण किया था। इस कारण मैं उत्तर न दे सकी।

"बातों-ही-बातों में उसने एक बार पूछा—'आपके पति कौन हैं?'

"मैंने कहा—'मैंने विवाह नहीं किया।'

"इस पर वह पूछने लगी—'तो बिना विवाह के ही मां के घर से चली आई थीं?'

"अब बताइए, मैं क्या उत्तर देती? उसकी मां के उसे मना करने पर मेरी जान छूटी।...

"परन्तु मां भिन्न प्रकार की स्त्री है। वह कहने लगी कि पति-पत्नी में यौन-सम्बन्ध से कुछ अधिक ही सम्बन्ध होता है; शरीर के अतिरिक्त मन और बुद्धि का सम्बन्ध भी हो सकता है।"

"हां, जैसे मेरा और तुम्हारा है।"

नन्दिनी हंस पड़ी। हंसते हुए बोली, "आप तो मुझे गया में ही छोड़कर आ रहे थे। यह तो मैं ही आपके साथ चली आई हूं।"

नारायण हंस पड़ा। हंसते हुए बोला, "अभिप्राय यह कि तुम इस कार्य के लिए अयोग्य सिद्ध हुई हो। यह अब मैं ही करूंगा।"

"ठीक है, करिए। वैसे मैं वहां वचन दे चुकी हूं कि एक सप्ताह उपरान्त उसे अपने यहां का द्वितीय पाठ देने आऊंगी।"

"तो तुमने उसे कुछ पाठ दिया भी है?"

"मैं तो उसे कुछ भी बता नहीं सकी। मैं समझती हूं कि उसने यह व्यंग ही किया होगा। वास्तव में उसके कहने का अभिप्राय यह था कि मैं उससे दूसरा पाठ पढ़ने के लिए एक सप्ताह उपरान्त पहुंचूं।"

"तो तुम मत जाना।"

"क्यों?"

"ऐसा प्रतीत होता है कि तुम उस सुन्दर स्त्री के सम्मोहन में फंस गई हो।"

नन्दिनी मुस्कराकर चुप रही। उसने महाप्रभु को प्रणाम किया और अपने आगार में चली गई।

उसके आगार की साथिन कल्याणी वहां बैठी उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। कल्याणी नन्दिनी से लगभग पन्द्रह-बीस वर्ष बड़ी थी। नन्दिनी आगार में पहुंची तो कल्याणी ने पूछ लिया, "तो मिल आई हो रामी देवी से?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हां भगिनी! वहां जाने का मुझे खेद नहीं है, यद्यपि महाप्रभु का उद्देश्य पूरा होता दिखाई नहीं देता। महाप्रभु ने कहा था कि मैं उसे विहार में आने का निमंत्रण दूं। यह मैं तभी दे सकती थी यदि वह हमारे विषय में कुछ जानने की इच्छा प्रकट करती। उसने तो मुझे बातों में ऐसा लगा लिया जैसे एक अनुभवी स्त्री किसी बालिका को बहलाती है।"

"महाप्रभु कह रहे थे कि यदि वह विहार में आकर भिक्षुणी बन जाए तो बौद्ध धर्म के प्रसार में भारी सुविधा होगी।"

नन्दिनी ने मुस्कराकर कहा, "हां, और आज महाप्रभु कह रहे थे कि उसकी लड़की को भगाकर यहां ले आऊं। उसे हम भिक्षुणी बना लेंगे।"

कल्याणी ने गम्भीर होकर कहा, "देखो नन्दिनी! हमें सावधानी से कार्य करना चाहिए। यह मगध राज्य नहीं है। यहां के राज्य-नियम भी भिन्न हैं। यदि यहां, विहार में कोई अल्पवयस्क लड़का अथवा लड़की बिना माता-पिता की स्वीकृति से विहार में प्रविष्ट हो गई तो महाराज हमें पकड़कर बन्दीगृह में भी डाल सकते हैं। यहां यह अपराध है।"

"मैंने महाप्रभु से यह कहा था। उनका कहना है कि वह इतने मूर्ख नहीं कि कोई बात बलपूर्वक करें। उनका कथन था कि बौद्ध धर्म की उपासनाओं में इतना आकर्षण होता है कि लोग कीट-पतंगों की भांति स्वेच्छा से उसकी ज्वाला में जलने के लिए चले आते हैं।"

कीट-पतंगो के जलने की बात सुन कल्याणी हंस पड़ी। हंसते हुए बोली, "महाप्रभु सत्य कहते हैं। दीपक का प्रकाश कीट-पतंगों को सत्य ही आकर्षित कर सकता है। उस प्रकाश के साथ अग्नि भी है जो जलाकर भस्म कर देती है। यह तो प्रकाश-शिखा की लपेट में आने पर अनुभव होता है कि इसमें कितना कष्ट है, परन्तु तब तक उससे बाहर निकलने की सामर्थ्य नहीं रहती। पंख तो सबसे पहले जलते हैं। अब तो मैं भी पंख-जले पतंगे की भांति निस्सहाय हो गई हूं और इस दीप-शिखा की अग्नि में जल-भुन रही हूं।"

"तो भगिनी! क्या तुम बहुत कष्ट में हो?" नन्दिनी ने पूछ लिया।

"विहार का वातावरण देखकर चित्त में सदैव अशान्ति बनी रहती है। उपासना तो दूर, अपने नित्य-कर्मों में भी रुचि नहीं रहती। अब तो मुझे अपने भिक्षुणी बनने पर भी पश्चात्ताप-सा होने लगा है।"

"कल्याण भगिनी! मैं कभी-कभी विचार करती हूं कि तुम सम्पन्न परिवार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की होकर तथा बाल-बच्चों की मां होकर यहां आई क्यों?''

''मैं अब विचार करती हूं तो समझ नहीं सकती कि क्यों घर छोड़कर चली आयी थी। मेरा बड़ा पुत्र शिव मुझे मना करता था, परन्तु उस समय मेरे मस्तिष्क में एक उन्माद भरा था और महाप्रभु के कथानुसार एक पतंगे की भांति प्रकाश को देख इस ज्वाला में कूद पड़ी थी। अब तो पंख जल चुके हैं। उड़कर इस ज्वाला से बाहर निकल नहीं सकती।''

नन्दिनी गम्भीर भाव में लीन अपने तख्तपोश पर जाकर लेट गई। विचारों के बहाव की व्याकुलता से आँख लगने पर ही शान्ति प्राप्त कर सकी।

उसकी नींद तब खुली जब सायंकाल की उपासना का घण्टा बजा। वह उठी। हाथ-मुंह धोकर वह उपासना-भवन में जा पहुंची।

वहां 'बुद्धं शरणं गच्छामि, धम्मं शरणं गच्छामि, संघं शरणं गच्छामि' का जाप होने लगा तो नन्दिनी के मुख से इस जाप का अन्तिम पद नहीं निकल सका। 'संघं शरणं गच्छामि' का उच्चारण होने पर वह मन में विचार करने लगी कि किस संघ की शरण में जाऊं? वही, जिसमें एक महाप्रभु नारायण है जो प्रत्येक सुन्दर स्त्री को भिक्षुणी बनाने की लालसा करने लगता है?

इस विचार के उपरान्त वह उपासना में चित्त लगा ही नहीं सकी। वह मन में इतनी आकुलता का अनुभव करने लगी कि वहां से उठकर भाग जाने का विचार करने लगी।

कल्याणी ने कहा था कि उसके पंख जल चुके हैं और अब वह इस जलती ज्वाला से निकल नहीं सकती। परन्तु नन्दिनी अनुभव करती थी कि उसके पंख अभी हैं और वह चाहे तो उड़ सकती है।

इस पर भी उड़कर जाएगी कहां? किस घोंसले में उसे आश्रय मिलेगा? रह-रहकर उसके मन में रामी देवी का विचार आता था। रामी महारानी जी की शिक्षिका है और यदि रामी महारानी जी से कह दे तो उसे आश्रय मिल सकता है। एक बात का उसने निश्चय कर लिया था कि विहार छोड़ने के विषय में वह महाप्रभु, अथवा कल्याणी, अथवा किसी से भी बात नही करेगी। अतः वह मन-ही-मन रामी से बात करने की योजना बनाने लगी।

उपासना के उपरान्त वह अपने आगार की ओर चली तो कल्याणी उसके साथ-साथ चलती हुई पूछने लगी, ''भगिनी नन्दिनी! आज बहुत गम्भीर विचार में मग्न प्रतीत होती हो?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हां भगिनी! तुमने एक बहुत ही भयंकर बात कही है। उसका बोझ मस्तिष्क पर भारी पड़ रहा है।"

"किस बात के विषय में कह रही हो?"

"यही कि जिस प्रकाश-शिखा को देख तुम उसमें कूदी थीं, वह जलती ज्वाला निकली और उसमें तुम्हारे पंख जल चुके हैं। अब तुम चाहती हुई भी उसमें से उड़कर निकल नहीं सकतीं।"

इस समय दोनों अपने आगार में पहुंच गईं। आगार में प्रवेश कर कल्याणी ने पूछा, "तुम्हें भी कुछ कष्ट होने लगा है क्या? तुम तो अभी बीस-इक्कीस वर्ष की युवती ही हो।"

"यही तो कठिनाई है। मुझे महाप्रभु की संगत कष्टदायक तथा नीरस प्रतीत नहीं होती। मैं तो कुछ अन्य ही बात का विचार कर रही थी।"

"किस बात का?"

"महाप्रभु ने आज कहा है कि मैं रामी को विहार में आने का निमंत्रण क्यों नहीं दे सकी?"

"वह नहीं आयेगी। मेरा यह निश्चित मत है।"

"महाप्रभु कह रहे थे कि एक बार उसे विहार में ले आओ तो बौद्ध उपासना के आकर्षण में फंसकर वह अवश्य भिक्षुणी बन जायेगी। जब मैंने बताया कि उसकी एक लड़की है और वह उससे भी अधिक सुन्दर है, तो कहने लगे कि उसे भगाकर एक बार विहार में ले आओ, हम उसे भिक्षुणी बना लेंगे; इतनी सुन्दर लड़की राजप्रासाद में रहती हुई वेश्या ही बनेगी; वह किसी सम्भ्रान्त परिवार में नहीं जा सकती। बस, इसी बात पर विचार कर रही थी कि मूल्य लेकर वासना-तृप्ति करना तथा बिना मूल्य लिये ही कार्य करना, दोनों में कौन-सा कार्य ठीक है? महाप्रभु कहते थे कि स्त्री-पुरुष-सम्बन्ध स्वाभाविक है, परन्तु सम्बन्ध के उपरान्त उसे स्मरण नहीं रखना चाहिये। उसे भूलना ही वास्तविक वैराग्य है।...

"मैं विचार करती हूं कि यह भूला जाता ही नहीं। जब भी यह स्मरण आता है, मन चंचल हो उठता है। कई दिनों तक चंचल रहता है। इस पर भी जब इसका अवसर आता है, तो रहा नहीं जाता।"

नन्दिनी ने अपने मन में बन रहा संकल्प प्रकट नहीं किया। उसने विषय बदलकर पूछ लिया, "भगिनी! कुछ खाने को है? भूख लग गई है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्यों, आज रामी देवी ने भिक्षा नहीं दी?"

"उसने भोजन कराया था। साथ में एक रजत दिया था। रजत महाप्रभु ने रख लिया है, परन्तु खाने के लिए कुछ दिया नहीं।"

"तो महाप्रभु से मांग लो। उनके पास अवश्य कुछ होगा।"

"नहीं, आज उनसे मांगने का चित्त नहीं करता।"

"तो मैं ला देती हूं।"

"किससे मांगकर लाओगी?"

"मैं महाप्रभु के पास तो जाऊंगी नहीं। भदन्त वात्स्यायन के पास जाकर पूछती हूं। यदि कुछ मिल गया तो अभी लेकर आ जाऊंगी।"

कल्याणी अपना कमण्डलु उठाकर वात्स्यायन के आगार को चल दी। वह अभी गई ही थी कि महाप्रभु आये और आगार के द्वार पर खड़े हो पुकारने लगे, "भगिनी नन्दिनी!"

नन्दिनी उठकर बाहर आ गई। महाप्रभु ने कहा, "आज तुम्हारी भिक्षा का थैला खाली था। इस समय क्या लोगी?"

नन्दिनी ने बताया नहीं कि कल्याणी उसके लिए कुछ लेने गई है। उसने कह दिया, "भगवन्! आज प्रातः रामी देवी ने इतना खिलाया है कि अभी तक भूख नहीं लगी।"

"अच्छा, तुम मेरे आगार में जाओ। हम दोनों मिलकर उपासना करेंगे।"

"आज उपासना को चित्त नहीं कर रहा।"

"चित्त क्यों नहीं करता?"

इस समय सौमित्र तथा कल्याणी दोनों वहां आ पहुंचे। महाप्रभु ने उनको देख कह दिया, "देखो, उपासना के समय पहुंच जाना। मैं प्रतीक्षा करूंगा।"

महाप्रभु गये तो सौमित्र ने कहा, "भगिनी के लिए मैं अपने आगार में भोजन का निमंत्रण देने आया था। परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि मुझसे अधिक प्रभावी निमंत्रण भगिनी को प्राप्त हो गया है।"

नन्दिनी ने आगार के बाहर ही खड़े-खड़े कह दिया, "भदन्त! आज उपासना को चित्त नहीं कर रहा। इसी कारण भगिनी कल्याणी से कुछ खाने को मांगा था। थोड़ा-बहुत खाकर विश्राम करूंगी।"

इस पर कल्याणी ने कहा, "भदन्त वात्स्यायन, महाप्रभु के कार्य पर कहीं व्यस्त हैं। वहां सौमित्र थे। ये तुम्हें स्वयं ही निमंत्रण देने चले आये हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं भदन्त! कुछ अधिक भूख नहीं है। किंचितमात्र थी। उसे सहन कर लूंगी।"

इस पर कल्याणी ने कहा, "कुछ तो मैं अपने कमण्डलु में ले ही आई हूं।"

"तब ठीक है। मेरे लिए पर्याप्त होगा। अच्छा भदन्त! अब तुम भी विश्राम करो। संघं शरणं गच्छामि।"

सौमित्र लौट गया और कल्याणी तथा नन्दिनी आगार के भीतर चली गईं।

: 10 :

अगले दिन प्रातः उपासना के अनन्तर, अल्पाहार के उपरान्त नन्दिनी अपना कमण्डलु ले भिक्षा के लिए जाने लगी तो महाप्रभु ने पूछ लिया, "आज किस ओर जा रही हो, नन्दिनी?"

"भगवन्! आज पुनः राजप्रासाद की ओर जा रही हूं।"

"भिक्षा के लिए?"

"हां! विचार है कि महारानी जी से भिक्षा मांगूंगी। देखें, क्या देती हैं। साथ ही मन में विचार आया है कि उनकी अध्यापिका के स्थान उन्हें उपदेश दूंगी। कदाचित् वह अपनी अध्यापिका की अपेक्षा सुगमता से समझ सकें।"

"जाओ और सबको उपासनाओं में सम्मिलित होने का निमंत्रण दो। एक बार भी कोई प्रतिष्ठित व्यक्ति हमारी उपासना में सम्मिलित होता है तो हमारी धर्म की आधी जय हो जाती है। साथ ही उस व्यक्ति पर भी इसका भारी प्रभाव पड़ता है।"

"यत्न करूंगी, भगवन्!"

"भगवान् तथागत तुम्हारा कल्याण करेंगे!"

इस प्रकार स्वीकृति प्राप्त कर नन्दिनी नगर की ओर चल पड़ी। उसको राजप्रासाद के द्वार तक पहुंचने में चार घड़ी का समय लगा। द्वार पर उससे पूछा गया, "किससे मिलना है, देवी?"

नन्दिनी का विचार था महारानी से मिलने का, परन्तु उसके मुख से निकल गया, "रामी देवी से।"

"क्या नाम है?"

"नन्दिनी। मैं कल भी आई थी।"

मार्ग-भर नन्दिनी रामी की बातों पर विचार करती आई थी, इस कारण जब द्वारपाल ने पूछा कि किससे मिलना है तो उसके मुख से उसका ही नाम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निकल गया। एक बार नाम निकलने के उपरान्त उसने महारानी का नाम नहीं लिया।

उसे ध्यान आया कि रामी देवी तो आज अपने गांव को जा रही थीं। कदाचित् अब तक चली भी गई होंगी। अतः यह विचारकर कि जब प्रतिहार यह सूचना लायेगा कि रामी देवी नहीं हैं, तो वह महारानी से भेंट के लिए कह देगी। अतः वह उत्तर आने की प्रतिक्षा करने लगी।

लगभग आधी घड़ी के उपरान्त प्रतिहार सूचना लाया, "आओ भगिनी! भीतर आ जाओ। रामी देवी प्रतीक्षा कर रही हैं।"

नन्दिनी प्रतिहार के साथ चल पड़ी। रामी के गृह के द्वार पर एक रथ खड़ा था। नन्दिनी समझ गई कि वह गांव जाने के लिए तैयार है। वह घर में प्रवेश करने लगी तो भीतर से रामी का पति मोहन एक भारी-सी गठरी उठाये हुए बाहर आया। नन्दिनी ने उसके मुख पर देखा तो मोहन ने मुस्कराकर कहा, "आप भीतर चलिये। देवी आपकी प्रतीक्षा कर रही हैं।"

नन्दिनी बैठक में पहुंची तो रामी बाहर जाने के वस्त्र पहने तैयार बैठी थी। रामी ने उठकर नन्दिनी का स्वागत करते हुए कहा, "आओ भगिनी! आज किस कार्य से आई हो? क्या महाप्रभु ने पुनः कोई सन्देश दिया है मेरे लिए?"

नन्दिनी ने कहा, "मैं महारानी जी से भिक्षा मांगने आई थी, परन्तु द्वार पर आकर जब द्वारपाल ने पूछा किससे मिलना है तो मेरे मुख से निकल गया, रामी देवी से। जब प्रतिहार आपको देखने चला आया तो मुझे ध्यान आया कि आप तो गांव को चली गई होंगी। परन्तु प्रतिहार ने आकर कहा कि आप भीतर हैं। अतः आपके पास चली आई हूं।"

"मैं जाने के लिए तैयार हूं। कुमकुम की प्रतीक्षा कर रही थी। वह अभी पाठशाला से लौटी है और जाने के लिए वस्त्र धारण कर रही है।"

"तो आप एक सप्ताह उपरान्त लौटेंगी?"

"हां!"

"चित्त तो मेरा भी करता है कि यहां के देहात में घूमने चलूं।"

रामी हंस पड़ी। हंसकर बोली, "परन्तु तुम जा नहीं सकतीं। तुम स्वतंत्र नहीं हो।"

"क्यों? क्या बन्धन है?"

"यह पीले वस्त्रों का और साथ ही विचारों का।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो दोनों में कुछ अन्तर है?"

"हां, एक तो संघ की दासता का सूचक है और दूसरा पूर्वाग्रहों का।"

"ऐसी कोई बात नहीं है। मेरे लिए समस्या यह है कि कहां जाऊं?"

"चलने को तो मेरे साथ चल सकती हो और वहां रह भी सकोगी जहां मैं रहूंगी, परन्तु मैं जानती हूं कि कठिनाई यह नहीं है। कठिनाई किसी अन्य बात की है।"

इस समय कुमकुम आ गई। रामी कुछ और कहना चाहती थी जो वह कुमकुम के सम्मुख कह नहीं सकी।

नन्दिनी समझी कि वह उसके महाप्रभु के साथ सम्बन्ध के विषय में जान गई है और उसी के विषय में कुछ कहना चाहती है, परन्तु लड़की के आ जाने के कारण कह नहीं सकी।

रामी इस विषय में कुछ नहीं कह रही थी। वह तो संस्कारों की बात कहनेवाली थी कि उसके संस्कार उसे विहार छोड़ने नहीं देंगे और बिना विहार छोड़े वह स्वेच्छा से विचार नहीं कर सकेगी।

कुमकुम आई तो रामी ने विषय-परिवर्तन कर कह दिया, "भगिनी! तुम महारानी से मिलने जा रही हो, अन्यथा मैं तुम्हें अपने रथ पर साथ ले जाती और मार्ग में तुम्हारे विहार पर तुम्हें छोड़ देती। हम उस ओर ही जा रहे हैं।"

"यह रथ भाड़े पर लिया है क्या? इसके अश्व अत्यन्त हृष्ट-पुष्ट हैं और रथ भी बड़ा है।"

"यह भाड़े का नहीं है। यह राज्य का है। महारानी जी की कृपा से गांव जाने के लिए हमें मिल गया है।"

"तो चलिये, मुझे विहार पर छोड़ दीजियेगा।"

"महारानी जी से नहीं मिलोगी?"

"उनसे कल मिल लूंगी।"

"तो चलो।"

तीनों बाहर आकर रथ पर बैठ गईं। मोहन रथ के समीप ही खड़ा था। रामी ने कहा, "मैं आज से ठीक आठवें दिन मध्याह्नोपरान्त पहुंच जाऊंगी।" इसके उपरान्त उसने तथा कुमकुम ने उसे प्रणाम किया और रथवाहक को रथ चलाने का संकेत कर दिया।

मार्ग में बातें करने के विचार से नन्दिनी ने कुमकुम से पूछ लिया, "तो तुम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी गांव को चल रही हो?"

उत्तर रामी ने दिया, "मैं इसे इस विचार से ले-जा रही हूं कि यदि गुरु जी ने स्वीकार किया तो इसे उनके पास विद्याध्ययन के लिए छोड़ आऊंगी।"

"तो कुमकुम गांव में शिक्षा प्राप्त करेगी?"

अब कुमकुम ने कहा, "मैंने गुरु जी के दर्शन कभी नहीं किये। मां उनकी बहुत प्रशंसा करती रहती हैं। इस कारण उनके दर्शन की मेरी उत्कट अभिलाषा थी। मां जब जाने लगीं तो मैंने साथ ले-जाने के लिए कहा। अब मां कह रही हैं कि गुरु जी से मुझे भी शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए।"

"परन्तु तुम तो नगर में रहती हो। गांव में तुम्हें अच्छा लगेगा क्या?"

"मौसी!" कुमकुम ने नन्दिनी के मुख पर देखते हुए कहा, "तुम कभी किसी गांव में रही हो?"

"नहीं।"

"मैं भी नहीं रही। मां कहती हैं कि यहां से वहां बहुत अच्छा होगा।"

"क्या अच्छा होगा?"

रथ धीरे-धीरे राजप्रासाद के प्रांगण को पार कर मुख्य द्वार से बाहर निकल आया था। बाहर राजमार्ग पर भी आवागमन पर्याप्त था, इस कारण रथ वहां भी मन्द गति से ही चल रहा था। नन्दिनी बातें तो कुमकुम से कर रही थी, परन्तु उज्जयिनी से भाग जाने के साधनों पर विचार कर रही थी। पिछले दिन रामी से मिलने के उपरान्त जो विचार उसके मन में उठे थे, वे सब एक-साथ उसको घेर रहे थे। इस कारण कुमकुम से बातें भी ऊपरी मन से हो रही थीं। इस समय कुमकुम ने कह दिया, "मां! मौसी को गांव ले चलो न!"

"किसलिए?" रामी ने पूछा।

"यही तो यह कह रही हैं।"

"कहां कह रही हैं।"

"मां, इनके मुख पर देखो न!"

इस पर रामी ने नन्दिनी के मुख पर देखा। अवसर देख नन्दिनी ने पूछ लिया, "देवी! यदि मैं यह कहूं कि मुझे अपने साथ ले चलो, तो ले चलोगी।"

"क्या वयस् है तुम्हारी?" रामी ने पूछा।

"किसलिए पूछ रही हो?"

"हमारे राज्य का नियम है कि बीस वर्ष से ऊपर की आयु के लड़के अथवा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
लड़कियां स्वतन्त्र होते हैं। उससे पूर्व वे अपने माता-पिता अथवा संरक्षकों के अधीन रहते हैं। इक्कीस वर्ष के उपरान्त लड़कियां अपने पति अथवा बान्धवों से कुछ-एक बंधनों से बंधी होती हैं और वृद्धावस्था में वे पुत्र-पौत्रों के प्रति कर्त्तव्य से।"

नन्दिनी विस्मय में रामी का मुख देखती रह गई। कुछ विचारकर बोली, "मैं जब विहार में आई थी तो केवल आठ-दस वर्ष की थी। मुझे ज्ञात नहीं कि किस वयस् की थी। इतना स्मरण है कि बारह वर्ष हो चुके हैं।"

वैसे तो तुम व्यस्क हो चुकी हो, परन्तु इसका प्रमाण कुछ नहीं है।"

"तो क्या मैं वृद्धा होने पर भी व्यस्क नहीं हो सकूंगी?"

"कहते हैं कि कुछ लक्षण होते हैं, जिनसे मुनष्य की आयु का अनुमान लगाया जा सकता है।"

"वे कौन-से लक्षण होते हैं, जिनसे मनुष्य की आयु का अनुमान लगाया जा सकता है।"

"मैं नहीं जानती। हां, गुरु जी से पता करूंगी।"

"देवी! मैं विहार से भाग जाने की इच्छा कर रही हूं।"

"क्यों?"

नन्दिनी ने रथवाहक की ओर संकेत कर कहा, "कारण यहां नहीं बता सकती।"

इस समय रथ राजपथ पर चल रहा था। अभी उसकी गति तीव्र नहीं हुई थी, कारण यह कि मार्ग पर आने-जानेवाले लोग पर्याप्त संख्या में थे।

नन्दिनी की बात सुन रामी भी गम्भीर हो गई। वह विचार करने लगी कि नन्दिनी के भागने में वह उसकी सहायता करे अथवा नहीं?

कुमकुम भी मन में विचार कर रही थी। उसे कुछ ऐसा लग रहा था मानो भिक्षुणी उनके साथ जाना चाहती है, परन्तु कोई है जो उसे जाने से रोक रहा है। इस समय रथ की गति तीव्र हो गई। पथ पर भीड़ भी कम हो गई थी।

कुमकुम को रथ की गति तीव्र होने पर आनन्द आने लगा था। उसने रथवाहक को कहा, "और तीव्र करो! और तीव्र करो!"

रामी ने पूछ लिया, "क्यों?"

कुमकुम हंस पड़ी। हंसते हुए बोली, "मौसी भागना चाहती है न! हम उसे भगा ले जायेंगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"भागना? कहां से भागी जा रही है?"

कुमकुम ने मौसी को सम्बोधित कर पूछ लिया, "मौसी! कहां से भागना चाहती हो?"

नन्दिनी हंस पड़ी। कुमकुम के प्रश्न के उत्तर में उसने कहा, "जहां मैं रहती हूं, वहां से।"

"और तुम रहती कहां हो?"

"क्षिप्रा-तट पर बौद्ध विहार में। वहां का नियम है कि विहार के महाप्रभु से अनुमति प्राप्त किये बिना कोई विहार से बाहर नहीं जा सकता।"

"परन्तु तुम तो विहार से बाहर हो न?" कुमकुम का विचार था कि एक बार विहार के बाहर आ जाने से वह नियमों से मुक्त है।

अब रामी ने नन्दिनी से पूछ लिया, "भगिनी! तुम्हें विहार में प्रवेश किसने कराया था?"

"किसी ने भी नहीं। पहले पिता का देहान्त हुआ। उसके कुछ दिन उपरान्त ही मां का देहान्त हो गया। मां के दाह-संस्कार के उपरान्त एक स्त्री, जो स्वयं को मेरी मौसी कहती थी, मुझे अपने गृह पर ले आना चाहती थी; परन्तु अगली प्रातः उसके उठने से पूर्व ही मैं घर से निकल विहार को चली गई। उससे पूर्व मैं एक बार विहार में अपनी मां के साथ जाकर उपासना में सम्मिलित हो चुकी थी।...

"मगध में बौद्ध विहारों का भारी प्रभाव है। राज्य उनका संरक्षण करता है। विहारों का कोई विरोध नहीं कर सकता। एक बार उसमें प्रवेश लेने के उपरान्त कोई वहां से बाहर निकल नहीं सकता और कोई बौद्ध भिक्षुओं को वापस गृहस्थ में ले नहीं सकता। अतः एक बार जब मैं विहार में आ गई तो फिर क्या हुआ, मुझे पता नहीं चला। कदाचित् मौसी ने पूछताछ की हो। मैं तो विहार से तभी बाहर निकली जब मुझे इस योग्य समझा गया कि मैं भिक्षा मांगने के लिए जा सकती हूं।"

रामी ने कह दिया, "मैं तो यह समझती हूं कि विहार के अधिकारी तुम्हारे अभिभावक नहीं हैं।"

"कैसे?"

"मेरा विचार है कि तुम अभिभावक-विहीन हो अर्थात् तुम स्वतंत्र हो।"

अब पथ जनशून्य-सा था। इस कारण रथ पूर्ण गति से भागा जा रहा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुमकुम ने रथ की गति देख नन्दिनी से कहा, "हम मौसी का अपहरण कर उसे अपने साथ ले जाएंगे।"

"अपहरण?" नन्दिनी ने पूछा।

"हां, यदि हम रथ को विहार के द्वार पर न खड़ा करें तो आप कैसे उतरेंगी?"

"तो मत खड़ा करना।"

"क्यों?" रामी ने पूछ लिया।

'जिससे मेरा अपहरण हो सके।"

इस पर तीनों हंस पड़ीं।

विहार की ओर घूमने का मार्ग आया, परन्तु किसी ने रथवान को रथ खड़ा करने के लिए नहीं कहा। रामी चाहती थी कि नन्दिनी स्वयं कहे। नन्दिनी गम्भीर भाव में बैठी थी।

मध्याह्न का चला हुआ रथ तीसरे प्रहर के आरम्भ में रामकुट्टी पहुंच गया। रामी ने रथवान को मार्ग बताया और जहां पण्डित विश्वेश्वरनाथ का निवास था, वहां पहुंचकर रथ रोकने के लिए कह दिया। परन्तु, रामी ने देखा कि अब उस स्थान पर ईंट और चूने का पक्का भवन बना हुआ था। भवन दोतल्ला था।

रामी पहचान नहीं सकी और रथ में विस्मित बैठी भवन को देखती रह गई। वह रथ से उतरी नहीं।

इस समय गृह के भीतर से एक छः-सात वर्ष की वयस् का बालक बाहर निकला। रामी ने उसे देख समीप बुला लिया। बालक विस्मय में रथ को देखता हुआ समीप आया तो रामी ने पूछ लिया, "यह किसका भवन है?"

"बड़े पिता जी का।"

रामी मुस्कराई और पूछने लगी, "बड़े पिता जी का नाम क्या है?"

"बड़े पिता जी।"

इस पर रथ में बैठे सभी हंस पड़े। अब रथवान ने पूछा, "अरे, इस घर में कौन रहता है?"

बालक का सतर्क उत्तर था, "मैं रहता हूं।"

पुनः सब हंस पड़े। अब रामी रथ पर से उतरी और पूछने लगी, "तुम्हारे बड़े पिता जी कहां है?"

रामी को कुछ ऐसा प्रतीत हुआ कि यह बालक पण्डित जी का पौत्र हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकता है। यह अनुमान उसने बालक के सतर्क उत्तर से लगाया था।

बालक ने कहा, "वह पढ़ रहे हैं।"

"हम उनसे मिलने आये हैं।" इतना कह रामी द्वार की ओर चल पड़ी। बालक भी गृह के भीतर 'बाबा-बाबा' पुकारता हुआ भागा।

यह भवन पण्डित विश्वेश्वरनाथ का ही था। पण्डित जी पाटलिपुत्र गये थे तथा वहां भेंटस्वरूप उन्हें बहुत-सा धन प्राप्त हुआ था। उसी धन से उन्होंने नया भवन निर्माण करा लिया था।

बालक की पुकार सुन पण्डित विश्वेश्वरनाथ गृह से बाहर आये। रामी ने उन्हें पहचाना तो नमस्कार कर सम्मुख खड़ी हो गई।

"ओह!" पण्डित जी के मुख से निकला, "रामी हो?"

"हां, पिता जी! भारी परिवर्तन आ चुका है न मुझमें?"

"नहीं, विशेष परिवर्तन नहीं। कुछ शरीर से भारी अवश्य हो गई हो। तुम्हारी ठुड्डी भी लटक आई है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीय परिच्छेद

: 1 :

बौद्ध विहारों में अनुशासन की भारी महिमा थी। सूर्य की गति के आधार पर सारा कार्य नियमपूर्वक चलता था। सूर्योदय से ढाई घड़ी पूर्व महाप्रभु उठते थे। उसी समय सभी के उठने तथा नित्य-कर्म इत्यादि से निपटने के लिए घड़ियाल बजा दिया जाता था। घड़ियाल के बजते ही सभी प्राणी उठते तथा शौचादि कर्म में लीन हो जाते थे।

विहार में कुछ सेवक अपने परिवारों-सहित भी रहते थे। जिन्हें एक आवश्यक रोग माना जाता था। यद्यपि भिक्षु-वर्ग इनको पसन्द नहीं करता था, इस पर भी इनके बिना विहार का कार्य चलता नहीं था।

जब उज्जयिनी का विहार बना तो 'गया' से सेवकों का एक दल वहां भेज दिया गया। ये सेवक विहार के जीवन से परिचित थे तथा उसके अभ्यस्त हो चुके थे। दस सेवक वहां आये थे। इनमें स्त्रियां भी थीं। सबके भिन्न-भिन्न कार्य नियत थे।

जब सेवकों द्वारा विहार को निवास-योग्य बना दिया गया तथा आवश्यक सामान वहां एकत्र कर दिया गया, तो सर्वप्रथम महाप्रभु दस भिक्षुओं के साथ वहां आये। इनमें नन्दिनी भी थी। महाप्रभु तथा नन्दिनी गया के महाविहार में कई वर्षों से रह रहे थे तथा अनुशासन के अभ्यस्त थे।

भिक्षुओं की मण्डली ने उज्जयिनी-विहार की व्यवस्था निश्चय की तो फिर भिन्न-भिन्न विहारों से भिक्षु तथा भिक्षुणियां उज्जयिनी में भेजी जाने लगीं।

वात्स्यायन भी गया से आई पहली मण्डली में था। यद्यपि वह नारायण से आयु में बड़ा था, परन्तु शिक्षा में कम होने के कारण 'महाप्रभु' नारायण को ही नियुक्त किया गया था। कल्याणी कौशाम्बी से आयी थी। सौमित्र साकेत का रहनेवाला था। साकेत अयोध्या के समीप एक गांव का नाम था। यह कहा जाता था कि इसी गांव में भरत ने संन्यासियों की भांति रहते हुए चौदह वर्ष तक राम की वन से लौटने की प्रतीक्षा की थी।

इस प्रकार भारतवर्ष के भिन्न-भिन्न स्थानों से भिक्षु तथा भिक्षुणियां वहां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एकत्र हो गई थीं तथा प्रचार-कार्य आरम्भ हो गया था।

अवन्ति-राज्य मगध-सम्राट अशोक के समर-काल के समय उसके कोप का भाजन होने से बच गया था। कारण यह था कि वर्तमान अवन्तिनरेश के पिता महाराजा भीमसेन ने महाराज अशोक से मैत्री की सन्धि कर ली थी और मगध ा-सम्राट के समर-अभियान के समय उसकी सहायता भी की थी। अवन्ति की एक अक्षौहिणी सेना सदा मगध-सम्राट की सहायता के लिए तैयार रहती थी।

भीमसेन की मृत्यु के उपरान्त महासेन जब सिंहासन पर बैठा तो उसने सम्राट अशोक से सम्बन्ध तोड़ लिया था। कारण यह कि वह शैव मतावलम्बी था और अशोक-बौद्ध हो चुका था। दोनों मत परस्पर- विरोधी थे। इस पर भी अवन्तिनरेश को अपनी वर्तमान राजनीति में कुछ परिवर्तन करना पड़ा था। मगध-नरेश के सम्पूर्ण देश में बौद्ध सम्प्रदाय के संरक्षक बन जाने के कारण देश में एक नई लहर चलने लगी थी। इस लहर के कई रूप थे। इस लहर के प्रथम तथा प्रमुख प्रभाव के अनुरूप स्त्रियों की स्वतन्त्रता विस्तार पा रही थी। अब स्त्रियां अपने जीवित पति को छोड़ सकती थीं और नया पति प्राप्त कर सकती थीं। बालक तथा बालिकाओं के वयस्क होने की आयु इक्कीस से कम करके अठारह वर्ष हो गई थी।

इस काल में ब्राह्मणों की महिमा कम हुई थी। इसमें कारण यह था कि बौद्ध सम्प्रदाय वाले वेद इत्यादि शास्त्रों को बीते युग की बातें घोषित करने लगे थे। साथ ही वे अपनी वर्तमान विचारधारा को सबसे उन्नत मानते थे। वह कहते थे कि इस विचारधारा के प्रर्वतक महात्मा बुद्ध हैं। ब्राह्मणों की महिमा कम होने से वैश्य वर्ग तथा हस्तशिल्पियों की महिमा बढ़ जानी स्वाभाविक थी और लोग समझ रहे थे कि बौद्ध जीवन-मीमांसा के प्रचार से निम्न श्रेणी की जातियों का पद उन्नत हो गया है।

यही कारण था कि अवन्ति-महाराज महासेन और राज्य के महामंत्री को अपनी नीति उदार करनी पड़ी थी। उस नीति के अनुरूप ही महाराज शूरसेन ने बौद्ध भिक्षुओं को राजप्रासाद में भोजन का निमंत्रण दिया था। केवल यही नहीं, जब महाप्रभु और नन्दिनी राजप्रासाद से बाहर निकले तो महाराज ने दानस्वरूप उनके कमण्डलों में एक सौ स्वर्ण डाल दिये थे।

इससे महाप्रभु अपनी, अर्थात् बौद्ध संघ की दिग्विजय के स्वप्न लेने लगा था। एक बात उसे खटक रही थी। वह यह कि महारानी की अध्यापिका ने उसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिथ्या कथन कहने वाला सिद्ध कर दिया था।

इस बात की ओर महाप्रभु का ध्यान नन्दिनी ने राजप्रासाद से बाहर निकल विहार को लौटते हुए आकर्षित किया था। इसपर महाप्रभु ने रामी के गुरु की प्रशंसा कर दी।

यह एक भारी कारण था जिससे प्रेरित नन्दिनी रामी के समीप बैठी तो उसके गुरु जी के दर्शन करने की लालसा करने लगी।

उस दिन रामी विहार से जाने लगी तो वह कह नहीं सकी कि वह रामी से मिलने के लिए उत्सुकता से सात दिन व्यतीत होने की प्रतीक्षा कर रही है। इस कारण अपने चित्त की चंचलता मिटाने के लिए वह महारानी से भिक्षा प्राप्त करने का बहाना बनाकर चल पड़ी थी।

पूर्ण मार्ग पर जाते हुए उसके मन में पहले दिन रामी से हुआ वार्तालाप चक्कर काट रहा था। रामी ने सबसे बड़ी बात यह कही थी कि तथागत ने तो अपना कोई लेख नहीं छोड़ा है। इससे उसका यह आशय था कि वह किसी प्रकार मत चलाने का विचार नही रखते थे। कदाचित् वह वेद तथा आत्मा एवं परमात्मा के विरुद्ध भी नहीं थे। सामयिक बातें, जिनमें प्रजा बहुत अंशों में पतित हो चुकी थी, उनमें सुधार ही तथागत का उद्देश्य था। इस कारण उन्होंने अपना कुछ भी निजी चिह्न पीछे न छोड़ने की इच्छा से अपना लेख इत्यादि नहीं छोड़ा। यह बात नन्दिनी के चित को युक्तियुक्त प्रतीत हुई थी।

महाप्रभु नारायण ने जब नन्दिनी को भेज दिया तो उसके आगार की साथिन कल्याणी को बुला भेजा। कल्याणी भी अपना कमण्डलु ले भिक्षा के लिए जाने को तैयार थी जब महाप्रभु का सन्देश आया। वह उनसे मिलने उनके आगार में जा पहुंची। महाप्रभु ने उसे अपने सम्मुख बैठाकर पूछा, "नन्दिनी उदास क्यों है?"

"कदाचित् वह विहार के जीवन से असन्तुष्ट रहने लगी है।"

"मेरा अनुमान है," महाप्रभु ने कहा, "कि उसे नगर में कोई आकर्षण मिल गया है।"

"मुझे इसके लक्षण दिखाई नहीं पड़े। रात आपके बुलाने पर भी वह आपके पास नहीं आई, इसी कारण मैं ऐसा अनुमान लगा रही थी।"

"महारानी की अध्यापिका के विषय में भी उसने कुछ कहा था क्या?"

"हां, कहती थी कि उसके मन में जातकों के विषय में सन्देह उत्पन्न हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया है। महारानी की अध्यापिका ने कहा था कि जातकों में जो कुछ भगवान् तथागत के विषय में कहा गया है, वह सब उनके उपासकों का कथन-मात्र है। यह भगवान् तथागत का अपना कथन नहीं प्रतीत होता।''

''कौन-सा कथन भगवान् तथागत का प्रतीत नहीं होता?''

''उसने कथा सुनाई थी और कहती थी कि आपने ही उसे यह सुनाई थी। जब प्रथम पिटक लिखी जा रही थी तो उसमें ऐसे-ऐसे लोगों की किंवदन्तियां भी लिख ली गईं जो पीछे उन लोगों ने स्वयं कल्पित की थीं। ऐसी ही बात आपने वैशाली के एक नागरिक की पुस्तक के विषय में बताई थी।''

महाप्रभु इससे चिन्ता अनुभव करने लगे। कल्याणी गई तो उन्होंने सौमित्र को बुलाया। सौमित्र के आने पर उसने पूछा, ''रात्रि नन्दिनी के आगार के बाहर तुम किस प्रयोजन से खड़े थे?''

सौमित्र ने इस प्रश्न को महाप्रभु की ईर्ष्या का सूचक समझा। उसने कहा, ''महाप्रभु! यह प्रश्न आपने विहार के नियमों के विपरीत नहीं किया क्या? विहार का नियम यह है कि स्त्री-पुरुष-सम्बन्ध यदि कभी भूल से बन जाये तो उसे भूल जाना चाहिये। भूल जाने से चित्त की शान्ति रह सकती है।''

''परन्तु सौमित्र! विहार के महाप्रभु को यह अधिकार है कि वह विहार के निवासियों के क्रिया-कलापों पर नियंत्रण रखे।''

''महाप्रभु! यद्यपि मैं आपके इस प्रश्न को अनियमित समझता हूं तथापि मेरा उत्तर यह है कि जिस प्रयोजन से आप उसके आगार के सम्मुख गये थे, ठीक उसी प्रयोजन से मैं वहां खड़ा था।''

''तब ठीक है। अब मैं समझ गया हूं कि तुम न बताने में स्वतंत्र हो।''

वस्तुस्थिति यह थी कि महाप्रभु को नन्दिनी के पिछली रात न आने के कारण क्रोध आ रहा था। उस क्रोध को वह इस जांच पड़ताल के नीचे छिपाने का यत्न कर रहा था।

विहार की यह प्रथा-सी बन गई थी कि पुरुष-स्त्री सम्बन्ध चलते रहते थे, परन्तु इसके विषय में कोई किसी अन्य से कहता अथवा पूछता नहीं था। इसपर भी सौमित्र के लुकाव-छिपाव के कारण महाप्रभु के चित्त की अशांति कुछ बढ़ी ही थी। दिन-भर अपने चित्त को स्थिर करने के प्रयास में उसने स्वयं को किसी-न-किसी कार्य में लीन रखने का प्रयास किया।

भिक्षा के लिए जानेवाले सभी भिक्षु तथा भिक्षुणियां दिन का तृतीय प्रहर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाप्त होने से पूर्व ही लौट आते थे। उस दिन सभी लौटे, परन्तु नन्दिनी नहीं लौटी। जिस बात की महाप्रभु को चिन्ता थी, वह सच होती प्रकट होने लगी।

वह विहार का कार्य यंत्र की भांति कर रहा था, परन्तु उसका चित्त शान्त नहीं था।

ज्यों-ज्यों समय व्यतीत होता जाता था, उसकी बेचैनी बढ़ती जाती थी। सायंकाल तक भी जब नन्दिनी नहीं लौटी तो वह विहार के अन्य प्राणियों से पूछताछ करने लगा, परन्तु किसी को भी नन्दिनी के विषय में ज्ञात नहीं था।

नन्दिनी के विहार न लौटने की चर्चा भदन्त वात्स्यायन के कर्णगोचर भी हुई। इस चर्चा को सुन वह महाप्रभु के पास जा पहुंचा। उसने महाप्रभु से कहा, "भगवन्! मुझे सौमित्र ने बताया है कि आज विहार से कोई भिक्षुणी लापता है?"

"हां! किसने बताया है तुम्हें?"

"सौमित्र कह रहा था कि आज प्रातःकाल से ही आप उसके विषय में चिन्ता प्रकट करते रहे हैं।"

"हां, परन्तु वह चिन्ता उसके न लौटने की सम्भावना पर नहीं थी। प्रातःकाल तो मैं जानता तक नहीं था कि वह रात तक नहीं लौटेगी।"

"इसपर भी महाप्रभु! आप उसके विषय में प्रातः से ही चिन्तित थे। बताइये, रात्रि में उससे किसी विषय पर विवाद तो नहीं हुआ था?"

"नहीं। पिछले सायंकाल मैंने उसे कियी कार्य के लिए बुलाया था। उसने आने से इन्कार कर दिया था। यह नियमोल्लंघन था। इसी के विषय में मैं पूछताछ कर रहा था।"

"और आज वह भिक्षा के लिए गई तो लौटी नहीं। कल का उसका अनुशासन भंग करना और आज का अभी तक न लौटना परस्पर सम्बन्धित बातें प्रतीत होती हैं। महाप्रभु! जाने से पूर्व भी तो वह आपसे मिलने आई थी?"

"मैंने ही उसे बुलाया था। वह मुझे यह कहकर गई थी कि महारानी से भिक्षा प्राप्त करने जा रही है।"

"अब आप क्या करने का विचार रखते हैं?"

"मैंने विहार के द्वार पर कह दिया है कि जब भी वह आये, उसे मेरे सामने उपस्थित होने का मेरा आदेश दे दिया जाये।"

"मैं समझता हूं कि वह विहार छोड़कर कहीं चली गई है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो यह कल्याणी ने बताया है?"

"यह मेरा अनुमान है। कल्याणी ने यह बताया है कि कल रात्रि वह चित्त में चंचलता अनुभव कर रही थी। उसके विचारानुसार राजप्रासाद की किसी सेविका से भेंट ही उसकी इस मूल चंचलता में कारण थी।"

वात्स्यायन विहार में अधिकार की दृष्टि से दूसरे स्थान पर था। प्रथम स्थान पर महाप्रभु थे। इससे सभी विहार-निवासी यह समझते थे कि महाप्रभु के उपरान्त वही इस विहार का महाप्रभु नियुक्त होगा। वैसे भी विहार के निवासी महाप्रभु नारायण के किसी कारण से अनुपस्थित होने पर वात्स्यायन से ही आदेश प्राप्त करते थे।

महाप्रभु इसी कारण वात्स्यायन के सम्मुख सब बात स्पष्ट रूप में बता रहा था। वात्स्यायन उसके व्यवहार से सन्तुष्ट नहीं था। परन्तु शिक्षा के विचार से वह उससे अधिक न होने के कारण उसका आदर करता था; यद्यपि विहार के अनुशासन के विषय में वह महाप्रभु से अधिक सचेष्ट था। अतः उसने कह दिया, "मैं समझता हूं कि प्रातः काल आप स्वयं राज्याधिकारियों को नन्दिनी के लापता होने की सूचना दे दें, जिससे उसके विषय में पूर्ण जानकारी प्राप्त हो सके और जहां कहीं वह मिले, उसे पकड़कर यहां विहार में लाया जाये। वह महारानी से मिलने के लिए कहकर गई थी। इस कारण महारानी पर उसके लापता होने का आरोप लगाया जाये तो शीघ्र पता मिल सकेगा। महाप्रभु! जो कुछ आपको उसके विषय में ज्ञात है, वह राज्यधिकारियों को बता सकते हैं। अपनी ओर से कुछ मत कहियेगा और कुछ छिपाकर भी नहीं रखिएगा।"

महाप्रभु अगले दिन राजप्रासाद के द्वार पर जा पहुंचा। द्वारपाल के पूछने पर कि वह किनसे मिलना चाहता है, महाप्रभु ने कहा, "महाराज से।"

द्वारपाल ने महाप्रभु का नाम लिखकर प्रतिहार के द्वारा भीतर भेज दिया और महाप्रभु को प्रतीक्षा करने के लिए कहा।

उस समय दिन का द्वितीय पहर चल रहा था। महाराज मंत्रि-मण्डल में बैठे राज्य-कार्य पर विचार कर रहे थे। इस कारण महाप्रभु को मंत्रि-मण्डल की बैठक की समाप्ति की प्रतीक्षा करनी पड़ी। इससे वह मन-ही-मन और भी अधिक विक्षुब्ध हो उठा।

मध्याह्न के समय उसे भीतर बुलाया गया। महाराज ने महाप्रभु को आदर सहित बैठाया और पूछा, "भगवन्! आज्ञा कीजिये, अपने कैसे कष्ट किया है?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
भोजन का समय हो गया है। भोजन मंगवाऊं क्या?''

महाराज की शिष्टता के सम्मुख महाप्रभु का क्रोध शान्त हो रहा था। इसपर भी जब बात आरम्भ हुई तो वह कुछ उत्तेजना में ही अपनी याचिका उपस्थित करने लगा। उसने कहा, ''महाराज! कल हमारे विहार की एक भिक्षुणी नन्दिनी महारानी जी से मिलने राजप्रासाद में आई थी और वह यहां से वापस नहीं गई।''

''महारानी जी से?'' महाराज ने आश्चर्य के भाव में पूछा।

''जी हां।''

''तो हम अभी पता करते हैं।'' इतना कहकर महाराज ने ताली बजाई जिसे सुन तुरन्त एक प्रतिहार आगे बढ़ आया। महाराज ने कहा, ''संरक्षक विक्रमदेव को बुलाओ। उसे कहो कि प्रासाद में आने-जानेवालों की सूची लेकर उपस्थित होवें।''

प्रतिहार गया तो महाप्रभु ने पूछ लिया, ''यह विक्रमदेव कौन हैं?''

''यह राजप्रासाद का संरक्षक है। प्रासाद के सभी सुभट्ट, सेवक तथा सेविकाएं इसके अधीन कार्य करते हैं। राजप्रासाद में आने-जाने-वाले सभी व्यक्तियों का नाम-धाम इसके पास लिखा रहता है।''

''तो क्या श्रीमान् और महारानी जी के पास आने-जाने वालों के नाम भी लिखे जाते हैं?''

''हां भगवन्! प्रासाद के भीतर गुप्त रूप से कोई आ नहीं सकता और न ही यहां से जा सकता है।''

''परन्तु उस दिन जब हम आपके पास अल्पाहार के लिए आये थे, तब तो हमसे किसी ने कुछ भी नहीं पूछा था?''

''इसपर भी भगवन्! आपका नाम सूची में लिखा है। द्वारपाल ने अवश्य किसी से पूछकर आपका नाम जान लिया होगा।''

महाप्रभु इस प्रबन्ध पर विस्मय करता हुआ बैठा रहा। उसे अधिक देर तक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी। आधी घड़ी में ही एक गणवेशधारी युवक हाथ में एक मोटी-सी पुस्तक लिये हुए आ उपस्थित हुआ।

''विक्रमदेव!'' महाराज ने उस युवक को सम्बोधित कर कहा, ''कल एक भिक्षुणी नन्दिनी महारानी जी से मिलने आई थीं। वह कब आई और कब लौटी थी, बताइये।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विक्रमदेव महाराज से आदरयुक्त अन्तर पर बैठकर अपनी पुस्तक खोल, पिछले दिन का पृष्ठ निकाल देखने लगा और उसपर नाम पढ़ने लगा। पढ़ते-पढ़ते वह एक स्थान पर रुक गया और बताने लगा, "हां महाराज! एक भिक्षुणी नन्दिनी कल दिन के द्वितीय पहर के एक घड़ी जाने पर आई थी और सेवक मोहन की पत्नी रामी देवी से मिलने गई थी। एक घड़ी के उपरान्त वह भिक्षुणी, रामी और रामी देवी की लड़की कुमकुम एक रथ पर सवार हो राजप्रासाद से बाहर निकल गईं।"

"और रामी तथा कुमकुम कब लौटीं? उनके साथ भिक्षुणी थी क्या?"

विक्रमदेव ने उसी पुस्तक में से आगे देखकर बताया, "नहीं, तीनों स्त्रियां और वह रथ अभी तक नहीं लौटा।"

"ठीक है। आप जा सकते हैं।" महाराज ने कहा।

विक्रमदेव गया तो महाराज ने पुनःताली बजाई। प्रतिहार समीप आया तो महाराज ने कहा, "अन्तःपुर में सूचना भेज दो कि महाप्रभु आये हैं और महारानी से भेंट की अभिलाषा रखते हैं।"

महारानी आई तो महाप्रभु ने उन्हें आशीर्वाद दिया। महारानी को अपने समीप ही बैठाकर महाराज ने कहा, "देवी! कल रामी कहां गई थी?"

"वह अपने गांव को गई है।"

"और कुमकुम?"

"वह भी उसके साथ ही गई है।"

"विदित हुआ है कि भिक्षुणी नन्दिनी उसके साथ गई थी और वह विहार नें नहीं लौटी।"

महारानी दुर्गा उनका मुख देखती रह गई। तदनन्तर उसने कहा, "महाराज! मुझे इस विषय में कोई सूचना नहीं है।"

इसपर महाराज ने महाप्रभु से कहा, "आप एक याचिका न्यायधीश के सम्मुख उपस्थित कर दीजिये। उसमें लिखिये कि एक अल्पवयस्क भिक्षुणी विहार से लापता है।"

"इससे क्या होगा?" महाप्रभु ने पूछा।

"उसकी खोज आरम्भ हो जायेगी। यह लगभग निश्चित ही है कि वह रामी के साथ उसके गांव को गई है। सम्भव है वह रामी के साथ ही लौट आये। इसपर भी याचिका करनी चाहिये।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परन्तु महाराज! वह अल्पवयस्क नहीं है। उसकी आयु इक्कीस वर्ष से अधिक है।"

"ठीक है। तब यह पता किया जाएगा कि वह स्वेच्छा से गई है अथवा उसका अपहरण हुआ है।"

महाप्रभु ने महाराज तथा महारानी को आशीर्वाद दिया और उनके आगार से निकल न्यायाधीश के कार्यालय की ओर चला गया।

महाप्रभु के जाने के उपरान्त महारानी ने कहा, "इसमें न्यायधीश क्या करेगा? रामी देवी उसका अपहरण क्यों करेगी?"

महाराज हंस पड़े और कहने लगे, "मैं समझता हूं कि यह भिक्षुणी विहार से भाग गई है।"

"तब?"

"वह अब विहार में लौटकर नहीं आयेगी। परिणामस्वरूप हमारे राज्य में विस्फोट हो सकता है?"

"किस प्रकार का विस्फोट हो सकता है?"

"मगध राज्य बौद्ध सम्प्रदाय का संरक्षक है। वह हमसे रुष्ट हो सकता है। साथ ही हमारे राज्य में रहनेवाले बौद्धों में असन्तोष विस्तार पा सकता है।"

"परन्तु देव! कुछ असन्तुष्ठ लोगों की अयुक्तिसंगत बातों से घबराकर क्या राज्य की आधारभूत नीति का उल्लंघन होगा?"

महाराज चुप साध गए।

: 2 :

महाप्रभु नारायण राजप्रासाद से निकले तो सीधे न्यायालय में जा उपस्थित हुए। न्यायधीश के सम्मुख उन्होंने अपनी याचिका उपस्थित कर दी। उन्होंने कहा, "हमारे विहार की भिक्षुणी नन्दिनी कल से विहार से लापता है। राजप्रासाद के संरक्षक से विदित हुआ है कि उसे महारानी की सेविका रामी, जो महाराज के निजी सेवक मोहन की पत्नी भी है, अपने साथ रथ पर बैठाकर अपने गांव रामकुट्टी को ले गई है। मैं विहार का महाप्रभु यह मांग करता हूं कि उसे रामी के अधिकार से मुक्त कराकर विहार में वापस भेज दिया जाये।"

न्यायधीश ने तुरन्त महाराज के सेवक मोहन को उपस्थित होने की आज्ञा भेज दी। मोहन को ढूंढकर न्यायधीश के सम्मुख उपस्थित किया गया। मोहन ने अपना वक्तव्य दिया कि उसकी पत्नी रामी अपने गुरुदेव पण्डित विश्वेश्वरनाथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से, जो रामकुट्टी में निवास करते हैं मिलने गई है। जाते समय मेरी लड़की कुमकुम तथा भिक्षुणी नन्दिनी भी उसके साथ थीं। मैंने नन्दिनी को बलपूर्वक रथ पर बैठाये जाते नहीं देखा। वह मार्ग में विहार के समीप उतरना चाहती थी अथवा नहीं, इसका मुझे ज्ञान नहीं है।''

इसपर न्यायालय का एक अधिकारी रामी के गांव में पूछताछ करने भेज दिया गया और उसे आदेश दिया गया कि अगले दिन पूरी जानकारी लेकर न्यायालय में उपस्थित हो।

अधिकारी गया और अगले दिन उसने न्यायधीश के सम्मुख लिखित वक्तव्य प्रस्तुत किया। उसने बताया, ''रामकुट्टी गांव में मैं रामी तथा भिक्षुणी नन्दिनी से मिला हूं। रामी का कथन है कि नन्दिनी स्वेच्छापूर्वक उसके साथ गांव को आई है और स्वेच्छा से ही वहां रह रही है।...

''नन्दिनी का कथन है कि मैं तेईस वर्ष की युवती हूं। पिछले दस वर्ष से मैं विहार में रह रही थी, पहले गया महाविहार में, तदनन्तर उज्जयिनी के विहार में। अब अपनी इच्छा से मैं विहार छोड़कर यहां आई हूं। पुनः विहार में जाने की इच्छा नहीं है।''

न्यायालय के अधिकारी का कहना था कि वहां जिस गृह में नन्दिनी निवास कर रही है, उसके स्वामी पण्डित विश्वेश्वरनाथ नन्दिनी के प्रतिभू बन गये हैं और मान गये हैं कि यदि तीन मास की अवधि के भीतर नन्दिनी को न्यायालय में उपस्थित करने की आज्ञा हुई तो वह उसे उपस्थित कर देंगे।

इस सूचना पर न्यायधीश ने महाप्रभु को सूचना भेज दी कि यदि वह समझते हैं कि नन्दिनी का कथन असत्य है और वह वयस्क नहीं, तो वे प्रमाण उपस्थित न कर सके तो उनकी याचिका रद्द कर दी जायेगी।

महाप्रभु ने नन्दिनी के विहार छोड़कर चले जाने की सूचना, पूर्ण विवरण सहित, गया महाविहार में भेज दी। गया महाविहार से मगधराज्य के महामात्य को लिखा गया तथा उनसे प्रार्थना की गई कि वे उचित कार्यवाही करें जिससे भिक्षुणी नन्दिनी को मुक्त कराया जा सके। मगध-महामात्य का इस विषय में एक पत्र अवन्ति-राज्य के महामात्य के पास पहुंचा और उनसे आग्रह किया गया कि वह अपनी जांच का परिणाम लिखें।

मगध-महामात्य का पत्र महामात्य रामानुज ने मंत्रि-मण्डल में उपस्थित कर दिया। साथ ही उसने भय दिखाया कि यदि उचित कार्रवाई न की गई तो इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घटना की प्रतिकूल प्रतिक्रिया मगध में उत्पन्न हो सकती है।

इस बीच महाप्रभु ने एक अन्य याचिका न्यायालय में उपस्थित कर दी थी कि बौद्ध विहारों के नियमानुसार जब कोई व्यक्ति एक बार संघ में प्रविष्ट होकर भिक्षु अथवा भिक्षुणी बन जाये तो वह विहार को संघ की अनुमति से ही छोड़ सकता है। इसके लिए उसे संघ की महासमिति को याचना भेजनी चाहिये। अतः नन्दिनी को आदेश दिया जाये कि वह विहार में लौट आये और संघ की महासमिति के सम्मुख अपनी याचना उपस्थित करे। परन्तु न्यायालय ने इस याचिका को स्वीकार नहीं किया। न्यायाधीश का कथन था कि गुरु-शिष्या का सम्बन्ध पति-पत्नी-सम्बन्ध के समान अटूट नहीं है। ये सम्बन्ध दोनों पक्षों द्वारा स्वेच्छा से स्वीकार किये जाते हैं। जब भी एक पक्ष सम्बन्ध विच्छेद करना चाहे, कर सकता है। इसमें एकमात्र बन्धन यह है कि सम्बन्ध-विच्छेद करने वाला वयस्क हो। अवन्ति राज्य के मंत्रि-मण्डल ने यह नियम किसी समय बौद्ध सम्प्रदाय की सुविधा के लिए ही बनाया था। अब बौद्ध सम्प्रदाय यदि इस सुविधा को समाप्त करना चाहता है तो उसकी महासमिति इस विषय में निर्णय करे, तभी न्यायालय अथवा अवन्ति राज्य का मंत्रिमण्डल नई व्यवस्था देने के विषय में विचार करेगा।

इस प्रकार नन्दिनी के विहार छोड़कर चले जाने की घटना को चार मास व्यतीत हो गये। रामी भी उज्जयिनी में लौटकर अपने नित्यप्रति के कार्य में लीन हो चुकी थी।

इस समय मगध-महामात्य का पत्र महामात्य रामानुज को मिला। इस पत्र को जब मंत्रि-मण्डल में उपस्थित किया गया तो भारी विवाद छिड़ गया। महामात्य ने पत्र उपस्थित करते हुए कहा, "एक भिक्षुणी जो कदाचित् दुराचारणी है और पण्डित विश्वेश्वरनाथ के ज्येष्ठ पुत्र से भी अनुचित सम्बन्ध बनाये हुए है, ऐसी भिक्षुणी के लिए एक शक्तिशाली साम्राज्य को रुष्ट करना उचित नहीं होगा।"

इसपर महाराज ने कह दिया, "महामात्य! मंत्रि-मण्डल में एक व्यक्ति के लिए नियम-उपनियम में परिवर्तन लाना क्या उचित है? हां, यदि नियमों में कुछ संशोधनों की आवश्यकता है तो उसपर विचार किया जा सकता है।"

"महाराज! मैं आपसे एक विशेष घटना के लिए आपकी विशेषाज्ञा के लिए कह रहा हूं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''उस अवस्था में इसके लिए याचिका तो सम्बन्धित व्यक्ति कर सकता है, न कि एक राज्य और वह भी आरोप लगाकर। आरोप पर मंत्रि-मण्डल विचार कर सकता है। जब कोई व्यक्ति हमारे समक्ष किसी प्रकार की व्यक्तिगत याचिका करेगा तो हम उस पर विचार करेंगे। तब मंत्रि-मण्डल को इसमें हस्तक्षेप करने की आवश्यकता नहीं होगी।''

''तो महाराज! यह मेरी याचिका ही समझ लीजिये। मेरा निवेदन है कि इस भिक्षुणी को वापस बौद्ध विहार में भेज दिया जाये। यह आप अपने विशेष अधिकारों का प्रयोग करके कर सकते हैं।''

''ठीक है। हम आपकी याचिका का उत्तर देंगे, परन्तु वह उत्तर हमारे विशेषाधिकारों का प्रतीक होगा। अतः उसपर मंत्रि-मण्डल विचार-विनिमय नहीं कर सकता, क्योंकि यह किसी प्रकार से राज्य का नियम-उल्लंघन नहीं करेगा और न ही किसी व्यक्ति के निजी अधिकारों का हनन करेगा।...

''इस याचिका पर मेरी आज्ञा है कि एक व्यक्ति अपने व्यक्तित्व, अपने शरीर और अपनी मान्यताओं में तब तक स्वतन्त्र है, जब तक वह किसी दूसरे के व्यक्तित्व, शरीर और मान्यताओं का विरोध नहीं करता। नन्दिनी ने ऐसा कोई अपराध नहीं किया। इस कारण वह बलपूर्वक किसी भी बात के लिए विवश नहीं की जा सकती।''

''परन्तु महाराज!'' अब महामात्य ने आग्रहपूर्वक कहा, ''आपकी इस आज्ञा से एक पड़ोसी तथा शक्तिशाली राज्य से संघर्ष उत्पन्न हो जायेगा। राज्यों से संघर्ष एक व्यक्ति से संघर्ष होने की अपेक्षा अधिक हानिप्रद हो सकता है।''

''राज्य की बात पर मंत्रि-मण्डल विचार कर ले। परन्तु मंत्रि-मण्डल हमारे विशेषाधिकारों में हस्तक्षेप नहीं कर सकता।''

''परन्तु मंत्रि-मण्डल यदि महाराज के विशेषाधिकारों से राज्य को हानि पहुंचाने की सम्भावना समझे, तब क्या होगा?''

''महाराज को पदच्युत कर किसी नये महाराज की स्थापना कर सकता है।''

इस चुनौती पर महामात्य तथा मंत्रि-मण्डल के अन्य सदस्य महाराज का मुख देखते रह गये। महाराज की न्यायप्रियता की अवन्ति-भर में धूम मची हुई थी। अतः कोई भी महाराज को पदच्युत करने की कल्पना भी नहीं कर सकता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब रक्षा-मंत्री ने एक प्रस्ताव प्रस्तुत कर दिया। उसने कह, अब जबकि महाराज तथा महामात्य में राज्य-सम्बन्धी सैद्धान्तिक मतभेद हो गया है, इस कारण मैं समझता हूं कि इस मतभेद पर मंत्रि-मण्डल में विचार होना चाहिये।"

"परन्तु," महाराज का प्रश्न था, "क्या यह मतभेद सैद्धान्तिक है?"

"महाराज!" रक्षा-मंत्री ने कहा, "यदि सैद्धान्तिक न होता तो श्रीमान अपने ऊपर अविश्वास की सम्भावना को प्रकट न करते। मैं तो महामात्य पर अविश्वास का प्रस्ताव उपस्थित कर रहा हूं। यदि मेरा यह प्रस्ताव पारित हो जाता है तो यह महामात्य पर अविश्वास समझना चाहिये और इसका स्वाभाविक परिणाम यह होना चाहिये कि महामात्य अपने पद से त्यागपत्र देकर राज्य से पृथक् हो जाएं।"

इसपर धर्म-गंत्री पण्डित चन्द्रमणि ने कह दिया, "मैं भी रक्षा-मंत्री के प्रस्ताव का समर्थन करता हूं। यही धर्मयुक्त भी है क्योंकि महाराज के विशेष अधिकारों से दिये गये निर्णय पर किसी प्रकार से धर्म-विरुद्ध होने की बात न बताकर उसे रद्द करने की बात कहना अनियमित है। मैं समझता हूं कि महामात्य को क्षमा-याचना करनी चाहिये, अन्यथा त्याग-पत्र देकर मंत्रि-मण्डल से पृथक् हो जाना चाहिये।

इसपर मंत्रि-मण्डल में फूट पड़ जाने की सम्भावना का विचार करके महाराज ने इस विषय पर विचार स्थगित कर दिया और यह आदेश दिया कि इस विषय पर एक सप्ताह उपरान्त पुनः विचार किया जाये और आज जो भी बात मंत्रि-मण्डल में हुई है, उसे गुप्त मान किसी से इसका उल्लेख न किया जाये।

विचार स्थगित हुआ परन्तु यह बात गुप्त नही रह सकी। महामात्य ने मंत्रि-मण्डल में मतभेद की बात अपनी पत्नी सर्वप्रिया से की। सर्वप्रिया बौद्ध उपासिका थी। अगले दिन जब वह बौद्ध विहार में उपासना के लिए गई तो महाप्रभु ने उसे पृथक् में बुलाकर यह जानने का यत्न किया कि मगध से आये पत्र की उसके पति के मन में क्या प्रतिक्रिया है? इसपर मंत्रि-मण्डल में हुई चर्चा तथा उसमें महामात्य का मत सर्वप्रिया ने बता दिया।

बातों-बातों में महाप्रभु ने कहा, "देवी! राजकुमार राहुल विवाह योग्य है। हम समझते हैं कि तुम्हारी कन्या भी विवाह-योग्य हो चुकी है। इस विषय में चर्चा चलाओ।"

यह बात सर्वप्रिया के मन की थी। इसपर भी उसने पूछा, "इससे क्या लाभ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होगा?''

''तुम्हारी कन्या पटरानी बनेगी। साथ ही अवन्ति-राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार होगा।''

''ठीक है भगवन्! मैं विचार करूंगी।''

सर्वप्रिया गई तो महाप्रभु ने उसी समय मंत्रि-मण्डल में फूट की सम्भावना की बात लिखकर बौद्ध महासमिति को भेज दी।

भिक्षुणी नन्दिनी के विषय पर मगध-राज्य से प्राप्त पत्र पर मंत्रि-मण्डल में विचार एक सप्ताह उपरान्त हुआ। रक्षा-मंत्री का कहना था कि न्यायालय का निर्णय रद्द नहीं होना चाहिये। धर्माधिकारी चन्द्रमणि, वित्त-मंत्री जयदेव तथा न्याय-मंत्री भूदेव रक्षामंत्री के साथ एकमत हो गये। दूसरी ओर महामात्य रामानुज, मंत्री राघवदास जो कि शूद्र-समाज का प्रतिनिधि और बौद्ध उपासक था, केवल दो रह गये।

मंत्री-मण्डल का बहुमत यह संकेत कर रहा था कि महामात्य को त्यागपत्र दे देना चाहिये, परन्तु इसपर महाराज ने अपना मत प्रकट किया, ''मतभेद होना एक स्वाभाविक स्थिति है। मनुष्य बुद्धिजीवी होने के कारण परस्पर मतभेद रख सकता है, परन्तु मतभेद के कारण किसी को मंत्रि-मण्डल छोड़ने की आवश्यकता नहीं। आवश्यकता इस बात की है कि हमारे कार्य बहुमत के अनुसार होने चाहियें। यदि कोई मंत्री-मण्डल से भिन्न मत रखकर भी अपने कर्म मंत्रि-मण्डल के बहुमत के अनुकूल रखे तो उसे त्यागपत्र देने की आवश्यकता नहीं है।''

रक्षा-मंत्री का कहना था, ''विचार कर्म का स्रोत हैं। इस कारण विचार-भेद से कर्म-भेद होना स्वाभाविक है।''

महाराज का मत था, ''कर्म करने से पूर्व मनुष्य मत-परिवर्तन भी कर सकता है। मनुष्य ऐसा करते देखे गये हैं। एक बात यह भी है कि कभी मनुष्य मतभेद को गौण मान कर्म में ऐक्य को अधिक महत्व देकर विचार को कर्म में परिवर्तित करने से रोक लेता है। अतः कर्म ही देखने की बात है। विचार-भेद को सहन किया जा सकता है।''

इस प्रकार विचारों में मतभेद होते हुए भी मगध-राज्य के पत्र का उत्तर एकमत से दे दिया गया। उसमें लिखा गया—''हमारा राज्य भारत देश के सब नागरिकों को विचार-प्रचार की स्वीकृति देता है, परन्तु नागरिकों के कार्य राज्य के नियमों के अनुसार होना आवश्यक मानता है। यह राज्य का नियम है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विचार करना, विचार प्रकट करना, निवास करना तथा परिश्रम करना, ये मनुष्य के स्वाभाविक अधिकार हैं। साथ ही परिश्रम का फल भोगने में धर्मानुसार व्यवहार करना प्रत्येक नागरिक के लिए आवश्यक है।''

इस उत्तर के उपरान्त पाटलिपुत्र की प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा होने लगी।

समय व्यतीत होता गया, परन्तु प्रत्यक्ष रूप में किसी प्रकार की प्रतिक्रिया का ज्ञान नहीं हुआ। इस पर भी अप्रत्यक्ष रूप में अवन्ति पर प्रभाव अनुभव होने लगा। अवन्ति-राज्य में हलचल-सी होती दृष्टिगोचर होने लगी। नये-नये चेहरे गांवों में, नगरों में तथा राजधानी में दिखाई देने लगे। बौद्ध विहार में उपासको की संख्या में अद्भुत वृद्धि हो गई और बौद्ध धर्म के अनुकूल वातावरण बनने लगा।

इसकी चर्चा मंत्रि-मण्डल में भी एक दिन हो गई। मंत्रि-मण्डल की बैठक में रक्षा-मंत्री ने आशंका प्रकट कर दी। उसका कहना था, राज्य की जनसंख्या में अस्वाभाविक रूप में वृद्धि होने लगी है। बाहरी राज्य के लोग इस राज्य में आकर निवास करने लगे हैं और अपने राज्य की जीवन-मीमांसा यहां प्रचलित करने का यत्न कर रहे हैं।''

''परन्तु क्या उनकी जीवन-मीमांसा अमानवीय है?'' महामात्य का प्रश्न था।

''जीवन-मीमांसा मानवीय है अथवा अमानवीय, इसपर विवाद नहीं है। राज्य की स्थिरता के साथ इसका अवश्य सम्बन्ध है।...

''अन्य राज्यों में नागरिकों के मानव-अधिकारों में और हमारे राज्य के नागरिकों के अधिकारों में अन्तर है। हम प्रत्येक वयस्क व्यक्ति का यह अधिकार मानते हैं कि वह राज्य में अथवा राज्य से बाहर इच्छानुसार रह सकता है; जबकि मगध-राज्य में मनुष्य के इस अधिकार पर सीमा है। वहां पर नियम यह बन चुका है कि बौद्ध-विहार में वास करने वाले भिक्षु विहार त्यागकर नहीं जा सकते। मंत्रि-मण्डल को ध्यान होगा कि लगभग एक वर्ष पूर्व एक भिक्षुणी नन्दिनी जब विहार छोड़कर गई थी तो महाप्रभु ने उसे वापस भेजने की मांग उपस्थित की थी।

''यदि राज्य में बौद्ध मतावलम्बियों का बाहुल्य हो गया तो राज्य को इस प्रकार के नियमों में परिवर्तन करने पर बाध्य होना पड़ेगा। यह मानवाधिकारों के विरुद्ध होगा। यदि बौद्ध धर्म के अनुसार नियम न बने तो बौद्ध मतावलम्बी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्रोह कर सकते हैं।''

महाराज भी महामात्य के मत को जानते थे। इस कारण किसी प्रकार का वादविवाद न उठ खड़ा हो, वह कहने लगे, ''रक्षा-मंत्री का कथन राज्य-नियम से सम्बन्धित है। इस विषय में स्थिति इस प्रकार है। नागरिकता भारत देश की मानी जाती है, न कि किसी विशिष्ट राज्य की। सम्पूर्ण देश भारतवर्ष की नागरिकता एक ही है। सब नागरिक एक ही है। सब नागरिक समान हैं। सबको अधिकार है कि किसी भी राज्य में जाकर रह सकते हैं तथा जीविका-उपार्जन के लिए कार्य कर सकते हैं। इसपर हम किसी प्रकार को प्रतिबन्ध नहीं लगा सकते।...

''दूसरी समस्या है बौद्ध विहार का अनुशासन। यह भिक्षुओं के अपने विचार करने की बात है कि वे विहार के अनुशासन में रहें अथवा न रहें। इसमें राज्य हस्तक्षेप नहीं कर सकता। हमारे कहने का अभिप्राय यह है कि कोई व्यक्ति जब चाहे विहार छोड़कर बाहर आ सकता है। यह मत-परिवर्तन के तुल्य होगा। जिस प्रकार कोई शैव मतावलम्बी बौद्ध मतावलम्बी अथवा वैष्णव मतानुयायी बन सकता है, इसी प्रकार कोई बौद्ध मतानुयायी बौद्ध धर्म से निकलकर बौद्धों के अनुशासन से स्वयं को मुक्त कर सकता है।''

महाराज की इस व्यवस्था के उपरान्त कहने को कुछ नहीं रहा था और न ही रक्षा-मंत्री के कथन पर कुछ करने का विचार बन सका। परन्तु महाराज का अपना चित्त बौद्धों की राज्य में वृद्धि से सन्तुष्ट नहीं था। वह इस विषय में कुछ करना चाहते थे, परन्तु समझ नहीं सके कि क्या किया जाये।

मंत्रि-मण्डल की बैठक के उपरान्त वह अन्तःपुर में गये तो महारानी और रामी नित्यप्रति के स्वाध्याय के उपरान्त परस्पर बातें कर रही थीं। महाराज आये तो दोनों महाराज के स्वागत में उठ खड़ी हुईं। महारानी ने देखा कि महाराज का मुख आज मलिन पड़ रहा है। उन्होंने पूछ लिया, ''देव! क्या बात है? आज आप कुछ खिन्न-से प्रतीत होते हैं?''

''हां।'' महाराज ने कहा, ''आज मंत्रि-मण्डल में बढ़ते हुए बौद्ध प्रभाव पर चर्चा चल पड़ी थी। यद्यपि हमने वाद-विवाद के उग्र होने से पूर्व ही इसपर अपनी व्यवस्था दे दी है, इसपर भी अपनी व्यवस्था से हम सन्तुष्ट नहीं हैं।''

''किस व्यवस्था पर आपको असन्तोष हो रहा है?''

''हम राज्य-नियमानुसार उनकी वृद्धि को रोक नहीं सकते, परन्तु उनकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन-मीमांसा वैष्णवों से भिन्न होने के कारण परस्पर संघर्ष होने की सम्भावना बढ़ रही है।''

इसपर रामी ने कह दिया, ''महाराज! बौद्ध मत सभी मतों के समान एक विचार है। विचारों का विरोध विचारों से ही हो सकता है, राज्य-नियम से नहीं।''

''परन्तु हमारे धर्माचार्य भी तो हैं। वे कुछ नहीं कर पा रहे हैं।''

''अभिप्राय यह है कि वे इसमें योग्य नहीं है। राज्य में अन्य योग्य व्यक्तियों को इस कार्य के लिए ढूंढा जाये। राज्य में न हों तो राज्य के बाहर से ऐसे विद्वानों को लाकर राज्य में बसाया जाये।''

रामी का सुझाव सुन्दर था। महाराज इसपर विचार करने लगे।

राजकुमार राहुल को जब विदित हुआ कि कुमकुम अपनी मां के साथ गांव को गई थी और वहां से नहीं लौटी तो वह अपने मन में अशान्ति अनुभव करने लगा। उसने एक दिन अपनी माता महारानी से पूछ लिया, ''मां! आजकल कुमकुम दिखाई नहीं देती?''

''किसलिए पूछ रहे हो तुम?'' महारानी दुर्गा ने पूछा।

''मां! वह मुझे बड़ी अच्छी लगती है।''

महारानी को सन्देह हो गया कि कुछ गड़बड़ है। उन्होंने पूछा, ''क्यों अच्छी लगती है?''

''मां! मैं उससे प्रेम करने लगा हूं।''

''प्रेम? वह क्या होता है?''

''मां! मैं उससे विवाह करूंगा।''

''परन्तु वह तो अभी छोटी वयस् की है। अभी उसकी आयु विवाह के योग्य नहीं हुई।''

''तो मां! जब वह विवाह-योग्य आयु की हो जायगी, तब करूंगा। परन्तु मैं उससे मिल तो सकता हूं न,''

''कुमार! तुम जानते हो, विवाह किसलिये किया जाता है?''

राहुल अपनी आयु के कारण यह जानता था कि पुरुष-स्त्री में विवाह के उपरान्त या वैसे भी सम्बन्ध बनता है और उस सम्बन्ध में कुछ रसपूर्ण बात होती हैं इसपर भी उसने मां के सम्मुख अपनी जानकारी नहीं रखी। उसका मुख लज्जा से लाल हो गया।

उसे लज्जाभिभूत देख महारानी ने कहा, ''मैं बताती हूं कि विवाह किसलिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया जाता है। यह सन्तान-उत्पत्ति के निमित्त होता है। यदि तुम्हारा विवाह रामी की लड़की कुमकुम से हुआ तो तुम्हारी जब सन्तान होगी, उसे कहार की सन्तान समझकर राजगद्दी नहीं मिलेगी।''

''परन्तु मां! वह कहार की लड़की है क्या? मुझे तो वह श्रेष्ठ कुलोत्पन्न प्रतीत होती है। वह मोहन की लड़की नहीं हो सकती।''

''क्यों, मोहन की क्यों नहीं हो सकती?''

''मोहन अत्यन्त कुरूप है। वह मूर्ख भी है। कुमकुम तो उससे बहुत श्रेष्ठ बुद्धि रखती है और फिर वह सुन्दर भी बहुत है।''

''तुम बुद्धि और सौन्दर्य के विषय में क्या जानते हो?''

''मां! उसको देख चित्त प्रसन्न होता है। यह इसी कारण है कि वह सुन्दर है। कुरूप वस्तुओं को देख चित्त प्रसन्न नहीं होता। उसकी बुद्धि का परिचय गुरु जी देते हैं। एक दिन गुरु जी बता रहे थे कि वह मुझसे भी अधिक सूझबूझ रखती है। वह मोहन की लड़की नहीं हो सकती। मोहन तो महामूर्ख है।''

''कैसे कहते हो कि वह मूर्ख है? क्या महाराज मूर्खों का अपनी सेवा में रख सकते हैं?''

''मां! वह केवल पान ही तो लगाता है। पान लगाना हाथों का कौशल है, बुद्धि का नहीं। बुद्धि से वह मूर्ख ही है। दो दिन पूर्व मैंने उससे यही पूछा था कि कुमकुम क्यों नहीं लौटकर आयी? इसपर वह कहने लगा कि उसकी मां से पूंछो। मां-बेटी दोनों मेरा कहा नहीं मानतीं।

महारानी हंस पड़ी। हंसकर कहने लगीं, ''कुमार! वह मूर्ख नहीं है। उसने तो तुम्हें मूर्ख बनाने का प्रयत्न किया है और तुम मूर्ख बन गये हो।''

''तो मां! वह गई कहां है?''

''उसकी मां से क्यों नहीं पूछ लेते?''

''वह नित्य आपके पास स्वाध्याय कराने आती है। आप पूछ दीजिये न!''

''नहीं कुमार! मैं यह उचित नहीं समझती कि दूसरों की लड़कियों के विषय में पूछताछ करूं। यह शोभायुक्त नहीं होता।''

राहुल समझ गया कि मां बताना नहीं चाहती। वह चुप कर रहा। परन्तु इस बात के एक सप्ताह उपरान्त मोहन ने एक पत्र रामी को दिया। पत्र कुमकुम का लिखा हुआ था।

''यह आपको कहां से प्राप्त हुआ है?'' रामी ने पूछा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"एक साधु गांव से अपने किसी कार्य से आया है, वह यह पत्र साथ लाया है। कहता था कि पण्डिताइन के लड़के विष्णु ने यह दिया है जिससे तुम्हारे पास यह पहुंच जाये।"

रामी ने पत्र पढ़ा। कुमकुम ने लिखा था—'राजकुमार राहुल कल मुझसे मिलने आया था और कहता था कि प्रति सप्ताह आया करेगा। मैं और नन्दिनी देवी सायंकाल भ्रमण के लिए जाती हैं। प्रातः-भ्रमण पूजा इत्यादि के कारण नहीं हो पाता। कल भ्रमण करते हुए हमें वह मिल गया। वह मेरा मुख-समाचार पूछता था। एक घड़ी-भर वह हमारे साथ रहा। जाते समय यह कह गया है कि प्रति सप्ताह वह यहां आया करेगा।"

मोहन ने पूछ लिया, "अब क्या करोगी?"

"मैं तो महारानी जी से बात करूंगी। साथ ही गुरु जी को पत्र लिखूंगी कि उसका मार्ग-प्रदर्शन करें।"

रामी ने महारानी से बात की। उसने कहा, "मैं समझती हूं कि कुमकुम तथा राहुल को बता देना चाहिये कि दोनों के पिता एक ही हैं, अतः वे बहन-भाई हैं। इस कारण उसका विवाह नहीं हो सकता।"

महारानी का कहना था, "इस विषय में तुम और महाराज परस्पर विचार कर लो। मुझे इस रहस्योद्घाटन से कुछ अन्तर नहीं पड़ता। तुम्हें तथा महाराज को अवश्य अन्तर पड़ जायेगा। तुम्हारी प्रतिष्ठा तुम्हारी लड़की के सम्मुख और महाराज की प्रतिष्ठा लड़के के सम्मुख कम हो जायेगी। इसके उपरान्त लड़के तथा लड़की में क्या प्रतिक्रिया होगी, कुछ कहा नहीं जा सकता।"

अतः रामी ने महाराज से भेंट की और उनके सम्मुख यह प्रस्ताव रखा कि दोनों को उनके जन्म का रहस्य बता दिया जाये। परन्तु महाराज ने स्पष्ट मना कर दिया। उन्होंने कहा, "मैं यह पसन्द नहीं करता। कोई भी पिता अपनी सन्तान की दृष्टि में हीन नहीं बनना चाहता। साथ ही इसमें राजनैतिक कारण भी है जिससे कुमकुम का मुझसे सम्बन्ध प्रकट होना ठीक नहीं होगा।"

रामी अपनी मां के व्यवहार को पसन्द करती थी। उसकी मां ने उसके जन्म के रहस्य को उसे बता दिया था। वह यह भी जानती थी कि किस कारण से मां ने पण्डित जी से सन्तान प्राप्त की थी। रामी के मन में भी कुछ वैसी ही भावना थी, परन्तु महाराज शूरसेन तथा पण्डित जी के मनोभावों में अन्तर था। इसी कारण दोनों के व्यवहार में भी अन्तर पड़ रहा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामी ने कुमकुम को लिखा कि यह उचित नहीं होगा कि वह और राजकुमार बार-बार मिलें। इसपर भी यदि कुमार वहां उससे मिलने आये तो पण्डित जी के सम्मुख ही उससे मिले।

जब पण्डित जी को यह विदित हुआ कि महाराज कुमकुम का विवाह राहुल से पसन्द नहीं करते तो उन्होंने कुमकुम के भ्रमण के समय में परिवर्तन कर दिया। अब कुमकुम तथा नन्दिनी ने भ्रमण का समय प्रातःकाल बना लिया तथा मध्याह्नोपरान्त स्वाध्याय करना आरम्भ कर दिया। परिणाम यह हुआ कि अगली बार जब राजकुमार गांव में आया तो कुमकुम से भेंट पण्डित जी के सम्मुख ही हुई। कुमार को इस भेंट में वह रस नहीं प्राप्त हुआ जो एकान्त में प्राप्त हो सकता था। इसपर भी वह गांव में प्रति सप्ताह आता रहा और पण्डित जी के सम्मुख कुमकुम से मिलता रहा।

इस प्रकार का व्यवहार चलते हुए एक वर्ष व्यतीत हो गया। इस समय तक अवन्ति-राज्य में पीत-वसनधारी बौद्ध भिक्षु तथा भिक्षुणियां भ्रमण करती दिखाई पड़ने लगी थीं। राज्य के बाहर से जो लोग आकर राज्य में बस रहे थे, प्रायः बौद्ध उपासक थे। बौद्ध विहारों में प्रति सप्ताह होनेवाली उपासनाओं में भीड़ होने लगी थी। इसका प्रभाव स्थानीय प्रजा पर भी पड़ रहा था और वातावरण बौद्ध धर्मानुकूल बनने लगा था।

बौद्ध उपासनाओं में सम्मिलित होनेवाले प्रायः शूद्र वर्ण तथा वैश्य वर्ण के लोग होते थे। इन वर्णों के लोगों को अन्य वर्ण के लोगों के विरुद्ध भड़काया जाता था। साथ ही बौद्ध मत में वर्ण-व्यवस्था न होने के कारण यह बताया जाता था कि वर्ण-व्यवस्था ऊंच-नीच की प्रतीक है।

इस तरह एक प्रकार की वैचारिक क्रान्ति उत्पन्न होने के लक्षण दृष्टिगोचर होने लगे थे।

: 4 :

इन दिनों राजकुमार सेना में युद्ध-विद्या सीखने के लिए भर्ती हो गया था। सेना में राजकुमार अश्वारोही नायक के रूप में शिक्षा प्राप्त कर रहा था। उसे सप्ताह में एक दिन का अवकाश मिलता था और उस दिन वह अपने अश्व पर सवार हो दस कोस की यात्रा कर रामकुट्टी गांव जा पहुंचता था। गांव में लगभग दो घड़ी वह पण्डित जी के गृह पर व्यतीत करता था और तदुपरान्त उज्जयिनी लौट जाता था। इन यात्राओं का और गांव में कुमकुम से भेंट का ज्ञान महाराज,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महारानी तथा रामी को हो चुका था, परन्तु उन्होंने इसे रोकने का प्रयास नहीं किया।

रामी एक दिन स्वयं गांव में कुमकुम से मिलने जा पहुंची। वहां उसने पण्डित जी से इस विषय में बात की। पण्डित जी ने बताया कि कुमार आता तो है, परन्तु उसने पृथक् में कुमकुम से मिलने का कभी यत्न नहीं किया।

पण्डित जी ने बताया कि जब भी कुमार आता है, उससे वह राजनीति, राजा के कर्तव्य, समाज की प्रथाएं इत्यादि विषयों पर चर्चा करते रहते हैं तथा इन विषयों में उसका पथ-प्रदर्शन करते हैं।

रामी ने पण्डित जी को कुमार की इच्छा बताई तथा कुमकुम के जन्म की बात बताकर उनकी सम्मति पूछी। पण्डित जी का कहना था कि यह रहस्य-रहस्य ही है, क्योंकि दोनों मुख्य पात्रों को इसका ज्ञान नहीं है और न ही समाज इस विषय में कुछ जानता है। इस कारण इनके परस्पर विवाह कर लेने से समाज में अव्यवस्था होने की सम्भावना नहीं हैं। इसमें आयुर्वेद सम्बन्धी आपत्ति तो है, परन्तु वह इतनी भयंकर नहीं है जितनी दोनों के विवाह पर प्रतिबन्ध लगाने से होने की सम्भावना है।

Central Library
167894
Gurukul Kangri (Deemed to be University) Haridwar

इसपर रामी ने महाराज की आशंका बता दी कि दोनों में परस्पर विवाह होने से समाज में विक्षोभ उत्पन्न हो सकता है। प्रजा, कुमार और कुमकुम की सन्तान को राज्य का उत्तराधिकारी नहीं भी मान सकती। इसपर पण्डित जी ने यह भय प्रकट कर दिया कि यह तो बिना इस विवाह के भी होता प्रतीत हो रहा है। बौद्ध मतावलम्बी वर्ण-व्यवस्था को नहीं मानते। जब प्रजा में इस मत का प्रचार हो गया तो सम्भावना यही है कि प्रजा राजा के पुत्र को उत्तराधिकारी न माने।

इसपर रामी चुप कर गई और उसने घटनाओं को अपने स्वाभाविक मार्ग पर चलने से न रोकने का निर्णय ले लिया।

इस समय ही मंत्रि-मण्डल में राज्य में बढ़ते बौद्ध प्रभाव पर चर्चा हो गई। यह स्पष्ट हो गया था कि महामात्य इस प्रभाव की लपेट में पूर्णतया आ चुका है। एक घटना ऐसी घट गई कि महाराज इस स्वाभाविक प्रगति पर शान्त नहीं रह सके।

रामकुट्टी में एक उपद्रव हो गया। इसका समाचार पण्डित विश्वेश्वर जी का पुत्र विष्णु लेकर राजधानी में आ पहुंचा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विष्णु राजधानी में रामी के अतिरिक्त किसी अन्य से परिचित नहीं था। साथ ही विष्णु समझता था कि वह रामी के द्वारा सीधे महाराज से भेंट कर सकता है। अतः पिता की सम्मति से वह सीधा राजप्रासाद के द्वार पर रामी से भेंट करने जा पहुंचा।

द्वारपाल ने एक प्रतिहार के साथ विष्णु को रामी के निवास पर भेज दिया। रामी ने उसका स्वागत किया और उसे अपने बैठकघर में बैठाया। विष्णु के बिना औपचारिक बात के अपने आने के कारण बता दिया। उसने कहा, "रामी बहन! नन्दिनी, कुमकुम और शिव की पत्नी कमला का आज प्रातःकाल अपहरण हो गया है। जब वे प्रातःकाल भ्रमण से नहीं लौटी तो शिव उनका समाचार लेने गया। वह भी नहीं लौटा। उसके उपरान्त दो अन्य लोगों को भी भेजा गया परन्तु वे भी नहीं लौटे। इसपर पिता जी ने गांव के सरपंच हनुमंतदेव को बुलाकर सब बात बताई तो विदित हुआ कि बौद्ध भिक्षुओं ने ऐसा किया है। स्त्रियों को कहीं अन्यत्र भेज दिया है और शिवराम विहार में बन्दी है। इस समाचार पर गांव के लोगों में उत्तेजना फैली हुई है। उन्होंने विहार को घेर लिया है और वहां संघर्ष होने की सम्भावना हो गई है।...

"पण्डित जी का विचार था कि इस घटना की सूचना सीधी महाराज तक पहुंचनी चाहिये। अधिकारी उचित कार्यवाही नहीं भी कर सकते अथवा विलम्ब से करेंगे, तब तक कुछ भी अनिष्ट हो सकता है। पण्डित जी विहार-वासियों से सभी की मुक्ति के लिए कह रहे हैं, परन्तु गांववाले तो अपनी लाठियां लिये वहां पहुंचे हैं। भय है कि नर-रक्त न बह जाये।"

रामी विष्णु को साथ लेकर उसी समय राजभवन में जा पहुंची। यह मध्याह्न का समय था और महाराज महारानी के साथ भोजन के लिए भोजनालय में गये हुए थे। रामी सीधी भोजनालय में जा पहुंची। विष्णु भवन के बाहर ही ठहर गया था। रामी ने महाराज को जब समाचार दिया तो महाराज भोजन छोड़ उसी समय खड़े हुए और बाहर बैठक में आ गये। विष्णु को उन्होंने वहीं बुला लिया। प्रतिहार को भेजकर महामात्य को भी बुलाया गया। विष्णु ने इनके सम्मुख घटना का पूर्ण वृत्तान्त विस्तारपूर्वक कह सुनाया। उसने कहा, "बहन रामी की लड़की कुमकुम, पिता जी की शिष्या नन्दिनी और मेरे भाई की पत्नी कमला नित्य प्रातः गांव के बाहर की आम की बगिया में भ्रमण के लिए जाया करती हैं। जब से कुमकुम हमारे घर पर रहने के लिए आई है, यह उनका नित्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का व्यवहार है।...

"आज प्रातः भी वे भ्रमण के लिए गईं थीं, परन्तु समय पर लौटी नहीं। तब मेरा भाई शिव उनका समाचार लेने आम की बगिया को गया। जब वह भी नहीं लौटा तो पिता जी ने अपने परिचित दो ग्राम-वासियों को भेजा, परन्तु वे भी नहीं लौटे।...

"इस पर नायक हनुमंतदेव को सूचना भेजी गई। सब आम की बगिया में पहुंचे तो वहां कोई नहीं मिला। कुछ पथिक, जो उस समय विश्राम के लिए बगिया में पहुंचे थे, उनसे विदित हुआ कि कुछ बौद्ध भिक्षु तीन लोगों को, उनके हाथ-पैर बांधे हुए विहार की ओर ले गये हैं। इस पर सम्पूर्ण गांव में यह समाचार फैल गया। प्रायः गांव के सभी युवक-वृद्ध इस समय लाठियां-भाले इत्यादि लेकर विहार को घेरे बैठे हैं। उनमें भारी उत्तेजना है और कुछ भी हो सकता है।"

अतः सुरक्षा-मंत्री को बुलाया गया। जब उसे पूर्ण सूचना मिली तो उसने तुरन्त पचास सैनिकों की एक टुकड़ी उनके नायक को उचित आदेश देकर रामकुट्टी गांव के विहार को भेज दी।

विष्णु को गांव से राजधानी पहुंचने में ढाई घड़ी समय लग गया था। यहां महाराज तथा महामात्य को सूचना देने और उचित कार्यवाही का आदेश देने में तीन घड़ी समय व्यतीत हो गया। सैनिकों के रामकुट्टी-विहार पहुंचने में भी लगभग इतना समय व्यतीत हो गया। इस बीच विहार के बाहर भारी संघर्ष हो चुका था। जब सैनिकों की टुकड़ी वहां पहुंची तो बहुत-से भिक्षु तथा कुछ गांववाले घायल हो चुके थे। मृत्यु किसी की नहीं हुई थी। शिवराम तथा दो अन्य ग्रामवासी विहार के एक आगार में रस्सियों से बंधे मिले थे तथा इस समय तक मुक्त हो चुके थे।

पण्डित विश्वेश्वरनाथ को भय था कि स्त्रियों को राज्य से कहीं बाहर न भेज दिया गया हो। अतः शिव के मुक्त होते ही उन्होंने उसे तुरन्त राजधानी जाकर उचित कार्रवाई कराने के लिए भेज दिया।

शिव भी राजप्रासाद के द्वार पर पहुंचा और अभी भीतर रामी के पास जाने की स्वीकृति मांग ही रहा था कि राजकुमार राहुल द्वार पर प्रवेश करते हुए मिल गये। शिव उसे पहचानता था और कुमार भी शिव से भली-भांति परिचित था। इस कारण शिव को देख कुमार अपने अश्व पर से उतर पड़ा और समाचार पूछने लगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिव ने संक्षेप में सब समाचार सुनाया और विनती करने लगा कि स्त्रियों को राज्य से बाहर जाने से रोकने का कुछ उपाय करना चाहिये।

कुमार प्रायः नित्य की भांति सेना के साथ अभ्यास करने गया हुआ था और वहीं से लौट रहा था। उसे घटना की जानकारी नहीं थी। उसे यह भी ज्ञान नहीं था कि विष्णु प्रातः आया था और महाराज ने सैनिकों की एक टुकड़ी गांव को भेज दी थी। अंतः वह शिव को लेकर राज्य-कार्यालय में रक्षा-मंत्री के पास जा पहुंच। रक्षा-मंत्री ही सेनानायक था।

शिव ने उनके समक्ष सारी घटना पुनः सुना दी। इसपर कुमार ने निवेदन किया कि सीमाओं पर आने-जानेवालों पर देखरेख रखने की आज्ञा तुरन्त भेज दी जाये।

सेनानायक ने तुरन्त सीमा पार करनेवाले मार्गों पर सैनिक भेज दिये और आज्ञा दे दी कि कोई भी स्त्री सीमा पार न करने दी जाये। साथ ही उसने राज्य के अन्तर्गत पांचों बौद्ध विहारों पर सेना का घेरा डलवा दिया।

इस समय दिन का चौथा प्रहर आरम्भ हो चुका था। शिव उस रात राजधानी में ही रामी के घर ठहर गया।

रात्रि एक घड़ी व्यतीत होने पर रामकुट्टी को भेजे सैनिक लौट आये। विहार के महाप्रभु सांकृत्यायन तथा दो ग्रामवासियों को बन्दी बनाकर वे अपने साथ लाये थे। साथ में ग्राम का सरपंच हनुमंत भी था। रामी को यह समाचार महाराज से मिला था। अभी कुमकुम तथा अन्य स्त्रियों को कोई समाचार नहीं आया था।

स्त्रियों का समाचार दो घड़ी पश्चात् पहुंचा। रामी महाराज के पास ही पहुंची हुई थी जब सेनानायक स्वयं यह समाचार लेकर आया। उसने बताया कि वट गांव के विहार में तीन बन्दी स्त्रियां मिल गई हैं और उनको रथ पर राजधानी लाया जा रहा है। सेना का दूत अश्व को भगाता हुआ। उनसे पूर्व ही यह समाचार देने चला आया है।

इस समाचार से रामी, शिव और महाराज को भी अत्यन्त प्रसन्नता हुई और वे उत्सुकता से कुमकुम की प्रतीक्षा करने लगे। परन्तु कुमकुम इत्यादि प्रातःकाल हीं राजधानी पहुंच सकीं।

इस दिन उज्जयिनी के महाप्रभु नारायण ने न्यायालय में सेना के और रामकुट्टी गांववालों के विरुद्ध एक याचिका उपस्थित कर दी। याचिका का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आशय यह था कि ग्रामीणों ने विहार पर आक्रमण कर कई भिक्षुकों को घायल किया है और सैनिकों ने अकारण बौद्ध महाप्रभु सांकृत्यायन को बन्दी बना लिया है।

इस पर न्यायालय ने सेनाध्यक्ष को आज्ञा भेज दी कि वह स्वयं अथवा उसका प्रतिनिधि उपस्थित होकर स्थिति को स्पष्ट करें।

सेनाध्यक्ष ने नायक नरहरि को, जिसके अधीन सैनिकों की टुकड़ी रामकुट्टी भेजी गई थी, न्यायालय में उपस्थित कर दिया।

नरहरि ने अपना वक्तव्य दिया, "कल मध्याह्न के कुछ ही समय बाद मुझे सेनाध्यक्ष की यह आज्ञा मिली कि मैं अपने अधीन पचास सैनिकों को लेकर रामकुट्टी विहार पहुंचूं तथा विहार में बन्दी बनाई गई तीन स्त्रियों तथा तीन ग्रामीणों को मुक्त कराकर उन्हें न्यायालय में उपस्थित करूं। परन्तु हमारे पहुंचने से पूर्व ही ग्रामीणों और बौद्ध भिक्षुओं में संघर्ष हो चुका था। जब हम वहां पहुंचे तो घायल ग्रामवासियों तथा भिक्षुओं का ग्राम के भिषगाचार्य द्वारा उपचार हो रहा था। वहां पहुंचने पर विदित हुआ कि विहार में स्त्रियां बन्दिनी नहीं मिलीं। तीन ग्रामीणवासी बन्दी किये हुए मिले थे। वे भी हमारे वहां पहुंचने से पूर्व ही मुक्त किये जा चुके थे। उनमें से एक राजधानी के लिए निकल चुका था। वह ग्रामीण राजधानी में कुमार राहुल जी के पास पहुंचा था। रात्रि उनके निवास पर ही रहा है तथा इस समय न्यायालय में उपस्थित है।"

तदनन्तर शिवराम को न्यायालय में उपस्थित किया गया। उसने अपना वक्तव्य दिया, "मैं प्रातः सूर्योदय से पूर्व ही खेतों में चला जाता हूं और दो मुहूर्त सूर्योदय के उपरान्त लौटा करता हूं। लौटकर स्नानादि तथा आहार लिया करता हूं।...

"कल जब मैं घर पहुंचा तो पिता जी ने चिन्ता व्यक्त करते हुए बताया कि कुमकुम, नन्दिनी और मेरी पत्नी कमला प्रातः-भ्रमण से नहीं लौटीं। उनके लौटने में दो घड़ी का विलम्ब हो चुका था। मैं उसी समय आम की बगिया की ओर चल दिया। आम की बगिया में उस समय लगभग पचास भिक्षु एकत्रित थे। मेरे वहां पहुंचते ही सबने मुझे घेर लिया और तदुपरान्त मेरे मुख में कपड़ा ठूंसकर मुझे रस्सियों से जकड़ लिया। कुछ ही देर उपरान्त हमारे गांव के श्री वीरभद्र तथा सुधाकर पाण्डे वहां आये। उन दोनों को भी उसी प्रकार घेरकर बन्दी बना लिया गया।...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तदनन्तर हमें रामकुट्टी के विहार में ले-जाया गया और एक आगार में बन्द कर दिया गया।...

"एक प्रहर दिन व्यतीत हो जाने पर हमें विहार के बाहर बहुत हो-हल्ला सुनाई दिया और तब कुछ ही समय उपरान्त गांववासी विहार में घुसे। उन्होंने ही हमारे आगार का द्वार खोल हमें मुक्त किया।...

"मेरी पत्नी कमला तथा अन्य दोनों लड़कियां उस विहार में नहीं थीं। इस कारण पिता जी ने मुझे तुरन्त राजधानी पहुंचकर उन स्त्रियों को ढूंढने के लिए कुछ कार्रवाई करने का आदेश दिया। मैं अभी राजप्रासाद के द्वार पर पहुंचा ही था और अपना नाम भीतर भेजकर रामी देवी से मिलने की स्वीकृति की प्रतीक्षा कर रहा था कि राजकुमार राजप्रासाद में प्रवेश करते मिल गये। मैंने उन्हें पूर्ण स्थिति से अवगत किया तो वह मुझे सेनाध्यक्ष के पास ले गये। जब मैंने यह आशंका प्रकट की कि स्त्रियों को राज्य से बाहर भेजा जा सकता है तो सेना अध्यक्ष ने तुरन्त सीमाओं पर सैनिक भेज दिये जिससे उनके बाहर भेजे जाने को रोका जा सके।...

"इसके पश्चात् सेनाध्यक्ष के प्रतिनिधि नायक नरहरि ने न्यायाधीश को यह सूचना दी कि वट गांव के विहार से तीनों भगाई गई स्त्रियों प्राप्त हो गई हैं और उनमें से एक न्यायालय में उपस्थित है।"

न्यायाधीश ने उसे उपस्थित करने की आज्ञा दे दी।

शिव की पत्नी कमला उपस्थित हुई तो उसने अपना वक्तव्य दे दिया। उसने कहा, "मैं, कुमकुम और नन्दिनी प्रातः-भ्रमण के लिए सदैव की भांति आम की बगिया में गई थीं। कल वहां बहुत-से बौद्ध भिक्षु उपस्थित थे। ज्योंही हम वहां पहुंची, हमें धर लिया गया। हमारे मुखों में कपड़ा ठूंसकर हमारे हाथ-पांव बांध दिये गये। इसके उपरान्त एक रथ में डालकर हमें वट गांव के विहार में भेज दिया गया जहां से हम कल सायंकाल मुक्त कराई गई हैं।"

न्यायधीश ने पूछा, "आपके साथ विहार में कैसा व्यवहार किया गया?"

कमला ने कहा, "हमें कोई कष्ट नहीं दिया गया। मध्याह्न तक हमें एक आगार में बन्द रखा गया। उस समय हमारे हाथ-पांव से रस्सी खोल दी गई थी तथा मुख से कपड़ा निकाल दिया गया था। खाने को भोजन भी दिया गया।

"मध्याह्न के समय विहार की अध्यक्षा हमारे पास आई और भिक्षुणी बनने के लिए हमें उपदेश देती रहीं। उसके उपदेशों पर नन्दिनी देवी से बहुत-सी बातें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होती रहीं। दो घड़ी-भर अध्यक्षा वहां रहीं। इस पूर्ण बातचीत में रोष अथवा आरोप, कुछ भी नहीं लगाया गया।...

"सायंकाल सूर्यास्त के समय राज्य के सैनिक वहां पहुंचे। तब हमें मुक्त कर दिया गया।"

अन्त में महाप्रभु नारायण ने वक्तव्य दिया। उसने बताया कि उसने अपनी याचिका में जो बातें लिखी हैं, किसी से सुनकर लिखी हैं।

"किससे सुनी हैं?" न्यायाधीश का प्रश्न था।

"मैं परसों रामकुट्टी के विहार के निरीक्षण के लिए गया था। कल प्रातःकाल ही लौटा था। कल मध्याह्न के समय वहां से एक भिक्षु आया। उसने बताया कि ग्रामवासियों ने विहार पर आक्रमण कर बहुत-से भिक्षुओं को घायल कर दिया है। उसकी सूचना पर ही मैंने याचिका की थी। अन्य किसी भी बात का मुझे ज्ञान नहीं है।"

"उस भिक्षु को उपस्थित किया जाये!"

भिक्षु वात्स्यायन को, जिसके कथन पर महाप्रभु ने याचिका की थी, उपस्थित किया गया। वात्स्यायन ने अपना वक्तव्य देते हुए कहा, "मैं प्रातःकाल भिक्षा करने निकल गया था। मध्याह्नोपरान्त जब मैं लौटा तो मैंने देखा कि विहार के बाहर बहुत-से भिक्षु घायलावस्था में पड़े हैं और गांव के भिषगाचार्य उनका उपचार कर रहे हैं। मुझे रामकुट्टी विहार के अध्यक्ष ने तुरन्त उज्जयिनी पहुंचकर महाप्रभु को इस संघर्ष की सूचना देने के लिए भेज दिया। संघर्ष मेरे सामने नहीं हुआ था और इनके कारणों का मुझे बिल्कुल ज्ञान नहीं है।"

न्यायाधीश अनुभव कर रहा था कि इन साक्षियों के वक्तव्य से किसी परिणाम पर पहुंच पाना असम्भव है। इस कारण उसने इस विषय में पूर्ण छानबीन के लिए गुप्तचर-विभाग को सूचना भेज दी तथा एक मास के भीतर पूर्ण जानकारी न्यायालय में उपस्थित करने का आदेश दे दिया।

: 5 :

जब न्यायालय में इस घटना की जांज-पड़ताल हो रही थी तो इसकी चर्चा उस दिन मंत्रि-मण्डल में भी चल पड़ी। इस विषय को महाराज शूरसेन ने ही उपस्थित किया। उन्होंने कहा, "रामकुट्टी की घटना ने इस राज्य में एक नई स्थिति उत्पन्न कर दी है। स्थिति यह है कि अल्पायु बालकों को बौद्ध बनाया जा रहा है।...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह बात निर्विवाद है कि तीन स्त्रियों में एक अल्पायु लड़की थी। वे एक विहार में मिलीं जब सैनिक वहां पहुंचे।...

"वट गांव के विहार की अध्यक्षता का यह कथन कि वे स्वेच्छा से वहां पहुंची थीं, यदि सत्य भी मान लिया जाये, तब भी एक अल्पायु बालिका को किसी मत की दीक्षा उसके माता-पिता की अनुमति के बिना देना उचित है अथवा नहीं? यदि नहीं तो ऐसी दुर्घटना को कैसे रोका जा सकता है?"

महामात्य का कथन था, "महाराज! उन स्त्रियों से, विशेषतया उस बालिका से यह पता करना चाहिये कि क्या उनपर अनुचित दबाव डालकर अथवा उनको किसी प्रकार का प्रलोभन देकर तो यह नहीं किया गया?"

"एक अल्पायु बालिका के वक्तव्य पर विश्वास कैसे किया जा सकता है? उसके विषय में उसके संरक्षक के वक्तव्य का ही कुछ मूल्य हो सकता है।" महाराज का कहना था।

महामात्य का प्रश्न था, "संरक्षक तो कभी भी अपने अधीनस्थ को अपने संरक्षण से बाहर नहीं जाने देगा। वह उसे अपनी सम्पत्ति ही मानने लगता है।"

"तो एक अल्पवयस्क के विषय में कौन निर्णय लें?"

"राज्य।"

"तब ठीक है। यह निर्णय लिया जाये कि भविष्य में किसी अल्प वयस्क बालक को किसी मत में दीक्षा देने से पूर्व राज्य की स्वीकृति ली जाये या नहीं। क्या महामात्य यही चाहते हैं?"

इस पर महामात्य चुप कर गये।

धर्म-मंत्री ने कहा, "मैं समझता हूं कि अल्पवयस्क बालक अथवा बालिका को मत-परिवर्तन अथवा भिक्षु बनने की स्वीकृति ही नहीं होनी चाहिये और स्मृति के आदेशानुसार बालक को अपने माता-पिता अथवा पालक या अभिभावक के पास ही रहने के लिए विवश किया जाये।"

"यह तो घोर अन्याय हो जायेगा।" महामात्य का कथन था।

"यह उसी प्रकार का अन्याय होगा जैसे किसी आचार्य का अपने शिष्य को शिक्षा के लिए बाध्य करना। वह विशेष परिस्थिति में अपने शिष्य को दण्ड भी देता है।"

इसपर महाराज ने कहा, "आचार्य को वह अधिकार बालक के माता-पिता से प्राप्त होता है, राज्य द्वारा नहीं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"महाराज!" धर्म-मंत्री ने पुनः कहा, "मैं यही निवेदन कर रहा हूं कि माता-पिता अथवा संरक्षक का नियंत्रण बालक पर राज्य स्वीकार करता है।"

महामात्य ने कहा, "मैं समझता हूं कि देश में एक नई परिस्थिति उत्पन्न हो गई है। इस नई परिस्थिति के प्रकाश में धर्म-व्यवस्था में भी कुछ परिवर्तन लाना आवश्यक है।"

इसपर न्याय-मंत्री पण्डित चन्द्रमणि ने कह दिया, "न्यायालय में एक ऐसा विषय पहले से उपस्थित है। अतः मंत्रि-मण्डल को इस विषय पर कोई निर्णय न्यायालय के निर्णय के उपरान्त ही करना चाहिये, अन्यथा यह न्यायालय के कार्य में हस्तक्षेप हो जायेगा।"

इसपर इस विषय पर विचार स्थगित कर दिया गया।

इसपर भी महाराज को मंत्रि-मण्डल में हुए इस वार्तालाप से सन्तोष नहीं हुआ था। उस दिन मंत्रि-मण्डल की बैठक के उपरान्त वह भोजन के लिए अपने आगारों में आये तो बैठकघर में महारानी और रामी गम्भीर भाव में वार्तालाप करती मिलीं।

महाराज के आने पर दोनों ने उठकर उनका स्वागत किया। महाराज ने महारानी के मुख पर देख व्यंग्यात्मक भाव में पूछ लिया, "आज क्या बात है, गुरु-शिष्या दोनों गम्भीर चिन्तन में मग्न हैं?"

महारानी ने ही महाराज के प्रश्न का उत्तर दिया, "रामी देवी कह रही है कि विश्वस्त सूत्रों से पता चला है कि महामात्य की पत्नी सर्वप्रिया बौद्ध उपासिका हैं और उसका प्रभाव महामात्य पर हो रहा है। राज्य का गुप्तचर-विभाग महामात्य के अधीन होने से कुमकुम इत्यादि के विषय में जांच ढंगपूर्वक नहीं हो सकेगी। यदि कुछ भी बात बौद्ध विहारों के विरुद्ध विदित हुई तो वह न्यायालय में उपस्थित नहीं की जाएगी।"

महाराज को महामात्य की बातों से रामी का अनुमान सत्य सिद्ध होता प्रतीत हुआ। इस कारण उन्होंने कहा, "पिछले कुछ मास से महामात्य के मुख से ऐसी ही बातें निकल रही है जो युक्ति संगत नहीं हैं। हम समझते थे कि महामात्य वृद्धता को प्राप्त हो रहे हैं इस कारण अयुक्त कथन करते हैं, परन्तु हमारे अनुमान की अपेक्षा रामी देवी का अनुमान अधिक युक्ति-युक्त प्रतीत होता है।...

"इसपर भी समस्या यह है कि महामात्य को अकारण मंत्रि-मण्डल से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निष्कासित नहीं किया जा सकता।

इस समस्या पर रामी ने एक सुझाव उपस्थित कर दिया। उसने कहा, "महाराज! मैं समझती हूं कि उपयुक्त यह होगा कि आप अपना एक निजी सचिव नियुक्त करें और उसे राज्य के हस्तक्षेप से पृथक् अपना सचिवालय निर्माण करने का आदेश दें। वास्तव में वह आपके राज्य का कर्णधार होगा। इसके अधीन ही आपका राज्य हो जायेगा। यह इस सचिवालय का कर्तव्य हो कि महामात्य-जैसे विपरीत मति के राज्याधिकारियों की राज्य-विरोधी गतिविधियों का प्रमाण-सहित रहस्योद्घाटन करें।"

"परन्तु इस कार्य के लिए एक अति योग्य तथा विश्वसनीय व्यक्ति चाहिये। ऐसा कोई व्यक्ति आज अवन्ति मे दिखाई नहीं दे रहा।"

रामी ने अब साहस पकड़कर कहा, "एक विद्वान् व्यक्ति को मैं जानती हूं। आप उसकी परीक्षा करके देखें।"

"कौन है?"

"गुरु जी पंडित विश्वेश्वरनाथ। अपनी पतोहू कमला को ले-जाने के लिए वह उज्जयिनी आये हुए हैं और मेरे निवास पर ठहरे हुए है।...

"कल रात्रि वह कह रहे थे कि राज्य का गुप्तचर-विभाग अति ढीला है, अन्यथा राजधानी के समीप ऐसी दुर्घटना हो जाये और राज्य को सूचना इतनी विलम्ब से मिले, वह भी एक ग्रामवासी द्वारा!"

महाराज ने कहा, "हम चाहते तो हैं कि ऐसी व्यवस्था की जाये परन्तु किसी योग्य और विश्वस्त व्यक्ति के अभाव में कुछ कर नहीं सकते। अब तुम्हारा यह सुझाव है कि पंडित विश्वेश्वरनाथ यह कार्य कर सकेंगे। हम समझते हैं कि वह अवश्य परीक्षा के योग्य हैं।"

"परन्तु क्या इसका सुझाव पंडित जी ने दिया है?" महारानी ने पूछ लिया।

"नहीं महारानी जी! पंडित जी का नाम मेरे ध्यान में तब आया जब महाराज ने कहा कि कोई योग्य और विश्वस्त व्यक्ति इस कार्य के लिए नहीं मिल रहा।"

"तब ठीक है। रामी! तुम पंडित जी से बात करो।"

"मैं समझती हूं कि पंडित जी को महाराज स्वयं कहें और राज्य में धर्म-व्यवस्था की पुनर्स्थापना का प्रयास करने को कहें तो वह मान जायेंगे। आप उन्हें यहां आमंत्रित कर बात करिये तो उपयुक्त होगा। मेरे कहने से वह इसमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरा स्वार्थ समझकर इस प्रस्ताव को अस्वीकार भी कर सकते हैं।

"महाराज! यह सत्य है कि इसमें मेरा स्वार्थ भी है। मेरी लड़की कुमकुम की समस्या सुलझी नहीं है।"

"ठीक है। हम अभी भोजनोपरान्त एक लिखित निमंत्रण पंडित जी के लिए दे देंगे।"

पंडित जी मध्याह्नोपरान्त गांव लौट जाने की तैयारी कर रहे थे, जब महाराज का लिखित निमंत्रण लेकर रामी अपने निवास पर पहुंची। कुमकुम तथा कमला के विषय में जांच-पड़ताल की आज्ञा न्यायालय दे चुका था और इस जांच-पड़ताल में काफ़ी समय लगना था। इस कारण उज्जयिनी में रुकने से कोई लाभ न समझकर सब लोग गांव को लौट रहे थे। विष्णु स्त्री-वर्ग के लिए रथ का प्रबन्ध करने गया था।

इस समय रामी पहुंची। उसने सबको तैयार देख पंडित जी से कहा, "गुरु जी! अभी आपको गांव को नहीं लौटना चाहिये। कारण यह कि महाराज आपके दर्शन करना चाहते हैं और उन्होंने मुझे यह पत्र आपके लिए दिया है।" इतना कहकर रामी ने महाराज का पत्र पंडित जी को दे दिया।

पत्र महाराज का अपने हाथ से लिखा हुआ था। उन्होंने पंडित जी को अल्पाहार के समय आने का आग्रह किया था। पंडित जी इस निमंत्रण को अस्वीकार नहीं कर सके। इसपर भी उन्होंने विष्णु से कहा, "तुम गांव को लौट जाओ। तुम्हारी माता जी चिन्तित होंगी। मैं कल कमला को लेकर रथ पर आऊंगा।"

विष्णु उसी समय अपने अश्व पर बैठकर गांव के लिए रवाना हो गया।

चौथे प्रहर के आरम्भ में पंडित विश्वेश्वरनाथ रामी के साथ महाराज से भेंट करने चल पड़े। महाराज तथा महारानी दोनों उनके स्वागत के लिए बैठकघर में उपस्थित थे। उन्होंने आदरपूर्वक पंडित जी को बैठाया और फिर महाराज स्वयं वहां बैठ गये। रामी उनके बैठने पर उठी और आगार से बाहर निकल गई। इस समय महारानी भी उसके पीछे-पीछे वहां से निकल गई और महाराज तथा पंडित जी परस्पर बातें करने लगे।

अल्पाहार लेते हुए महाराज ने राज्य की स्थिति का परिचय दिया तो पंडित जी ने कहा, "यह सूचना कि महामात्य की पत्नी बौद्ध उपाससिका हैं और प्रति सप्ताह विहार में जाती हैं, मुझे नन्दिनी से मिली थी। विहार की एक भिक्षुणी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कल्याणी उससे मिलने आज प्रातः आई थी। उसने ही यह सूचना नन्दिनी को दी है।...

"शेष अनुमान मेरा है। पत्नी का प्रभाव पति पर होना स्वाभाविक है। और फिर न्यायालय में इस घटना पर दिये गये वक्तव्यों से यह स्पष्ट ही है कि राज्य का गुप्तचर-विभाग अत्यन्त दुर्बल है।

महाराज ने कहा, "पंडित जी! हम भी कुछ ऐसा ही अनुभव कर रहे हैं। इस पर हमें एक सुझाव प्राप्त हुआ है कि हमें एक निजी कार्यालय निर्माण करना चाहिये जो राजकीय कार्यालय से पूर्णतया स्वतन्त्र हो।"

"तो आपने अभी तक ऐसा कोई प्रबन्ध नहीं किया?"

"अभी तक हमारा यह विचार था कि हम राज्य के अभिन्न अंग हैं, इस कारण पृथक् कोई प्रबन्ध करना आवश्यक नहीं समझा था।"

"इसमें कारण यह है, "पंडित विश्वेश्वरनाथ ने कहा, "लोग ऐसा समझने लगे हैं कि राज्य को राज-परिवार अपनी निजी सम्पत्ति मानता है। मेरा मत है कि यह विचार उस दिन से आरम्भ हुआ है जब से हत्यारे राज्याधिकारी बनने लगे हैं।...

"मगध-राज्य में महापद्यनन्द नाम के एक राजा हुए हैं। कहा जाता है कि मगध की एक रानी का सम्बन्ध एक नापित से हो गया था और महापद्यनन्द उस सम्बन्ध का परिणाम है। महापद्यनन्द का पालन-पोषण राज-परिवार में हुआ और जब वह युवा हुआ तो उसने महाराज की हत्या कर दी तथा स्वयं राजा बन बैठा।...

"इस हत्यारे ने अपना परिवार चलाने का यत्न किया, परन्तु वह चल नहीं सका। उसके परिवार के एक घनानन्द की हत्या कर चन्द्रगुप्त शासक बना। इस प्रकार शासकों ने ही यह सिद्ध कर दिया कि प्रजा भेड़-बकरियों की भांति है और वे उनके स्वामी हैं। इस विकृति को दूर करने की जो सामर्थ्य रखते थे, उनको सामर्थ्यहीन किया जा चुका है।

"अब राजा गडरिया है और प्रजा भेड़-बकरियां। इसी का परिणाम यह हो रहा है कि राजा राज्य नहीं रहा और राज्य राजा नहीं है।

"इसमें दोष ब्राह्मण-वर्ग का भी है। ब्राह्मण-वर्ग समाज का बुद्धिशील अंग माना जाता है और यही बुद्धि-विहीन हो रहा है। वह अब दान-दक्षिणा पर पलनेवाला समाज का अंग-मात्र रह गया है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पंडितवर!" महाराज ने कहा, "हम भी यही अनुभव कर रहे हैं। इस समस्या का सुझाव यही है कि हम अपना एक सचिव उसी ब्राह्मण-वर्ग के एक योग्य विद्वान् को नियुक्त करना चाहते हैं। आप बताइये, क्या हमारा यह सुझाव उपयुक्त है?"

"यह सर्वथा उचित है। आप एक ऐसे विद्वान् को ढूंढिये जो आपका सचिव बनकर आपको राज्य से ऊपर ले-जा सके।"

"हमें उस व्यक्ति ने जिसने एक निजी सचिव रखने का सुझाव दिया है, बताया है कि हमारे राज्य में उस महान् पद के लिए कौन उपयुक्त विद्वान है। उसने अपना नाम गुप्त रखने की इच्छा प्रकट की है और उस विद्वान् का नाम बताया है पंडित विश्वेश्वरनाथ।"

पंडित विश्वेश्वरनाथ हंस पड़े और बोले, "यह रामी ही हो सकती है। उज्जयिनी में मेरा किसी से भी विशेष परिचय नहीं है। रामी ही मुझे जानती है और कदाचित् वह मेरी सामर्थ्य को अधिक मान रही है।"

"परन्तु भगवन्! क्या यह सम्भव नहीं कि आप अपनी सामर्थ्य को कुछ कम मान रहे हों?"

"हो सकता है।" पंडित जी ने कहा, "यह सम्भव है कि कभी कोई अपने अति समीप होने से अपना मूल्यांकन नहीं कर सकता।"

"तब आप इस उत्तरदायित्व को स्वीकार कीजिये। हम आपका बहुत अनुग्रह मानेंगे। हां, कुछ काल के लिए आप अपनी परीक्षा करके देख लें कि हम दोनों एक दिशा में चल सकते हैं अथवा नहीं।"

"आपका सुझाव उचित ही है। महाभारत में इस प्रकार के सम्बन्ध को, जैसा अब आप स्थापित करना चाहते हैं, राजा और पुरोहित का सम्बन्ध बताया है। इस सम्बन्ध के लिए सचिव शब्द उपयुक्त नहीं है।"

"क्या अन्तर पड़ता है इससे?"

"भारी अंतर पड़ सकता है। सचिव राज्य का सेवक होता है और पुरोहित स्वतन्त्र व्यक्ति तथा प्रतिष्ठित परामर्शदाता।"

"हमें आपको अपना पुरोहित बनाने में आपत्ति नहीं है।" महाराज ने कहा।

"तो यह इस प्रकार होगा कि मैं गांव छोड़कर नगर में आ जाऊंगा। यहां मैं अपना पृथक् गृह लेकर निवास करूंगा। वहां मैं अपना शिक्षा कार्य करूंगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाराज मेरे यजमान होकर समय-समय पर मुझसे परामर्श करते रहेंगे।''

''पण्डितवर! हम इससे कुछ अधिक चाहते हैं। वह वह कि हमारे पुरोहित कुछ अपनी सामर्थ्य निर्माण करें जिससे राज्यान्तर्गत होनेवाली गतिविधियों का ज्ञान ठीक-ठीक प्राप्त कर सकें और तदनुसार ठीक-ठीक सम्मति दे सकें।''

''परन्तु राजन्! वह सामर्थ्य मेरी होगी, राज्य अथवा राजा की नहीं। तभी उस सामर्थ्य से मैं ठीक-ठीक ज्ञान प्राप्त कर सकूंगा तथा अपने यजमान का हित-चिन्तन कर सकूंगा।''

''ठीक है। हमारा निवेदन है कि अब आप गांव को वापस मत जाइये। एक समस्या तो अभी हमारे सम्मुख है ही। उसी से आप कार्यारम्भ करें। हम आपके निवास के लिए उचित प्रबन्ध कर रहे हैं।''

''कब तक प्रबन्ध हो जायेगा?''

''कल प्रातःकाल आपको एक पृथक् आवास मिल जायेगा। वह इतना बड़ा होगा कि आप अपनी पाठशाला चला सकेंगे।''

''परन्तु महाराज! एक बात आप स्मरण रखें। पुरोहित तथा सचिव में केवल सेवक न होने का ही अन्तर नहीं है, वेतनधारी न होने का भी अन्तर है। आप जो भी सुविधा दें वह मेरे संकल्प करके दें जिससे उस आवास तथा प्राप्त होनेवाली सुविधाओं पर मैं अपना अधिकार समझ सकूं। वे सब कर्मचारी को प्राप्त होनेवाली सुविधा के समान न हों।''

''भगवन्! वह अन्तर हम समझते हैं। आप स्वयं को सब प्रकार से स्वतन्त्र समझें।''

: 6 :

महाराज शूरसेन अपने पुरोहित को द्वार तक छोड़ने आये। जब पंडित जी विदा होने लगे तो साथ के आगार से रामी भी बाहर निकल आई। दोनों साथ-साथ रामी के निवास की ओर चल पड़े। रामी पण्डित जी का मुख गम्भीर तथा सन्तुष्ट देख समझ गई कि पण्डित जी ने महाराज का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया है। वह इससे प्रसन्न थी।

उसके निवास पर कल्याणी नन्दिनी से मिलने आई हुई थी। उसने महाप्रभु का एक प्रस्ताव नन्दिनी के सम्मुख उपस्थित किया था, परन्तु नन्दिनी उसे मान नहीं रही थी। अब पंडित जी को देखकर नन्दिनी ने कहा, ''इस विषय में मैं पंडित जी से सम्मति करना चाहती हूं।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परन्तु भगिनी!" कल्याणी ने कहा, "महाप्रभु का यह आग्रह था कि यह बात हम दोनों तक सीमित रहे।"

"भगिनी! दो से तीन में तो अभी से है। हम दोनों के अतिरिक्त महाप्रभु जानते ही हैं। तीन से चार हो गये तो कोई हानि नहीं होगी।"

कल्याणी चुप कर रही। नन्दिनी उठकर आगार से बाहर गई और पंडित जी को अपने आगार में ले आई। उन्हें बैठाकर उसने कहा, "पंडित जी! विहार के महाप्रभु नारायण ने भगिनी कल्याणी द्वारा एक संदेश भेजा है। मैं उसमें आपकी सम्मति चाहती हूं।"

"हां बताओ, क्या सन्देश है?" पंडित जी ने उत्सुकतावश पूछा।

कल्याणी ने कहा, "उज्जयिनी के एक सेठ धनश्याम हैं। उनका दो स्थानों पर व्यवसाय है—यहां उज्जयिनी में तथा हस्तिनापुर में। वह विवाहित हैं और उनका परिवार यहां उज्जयिनी में है। वह एक अन्य विवाह की लालसा रखते हैं तथा अपनी नवीन पत्नी को हस्तिनापुर में रखेंगे।...

"कल उन्होंने न्यायालय में नन्दिनी देवी को देखा तो इच्छा करने लगे कि उससे विवाह करें। उन्होंने नन्दिनी का पूर्ण इतिहास विदित किया। यह जानकर कि यह भिक्षुणी रह चुकी है, वह महाप्रभु के पास पहुंचे और इसमें उनकी सहायता मांगने लगे। उन्होंने प्रस्ताव रखा है कि यदि नन्दिनी स्वीकार करे तो वह इसे पचास सहस्र स्वर्ण भेंट में देंगे। वह चाहते हैं कि नन्दिनी विहार के उपासकों के चैत्य में आ जाये। वहां वह इसे भेंट देंगे और तदनन्तर विवाह करके इसे हस्तिनापुर ले जाएंगे।"

"गुरुजी!" नन्दिनी ने कहा, "मैंने भगिनी को कहा है कि सेठ जी यहां आकर आपसे मिल लें तथा यह प्रस्ताव आपके सम्मुख रखें। आप ही मेरा कन्यादान करेंगे। भगिनी कहती है कि सेठ बौद्ध उपासक हैं और बौद्ध प्रथा के अनुसार मुझसे विवाह करना चाहते हैं। वह यहां नहीं हो सकता।"

"तब?" पंडित जी ने पूछा, "मैं जानना चाहता हूं कि नन्दिनी ने इस विषय में क्या निर्णय किया है?"

नन्दिनी ने आंखें नीची करके कहा, "महाप्रभु के कथन पर मुझे किंचिन्मात्र भी विश्वास नहीं है। मैं विहार में नहीं जाऊंगी।"

इस पर पंडित जी ने कहा, "देखो बेटी कल्याणी! नन्दिनी ठीक कहती है। जो कुछ बौद्ध भिक्षुओं ने रामकुट्टी और वट गांव में किया है वह महाप्रभु के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय में ऐसी भावना उत्पन्न करने के लिए विवश करता है।''

कल्याणी चुप कर गई। इस पर पंडित जी ने पुनः कहा, ''कल्याणी! महाप्रभु से कहना कि दूध का जला छाछ को भी फूंक-फूंककर पीता है, और फिर महाप्रभु तो महाप्रभु ही हैं। वह एक-दो दिन में गरम दूध से शीतल पेय नहीं बन सकते। उनकी वंचना साधारण अनपढ़ तथा सरल-चित्त लोगों में चल सकती है; नन्दिनी पर नहीं। नन्दिनी एक वर्ष तक मुझसे शिक्षा प्राप्त करके अब महाभारत ग्रंथ का अध्ययन कर रही है। वह छली नहीं जा सकती।''

कल्याणी विस्मय में पंडित जी का मुख देखती रह गई। तदनन्तर वह प्रणाम करके चली गई। उसके जाने के उपरान्त नन्दिनी ने पूछा, ''गुरु जी! मैंने उचित उत्तर दिया था न?''

''हां बेटी! महाप्रभु विश्वस्त व्यक्ति नहीं है। बौद्ध लोग शून्य से बने संसार में रहते हैं। जो भी कार्य अपने गुरु तथा महात्मा के नाम पर अथवा उनके द्वारा स्थापित संघ के नाम पर करते हैं, उसे पुण्य मानते हैं तथा उनसे बाहर के सभी कार्यों को पाप समझकर उनको करनेवालों को झूठा तथा पापी मानते हैं। दिन-रात 'संघं शरणं गच्छामि' की ये कूक लगाते हैं और यही कारण है कि संघ के नाम पर किये सभी कर्म पुण्य मानते हैं। संघ में कर्ता-धर्ता हैं महाप्रभु, जिन्होंने कल न्यायालय में आद्योपान्त मिथ्या कथन किया था।''

इसके उपरान्त पंडित जी ने रामी, कुमकुम, कमला इत्यादि को बुलाकर महाराज को दिये वचन की बात बता दी। उन्होंने कहा, ''मैं अब उज्जयिनी में ही रहूंगा। मेरे निवास के लिए पृथक् बड़ा-सा भवन मुझे मिल जायेगा जिसमें परिवार-सहित मैं रह सकूंगा और एक पाठशाला भी चला सकूंगा।''

इस पर सभी अति प्रसन्न थे। नन्दिनी ने जब कल्याणी का प्रस्ताव और उसपर अपनी प्रतिक्रिया परिवारवालों को बताई तो सब हंस पड़े।

दूसरी और जब कल्याणी ने महाप्रभु को नन्दिनी का उत्तर सुनाया तो वह क्रोध से उबल पड़े। उस समय उनके समीप सेठ धनश्याम भी बैठा हुआ था। उसने नन्दिनी का उत्तर सुना तो हंस पड़ा।

सेठ के हंसने पर महाप्रभु ने प्रश्न-भरी दृष्टि से सेठ के मुख पर देखा।

इस पर सेठ ने कहा, ''महाप्रभु! मैंने तो पहले ही आपसे कहा था कि मैं स्वयं उससे मिलकर बात करूंगा। आपने अब बात को बिगाड़ दिया है।''

इतना कह सेठ उठकर हाथ जोड़, प्रणाम करके विहार से चला गया। उसके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाने के उपरान्त महाप्रभु ने कल्याणी से पूछा, ''नन्दिनी मेरे मन की बात कैसे जान गई है?''

''महाप्रभु! आपके मन की बात क्या थी?''

''तो तुम नहीं जानतीं?''

''आपने मुझे बताई थी क्या?''

''यही तो मैं पूछ रहा हूं कि जो कुछ मेरे मन में था, वह नन्दिनी और पंडित का बच्चा कैसे जान गये हैं?''

कल्याणी ने कहा, ''महाप्रभु! इसका एक ही अभिप्राय है कि वे लोग हमसे अधिक बुद्धिशाली हैं।''

''यह सब व्यर्थ की बातें हैं। मुझे तो सन्देह है कि तुमने अपनी जानकारी उसे बता दी है।''

''परन्तु महाप्रभु! आपने अपनी यह कूटनीति की बात किसी को बताई थी क्या?''

''हां, वात्स्यायन को मेरी योजना का ज्ञान था।''

''तो भगवन्! उनसे पूछना चाहिये। मेरे लिए तो आप दोनों सम्मानीय हैं।''

महाप्रभु गम्भीर हो विचार करने लगे। कुछ विचारकर उन्होंने कल्याणी को वात्स्यायन को बुलाने के लिए भेज दिया।

कल्याणी समझ गई कि महाप्रभु नारायण कुछ स्थूल बुद्धि के प्राणी हैं। इसी कारण वह षड्यंत्र रचते हैं और फिर उसमें असफल हो जाते हैं।

वह विचार करने लगी कि वह भी नन्दिनी के मार्ग पर क्यों नहीं जा सकती? उसे इसमें कठिनाई यह अनुभव हो रही थी कि नन्दिनी की भांति क्या उसे विहार से बाहर कोई सहायक मिल सकेगा?

नन्दिनी उससे अधिक सुन्दर थी और अभी युवती-मात्र थी। इस स्थिति को समझकर वह मन में विवशता का अनुभव करने लगी।

वात्स्यायन के आगार के बाहर जाकर उसने उसका द्वार खट-खटाया। उस समय वात्स्यायन भिक्षाटन से लौटा ही था। वह भी मन में निराश तथा खिन्न बैठा था। जब से रामकुट्टी की घटना घटी थी, राज्य-भर में बौद्धों की निन्दा होने लगी थी। इसका अनुभव उसे भिक्षा में जाने पर अनुभव हुआ था। लोग उसे देख घृणापूर्वक उससे विमुख हो जाते थे। इसी कारण वह चिन्तामग्न अपने आगार में बैठा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस समय कल्याणी ने द्वार खटखटाया। उसने पूछ लिया, "कौन है?"

"मैं कल्याणी हूं।"

"क्या कार्य है?"

"महाप्रभु आपको बुला रहे हैं।"

वात्स्यायन उठा और आगार का द्वार खोलकर पूछने लगा, "इस समय क्या कार्य है? मैं उपासना से पूर्व चिन्तन कर रहा था।"

"मैं कैसे बता सकती हूं कि उन्हें क्या काम है! वह महाप्रभु हैं। उनकी आज्ञा तो माननी ही चाहिये।" कल्याणी ने व्यंग के भाव में कहा।

वात्स्यान ने उसका मुख देख मुस्कराकर कहा, "भगिनी! क्या बात है?"

कल्याणी के मुख से अनायास उसके मन के भाव फूटकर निकल पड़े। उसने कहा, "महाप्रभु का कोई रहस्य नन्दिनी तथा उसके गुरु को विदित हो गया है। महाप्रभु का अनुमान है कि आपने वह रहस्य उनको बताया है।"

"मैंने कुछ नहीं बताया। हां, कल मेरी बातचीत पंडित जी से हुई थी। वह बहुत ही विद्वान् व्यक्ति हैं और अपनी बात नपे-तुले शब्दों में प्रकट करते हैं।

"मैंने उन्हें कहा था कि जो कुछ रामकुट्टी विहार के भिक्षुओं ने किया है, वह महाप्रभु की भूल के कारण हुआ है। इस पर उन्होंने पूछ लिया—'भूल कार्य के उद्देश्य में थी अथवा कार्य की विधि में?"

"मैं इसका कुछ भी उत्तर नहीं दे सका। इस पर भी मैं विचार कर रहा था कि पण्डित का प्रश्न कितना मार्मिक है! ऐसी युक्ति करनेवाले व्यक्ति से कुछ भी छिपा नहीं रह सकता। जब मैंने कुछ उत्तर नहीं दिया तो वह पुनः बोले—'तुम युवक अपना जीवन व्यर्थ गंवा रहे हो। यह जीवन जो विहार में चल रहा है, निष्क्रमण का मार्ग है।'

"बस, यही बात हुई थी। मुझे महाप्रभु के किसी रहस्य का ज्ञान नहीं था और न ही मैंने ऐसे किसी विषय पर कोई बात की है।"

"देखिये भगवन्! एक सेठ घनश्याम है। वह नन्दिनी से विवाह के इच्छुक हैं। अपनी इच्छा लेकर वह महाप्रभु के पास पहुंचा तो महाप्रभु ने उनका प्रस्ताव बताकर मुझे नन्दिनी के पास भेजा था। नन्दिनी और पण्डित विश्वेश्वरानन्द ने कहा कि यह विवाह एक छलना खेलने का प्रयास है। अतः उन्होंने महाप्रभु के प्रस्ताव पर विचार करना भी उचित नहीं समझा। मैंने लौटकर महाप्रभु से उनका अनुमान बताया तो महाप्रभु को सन्देह हो गया है कि आपने उनकी योजना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पण्डित जी को बता दी है।''

''ठीक है, परन्तु इस समय मेरा चित्त स्वस्थ नहीं। मैं कदाचित् उपासना में भी सम्मिलित नहीं हो सकूंगा।''

कल्याणी ने कहा दिया, ''मैं अपने आगार में जा रही हूं। महाप्रभु का संदेश मैंने आपको पहुंचा दिया है।''

: 7 :

अगले दिन एक भिक्षु ने महाप्रभु को यह समाचार दिया कि आज वह भिक्षा के लिए नगर में गया था तो नगर-प्राचीर के समीप मुख्य मार्ग पर एक बड़े-से गृह के द्वार पर एक नामपट्ट लगा देखा है। वह नामपट्ट कल वहां नहीं था। नामपट्ट पर लिखा था—वैदिक पाठशाला। नीचे आचार्य विश्वेश्वरनाथ का नाम लिखा हुआ था।

महाप्रभु ने इस सूचना पर पूछ लिया, ''तुमने पता किया था कि यह कौन विश्वेश्वरनाथ हैं?''

''जी हां। यह वही रामकुट्टी वाले विश्वेश्वरनाथ हैं।''

''अच्छा कल पता करना, उस गृह में अन्य कौन-कौन है?''

जिस समय वह भिक्षु महाप्रभु को यह सूचना दे रहा था, उनके पास वातस्यायन बैठा कल उसके बुलाने पर न आ सकने का कारण बता रहा था। वातस्यायन का कहना था, ''महाप्रभु! मैं समझता हूं कि आपने जो कुछ रामकुट्टी में करवाया है, वह हमारी प्रतिष्ठा को कम करनेवाला सिद्ध हुआ है। इसी कारण मेरा मन कल अति विक्षुब्ध था और मैं आ नहीं सका।''

''परन्तु मेरे कार्य में महारामिति की स्वीकृति थी।'' महाप्रभु ने कहा।

''सत्य?''

''हां, मैंने घटना से पूर्व एक पत्र महासमिति को लिखा था कि अब हमारी अवन्ति-राज्य में इतनी शक्ति है कि हम संघ से विद्रोह करने वाले को पकड़कर महासमिति के सम्मुख उपस्थित कर सकते हैं। इसपर महासमिति का सन्देश मुझे मिला कि बौद्ध धर्म तथा बौद्धसंघ का प्रभाव बढ़ना चाहिये। इसके लिए जो भी उपास किया जाये, उचित है। उपाय गौण है, लक्ष्य-सिद्धि मुख्य है। जब वहां से मुझे इस प्रकार की अनुमति मिली तो मैंने यह कार्रवाई की।''

''महाप्रभु! मैं समझता हूं कि इसमें कुछ भ्रम हुआ है।''

''वात्स्यायन! मुझे ऐसा प्रतीत हो रहा है कि तुम भी संघ से विद्रोह करना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहते हो। कदाचित् इसी कारण तुमने हमारी योजना हमारे विद्रोहियों को बता दी है।''

''यह असत्य है, महाप्रभु! मेरा आशय यह है कि आप जो कुछ कर रहे हैं, वह अवन्ति में बौद्ध संघ की महिमा को कम करनेवाला सिद्ध हो रहा है। इस समय उज्जयिनी में बौद्ध संघ की निन्दा विस्तार पा रही है।''

''इस अवस्था में मैं समझता हूं कि तुम वापस कौशाम्बी अथवा कहीं अन्यत्र, जहां तुम जाना चाहते हो, चले जाओ। यहां हम दोनों के विचार करने के ढंग में अन्तर आ रहा है।''

''ठीक है भगवन्! मैं चला जाऊंगा।''

''बताओ, कहां जाना चाहते हो और कब जाना चाहते हो?''

''मैं एक-दो दिन में विचारकर बताऊंगा।''

वात्स्यायन अपन मन में विचार करता था कि क्या वह विहार और संघ की सेवा में है जो बिना बताये यहां से जा नहीं सकता? अथवा क्या यह विहार बन्दीगृह है जो बिना बताये जाया नहीं जा सकता?

इस मनःस्थिति में वह अपने आगार में लौटा तो वहां कल्याणी बैठी उसकी प्रतीक्षा कर रही थी।

''भगिनी! कैसे आई हो?'' वात्स्यायन में पूछा।

''आपको कुछ सूचना देने आई थी। मैं भिक्षा के लिए गई थी कि मुख्य मार्ग पर एक गृह के बाहर एक नामपट्ट मैंने पढ़ा। नामपट्ट पर लिखा था—वैदिक विद्यालय, आचार्य विश्वेश्वरनाथ मीमांसक।

''मुझे सन्देह हुआ कि यह वही आचार्य हैं जिनके गृह पर नन्दिनी रहती है। अतः मैंने 'भिक्षां देहि' का घोष किया। इस पर नन्दिनी उस गृह से बाहर निकल आई। वह मुझे भीतर ले गई और उसने मेरे सम्मुख यह प्रस्ताव रखा कि मैं भी उस विद्यालय में प्रवेश ले लूं।...

''उसके इस प्रस्ताव पर मुझे हंसी आ गई। मैंने कहा—यह बूढ़ा तोता अब क्या पढ़ेगा! इस पर नन्दिनी ने कहा कि सभी आयु के लोगों के लिए शिक्षा का विधान है। यह ठीक है कि बालकों की शिक्षा और किशोरों, युवकों तथा वृद्धों की शिक्षा के विषय में तथा ढंग में अन्तर होता है। नन्दिनी ने मुझे आचार्य जी से मिलने के लिए कहा।...

''मैं आचार्य जी से मिली। वैसे कल भी आचार्य जी से भेंट हुई थी, परन्तु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कल की भेंट और आज की भेंट में अन्तर था।...

"आचार्य जी छः मास तक पाटलिपुत्र के विहार में रहे हैं और बताते थे कि अपने काल में उन्होंने विहार में कई नई बातें आरम्भ कराई थीं। मैं उनकी एक बात से अति प्रभावित हुई हूं। वह यह कि मनुष्य का जीवन जगत् के काल की तुलना में अति तुच्छ है। इस कारण इस अल्पकाल का एक क्षण भी व्यर्थ नहीं गंवाना चाहिये। ज्ञान ज्ञानवान् के पास होता है। हमारे प्रभु घोर अन्धकार में विचरनेवाले एक अन्धे के तुल्य ही हैं।"

"परन्तु भगिनी!" वात्स्यायन ने कहा, "मैं यह विहार छोड़कर जा रहा हूं। मुझे ऐसा ही निर्देश महाप्रभु ने दिया है।"

"कहां जा रहे हैं?"

"अभी निश्चय नहीं किया। तुम भी यहां चित्त में चंचलता अनुभव करती हो। तुम भी चलो तो ठीक नहीं क्या?"

"मैंने तो आचार्य जी से शिक्षा ग्रहण करने का निश्चय किया है। उन्होंने मेरी परीक्षा ली थी और मुझे एक पुस्तक की प्रतिलिपि करने का सुझाव दिया है।"

"कौन-सी पुस्तक है?"

"कथाशेष नाम का एक ग्रन्थ है। आचार्य जी ने मेरा लेख देखा है तथा उसे सुन्दर मानकर कहा है कि मैं प्रतिदिन एक प्रहर उनके निवास पर आकर उस पुस्तक की एक प्रतिलिपि बना लूं। इससे मेरी शिक्षा भी होगी और मुझे रस भी आयेगा।"

"शिक्षा का यह ढंग उचित है मुझे भी अपने धर्म-ग्रन्थों की प्रतिलिपि बनाने के लिए कहा गया था। प्रतिलिपियां बनाते-बनाते मैं अपने धर्म का विद्वान माना जाने लगा था।...

"परन्तु महाप्रभु से अनुमति प्राप्त करते ही यह कार्य आरम्भ करना, अन्यथा तुम्हें भी मेरे सदृश यहां से निकल जाने का आदेश मिल जाएगा।"

"आपको आदेश तो नहीं मिला?"

"एक ही बात है। मैं यहां से जाने के लिए विवश कर दिया गया हूं। यही निकालना कहाता है।"

कल्याणी ने महाप्रभु से स्वीकृति मांगी तो एक शर्त पर मिली। शर्त यह थी कि आचार्य विश्वेश्वरनाथ के गृह की सब बातें वह उनको बताया करेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस प्रकार पण्डित विश्वेश्वरनाथ को अपने विद्यालय में प्रथम शिष्या मिली नन्दिनी के द्वारा विहार की एक बौद्ध भिक्षुणी।

जिस दिन महाराज शूरसेन ने पण्डित विश्वेश्वरनाथ को अपना पुरोहित स्वीकार किया था, उससे अगले दिन प्रातः स्नान-ध्यान के उपरान्त पण्डित जी अल्पाहार के लिए बैठे ही थे कि महाराज का एक प्रतिहार उनके पास एक पत्र लेकर आया। यह एक भवन का दान-पत्र था। भवन नगरद्वार के समीप प्राचीर के साथ जानेवाले मार्ग पर बना था। इसके साथ ही महाराज ने यह लिखा था, "हमने अपने मोदी को निर्देश कर दिया है कि आपके भवन में आपकी सुविध ाानुसार सारा सामान पहुंचा दे।...

"हमारा आपसे आग्रह है कि आप आज ही उस भवन पर अधिकार कर लें। वहां आपके पहुंचने की सूचना भेजी जा चुकी है।"

अतः अल्पाहार के उपरान्त पण्डित जी रामी तथा नन्दिनी को लेकर भवन पर अधिकार करने चल पड़े। वहां महाराज की सम्पत्ति का लेखाकार उपस्थित था तथा कुछ सेवकों द्वारा आगारों में सामान लगवा रहा था।

रामी ने देखा कि कुछ सेविकाएं भी वहां हैं। उसने पूछ लिया, "आपको यहां किसने भेजा है और किसलिए भेजा है?"

लेखाकार ने ही उत्तर दिया, "सेवकों को महारानी जी ने भेजा है। उनका कहना है कि आप महाराज के पुरोहित हैं और आपको किसी प्रकार का कष्ट नहीं होना चाहिए।...

"भवन का दानपत्र आपको मिल चुका होगा। भवन का सामान आपकी सम्पत्ति है। सेवक तथा सेविकाएं महारानी जी के आदेश से यहां हैं तथा इन्हें वेतन वे ही देंगी। यह प्रबन्ध महाराज के जीवन काल के लिए होगा, परन्तु भवन सदैव के लिए आपकी सम्पत्ति रहेगा।"

पण्डित विश्वेश्वर इस प्रबन्ध से सन्तुष्ट था।

उसी दिन कल्याणी की नन्दिनी से भेंट इस भवन पर हो गई। इसका परिणाम यह हुआ कि इसके अगले दिन से कल्याणी प्रतिदिन शिक्षा प्राप्त करने के लिए आने लगी।,

प्रथम दिन ही जब कल्याणी वहां आई तो पण्डित जी ने पूछ लिया, "कैसे आई हो?"

"चलकर।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"विहार यहां से कितने अन्तर पर है?"

"लगभग दो कोस के अन्तर पर।"

"तो इतनी दूर से नित्य आया करोगी?"

"क्या करूं? पढ़ने की मेरी उत्कट इच्छा है।"

'वहां से कोई रथ इत्यादि इस ओर नहीं आता?"

"नहीं। इस पर भी मैं विचार कर रही हूं कि प्रातः की उपासना में सम्मिलित होकर बहुत प्रातःकाल ही यहां आ जाया करूं। प्रातः का अल्पाहार यहीं कर लिया करूंगी। गुरु जी! हमें भिक्षा का अन्न खाने का अभ्यास है। मध्याह्न तक यहां शिक्षा प्राप्त करूंगी और तीसरे पहर तक विहार लौट जाया करूंगी।"

"यह उचित रहेगा।" पण्डित जी ने कहा, "इस प्रबन्ध से तुम्हारी मानसिक तथा बौद्धिक, दोनों प्रकार उन्नति होगी।...

"देखो कल्याणी!" पण्डित जी ने आगे कहा, "जैसी उपासना बौद्ध सम्प्रदाय वाले विहारों में करते हैं, एक ही पद का बारम्बार उच्चारण करने से संस्कार उत्पन्न होते हैं। इसका अभिप्राय है कि जैसे किसी पशु को किसी कार्य के लिए अभ्यास कराया जाता है, कुछ वैसा ही इस पद के उच्चारण से वहां करने का यत्न किया जाता है।...

"मनुष्य की मानवता बुद्धि से विचार करके किये कर्म में प्रकट होती है। यही कारण है कि बौद्ध सम्प्रदाय में अथवा अन्य किसी सम्प्रदाय में इस प्रकार कीर्तन करनेवाले पशुवत् बनते जाते हैं।"

कल्याणी इस विवेचना को सुनकर चकित रह गई उसने कुछ विचारकर पूछ लिया, "और वे लोग जो मंत्रों का जप करने को कहते हैं?"

"वह भी निम्न कोटि के मनुष्यों को एक स्थिर कर्म करने का स्वभाव डालने के लिए है। यह इन मनुष्यों के बौद्धिक विकास में बाधक ही होता है। उन्नति के लिए बुद्धि का विकास आवश्यक है और बिना बुद्धि के विकास के मंत्रों का जाप बुद्धि को कुण्ठित ही करता है।"

कल्याणी को यह नई बात विदित हुई थी।

इस प्रकार कल्याणी अब बहुत प्रातःकाल ही आने लग गई। इसके लिए उसे महाप्रभु से स्वीकृति लेनी पड़ी, कारण यह कि उपासना से वह अनुपस्थित रहती थी। इस पर भी कल्याणी देख रही थी कि जब वह आचार्य जी के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निवासस्थान पर पहुंचती थी, वह अपनी पूजा-पाठ से निवृत्त हो चुके होते थे।

कल्याणी का कार्य अब यह हो गया था कि प्रत्येक पुस्तक की दो प्रतिलिपियां उसे बनानी पड़ती थीं—एक पाठशाला के लिए तथा दूसरी अपने लिए। पुस्तकें महाराज के निजी पुस्तकालय से रामी लाकर देती थी।

एक दिन कल्याणी ने पूछ लिया, "गुरु जी! पूजा तो आप भी करते हैं।"

"नहीं। यह पूजा नहीं, उपासना हैं मैं एक ही मंत्र का बार-बार उच्चारण मात्र नहीं करता, प्रत्युत एक मंत्र को लेकर उसके अर्थों का चिन्तन करता हूं। जब तक चिन्तन की श्रृंखला चलती है, उस मंत्र को ध्यान में रखता हूं। कई बार तो एक ही मंत्र का अर्थ समझने में कई कई दिन लग जाते हैं। बिना अर्थ समझे मंत्रों का उच्चारण मनुष्य में जड़ता उत्पन्न करता है और बुद्धि को सीमित करता है।...

"देखो," आचार्य जी ने आगे कहा, "मैं एक उदाहरण देता हूं। एक मंत्र है—स पर्यगात् शुक्रमकायमव्रण...इत्यादि, इस मंत्र का अर्थ इस प्रकार है। 'स' अर्थात् वह परमात्मा; 'परि आगात्' जो सबसे पहले ही आया हुआ है। इस पर विचार उठने लगता है कि 'सबसे पहले' से क्या अर्थ निकलता है? बस, इसकी कल्पना करते-करते ही बुद्धि थक जाती है।...

"देखो कल्याणी! यहां दीपक जलायें तो पूर्ण आगार में प्रकाश हो जाता है। सूर्य का प्रकाश अति वेग से यहां आता है कहते हैं कि एक क्षण में एक लाख कोस तक जा पहुंचता है। और फिर यह कितने काल में कहां-कहां तक जा पहुंचता है, कल्पनातीत है। परन्तु वेद में कहा है कि परमात्मा पहले ही पहुंचा हुआ है। कितनी दूर तक यह प्रकाश जाता है, कहा नहीं जा सकता। इस प्रकार मंत्रों के अर्थों पर विचार करता हूं तो बुद्धि का विकास होता है।"

कल्याणी नित्य सायंकाल महाप्रभु के पास आने-जानेवाले लोगों का वृत्तान्त बताती रहती थी। पण्डित जी महाप्रभु की दिनचर्या के विषय में पूछते रहते थे। कल्याणी साधारण दिनचर्या के विषय में ही बताती रहती थी। उसने महाप्रभु की अन्तरंग बातें कभी नहीं बताई थीं।

एक दिन, कल्याणी के पाठशाला में प्रवेश लेने के लगभग एक मास उपरान्त की बात है, आचार्य जी ने कल्याणी से पूछ लिया, "यह वात्स्यायन कौन है?"

"किसलिये पूछ रहे हैं?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सुना है कल उसका महाप्रभु से भारी विवाद हुआ है।"

कल्याणी उनका मुख देखती रह गई। इस पर आचार्य जी हंस पड़े। उन्होंने कहा, "नहीं बताना चाहती तो मत बताओ। परन्तु मैं बताता हूं। आज महाप्रभु उसे धक्के मार-मारकर विहार से निकाल देंगे।"

"तो यह आप जानते हैं कि क्यों निकालेंगे?"

"मैं समझता हूं कि मैं जानता हूं। वात्स्यायन ने एक अन्य भिक्षु को विहार से निकाल देने के लिए कहा था, परन्तु महाप्रभु उसे निकालना नहीं चाहते थे। इस पर दोनों में भारी विवाद हुआ और उसका परिणाम यह है कि वात्स्यायन को ही विहार से निकालने की योजना बन चुकी है।"

"गुरु जी! आप तो मुझसे भी अधिक जानते हैं।"

"नहीं कल्याणी, तुमसे अधिक नहीं। तुम बताना नहीं चाहतीं तो ठीक है, परन्तु मैंने तुम्हें यह इस कारण बताया है कि तुम यदि चाहो तो मैं वात्स्यायन को राज्य में कार्य दिलवा सकता हूं।"

"क्या कार्य दिलवायेंगे?"

"यह मैं नहीं बता सकता। हां, यदि वह स्वयं चाहे तो तुम्हें बता सकता है।"

"परन्तु मेरे विहार में पहुंचने से पूर्व ही वह वहां से निकाल दिया जायेगा।"

"इस पर भी वह तुमसे मिल सकता है।"

"कहां"

"यहां ही। परन्तु यह तुम्हें वचन देना पड़ेगा कि उसकी बात महाप्रभु को नहीं बताओगी।"

"गुरु जी! मैं आपके सम्मुख असत्य नहीं कहूंगी, इस कारण मैं आपसे कहती हूं कि महाप्रभु मुझसे आपके विषय में नित्य पूछा करते हैं। परन्तु आपने कभी उनके विरुद्ध कुछ कहा नहीं, इस कारण मैंने कभी कुछ बताया नहीं। वास्तव में मैं कुछ जानती भी नहीं, परन्तु आज आपने बताया है कि आप विहार की अन्तरंग बातें भी जानते हैं। तो क्या वात्स्यायन वहां की अन्तरंग बातें आपको बताता है?"

"नहीं। परन्तु मैंने उसे आज यहां बुलवाया है। वह विहार से निकलेगा तो राज्य के सेवक उसे पकड़कर यहां ले आयेंगे। मैं उससे मिलूंगा और यदि तुम चाहोगी तो तुम भी उससे मिल सकोगी।"

"वह कब तक आयेगा?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इस समय तक उसे आ जाना चाहिये था। मैं उसकी किसी भी समय आशा कर रहा हूं।"

भोजन समाप्त हुआ तो कल्याणी नन्दिनी के आगार में विश्राम करने चली गई।

इस समय तक लगभग दस शिष्याएं शिक्षा प्राप्त करने आती थीं। वे सब अपना पाठ समाप्त करके मध्याह्न तक चली जाया करती थीं। कल्याणी वहीं भोजन करके विश्राम किया करती थी और फिर तीसरे प्रहर के उपरान्त लौटा करती थी।

आज कल्याणी जाने लगी तो गुरु जी उससे पूछ लिया, "अपने भिक्षु भाई से नहीं मिलोगी?"

"तो वह यहां आ गये हैं?"

"हां, मेरे बैठकगृह में हैं। आओ, तुमसे उसकी भेंट करा दूं।"

कल्याणी बैठकगृह में पहुंची तो नन्दिनी वहां पहले ही उससे बातें कर रही थी। वात्स्यायन नन्दिनी को महाप्रभु से अपने मतभेद का विवरण सुना रहा था। उसका कहना था, "विहार के महाप्रभु नारायण भिक्षु-भिक्षुणियों पर नियंत्रण नहीं रख पा रहे। परिणाम यह हो रहा है कि विहार एक प्रकार से वेश्यागार बना हुआ है। महाप्रभु से मैं कई बार इस विषय में चर्चा कर चुका हूं, परन्तु वह स्वयं इस रोग से ग्रस्त हैं, इस कारण किसी पर भी नियंत्रण सम्भव नहीं रहा। साथ ही हमारी महासमिति ने एक आचार-संहिता बनाई है, परन्तु उसका पालन नहीं हो रहा। इस पर मैंने पूर्ण विवरण-सहित एक पत्र महासमिति को लिखा। किसी प्रकार वह पत्र महाप्रभु को प्राप्त हो गया। परिणामस्वरूप आज प्रातः की उपासना के समय सबके सम्मुख मेरी घोर निन्दा की गई और मुझे विहार से निष्कासित कर दिया गया।"

"परन्तु आप यहां कैसे आये हैं?" नन्दिनी ने पूछा।

"भगिनी! मैं उस कुत्ते की भांति नहीं रहना चाहता जो न घर का हो और न घाट का। इस कारण जिस दिन मैंने गया-महासमिति को पत्र लिखा था, उसी दिन मैंने राज्य से सम्पर्क स्थापित कर लिया था। परिणामस्वरूप जब आज प्रातः उपासना के समय मेरी निन्दा की गई और मुझे धमकी दी गई कि यदि मैं तुरन्त विहार से नही निकल जाता तो धक्के मार-मारकर निकाल दिया जायेगा, तो मैं तुरन्त विहार छोड़कर बाहर आ गया। विहार के बाहर राज्य के सेवक मुझे यहां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ले आये हैं। यहां पण्डित जी मेरे निवास तथा निर्वाह का प्रबन्ध कर रहे हैं।''

''मैं भगवान् तथागत से आपके लिए दया की कामना करती हूं।'' इतना कहकर कल्याणी ने हाथ जोड़े और प्रणाम करते हुए कहा, ''मैं जा रही हूं, क्योंकि दीपक जलने से पूर्व ही मुझे विहार में पहुंच जाना चाहिये।''

आचार्य जी का वात्स्यायन को अपने गृह पर बुलाने का उद्देश्य यह था कि वह उसे नन्दिनी और कमला इत्यादि के पक्ष में न्यायालय में साक्षी के लिए तैयार करना चाहते थे। नन्दिनी ने इस विषय में वात्स्यायन से बात की, परन्तु वात्स्यायन ने कह दिया, ''मैं इसमें कोई लाभ नहीं समझता। मैं ऐसा नहीं कर पाऊंगा।''

''लाभ तो होगा।'' आचार्य जी का कहना था।

''क्या?''

''देखो वात्स्यायन! अपने अपराध स्वीकार करना प्रायश्चित्त करना कहाता है। अपने पूर्व के पाप-कर्मों को अपने गुरु, माता-पिता अथवा परमात्मा के सम्मुख स्वीकार कर पश्चाताप तथा प्रायश्चित करने से पापों से मुक्ति मिलती है।''

''परन्तु मैंने कोई पाप नहीं किया।''

''भदन्त! तुम अपराधियों की रक्षा कर रहे हो। यह भी भारी अपराध है।''

वात्स्यायन इस पर आचार्य जी का मुख देखता रह गया।

आचार्य जी बोले, ''हम न्यायधीश को परमात्मा का अवतार मानते हैं। न्यायधीश में एक कमी होती है। वह यह कि परमात्मा के समान वह सर्वज्ञ नहीं होता। उसके अल्पज्ञ होने के कारण ही उसके ज्ञान-वर्धन के लिए राज्य का गुप्तचर-विभाग होता है। गुप्तचर-विभाग ने विहार की सभी बातें अपने गुप्तचरों के द्वारा जान ली हैं। परन्तु वे किसी को दण्ड नहीं दे सकते, जब तक कोई जानकार व्यक्ति सौगन्धपूर्वक न्यायाधीश के सम्मुख अपराधियों के विरुद्ध साक्षी न दे। यह कार्य तुम कर सकते हो और उस पुण्य कार्य के भागी बन सकते हो।''

वात्स्यायन ने एक क्षण आंखें मूंदकर विचार किया और फिर कहा, ''मैं न्यायाधीश के सम्मुख सब बात सत्य-सत्य जैसी मुझे विदित होगी, वर्णन कर दूंगा।''

''ठीक है। हम तुम्हें मिथ्या कथन के लिए कदापि न कहेंगे।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगले दिन वात्स्यायन ने न्यायधीश के सम्मुख उपस्थित हो विहार का एक रोमांचकारी तथा नग्न चित्र उपस्थित कर दिया और न्यायाधीश ने महाप्रभु को बन्दी बनाने की आज्ञा दे दी। नगर-सुभट्ट तुरन्त महाप्रभु को पकड़ने विहार में जा पहुंचे।

महाप्रभु पकड़ लिये गये। वात्स्यायन के वक्तव्य के आधार पर उन पर रामकुट्टी से तीन स्त्रियों के जिनमें एक अल्पवयस्क थी, अपहरण का आरोप सिद्ध हो गया तथा इस अपराध पर उन्हें मृत्युदण्ड सुनाया गया।

पण्डित विश्वेश्वरनाथ ने तुरन्त महाराज शूरसेन के सम्मुख एक याचिका कर दी कि वह अपने विशेषाधिकार का प्रयोग करके महाप्रभु को क्षमा प्रदान कर दें।

कल्याणी को जब पण्डित जी की याचिका का ज्ञान हुआ तो उसे अत्यन्त आश्चर्य हुआ। उसने पूछ लिया, "गुरु जी! आपने यह क्यों किया?"

गुरुजी का कहना था, "मैं ब्राह्मण होने के कारण सबके लिए प्रभु से तथा महाराज से दया की याचना किया करता हूं।...

"मैं समझता हूं कि महाप्रभु ने किसी मिथ्या जीवन-मीमांसा के अधीन यह कुकर्म किया था और यदि उन्हें जीवनदान मिल गया तो उन्हें अपने कुकर्मों पर प्रायश्चित्त करने का अवसर मिल जायेगा। इसी कारण मैं उनके जीवन-दान की याचना कर रहा हूं।"

अगले दिन महाप्रभु को महाराज शूरसेन के सम्मुख प्रस्तुत किया गया। पण्डित जी की याचना सुनकर महाराज ने अपना निर्णय सुना दिया। उन्होंने कहा, "कुछ दिन पूर्व मैंने पण्डित विश्वेश्वरनाथ जी को अपना पुरोहित धारण किया था। पुरोहित यजमान को धर्म पर आरूढ़ करने के लिए होता है। इसी कारण यह अनुरोध-पत्र पुरोहित जी ने प्रस्तुत किया है। मैं उनके अनुरोध को स्वीकार करके आपको जीवन-दान करता हूं और संसार में पूर्ण तया स्वतंत्र करता हूं। परन्तु आपके ऊपर एक बन्धन है कि आप अविलम्ब अवन्ति-राज्य की सीमा के बाहर चले जाएं और बिना राज्य की स्वीकृति के पुनः अवन्ति-राज्य में प्रवेश न करें।

"यदि आप इस आज्ञा की अवहेलना करेंगे तो आपको आजीवन बन्दीगृह में रहना पड़ेगा।"

उसी दिन महाप्रभु को एक रथ पर बैठाकर अवन्ति-राज्य से बाहर कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया गया।

पिछले दिन न्यायाधीश के निर्णय के समय तथा इस दिन महाराज के निर्णय के समय बौद्ध सम्प्रदाय के लोग पर्याप्त संख्या में उपस्थित थे। उज्जयिनी-विहार का स्थानापन्न महाप्रभु सौमित्र भी वहां उपस्थित था। उसने महाप्रभु नारायण को मुक्त होते समय कहा, "मैंने आपके साथ हुई दुर्घटना का पूर्ण विवरण गया-महासमिति को लिखकर भेज दिया है। अपनी मुक्ति का समाचार आप स्वयं लेकर चले जाएं और स्वयं को संघ की शरण में उपस्थित कर दें।

: 8 :

न्यायालय में महाप्रभु के अभियोग पर निर्णय होने के उपरान्त कुमकुम पुनः गांव से लौट आई थी और पण्डित जी के निवास पर रहती हुई उनसे शिक्षा प्राप्त करने लगी थी। इसका परिणाम यह हुआ कि कि अब प्रायः राजकुमार राहुल उससे मिलने वहां पहुंचने लगा। भेंट प्रायः पण्डित जी अथवा उनके परिवार के किसी सदस्य के सम्मुख ही हुआ करती थी। इस पर भी पण्डित जी ने इस विषय में महाराज से बात करने का निश्चय कर लिया।

पण्डित जी ने एक गुप्तचर-विभाग स्थापित कर लिया था और उस विभाग से प्राप्त सूचना लेकर वह सायंकाल के समय महाराज के पास जाया करते थे। वैसे भी वह महाराज के पुरोहित विख्यात हो चुके थे। अतः महाराज के पास किसी भी समय जाने के लिए उनपर कोई प्रतिबन्ध नहीं था।

एक सांय वह महाराज के पास पहुंचे तो उस समय महारानी भी वहां उपस्थित थीं। पण्डित जी ने राहुल के विषय में चर्चा चला दी। उन्होंने पूछा, "आप कुमार का विवाह कब करेंगी?"

"गुरुवर! किसलिए पूछ रहे हैं?" महारानी ने पूछ लिया।

"कुमार अब कुमकुम से भेंट के लिए मेरे निवास पर आता रहता है। वह कुमकुम से विवाह का इच्छुक प्रतीत होता है।"

"परन्तु गुरुदेव! एक कहार की लड़की से राजकुमार का विवाह क्या उपयुक्त होगा? इसका प्रभाव उत्तराधिकार पर पड़ सकता है। आप जानते हैं हमारा एक ही पुत्र है और वही राज्य का उत्तराधिकारी है।"

"ठीक है, महारानी जी! मैं चाहता हूं कि आप उसका विवाह किसी उच्च परिवार की कन्या से कर दें। वह पटरानी बन सकेगी। उसके उपरान्त यदि वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहेगा तो कुमकुम से दूसरा विवाह कर लेगा। उस समय कुमकुम से विवाह पर किसी को आपत्ति नहीं होगी।"

"परन्तु गुरुदेव! इसमें एक बाधा भी तो है?"

"हां, रामीदेवी ने मेरे सम्मुख यह स्वीकार किया है कि कुमकुम भी महाराज की सन्तान है। इस पर भी इस विषय में मेरा मत शास्त्र से कुछ भिन्न है। शास्त्र कहता है कि इस प्रकार से सम्बन्ध सन्तति-विज्ञान के अनुसार श्रेष्ठ नहीं माने जाते। आयुर्वेद शास्त्र कहता है कि इससे सन्तान में विकृति एक ही पीढ़ी में नहीं आती। इसका बुरा प्रभाव कई पीढ़ियों में जाकर प्रकट होता है। इसी कारण इस प्रकार का विवाह प्रथा नहीं बन सकती।...

"परन्तु इस प्रकार के सम्बन्धों में एक अन्य प्रबल आपत्ति भी है। वह यह कि परिवार अथवा समाज में इस प्रकार के सम्बन्धों की स्वीकृति दी जाये तो परिवार तथा वातावरण दूषित तथा वासनामय हो जाने की सम्भावना है। समाज में नैतिक पतन की सम्भावना उत्पन्न हो जाती है।

"इस कारण मेरी सम्मति है कि या तो राजकुमार कुमकुम को यह बता दिया जाये कि वे बहन-भाई हैं, अन्यथा उनको विवाह की स्वीकृति दे दी जाये। अनिश्चित स्थिति में कुछ अनिच्छित् परिणाम उत्पन्न होने की ही सम्भावना हो सकती है।"

अब महाराज ने कहा, "रामी तथा कुमकुम से मेरे सम्बन्ध राजनैतिक दृष्टि से अवांछनीय हैं। मुझे कुछ ऐसा प्रतीत हो रहा है कि बौद्ध और वेदमत के विवाद के अतिरिक्त राजतंत्र तथा गणराज्यतंत्र में भी विवाद उत्पन्न हो रहा है। कुछ राज्यधिकारी भी इस विवाद में रुचि लेने लगे हैं। यह रहस्योद्घाटन कि रामी के साथ मेरा सम्बन्ध है तथा कुमकुम मेरी सन्तान है, यह हमारे विपरीत जाएगा।"

"तो महाराज! मेरी सम्मति यह है कि राजकुमार का विवाह किसी उच्चकुल की कन्या से कर दिया जाये। तदनन्तर उसे कुमकुम से विवाह की अनुमति दे दी जाये।"

"हम इस विषय पर विचार कर रहे हैं, परन्तु अभी किसी निर्णय पर नहीं पहुंचे। साथ ही कुमकुम अभी पन्द्रह वर्ष की हुई है। कुमार भी अभी केवल बीस वर्ष का है। उसका विवाह अभी दो वर्ष से पूर्व उचित नहीं होगा। तब तक कुमकुम के विषय में भी हम निर्णय ले लेंगे। किसी सुन्दर-स्वस्थ युवक को ढुंढकर कुमकुम का विवाह उससे कर दिया जायेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो राजकुमार को कुमकुम से मिलने से रोक दिया जाये?"

"ठीक है। इस विषय में भी कोई निर्णय ले लिया जाएगा।"

पण्डित जी की अनुपस्थिति में महाराज तथा महारानी में इस विषय में बात चली तो महाराज ने कह दिया, "हमें ऐसा प्रतीत हो रहा है कि महामात्य रामानुज की पत्नी सर्वप्रिया बौद्ध उपासिका है और कदाचित् बौद्ध मत के अधिकारियों की प्रेरणा से वह महामात्य को गणतन्त्र के पक्ष में करने का यत्न कर रही है।

"इस अवस्था में हम समझते हैं कि उसकी लड़की पदमा से कुमार का विवाह हो जाये तो सर्वप्रिया गणतन्त्र के विरुद्ध हो जायेगी, क्योंकि इससे उसकी अपनी लड़की पदमा को, जो पटरानी बन सकती है, हानि पहुंचेगी!"

महारानी ने इस विषय में स्वीकृति दी तो पदमा तथा राजकुमार की परस्पर भेंट का अवसर बनाया जाने लगा।

यह अवसर शीघ्र ही आया। एक दिन सर्वप्रिया महारानी से भेंट करने आई तो अपनी लड़की पदमा को साथ ही ले आई। प्रायः ऐसे अवसरों पर अल्पाहार का प्रबन्ध रहता था। महारानी ने अवसर देख राजकुमार को भी वहीं बुला लिया।

राजकुमार को विदित हो चुका था महाराज पदमा से उसके विवाह के इच्छुक हैं। यद्यपि वह ऐसा नहीं चाहता था, इसपर भी अभी इस विषय पर वह चुप था।

अल्पाहार के समय कुमार पदमा के समीप ही बैठा था। इससे उन्हें परस्पर वार्तालाप का अवसर मिल गया। पदमा के पूछने पर कि वह सेना में किस पद पर है, कुमार ने कहा, "मैं सेनाध्यक्ष के पद पर नियुक्त हूं और नित्य एक प्रहर अपनी सेना की किसी एक टुकड़ी के साथ अभ्यास में सम्मिलित होता हूं। इसके उपरान्त मैं सेना के कार्यालय में कार्य का निरीक्षण करता हूं।"

पदमा ने पूछ लिया, "परन्तु आप महाराज बनेंगे अथवा सेनाध्यक्ष? सेनाध्यक्ष का कार्य राजगद्दी पर बैठने से नहीं हो सकेगा। एक दिन पिता जी बता रहे थे कि शासन और सेनाध्यक्ष के दोनों पद एक ही व्यक्ति के पास होने से अव्यवस्था उत्पन्न हो जाती है।"

कुमार ने कह दिया, "मेरे गुरु जी का कथन है कि इससे अव्यवस्था उत्पन्न नहीं होती। अव्यवस्था तब उत्पन्न होती है जब शासक और न्यायाधीश एक ही व्यक्ति हो। राजा तो प्रजा का सेवक होता है जबकि न्यायाधीश सेवक नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होता।''

''आपके गुरु कौन हैं?''

''पहले पण्डित चन्द्रधर थे। आजकल मैं पण्डित विश्वेश्वरनाथ जी से शिक्षा ग्रहण कर रहा हूं।''

''पिता जी तो कहते थे कि वह महामूर्ख है?''

''मुझे विदित नहीं था। पता करूंगा।''

''किससे पता करेंगे?''

''पण्डित जी से ही पूछूंगा कि वह मूर्ख हैं अथवा नहीं?''

''स्वयं को मूर्ख कौन कहेगा? पण्डित जी तो स्वयं को महाबुद्धिमान कहेंगे।''

एक घड़ी-भर कुमार तथा पदमा में वार्तालाप चलता रहा और इस वार्तालाप का परिणाम यह निकला कि जब सर्वप्रिया तथा पदमा चली गईं तो कुमार ने मां से कह दिया, ''मां! तुम मूर्ख लड़की से मेरा विवाह करना चाहती हो?''

महारानी ने कहा, ''कुमार! इस लड़की से विवाह राजनीति की बात है। राजनीति में ऐसी बातें भी करनी पड़ती हैं जो मन को पसन्द नहीं होतीं।''

''मैं समझता हूं कि यदि वह राजनीति है तो मुझे इससे बाहर हो जाना चाहिये।''

''और अवन्ति की राजगद्दी?''

''मैं छोड़ दूंगा।''

''तब यहां गणराज्य स्थापित हो जायेगा।''

''हो जाये। मैं किसी भी राजा की सेना में कार्य प्राप्त कर लूंगा।''

''कुमार! जो कोई भी कार्य करोगे, वह स्वामी की इच्छानुसार ही होता है।''

''परन्तु मां! मैं इस मूर्ख लड़की से विवाह नहीं कर सकता।''

''और यदि इस मूर्ख लड़की का पिता यहां का गणपति बन गया, तो?''

''तो मैं अवन्ति छोड़कर चला जाऊंगा।''

''देखो कुमार! तुम इस लड़की से विवाह स्वीकार कर लो। इससे अवन्ति का राज्य तुम्हारे लिए सुरक्षित हो जायेगा। उसके उपरान्त यदि चाहोगे तो कुमकुम से विवाह कर सकोगे।''

इस प्रस्ताव पर राहुल अनिश्चित-मन से मां का मुख देखता रह गया। फिर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसने कह दिया, ''अच्छा मैं कुछ दिन विचार करके बताऊंगा।''

राहुल उसी सायं पण्डित विश्वेश्वरनाथ जी के निवास पर जा पहुंचा। प्रायः वह सैनिक अभ्यास के उपरान्त राजप्रासाद को लौटते हुए उनके पास जाया करता था। आज सायंकाल के समय उसका आना अप्रत्याशित था। पण्डित जी इस समय राजप्रासाद को गए हुए थे।

जब पण्डित जी अपने निवास पर लौटे तो कुमार कुमकुम से पण्डित जी की पत्नी के सम्मुख वार्तालाप कर रहा था।

पण्डित जी ने आते ही पूछा, ''कुमार! आज इस समय आये हो, क्या बात है?''

''गुरु जी! आज कुमकुम से एक प्रश्न पूछने चला आया था।''

''तो पूछा है?''

''जी हां। परन्तु यह कहती है कि मेरे प्रश्न का उत्तर या तो आप देंगे अथवा इसकी मां देगी।''

''यह ठीक कहती है। जानते हो क्यों?''

''क्या?''

''पहले यह बताओ, तुम्हारा प्रश्न क्या था?''

''बताओ कुमकुम! मैंने क्या पूछा था?''

कुमकुम ने पण्डित जी की धर्मपत्नी रामेश्वरीदेवी की ओर देख कर कह दिया, ''माता जी! आप बता दीजिये।''

रामेश्वरी ने बताया, ''राजकुमार ने कुमकुम से पूछा था कि वह इससे विवाह करेगी अथवा नहीं?''

इस समय कुमकुम वहां से उठी और अपने आगार में चली गई। तीनों उस जाते देखते रह गये।

उसके चले जाने के उपरान्त पण्डित जी ने कहा, ''कुमार! कुमकुम ने ठीक ही कहा है। वह इस समय अल्पवयस्क है। तीन वर्ष उपरान्त जब वह वयस्क हो जायेगी, तभी बता सकेगी। तब इसे अपनी सम्मति देने का अधिकार प्राप्त होगा। इस समय तो यदि वह चाहेगी भी, तो भी अपने माता-पिता की अनुमति के बिना विवाह नहीं कर सकेगी।''

''गुरु जी! आप इस विषय में क्या कहते हैं?''

''महाराज तथा महारानी इस विवाह को पसन्द नहीं करते। इस कारण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनके जीवनकाल में उनकी इच्छा के बिना यह विवाह नहीं हो सकेगा।''

''परन्तु गुरु जी! मैं यदि चाहूं तो किसी भी लड़की को बिना विवाह के अपनी सखी बना सकता हूं। कई ऐसी हैं जो इसकी लालसा रखती हैं।''

''देखो राजकुमार! संसार में मूर्ख लड़कियों की कमी नहीं है। यदि तुम इन मूर्ख लड़कियों के पीछे चलने लगे तो भारी ठोकर खाओगे। मेरी सम्मति यह है कि धैर्य धारण करो। तीन वर्ष कुछ अधिक लम्बा काल नहीं है। मैं समझता हूं कि इस तपस्या का फल तुम्हें प्राप्त होगा।''

''गुरु जी! आपकी बात महाराज तथा महारानी दोनों स्वीकार करते हैं। इस कारण यदि आप कहते हैं कि तीन वर्ष प्रतीक्षा करने के उपरान्त मुझे शुभ फल प्राप्त होगा तो मैं तीन वर्ष से भी अधिक काल तक प्रतीक्षा कर सकता हूं।''

''कुमार! मैं परमात्मा तो हूं नहीं। इस पर भी अपने अनुभव से कहता हूं कि प्रतीक्षा का परिणाम मधुर ही होगा।''

कुमार पण्डित जी की बात पर मनन करता रहा। तदनन्तर एकाएक वह उठा और प्रमाण करके उनके निवासगृह से बाहर निकल गया।

समय व्यतीत होने लगा। ज्यों-ज्यों पण्डित जी का गुप्तचर-विभाग विस्तार पाता गया, महाराज को विदित होता गया कि अवन्ति-राज्य में उनके राज्य को चुनौती देने वाले कई केन्द्र बन गये हैं। इनमें दो प्रमुख थे। एक था महामात्य रामानुज का गृह। महामात्य देख रहा था कि उसकी लड़की पदमा का राजकुमार से विवाह का प्रयास सफल नहीं हो रहा। वह राज्य का ही विरोध करने का विचार करने लगा था। दूसरा केन्द्र था उज्जयिनी का बौद्ध विहार। महाप्रभु नारायण के अवन्ति से निष्कासन के उपरान्त विहार का अध्यक्ष सौमित्र नियुक्त हो गया था। वात्स्यायन तो विहार छोड़कर चला ही आया था और वह इन दिनों महाराज के पुस्तकालय में लिपिकार नियुक्त हो गया था।

सौमित्र में एक गुण था। वह सच्चरित्र था तथा बुद्धिवादी था। इस पर भी वह संघ को एक संगठन का रूप देकर इसकी शक्ति बढ़ाना चाहता था। उसे ज्ञान था कि मगध में किस प्रकार संघ की शक्ति ने मगध-जैसे विशाल साम्राज्य को नियंत्रण में रखा हुआ है। कुछ वैसा ही नियंत्रण वह अवन्ति में चाहता था। अतः उसका प्रयास यह था कि अवन्ति-राज्य एक गणराज्य बन जाय और बौद्ध प्रभाव में आ जाय। तदनन्तर इसे मगध-राज्य में विलीन कर दिया जाय।

इस निमित्त वह उज्जयिनी के धनी सेट्ठी-वर्ग से सम्बन्ध बढ़ा रहा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैश्य-वर्ग को यह लोभ दिखाना पर्याप्त होता था कि गणराज्य में उनका उचित प्रतिनिधित्व होगा तथा इससे व्यवसाय में उनको भारी लाभ हो सकता है।

उज्जयिनी नगर के एक सेठ जयदेव भी कभी-कभी बौद्ध उपासना में सम्मिलित होने लगे थे। उनकी धर्मपत्नी बौद्ध उपासना में सम्मिलित होती थी तथा अपने पति को बौद्ध मत के अनुकूल करने का यत्न करती रहती थी।

सौमित्र चाहता था कि राजकुमार राहुल को भी अपने प्रभाव में लिया जाय। पहले तो महाप्रभु नारायण सर्वप्रिया को प्रेरित करता रहा था कि वह अपनी लड़की पदमा का विवाह राहुल से करने का यत्न करे, परन्तु इसमें सफलता नहीं मिली थी। अब सौमित्र को कल्याणी से विदित हो गया कि राजकुमार कुमकुम से विवाह करना चाहता है, परन्तु कुमकुम की मां, पण्डित विश्वेश्वरनाथ तथा महाराज एवं महारानी भी ऐसा नहीं चाहते। इस पर उसने अपनी एक योजना बना ली। उसने कल्याणी से कहा कि वह राजकुमार से, जब भी वह पण्डित जी के निवास पर आये, सम्पर्क बढ़ाने का यत्न करे। साथ ही उसे विश्वास दिलाये कि बौद्ध संघ उसकी इच्छा पूर्ण करने की सामर्थ्य रखता है। परन्तु इसके लिए उसे बौद्ध संघ की शरण में आना चाहिये।

पण्डित जी के निवास पर कल्याणी को कुमार से विशेष बात करने का अवसर नहीं मिल पा रहा था। कारण, जब भी कुमार आता, प्रायः कोई-न-कोई परिवार का सदस्य उसके तथा कुमकुम के साथ रहता था। इसपर सौमित्र ने एक दिन उसे कह दिया, "तुम कुमार से उसके निवास-स्थान पर भेंट करने का यत्न करो।"

"राजप्रासाद में कुमार से मिलने जाऊंगी तो सबकी दृष्टि में पड़ जाऊंगी। अतः कोई कार्य का आश्रय लेकर ही मिलने जा सकूंगी।"

"ठीक है। तुम हमारा एक पत्र ले जाओ और उसके निवास स्थान पर जाकर उसे पहुंचा दो।"

यद्यपि कल्याणी इस प्रकार के गुप्त तथा राजनीति से सम्बन्ध रखनेवाले कार्यों में रुचि नहीं रखती थी, इस पर भी वह सौमित्र को इन्कार नहीं कर सकती थी। सौमित्र के विहार का अध्यक्ष बनने के उपरान्त उसे विहार के सभी नियमों तथा बन्धनों से मुक्त कर दिया गया था। इसपर भी इन कार्यों में भाग लेते समय उसके चित्त की चंचलता बनी रहती थी।

उस दिन पाठशाला का कार्य समाप्त कर वह नन्दिनी के आगार में गई तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस समय कुमकुम और नगर के एक सेठ युगलकिशोर की पत्नी भी वहां बैठी थीं तथा वार्तालाप कर रही थीं। कल्याणी ने हंसी-हंसी में पूछ लिया, "आज क्या गुप्त गोष्ठी चल रही है?"

उत्तर नन्दिनी ने हंसते हुए दिया, "विधवा मौसी कल्याणी की ही चर्चा चल रही थी।"

"मेरे विषय में भला क्या चर्चा चल सकती है?"

"वह किसी का रहस्य है। उसने वचन लिया है कि भगिनी कल्याणी को नहीं बताया जायेगा।

कल्याणी के मन में चोर था। इस कारण वह पीतमुख से नन्दिनी और कुमकुम का मुख देखती रह गई। उसके इस प्रकार देखने पर दोनों खिलखिलाकर हंस पड़ीं।

कल्याणी उनके समीप बैठकर और सेठ जुगलकिशोर की पत्नी की ओर संकेत करके कहने लगी, "आप कल विहार में उपासना में सम्मिलित होने आई थीं। मुझे ध्यान है कि आप मेंरी ओर देख-देखकर मुस्करा रही थीं। आपने अपने मुस्कराने का कुछ कारण बताया है क्या?"

नन्दिनी ने कहा, "यह इन्होंने नहीं बताया कि मौसी कल्याणी की बात विहार से सुनकर आई हैं या किसी अन्य स्रोत से इसका ज्ञान इनको हुआ है।"

इस समय भोजन का समय हो गया और सेविका ने सबको भोजन के लिए चलने का आग्रह कर दिया।

भोजनालय में आज भोजन लेनेवालों में पण्डित जी, उनकी पत्नी रामेश्वरी देवी, कुमकुम, नन्दिनी और कल्याणी के अतिरिक्त सेठ जी की पत्नी भी थी। कल्याणी को यह आश्चर्य में डालनेवाला था। कारण, सेठ जी की पत्नी कई बार आ चुकी थीं परन्तु भोजन आज पहली बार ले रही थीं। इससे कल्याणी का सन्देह विश्वास में परिवर्तित हो गया कि उसका रहस्य प्रकट हो चुका है। वह सौमित्र को महाप्रभु नारायण की भांति मूर्ख नहीं समझती थी जो अपना रहस्य किसी अन्य को बता देगा। तो फिर यह रहस्य किस प्रकार प्रकट हो गया? यह वह समझ नहीं सकी।

: 9 :

भोजनोपरान्त भोजनालय से बाहर आकर जब कल्याणी तथा सेठ जी की पत्नी हाथ धो रही थीं तो दोनों को पृथक् में बात करने का अवसर मिल गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कल्याणी ने पूछ लिया, ''भगिनी मन्दाकिनी! आज कुछ विशेष बात है क्या, जो भोजन पर यहां आमंत्रित हो?''

''हां भगिनी!'' मन्दाकिनी ने उत्तर दिया, ''परन्तु मैं वह विशेष बात बताऊंगी नहीं। अनुमति नहीं है।''

कल्याणी के हाथ से वह पात्र, जिसमें से जल लेकर वह हाथ धो रही थी, गिर पड़ा। उसे यह सब रहस्यमय प्रतीत हो रहा था। इसी कारण उसका हाथ कांप उठा था और पात्र हाथ से गिर पड़ा था। वह समझ रही थी कि जो गुप्त कार्य वह करने जा रही है, उसके विषय में सबको ज्ञान हो गया है। इस पर वह चुपचाप नन्दिनी के आगार में चली गई। भोजन के अनन्तर मध्याह्न के समय कल्याणी वहीं विश्राम किया करती थी। आज भी वह विश्राम के लिए वहां आई थी। उस समय आगार में अन्य कोई नहीं था। अतः कल्याणी एक ओर लेट गई और लेटे-लेटे सौमित्र द्वारा दिये कार्य के औचित्य पर विचार करने लगी।

उसके मन में यह विचार उठा कि राजकुमार के पास जाने से पूर्व गुरु जी से सम्मति ले लेनी चाहिये। कदाचित उनको भी विदित हो कि वह आज राजप्रासाद को जा रही है। राजकुमार से भेंट का समय चौथे प्रहर के आरम्भ में निश्चित था। सौमित्र ने कहा था कि उस समय वह सैनिक कार्यालय से अपने निवास पर लौटा करता है और वही समय उपयुक्त होगा।

चौथे प्रहर से एक घड़ी पूर्व कल्याणी उठी और राजप्रासाद को जाने के लिए नन्दिनी के आगार से निकली। उस समय पण्डित विश्वेश्वरनाथ भी राजप्रासाद को जाने के लिए अपने गृह से बाहर निकल रहे थे। वह प्रायः पैदल ही जाया करते थे। इस प्रकार कल्याणी और पण्डित जी का मार्ग एक ही होने से दोनों में परस्पर बातचीत आरम्भ हो गई।

पण्डित जी ने पूछ लिया, ''कल्याणी बेटी! तुम्हें हमारे विद्यालय में लिपिकार का कार्य करते हुए चार वर्ष व्यतीत हो रहे हैं। तुमने लगभग बीस पुस्तकों की प्रतिलिपि तैयार की है। मुझे विश्वास है कि इससे तुम्हें कई नई बातों का ज्ञान हुआ होगा।''

''हां गुरु जी! मैं अनुभव कर रही हूं कि मेरे मन के कपाट खुल रहे हैं। मुझे अनेक नई बातों का ज्ञान प्राप्त हुआ है। महाप्रभु सौमित्र भी कह रहे थे कि अन्य भिक्षुओं की अपेक्षा मुझमें कुछ विशेषता आ चुकी है।''

''और इसी कारण,'' पण्डित जी ने मुस्कराते हुए कहा, ''वह अब तुमपर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशेष कार्य का दायित्व सौंपने लगे हैं।''

यह कल्याणी के मन पर भारी प्रहार था। वह अपने पगों के नीचे से भूमि खिसकती अनुभव करने लगी। पंडित जी की बात सुन वह एकाएक खड़ी हो गई और उनका मुख देखने लगी।

पंडित जी अभी भी मुस्करा रहे थे। उन्होंने कहा, ''बेटी! क्या बात है? क्या कष्ट है तुम्हें?''

''कष्ट नहीं गुरु जी! विस्मय हुआ है।''

''किस बात पर विस्मय हुआ है?''

''आपके इस विशेष शब्द पर विशेष बल देने से।''

''बेटी! चलते-चलते मार्ग में खड़े नहीं होना चाहिये। मार्ग के अन्य पथिक हमारी ओर आश्चर्य में देखने लगे हैं। उन्हें एक वृद्ध व्यक्ति द्वारा एक भिक्षुणी के मुख पर घूर-घूरकर देखने से आश्चर्य हो रहा है।''

''तो आप मेरे मुख पर घूर-घूरकर देखने लगे थे?'' कल्याणी ने पुनः चलते हुए और आगे की ओर देखते हुए पूछा।

पंडित जी ने विषय बदल दिया। उन्होंने पूछ लिया, ''तुम्हें तो विहार को लौटना था। उसका मार्ग भिन्न है।''

''मैं विहार को नहीं लौट रही।''

''परन्तु पथ से भटक क्यों रही हो?''

''गुरु जी! मुझे प्रतीत हो रहा है कि मेरे कार्यों के विषय में आप मुझसे भी अधिक जानकारी रखते हैं।''

''रखता तो हूं, परन्तु जितना तुम्हें विदित है, उससे अधिक है अथवा कम है, यह नहीं कह सकता।''

कल्याणी ने अब इस आंख-मिचौनी के खेल को छोड़ते हुए कह दिया, ''मैं राजप्रासाद में राजकुमार से मिलने जा रही हूं।''

''यह मुझे ज्ञात है। मुझे यह भी ज्ञात है कि तुम विहार के महाप्रभु का कार्य करने जा रही हो।''

''तो शेष मैं बता देती हूं। मैं महाप्रभु का एक पत्र लेकर जा रही हूं। परन्तु उस पत्र में लिखा क्या है, यह मैं नहीं जानती।''

''यह मैं बता सकता हूं।''

कल्याणी पुनः चलती-चलती रुक गई और पंडित जी का मुख देखने लगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंडित जी रुके नहीं और चलते-चलते ही कहने लगे, "रुको नहीं! अब हम राजमार्ग पर हैं और यहां पथिक अधिक हैं। इस कारण यहां रुकना उचित नहीं।"

कल्याणी भी चलने लगी। अब पंडित जी ने कहा, "इस पत्र में कुछ विशेष बात नहीं लिखी। केवल तुम्हारा प्रशंसापूर्ण परिचय है, साथ ही तुम्हें एक विश्वस्त दूत की उपाधि दी गई है।...

कल्याणी भी कुछ ऐसा ही समझी थी, परन्तु विस्मय की बात यह भी कि विहार के महाप्रभु उसे एकान्त में जो बात बता रहे थे, वह पाठशाला में सभी को विदित थी। सभी उसकी ओर देख-देखकर मुस्करा रही थीं।

राजप्रासाद के द्वार पर पहुंचकर कल्याणी ने कहा, "मैंने अपना विचार त्याग दिया है।"

"क्यों त्याग दिया है?"

"मुझे महाप्रभु ने बताया था कि यह पत्र अति गुप्त है और किसी का इसका ज्ञान नहीं है; परन्तु मैं देख रही हूं कि आपको इस पत्र में लिखे का भी ज्ञान है। इस पर मैं विचार कर रही हूं कि वह मुझे मूर्ख बनाकर मुझसे कोई गुप्त कार्य लेना चाहते हैं अथवा वह स्वयं महामूर्ख हैं।"

"मैं दूसरी बात ही ठीक समझता हूं। तुम मूर्ख नहीं हो। हां, सरलचित्त हो। तुम्हें मूर्ख बनाकर किसी गुप्त कार्य को तुमसे कराने की योजना अवश्य बन रही है। वह कार्य अभी पत्र में नहीं लिखा गया। अभी केवल तुम्हारा परिचय ही इसमें है।"

"जी, इसी कारण मैं वापस विहार को लौट रही हूं। मैं किसी ऐसे कार्य को करना उचित नहीं समझती जिसका ज्ञान मुझे न हो और आपको हो।"

"देखो बेटी! मेरी सम्मति मानो तो कार्य को बीच में मत छोड़ो। महाप्रभु तुम्हारा कुमार से मिलना आत्यावश्यक समझते हैं। इसी कारण यह परिचय-पत्र उन्होंने भेजा है। मैं समझता हूं कि तुम्हारे इस कार्य पर नियुक्त हो जाने से कुछ भली बात ही होगी।"

"परन्तु गुरु जी! मैं कोई ऐसा कार्य नहीं कर सकती जिसका ज्ञान मुझे उस कार्य के उपरान्त हो कि वह अधर्मयुक्त था। इसी कारण मैं इससे बाहर हो जाना चाहती हूं।"

"परन्तु इससे घोर अनर्थ तथा पाप भी हो सकता है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या अनर्थ तथा पाप हो सकता है?"

"तुम्हारे स्थान पर किसी अन्य व्यक्ति की नियुक्ति हो जायेगी। वह व्यक्ति मेरा परिचित नहीं भी हो सकता और कदाचित् बौद्ध उपासनाओं में सम्मिलित होने से उसकी बुद्धि सर्वथा कुण्ठित हो चुकी हो।"

कल्याणी पण्डित जी का मुख देखने लगी।

पंडित जी ने आगे कहा, "अभी राजकुमार अपने निवास-स्थान पर नहीं हैं और तुम्हें भीतर जाने की स्वीकृति तब तक नहीं मिलेगी, जब तक राजकुमार से स्वीकृति नहीं आ जाती। अभिप्राय यह है कि तुम्हें आधा प्रहर यहां प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।...

"मैं तुम्हें भीतर ले चलता हूं और राजकुमार के निवास की बैठक में बैठकर उनकी प्रतीक्षा करने की स्वीकृति दिला देता हूं। और हां, यहां पर्याप्त विलम्ब हो जाने की सम्भावना है। परिणामस्वरूप तुम विहार में नहीं पहुंच सकोगी। तब तुम विद्यालय में आ जाना। वहां नन्दिनी के साथ रात्रि व्यतीत कर सकोगी।"

पंडित जी के इस कथन पर कल्याणी पंडित जी का मुख देखती रह गई। राजप्रासाद के द्वारपाल को पंडित जी ने कह दिया, "यह भगिनी राजकुमार से मिलने आई हैं। इन्हें जाने दो।"

द्वारपाल ने हाथ जोड़कर प्रणाम किया और दोनों भीतर चले गये।

राजकुमार के निवास-स्थान पर पहुंचकर पंडित जी ने प्रतिहार को कह दिया, "इन्हें बैठक-ग्रह में ले-जाकर बैठाओ। यह वहां बैठकर राजकुमार की प्रतीक्षा करना चाहती हैं।"

प्रतिहार कल्याणी को भीतर ले गया और पंडित जी वहां से महाराज के प्रासाद की ओर चले गये।

राजकुमार भी महाराज के समीप बैठा था। दोनों पंडित जी की ही प्रतिक्षा कर रहे थे। पंडित जी आये तो आशीर्वाद देकर राजकुमार से कहने लगे, "कुमार! दो वर्ष पूर्व मेरी सम्मति से ही तुम्हें सेनानायक के पद से हटाकर सैनिक कार्यालय में नियुक्त किया गया था। यह तुम्हारा अनुभव विस्तृत करने के लिए था।...

"अब मेरा अनुमान है कि तुम्हें कार्यालय के कार्य का पूर्ण ज्ञान हो चुका होगा। इस कारण मैंने तुम्हारी उन्नति के लिए महाराज से निवेदन किया था। मैं तुम्हारे परिवार का पुरोहित हूं। परिवार का कल्याण ही मेरा उद्देश्य है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"गुरु जी! महाराज ने मुझे बताया है कि आपकी सम्मति है कि मुझे मंत्रि-मंडल में सम्मिलित कर लिया जाये।"

"हां, पुरोहित के नाते मैंने सम्मति दी थी कि राजकुमार को धीरे-धीरे महामात्य के पद तक पहुंचाना चाहिये और तब तुम्हें युवराज पद दिया जाये, अन्त में तुम्हारा राज्यभिषेक करके महाराज संन्यास ले लेंगे और तुम अवन्ति के राजा बन जाओगे।"

"परन्तु महाराज इसके लिए मान गये हैं क्या?"

"महाराज ने संन्यास लेने की इच्छा प्रकट की तो मैंने यह कार्य क्रम उनके सम्मुख रखा है।"

"परन्तु गुरु जी! मेरी योजना कुछ अन्य है।"

"क्या?"

"महाराज जब संन्यास लेना चाहेंगे, तब मैं यहां गणराज्य स्थापित कर दूंगा।"

"परन्तु गणराज्य वहां स्थापित किया जाता है जहां कोई योग्य शासक न हो।"

"यह बीते युग की बात है। अब प्रजा में विचार तथा उसकी प्रवृति में परिवर्तन आ रहा है।"

"कुमार! मैं समझता हूं कि तुम्हारा सम्मतिदाता कोई बहुत ही कम शिक्षित तथा अल्पबुद्धि का स्वामी है। वह यह भी नहीं जानता कि राज्य क्या है और राजा का कर्तव्य क्या है। राज्य एक संस्थान है जो दुष्टों से भले लोगों की रक्षा करता है। राजा राज्य का प्रमुख होता है जो इस तथ्य को समझता है।...

"राज्य-विधि पर विवाद करने वाले मूर्ख होते हैं। यह राज्य के विधि-विधान से नहीं, वरन् निस्स्वार्थ-भाव एवं निर्मल बुद्धि से कार्य करनेवाले पर निर्भर करता है कि राज्य लक्ष्य सिद्ध कर रहा है अथवा नहीं।...

"श्रेष्ठ और निष्कलंक शासक वह होता है जहां सबके साथ न्याय हो और सबको ऐसा समझ भी आये कि उसके साथ न्याय हो रहा है।...

"यह राजा के शासन में हो सकेगा अथवा गणतन्त्र में, यही विवाद का विषय है। इतिहास साक्षी है कि यह राजा के शासन में भली-भांति सम्भव है। राजा बुरा हो तो उसे सन्मार्ग दिखाना सरल है, परन्तु गणतंत्र को सीधे मार्ग पर लाना कठिन है। राजा को ब्राह्मण-वर्ग नियंत्रण में रख सकता है। गणतन्त्र में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्राह्मण-वर्ग शूद्र-तुल्य होता है। वह अपनी बात कह नहीं सकता।...

"बुद्धिमान् व्यक्ति की महिमा राजा के शासन में अधिक देखी जाती है। गणतन्त्र-पद्धति में बुद्धिमान् वे समझे जाते हैं जिनको सामान्य लोग मान्यता दें और उनका निर्वाचन प्रायः अशुद्ध होता है।...

"बौद्ध लोग प्रायः गणतन्त्र के पक्ष में होते हैं और इसका परिणाम यह होता है कि गणराज्य शीघ्र ही नाश को प्राप्त होते हैं।"

"गुरु जी! मुझे आपकी यह बात समझ में नहीं आई।"

"तुम्हें ऐसा करो, महाराज कल घोषणा कर देते हैं कि तुम्हें मंत्रि-मण्डल में सम्मिलित किया जाता है। इस समय मंत्रियों की संख्या पांच है। तब पांच से सात करनी पड़ेगी। तुम्हारे साथ एक अन्य मंत्री की नियुक्ति भी करनी पड़ेगी। महाराज का कहना है कि पहले तुम स्वीकार करो, तब सातवें व्यक्ति की नियुक्ति वह करेंगे।"

राजकुमार ने कुछ विचार किया और कहा, "गुरु जी! मैं आपसे पृथक् में मिलकर और आपकी बात समझकर इस विषय में अपनी स्वीकृति दे सकूंगा।"

"ठीक है। जब तुम उचित समझो, मुझसे मिल सकते हो।"

"मैं आपसे कल मध्याह्नोत्तर बात करने आऊंगा।"

अब महाराज ने कहा, "मैं समझता हूं कि कुमार ने समाधान के उपरान्त ही हम अगला पग उठायेंगे।"

बात समाप्त हुई तो अल्पाहार आ गया। तीनों अल्पाहार ले रहे थे कि महारानी दुर्गा भी वहां आ पहुंची। अल्पाहार लेते हुए उन्होंने पंडित जी से पूछ लिया, "क्या निश्चय हुआ है, पंडित जी?"

"यही कि राजकुमार इस उत्तरदायित्व के पद पर नियुक्त होने से पूर्व विचार करने के लिए कुछ समय चाहते हैं और राजकुमार अपना निश्चय एक-दो दिन में बतायेंगे।"

"मैं भी राजकुमार से कुछ कहना चाहती हूं।"

"मां! तुम कल प्रातःकाल मुझसे मिलकर अथवा मुझे अपने पास बुलाकर बात करोगी तो तुम्हारी बात को भलीभांति समझने का यत्न करूंगा।"

इसके उपरान्त पंडित जी ने कहा, "विहार के वर्तमान प्रभु पिछले महाप्रभु नारायण से अधिक योग्य व्यक्ति हैं। वह अपनी योग्यता का प्रदर्शन भी करने लगे हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजकुमार ने पूछा, "क्या किया है उन्होंने?"

"वह राज्य-कार्य में हस्तक्षेप करने लगे हैं।"

राजकुमार ने इस विषय में बात आगे नहीं चलाई, परन्तु पंडित ने अपनी बात जारी रखी। उन्होंने कहा, "किसी भी व्यक्ति को, चाहे वह किसी भी सम्प्रदाय का घटक हो, राजनीति में अपने विचार प्रकट करने का अधिकार है; परन्तु उसे राजनैतिक विषयों में अपने सम्प्रदाय का प्रयोग करने का अधिकार नहीं दिया जा सकता।"

"परन्तु गुरु जी!" राजकुमार ने कहा, "विचार करने और विचारों को प्रकट करने का जब अधिकार है तो उन विचारों को व्यवहार में लाने का अधिकार क्यों नहीं है?"

"कुमार! मैंने यह कहा है कि अपने सम्प्रदाय का प्रयोग राज्य पद्धति को बदलने में करना वर्जित है।"

"यदि उनके सम्प्रदाय को राज्य-पद्धति बदलने से सुविधा प्राप्त होती है, तब भी नहीं?"

"साम्प्रदायिक लाभ के लिए राज्य का प्रयोग हमारे संविधान के विपरीत है। इसके प्रतिकार में राज्य में सब सम्प्रदायों को राज्य में शांतिमय ढंग से नागरिक कर्तव्यों का पालन करते हुए अपने सम्प्रदाय का प्रचार तथा विस्तार करने का अधिकार प्राप्त है।"

"परन्तु यदि राज्य-पद्धति के परिवर्तन से किसी एक सम्प्रदाय के प्रचार में सहायता मिलती हो, तब वह सम्प्रदाय तो राज्य-पद्धति का परिवर्तन करना चाहेगा ही।

"राज्य-पद्धति के परिवर्तन से किसी एक सम्प्रदाय को सहायता मिलती है, तो यह भी सम्भव है कि दूसरे सम्प्रदाय को हानि पहुंचे। तब दोनों में विरोध तथा संघर्ष हो सकता है। राज्य किसी भी सम्प्रदाय का विरोधी नहीं होना चाहिये। इस कारण उसे किसी सम्प्रदाय का सहायक भी नहीं होना चाहिये। राज्य का कार्य-क्षेत्र भिन्न है।"

"परन्तु कल्याण करने के ढंग में राज्य को यह देखना होगा कि वह किसी अन्य सम्प्रदाय द्वारा बतलाये कल्याण के ढंग का विरोध न करे।

"कुमार! मैं बताता हूं। इस समय देश में दो मुख्य विचारधाराएं चल रही है। ये विचारधाराएं महात्मा बुद्ध से पूर्वकाल में भी थीं। हां, इनका नाम यह नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था जो अब है। तब इनका नाम था आस्तिक तथा नास्तिक विचारधारा। राजा दोनों में तटस्थ रहता था। वह स्वयं कभी नास्तिक मत का अनुयायी रहा है तो कभी आस्तिक मत का। परन्तु अपने सम्प्रदाय के लिए दूसरे सम्प्रदाय से पृथक् वह नियम नहीं बनाता था। उसका यह कर्त्तव्य होता था कि राजनियमों में सम्प्रदाय प्रवेश न करे। ऐसा राजा धार्मिक अर्थात् धर्मात्मा समझा जाता था।

"परन्तु जब भी किसी राजा ने अपनी सम्प्रदाय के लिए दूसरे सम्प्रदाय से पृथक् राज्य-नियम बनाने का यत्न किया है, प्रजा ने उसका विरोध किया है तथा उस राजा को पद से च्युत किया है।

"देश के विद्वान् लोग उस राजा का सदा विरोध करते रहे हैं जो किसी एक सम्प्रदाय को राज-नियम से चलाने का यत्न करता है। इसी प्रकार विद्वान् लोग उस सम्प्रदाय का भी विरोध करते हैं जो राज-बल से किसी सम्प्रदाय के विरुद्ध पग उठाता है।"

"महात्मा बुद्ध ऐसा नहीं मानते थे?" कुमार ने कहा।

"यह तुम्हें किसी ने गलत बताया है। तथागत ने सब सम्प्रदायों की आचार-संहिता को स्वीकार किया था। वे कभी भी किसी राज्य पद्धति के पक्ष अथवा विपक्ष में नहीं हुए। उनका अपना सम्प्रदाय कोई नहीं था। एक सर्वसम्मत आचार-संहिता का चलन वह चाहते थे। इसी कारण वह राजाओं से भी सम्मानित थे तथा गणतन्त्र-पद्धति के राज्यों से भी।...

"यह तो उस आचार-संहिता को स्वीकार करनेवालों ने कुछ ऐसे विचार स्वीकार कर लिये हैं जो आचार-संहिता से सम्बन्ध रखते हुए विचार-पद्धति से भी सम्बन्ध रखते हैं। इसका परिणाम यह हुआ है कि महात्मा बुद्ध का आन्दोलन जो केवल आचार-संहिता का प्रचलित करनेवाला था, अब एक साम्प्रदायिक आन्दोलन बन गया है।"

"तो महात्मा बुद्ध का कोई सम्प्रदाय नहीं था?"

"उन्होंने कुछ भी ऐसा नहीं कहा जो किसी भी सम्प्रदाय की आचार संहिता का विरोध करता हो।"

"कहा तो है। उन्होंने पशु-बलि का विरोध किया है।"

"कुमार! पशु-बलि देना कोई साम्प्रदायिक व्यवहार नहीं है। यह वैचारिक व्यवहार है। जो पशु-बलि देते हैं, वे इसके द्वारा अपने इष्टदेव को प्रसन्न करने का यत्न करते हैं। कुछ दूसरे सम्प्रदाय महात्मा बुद्ध के समय में भी थे जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पशु-बलि को उचित नहीं मानते थे। वे यज्ञ में घृत, समिधा तथा कुछ सुगन्धित द्रव्यों की बलि देते थे। कहीं अन्न की भी बलि दी जाती है। दोनों विचार साम्प्रदायिक हैं। परन्तु पूर्व काल में कोई राजा इनमें हस्तक्षेप नहीं करते थे। अब बौद्ध राज्य इसमें हस्तक्षेप करने लगा है। यह राजा की ओर से एक सम्प्रदाय को चलाने की बात है।''

''और गुरु जी!'' कुमार का अगला प्रश्न था, ''नर-बलि के विषय में आपका क्या मत है?''

''तुम बताओ, तुम्हारे पिता बौद्ध नहीं हैं। इनके राज्य में पिछले पचास वर्षों में एक भी नर-बलि का उदाहरण नहीं हुआ। नर-बलि इस राज्य में वर्जित है।''

''तो यह साम्प्रदायिक विचार नहीं है क्या?''

''नहीं। यह राज्य-नियम के विपरीत है। राज्य-नियम है कि एक मनुष्य को उस विषय में पूर्ण स्वतन्त्रता है जो किसी दूसरे की स्वतन्त्रता का हनन न करे। किसी दूसरे मनुष्य को जीवित रहने से वर्जित करना उसके अधिकार को छीनने के तुल्य है।''

''और यदि कोई स्वयमेव अपने-आपको बलि के लिए उपस्थित करे तो राज्य क्या करे?''

''राज्य इसे आत्म-हत्या समझेगा। यह हमारे राज्य में वर्जित नहीं है। परन्तु यदि आत्महत्या से पूर्व यह विदित हो जाय कि वह अमुक कारण से आत्महत्या करना चाहता है, तब उस कारण को राज्य दूर कर सकता है। आत्महत्या न पुण्य है और न पाप है। इस कारण राज्य आत्महत्या करने से मना नही कर सकता।''

अल्पाहार समाप्त हो चुका था। अन्त में महाराज ने कह दिया, ''कुमार! तुम अभी अल्पायु हो। साथ ही तुमने अभी सब शास्त्रों का अध्ययन नहीं किया। इस कारण तुम्हें चाहिये कि जो भी तुम्हें इस प्रकार की मिथ्या बातें बताता है, उसे तुम पंडित जी के सम्मुख ले आओ और कहो कि वह पंडित जी से बात करे।''

''पिताजी!'' कुमार ने महाराज को कहा, ''शास्त्र भी तो मनुष्य-निर्मित हैं। उनमें मिथ्या कथन भी तो हो सकता है?''

''हां! ठीक है। कोई भी मां के पेट से उत्पन्न हुआ पूर्ण नहीं हो सकता। अतः उनके विचारों को ग्रहण करने से पूर्व प्रमाणों की कसौटी पर परखना चाहिये।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"गुरु जी! प्रमाण तो युक्ति के आधार पर होने से मिथ्या भी हो सकते हैं?"

अब पंडित जी ने वार्तालाप में हस्तक्षेप करते हुए कहा, "जहां मिथ्या प्रमाणों का प्रयोग किया जाता है, वहां परिणाम विनाशकारी होता है। तब यह इतिहास का विषय हो जाता है। इसी कारण मैं महाराज से सदैव यह कहता हूं कि एक राजा को नित्य इतिहास का अध्ययन करना चाहिये और उस पर मनन करना चाहिये।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तृतीय परिच्छेद

: 1 :

पण्डित विश्वेश्वरनाथ की उज्जयिनी में आकर वास करते चार वर्ष हो चुके थे और कुमकुम तथा नन्दिनी को उनसे शिक्षा प्राप्त करते हुए छः वर्ष व्यतीत हो चुके थे। पण्डित जी की शिक्षा का प्रभाव अद्वितीय था। इसका मूल कारण यह था कि वह बुद्धि के विकास पर विशेष बल देते थे।

उनका मत था कि बुद्धि का विकास शिक्षा का मुख्य अंग हैं। इस विकास से मनुष्य को कार्य की दिशा प्राप्त होती है। यह दिशा मन देता है।

मन अपने ज्ञान-भण्डार को बुद्धि के समक्ष प्रस्तुत करता है। मन ही ज्ञान का संचय-स्थान है। इसके लिए पण्डित जी स्वाध्याय पर बल देते थे। उनका कहना था कि स्वाध्याय का फल प्राप्त करने के लिए स्मृति तीव्र होनी चाहिये। स्मृतिहीन मन में अधिक ज्ञान का संचय नहीं हो सकता। स्मृति को उन्नत करने के लिए भी साधन हैं। पण्डित जी उन साधनों का प्रयोग भी करते रहते थे। उनका मानना था कि मन और बुद्धि को विकास देने से मानव की सर्वांग उन्नति होती है।

इस प्रक्रिया का प्रभाव कुमकुम और उसकी मां रामी पर पण्डिजी ने उनके बाल्यकाल से ही आरम्भ किया था। अपनी मां की तरह अब कुमकुम भी सोलह वर्ष की आयु में ज्ञान का विशाल भण्डार बन गई थी। साथ ही, बुद्धि का विकास होने से वह इस भण्डार का लाभ भी उठाने लगी थी।

नन्दिनी तथा कल्याणी पर भी पण्डित जी की शिक्षा का प्रभाव हो रहा था और वे ऐसा अनुभव करने लगी थीं मानो किसी अन्ध कूप में से निकलकर एक ऐसे विस्तृत मैदान में लाकर बैठा दी गई हैं, जहां तीव्र प्रकाश तथा ऊष्मायुक्त वातावरण है।

कल्याणी को विचार करने में प्रोत्साहन देने के लिए पण्डित जी भोजन के समय उस लेख पर, जो वह उस दिन किसी ग्रन्थ की प्रतिलिपि तैयार करने के लिए लिखा करती थी, प्रश्न भी करते रहते थे।

इस सब शिक्षा का निर्णायक स्थान उस दिन पहुंचा था जिस दिन महाप्रभु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सौमित्र का पत्र लेकर राजकुमार के निवास-स्थान पर जाते हुए कल्याणी का पण्डित जी से वार्तालाप हुआ था।

उस दिन कल्याणी को बहुत देर तक प्रतीक्षा करनी पड़ी थी राजकुमार की। राजकुमार का मन पण्डित जी की युक्तियों से प्रभावित था और अपने निवास पर पहुंचकर वह ऐसी स्थिति में नही था कि कल्याणी से कुछ अधिक बात कर सके। कल्याणी भी नन्दिनी और कुमकुम के व्यवहार से तथा पण्डित जी के साथ हुए वार्तालाप से अनिश्चित-मन थी।

कुमार ने महाप्रभु का पत्र लेकर पढ़ने के उपरान्त कहा, "भगिनी! मैं शीघ्र ही विवाह कर रहा हूं और अपने पत्नी के लिए उसके सुख-दुःख में उसके साथ रहनेवाली संगिनी ढूंढ रहा हूं। महाप्रभु ने वचन दिया है कि तुम मेरी पत्नी की संगिनी बनकर हमारे साथ रह सकोगी। इसी कारण मैंने महाप्रभु से कहा था कि तुम्हें मेरे पास भेजें जिससे मैं तुमसे भलीभांति परिचित हो सकूं।...

"मैं चाहता हूं कि तुम सप्ताह में दो बार मुझसे मिल लिया करो। मैं तुम्हारे द्वारा कुमकुम को सन्देश भेजना चाहूंगा और मैं चाहता हूं कि तुम उससे मिलकर उसे मेरे अनुकूल बनाकर रखो।...

"अब तुम जा सकती हो। प्रत्येक मंगलवार तथा शुक्रवार के दिन तुम चौथे प्रहर के आरम्भ में मुझसे मिलने आ सकती हो।"

कल्याणी कुमार को प्रणाम कर राजप्रासाद से निकल गई।

पण्ड़ित जी के गुप्तचर विहार में भी थे और बौद्ध उपासकों पर भी ध्यान रखते थे। अतः पण्डित जी को विहार की सम्पूर्ण गति-विधियों का ज्ञान रहता था।

नगर के एक सेठ युगलकिशोर थे। उसकी पत्नी मन्दाकिनी बौद्ध उपासक थी और पण्डित जी की शिष्या भी थी। उसके द्वारा भी पण्डित जी को काफी सूचना मिलती रहती थी।

उसी ने पण्डित जी को बताया था कि महामात्य की पत्नी सर्वप्रिया बौद्ध उपासिका है और उसके कारण ही महाप्रभु का महामात्य रामानुज से सम्बन्ध अति घनिष्ठ बन चुका था।

जिस दिन कल्याणी राजकुमार का पत्र लेकर आई थी, उससे एक दिन पूर्व मन्दाकिनी विहार की साप्ताहिक उपासना में सम्मिलित हुई थी। विहार में उसे विदित हुआ था कि महाप्रभु सौमित्र तथा भिक्षुणी कल्याणी में परस्पर घनिष्ठ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्बन्ध हैं। इस ज्ञान-प्राप्ति पर ही वह कल्याणी की ओर देखकर मुस्कराई थी।

मन्दाकिनी यही बात नन्दिनी को बता रही थी जब कल्याणी अगले दिन नन्दिनी के आगार में पहुंची थी। कल्याणी के पूछने पर मन्दाकिनी ने यही कहा था कि किसी का रहस्य है परन्तु वह बतायेगी नहीं।

परन्तु पण्डित विश्वेश्वरनाथ का राजप्रासाद की ओर जाते हुए पूछने का विषय भिन्न था। पण्डित जी को इतनी सूचना मिली थी कि महाप्रभु ने एक पत्र कल्याणी को दिया है। इसके उपरान्त जो कुछ भी पण्डित जी ने कहा था, वह उनका अनुमान था। उनको इतना विदित था कि राजकुमार से महाप्रभु का सम्बन्ध बना हुआ है और महाप्रभु राजकुमार को सन्देश भेजा करते हैं। इस ज्ञान के आधार पर उन्होंने अनुमान लगाया था कि कल्याणी राजकुमार से मिलने जा रही है और महाप्रभु ने पत्र में कल्याणी का परिचय दिया है। पण्डित जी जानते थे कि पत्र में कोई गुप्त बात लिखी नहीं जा सकती, क्योंकि ऐसी बातें षड्यंत्र के प्रमाण बन जाते हैं।

पण्डित जी को विदित था कि महाराज आज के दिन कुमार से उनको मंत्रिमण्डल में सम्मिलित करने के लिए वार्तालाप कर रहे होंगे तथा वह भी इसी उद्देश्य से वहां जा रहे थे। इस कारण कुमार को समय लग सकता था। अतः उन्होंने कल्याणी को कह दिया था कि यदि उसे विलम्ब हो जाये तो वह पाठशाला में रात्रि व्यतीत कर सकती है।

पण्डित जी के साथ हुई बातचीत से कल्याणी को विश्वास हो गया था कि पण्डित जी न केवल उसके विषय में, प्रत्युत महाप्रभु के विषय में भी बहुत ज्ञान रखते हैं। अतः राजकुमार के प्रासाद से निकलकर वह पण्डित जी के निवास पर रात्रि व्यतीत करने जा पहुंची।

रात्रि-भोजन के समय कल्याणी ने पण्डित जी से कहा, "मैं भोजनोपरान्त आपसे पृथक् में एक बात करना चाहती हूं।

"हां, परन्तु विष्णु की माता साथ में होगी।" पण्डित जी ने कह दिया।

इस बात से कल्याणी का मुख लज्जा से लाल हो गया। उसे लज्जा से लाल होते देख पण्डित जी ने कहा, "कल्याणी बेटी! मैंने तुम्हारे विषय में किसी उच्छृंखल व्यवहार की आशंका नहीं की और अपने व्यवहार पर भी मुझे पूर्ण विश्वास है। इसपर भी व्यर्थ में किसी के मन में कोई सन्देह उत्पन्न न हो, इस कारण मैं एक साक्षी सामने रखना चाहता हूं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कल्याणी चुप रही और भोजनोपरान्त जब वह पण्डित जी के आगार में जाने लगी तो उसने पण्डित जी की पत्नी रामेश्वरीदेवी से कहा, ''माता जी! आइये।''

पण्डित जी के आगार में पहुंचकर कल्याणी ने कहा, ''मैं आपके सम्मुख एक रहस्योद्घाटन करना चाहती हूं।''

पण्डित जी और उनकी पत्नी चुपचाप कल्याणी के मुख पर देख रहे थे।

कल्याणी ने आगे कहा, ''महाप्रभु ने मुझे आपके घर में गुप्तचर बनाकर छोड़ा हुआ है। परन्तु मैंने आपके घर पर कभी कोई गुप्त बात होते देखी नहीं। इस कारण जो कुछ मैं महाप्रभु को बता सकती हूं वह वही कुछ है जो यहां देखती हूं। आपने कभी कोई बात यहां चोरी नहीं रखी।...

''परन्तु, आपने जो मेरा कल्याण किया है, उसके प्रतिकार में एक रहस्य की बात मैं बताना चाहती हूं। वह यह है कि महाप्रभु और राजकुमार में कुछ गुप्त बात चल रही है जिसका सम्बन्ध कुमकुम से भी है।...

''आज राजकुमार कह रहे थे कि मैं कुमकुम से घनिष्ठता उत्पन्न करूं जिससे उसे उनके अनुकूल रख सकूं।''

पण्डित जी ने मुस्कराकर कहा, ''कल्याणी! तुम बहुत कम जानती हो। देखो, मैं बताता हूं। महाप्रभु की यह इच्छा है कि राजकुमार को किसी प्रकार पाटलिपुत्र भेज दिया जाए और वहां किसी बौद्ध उपासक की सुन्दर लड़की से उसका विवाह सम्पन्न कर दिया जाये।...

''कुमकुम के विषय में महाप्रभु की योजना है कि उसका किसी प्रकार अपहरण करके किसी दूर विहार में रखा जाए और उसे भिक्षुणी बना लिया जाए। वह समझते हैं कि एक सुन्दर, सभ्य, शिक्षित भिक्षुणी से संघ का महाकल्याण होगा।...

''मुझे यह ज्ञात था कि महाप्रभु ने तुम्हें एक पत्र दिया है। जब तुमने मुझे यह बताया कि तुम राजप्रासाद की ओर, राजकुमार से भेंट करने जा रही हो तो सारा षड्यंत्र स्पष्ट हो गया।''

''पण्डित जी! मैंने अब निश्चय किया है कि आपकी कोई बात महाप्रभु से नहीं कहूंगी।''

''परन्तु कल्याणी! मैं तो यह कह रहा हूं कि यहां कोई गुप्त बात है ही नहीं। तुम महाप्रभु से यह कह सकती हो। साथ ही उन्हें यह भी कह सकती हो कि हम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनके किसी कार्य में बाधा नहीं डालना चाहते।''

''और यदि राजकुमार बौद्ध उपासक हो गये तो क्या करेंगे?''

''कुछ नहीं। जब तक वह अवन्ति में राज्य के नियमान्तर्गत धर्मपूर्वक व्यवहार करेंगे, चाहे बौद्ध हों, चाहे कुछ अन्य, हम उन्हें मना नहीं करेंगे।''

कल्याणी उनका मुख देखती रह गई। उसने केवल यह कहा, ''मुझे विदित है कि कुमकुम राजकुमार से विवाह करने की इच्छुक है। यदि राजकुमार कहीं अन्य स्थान पर विवाह कर लेते हैं तो इससे उसे अत्यन्त दुःख होगा।''

''कल्याणी! विवाह, जन्म तथा मरण, ये पूर्व-जन्म के कर्मों के फल के अधीन होते हैं। इन तीनों का सम्बन्ध रचना-कार्य से है और रचना-कार्य ईश्वर अधीन है। इसपर भी, इसमें प्राणी के कर्म भी अपना भाग रखते हैं। कर्मों के अनुसार किस प्रकार का जन्म एक आत्मा को मिलना चाहिये, परमात्मा उसे वैसा जन्म देता है।''

''परन्तु गुरु जी! आप तो इस बात से परिचित ही हैं कि विहार में स्त्री-पुरुषों में यौन सम्बन्ध बनते तथा बिगड़ते हैं। वे भी कर्मानुसार होते हैं क्या?''

''हां, बिना कर्मफल के कुछ भी नहीं होता।''

''और यह गुप्त भेद प्रकट करना पुण्य है अथवा पाप?''

''यह कर्म स्वयमेव कुछ भी नहीं है। न पाप है, न पुण्य है; जैसे भोजन करना, वस्त्र पहनना अथवा भ्रमण करना न पाप है न पुण्य। ये सब पुण्य अथवा पाप तब होते हैं जब इनका उद्देश्य श्रेष्ठ हो या बुरा हो।...

''मान लो, तुम किसी व्यक्ति की गतिविधियों पर देखरेख रखकर किसी को बताती हो, तो प्रश्न यह होगा कि इसमें तुम्हारा उद्देश्य क्या है? और जिसे तुम बताती हो, इससे उसका क्या प्रयोजन सिद्ध होगा? यदि इसमें तुम्हारा उद्देश्य और उस व्यक्ति का उदेश्य जिसको तुमने सूचना दी है, कल्याणकारी हो, तब तो तुम पुण्य कर रही हो, और यदि इसमें तुम्हारा अथवा उस व्यक्ति का उद्देश्य अकल्याणकारी हो, तो यह पाप होगा।''

कल्याणी कुछ देर तक मन में विचार करती रही और फिर उठकर नन्दिनी के आगार में चली गई।

: 2 :

कल्याणी अगले दिन ही विहार में जा सकी। वह सीधी महाप्रभु के आगार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में चली गई। महाप्रभु विस्मित थे कि कल्याणी रात्रि में क्यों नहीं आई। क्या वह भी नन्दिनी के पथ पर चली गई?

जब कल्याणी सामने आई तो महाप्रभु ने पूछ लिया, "रात्रि में क्यों नहीं लौटी?"

"महाप्रभु! राजकुमार की प्रतीक्षा में उसके आगार में दीप जलने तक बैठी रही। जब वह आये तो आपका पत्र देकर लौटी। उस समय विहार को लौटती तो आधी प्रहर रात्रि व्यतीत हो जाती। इस कारण पाठशाला में ठहर गई थी।"

"ओह! महाप्रभु ने उत्सुकता से पूछ लिया, "रात्रि में उनके निवास पर कोई बाहरी पुरुष भी आते हैं क्या?"

"नहीं भगवन्! पण्डित जी के अतिरिक्त उस भवन में कोई पुरुष नहीं रहता। उन्होंने अपने निवास पर सेवक भी स्त्रियां ही रखी हुई हैं।"

"अच्छा यह बताओ, राजकुमार से क्या बात हुई?"

"राजकुमार ने कहा है कि वह किसी विश्वस्त स्त्री की सेवाएं चाहते हैं जो कुमकुम की संगिनी बन सके और उसके विचारों को उनके अनुकूल बनाये रखे। साथ ही, उसके साथ उनके पत्र-व्यवहार में सहायक हो सके। राजकुमार आपका आभार प्रदर्शित करते हैं जो आपने मुझे उनकी सेवा में भेजा है।"

"अभी तुम्हें क्या कार्य करने को कहा है?"

"अभी कार्य कुछ नहीं बताया। केवल यह कहा है कि सप्ताह में दो बार उनसे आकर मिला करूं और कुमकुम के विचार उन्हें बताया करूं।"

"पण्डित विश्वेश्वरनाथ ने पूछा था क्या कि तुम रात्रि में उनके निवास पर किस कारण ठहर रही हो?"

"नहीं। परन्तु पण्डित जी ने एक बात आपको बताने के लिए कही है कि राजकुमार अब व्यस्क हैं। इस कारण उन पर अब देखरेख नहीं रखी जा सकती। वह अब स्वतन्त्र हैं और यदि स्वयं किसी विषय पर कोई सम्मति लेंगे, तभी वह उन्हें सम्मति देंगे।"

"तुमने उन्हें बताया था कि तुम किस कारण राजकुमार से मिलने गई थीं?"

"मैंने उन्हें कुछ नहीं बताया, परन्तु वह मेरे विषय में सब-कुछ जानते हैं। जब मैं राजप्रासाद की ओर जा रही थी तो वह भी महाराज से मिलने जा रहे थे। उन्होंने मार्ग में मुझे बताया कि राजकुमार मुझे सायंकाल से पूर्व नहीं मिल सकेंगे। मुझे राजकुमार के निवास में प्रवेश करने की स्वीकृति भी प्रतिहार से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्होंने ही लेकर दी थी, अन्यथा मुझे राजप्रसाद के बाहर ही बैठकर लम्बी प्रतीक्षा करनी पड़ती। पण्डितजी को इस बात का भी ज्ञान था कि मैं आपका एक पत्र लेकर राज कुमार के पास जा रही हूं और उस पत्र में यह लिखा है कि मैं आपकी विश्वस्त दूतिका हूं।''

''बड़ा धूर्त है।'' सौमित्र के मुख से निकल गया।

''जी।'' कल्याणी ने मुस्कराकर कहा।

''तुम मुस्करा क्यों रही हो?''

''यह विचारकर कि किसी के भेद जान लेना कितनी बड़ी धूर्तता है!''

''धूर्तता यह है कि उसने तुम्हें बहका लिया है।''

''जी नहीं। मैंने इस पत्र के विषय में उन्हें कुछ नहीं कहा। उन्होंने स्वयं ही सब-कुछ बताकर मुझे यह भी कहा कि राजकुमार से भेंट में विलम्ब हो जाने की सम्भवना है, इस कारण मैं रात्रि में उनके निवास पर ठहर सकती हूं।''

सौमित्र विचार करने लगा कि यदि कल्याणी सत्य कहती है, तब तो पण्डित बहुत ही चतुर व्यक्ति है। इस पर भी कल्याणी पर सन्देह हो गया था। उसने उसकी परीक्षा करने का निश्चय कर लिया।

अगले शुक्रवार को उसने एक पत्र राजकुमार को लिखा कि उसे पाटलिपुत्र जाने का प्रबन्ध करना चाहिये। यह पत्र राजकुमार को पहुंचाने के लिए उसने कल्याणी को दे दिया।

इस दिन कल्याणी राजकुमार के निवास पर गई तो राजकुमार उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। अतः पत्र देकर कल्याणी लौटी तो पण्डित जी भी महाराज के भवन की ओर जाते हुए मिल गये। पण्डित जी ने मुस्कराकर पूछ लिया, ''राजकुमार मिले क्या?''

''जी!''

''अब पुनः उनसे कब मिलने आओगी?''

''राजकुमार ने मंगलवार का दिन निश्चित किया है।''

''परन्तु जहां तक मुझे विदित हुआ है, महाप्रभु ने राजकुमार को तुम पर विश्वास न करने के लिए कहा है।''

''मुझे इसका ज्ञान नहीं है।''

''इसी कारण मैंने पूछा था। मेरा विचार था कि तुम अपनी इच्छा से उनसे मिलने आई हो।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कल्याणी इस वार्तालाप का अभिप्राय समझने के लिए पण्डित जी का मुख देखती रह गई। पण्डित जी हंस पड़े और महाराज के निवास की ओर चले गये।

मंगलवार के दिन महाप्रभु ने पुनः कल्याणी को एक पत्र दिया और उसे राजकुमार को पहुंचाने के लिए कहा। कल्याणी वह पत्र लेकर पण्डित जी की पाठशाला में आई। इस दिन मध्याह्न-भोजन करते समय पण्डित जी ने पूछ लिया, "आज भी जा रही हो कुमार से भेंट करने?"

कुमकुम तथा नंदिनी भी साथ ही बैठी भोजन कर रही थीं। पण्डित जी का प्रश्न सुनकर वे हंस पड़ीं। पण्डित जी भी हंसने लगे। कल्याणी विस्मित होकर उन सबका मुख देखती रह गई। पण्डित जी ने कहा, "आज पुनः महाप्रभु का पत्र ले-जा रही हो न?"

कल्याणी ने भोजन करना छोड़कर कहा, "गुरु जी! आपमें परमात्मा की सर्वज्ञता है अथवा आपके गुप्तचर वायु में भ्रमण करते है। आज जब मैं विहार से चलने लगी तो महाप्रभु ने मुझे पत्र दिया था। उस पत्र को लेकर मैं यहां आई हूं। यहां एक प्रहर लेखन-कार्य कर भोजन करने बैठी हूं। पत्र मेरे पास सुरक्षित पड़ा है। आप बता रहे हैं कि राजकुमार के पास महाप्रभु का पत्र लेकर जा रही हूं। मैं विस्मय कर रही हूं कि इस बीच किसने आकर आपको यह सब बताया है?"

"पण्डित जी अभी भी हंस रहे थे।

कल्याणी ने आगे कहा, "पिछली बार आपने मुझे बताया था कि महाप्रभु ने राजकुमार को लिखा है मैं विश्वस्त नहीं हूं। तब मैं समझी थी कि आपने एक ऐसी बात कह दी जिसका प्रमाण नहीं हो सकता। परन्तु कल रात्रि एक भिक्षु ने मुझे बताया है कि शुक्रवार से एक दिन पूर्व सायंकाल वह एक पत्र राजकुमार को देने गया था।...

"इससे मैं परेशान हो उठी। मैं महाप्रभु के आगार में गई और मैंने उनसे पूछ लिया, क्या यह सत्य है कि उन्होंने राजकुमार को एक पत्र लिखा है कि मैं विश्वस्त दूत नहीं हूं?"

"वह पूछने लगे कि किसने मुझे ऐसा कहा है? जब मैंने बताया कि आपने ऐसा कहा था तो वह बौखला उठे और बोले, 'इस पण्डित के बच्चे को कौन बताता है कि यहां क्या हो रहा है? अच्छा मैं तुम्हें एक पत्र दे रहा हूं कि पहले पत्र में जो मैंने लिखा था, वह मेरी भूल थी। तुम वास्तव में विश्वस्त हो।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"और आज उन्होंने पत्र देकर कहा है कि मैं कुमार से कहूं कि यह पत्र मेरे चले आने के उपरान्त पढ़ें।"

इसपर पण्डित जी बहुत हंसे। हंसकर कहने लगे, "कल्याणी! भोजन तो करना ही चाहिये, अतः भोजन करो। हां, एक बात मैं कहता हूं कि यदि तुम चाहो तो महाप्रभु का पत्र उनकी मुहर उखाड़कर पढ़ सकती हो। उसके उपरान्त वैसी ही मुहर पुनः लगवा दूंगा जिससे किसी को सन्देह न हो। जहां तक मैं समझा हूं, इस बार इस पत्र से कोई सम्बन्ध नहीं है।"

कल्याणी समझ गई कि महाप्रभु स्वयं महाधूर्त है जो सामान्य-सी बात के लिए झूठ बोल रहा है। उनके मन में इच्छा उत्पन्न हो गई कि पत्र खोलकर पढ़े। अतः उसने पूछ लिया, "आप यह कैसे करेंगे?"

"यह तो बहुत ही सरल बात है। यदि तुम एक धूर्त से धूर्तता करनी चाहो, तो मैं यह कर सकूंगा।"

कल्याणी ने पुनः भोजन करना आरम्भ कर दिया। भोजनोपरान्त पण्डित जी उसे अपने निजी अध्ययन-कक्ष में ले गये। नन्दिनी भी उनके पीछे-पीछे वहां चली आई। कल्याणी ने उसकी ओर देखा तो उसने मुस्कराकर कहा, "भगिनी! तुम महाप्रभु के पत्र की परीक्षा करने जा रही हो न! मैं भी यह खेल देखने चली आई हूं। मैं देखना चाहती हूं कि गुरु जी का अनुमान कितना सत्य है।"

कल्याणी ने पण्डित जी के सम्मुख अपने चोले के भीतर से एक पत्र निकालकर रख दिया।

पण्डित जी ने नन्दिनी से कहा, "जाओ, भीतर से थोड़ी-सी चिकनी मिट्टी ले आओ।"

नन्दिनी मिट्टी लेकर आई तो पण्डित जी ने उसमें थोड़ा-सा जल मिलाकर उसे गूंथा और टिकिया बना ली। टिकिया उसी परिमाण की थी जिस परिमाण की पत्र के ऊपर मुहर लगी थी। तदनन्तर उस टिकिया पर मुहर की छाप ले ली। छाप लेकर उन्होंने टिकिया को आग के ऊपर रखकर सुखा लिया। जब वह सूख गई तो उन्होंने देखा कि उसपर छाप स्पष्ट उभर आई थी। उसपर सौमित्र का नाम स्पष्ट पढ़ा जा सकता था। अब पण्डित जी ने रांगा लेकर एक कुठाली में डाला और उसे पिघला लिया। जब रांगा पिघल गया तो उन्होंने मिट्टी की छाप पर उसे डाल दिया। अब उस रांगे को ठण्डा करके उन्होंने देखा कि सौमित्र शब्द उभरे हैं अथवा नहीं। मुहर बहुत सुन्दर बनी थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब पण्डित जी ने पत्र खोलने से पहले कहा, "मैंने कहा था कि महाप्रभु ने पत्र में कुछ नहीं लिखा और यदि कुछ लिखा है तो उसका तुमसे कुछ सम्बन्ध नहीं है।" इसके बाद उन्होंने मुहर तोड़कर पत्र खोला तो देखा कि वह कोरा था। उसपर कुछ नहीं लिखा था।

इस कोरे पत्र को देखकर सब विस्मित रह गये।

एकाएक कल्याणी ने कहा, "मुझे ऐसा समझ में आ रहा है कि यह सब मुझे धोखा देने के लिए किया गया है। आपने मुझे बताया था कि महाप्रभु ने मेरे विषय में राजकुमार को लिखा था कि मैं विश्वस्त दूतिका नहीं हूं। अब महाप्रभु इस विचार से कि कहीं इस सूचना से निराश होकर मैं राजकुमार से मेल-मिलाप न छोड़ दूं, मुझे उनके पास भेजने के लिए यह छलना खेली गई है।

"तुम ठीक समझी हो।" पण्डित जी ने खाली पत्र बन्द करते हुए कहा। पत्र बन्द करके उन्होंने लाख लेकर उसपर पुनः मुहर लगा दी। कल्याणी ने पूछा, "गुरु जी! आप ये सब बातें किस प्रकार जान जाते हैं?"

"देखो कल्याणी! मैं एक रहस्य की बात बताता हूं। महाप्रभु की योजना यह है कि राजकुमार पाटलिपुत्र चला जाये। वहां बौद्ध समिति के प्रधान जी राजकुमार के लिए एक अति सुन्दर कन्या, जो बौद्ध धर्म से प्रभावित हो, ढूंढ रहे हैं। यहां सौमित्र जी राजकुमार को पाटलिपुत्र जाने के लिए प्रेरित कर रहे हैं।...

"राजकुमार पाटलिपुत्र जाना तो चाहता है परन्तु वह कुमकुम को छोड़कर किसी अन्य से विवाह नहीं करना चाहता। इस कारण उसकी योजना यह है कि कुमकुम को साथ लेकर जाये और पाटलिपुत्र पहुंचकर दोनों विवाह-बन्धन में बंध जायें। जब वह वहां से लौटकर आये तो महाराज को हटाकर स्वयं यहां का शासक बन जाय।...

"सौमित्र को विदित है कि कुमकुम भी राजकुमार से विवाह की इच्छुक है, परन्तु वह उसके साथ भागकर जायेगी अथवा नहीं, इसपर राजकुमार को विश्वास नहीं है। यही विश्वास करने के लिए तथा कुमकुम को अपनी योजना में सम्मिलित करने के लिए वह तुम्हारा प्रयोग करना चाहता है।...

महाप्रभु की योजना तथा राजकुमार की योजना आरम्भ में एक- समान ही हैं। परन्तु कुमकुम क्या चाहती है, यह स्पष्ट नहीं कर सकी।"

कल्याणी विस्मय में पण्डित जी का मुख देखती रह गई। वह मन में विचार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कर रही थी कि महाप्रभु का दूत बनने से इन्कार कर दे। उसने अपने मन की बात पण्डित जी से कह भी दी। परन्तु पण्डित जी ने कहा, "यदि तुम मेरा कहना मानो तो मैं एक अन्य बात कहूंगा।"

"बताइये।"

"तुम आंखें मूंदकर सौमित्र की दूतिका बनी रहो। केवल हमे यह बताती रहो कि क्या हो रहा है। तुम्हारी सूचना कुमकुम तथा राजकुमार के लिए कल्याणकारी ही सिद्ध होगी।"

"परन्तु गुरु जी! मैं तो यह भी विचार कर रही हूं कि मैं विहार ही छोड़ दूं।"

"देख लो। मेरी सम्मति यही है जो मैंने कही है।"

कल्याणी ने पत्र देखा तो उसपर मुहर वैसी ही थी, जैसी पहले लगी थी। उसने वह पत्र अपने चोगे के भीतर रखकर उठते हुए कहा, "मैं कल आपसे इस विषय में बात करूंगी।"

: 3 :

राजकुमार ने मंत्रि-मंडल में सम्मिलित होना स्वीकार किया तो महाराज ने मंत्रि-मण्डल में घोषणा कर दी। उन्होंने कहा, "अवन्ति राज्य की प्रजा की संख्या बढ़ रही है, अतः उससे राज्य-कार्य भी बढ़ रहा है। इस कारण हमने यह विचार किया है कि मंत्रि-मण्डल में मंत्रियों की संख्या पांच से बढ़ाकर सात कर दी जाय।"

इस घोषणा पर सभी मंत्री आश्चर्य से महाराज का मुख देखने लगे।

महामात्य ने आपत्ति प्रस्तुत कर दी, "मैं समझता हूं कि इससे प्रशासनिक व्यय बढ़ जायेगा।

महाराज का कहना था, "राज्य की आय भी तो बढ़ रही है!"

इस पर वित्त-मंत्री ने कह दिया, "पिछले तीन वर्षों से राज्य की आय निरन्तर बढ़ रही है। राज्यान्तर्गत अन्न की उपज में भी बढ़ोतरी हुई है तथा हमारा व्यापार भी बढ़ा है।"

महामंत्री ने पुनः कहा, "मंत्रि-मण्डल के पास पहले भी कार्य अधिक नहीं है, अतः मंत्रियों की संख्या बढ़ाना निरर्थक होगा। जो आय बढ़ रही है, वह प्रजा के वितरण के लिए व्यय की जा सकती है।"

"वह तो हो ही रहा है। परन्तु इस कल्याण का कार्य सुचारु रूप से तथा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यवस्थित रूप से करने के लिए भी तो हाथ चाहियें। मंत्रियों की संख्या बढ़ाने का एक यह भी प्रयोजन है।"

इस पर महामात्य चुप कर गये। अब महाराज ने कहा, "हम दो नये मंत्रियों के पद के लिए राजकुमार राहुल तथा पण्डित विश्वेश्वरनाथ का नाम प्रस्तावित करते हैं। यदि आप ये नाम स्वीकार करें तो हम सम्बन्धित व्यक्तियों से स्वीकृति लेने का प्रबन्ध करेंगे।"

अब महामात्य ने पुनः आपत्ति प्रस्तुत कर दी। उसने कहा, "राजकुमार का नाम उपयुक्त ही है, यद्यपि मैं अनुभव करता हूं कि उनकी आयु अभी कम है। वह परिश्रमी युवक हैं तथा आशा है वह सफल भी होंगे। परन्तु जहां तक पण्डित विश्वेश्वरनाथ जी का सम्बन्ध है, वह नाम मैं उपयुक्त नहीं समझता। कारण यह कि पहले ही पांच मंत्रियों में दो ब्राह्मण हैं; क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्रों का एक-एक ही प्रतिनिधि है। एक अन्य ब्राह्मण की नियुक्ति से तीनों समाज की विशेष रूप में वैश्य-समाज तथा शूद्र-समाज की प्रजा को असन्तोष होगा। अतः उनके स्थान पर मैं सेठ युगलकिशोर को उपयुक्त व्यक्ति समझता हूं।"

अब न्याय-मंत्री ने अपनी सम्मति दे दी। उसने कहा, "पण्डित विश्वेश्वरनाथ एक विद्वान व्यक्ति हैं तथा राजधर्म के ज्ञाता है। उनका अपना निजी स्वार्थ किसी में भी नहीं है। अतः उनकी नियुक्ति पर किसी को आपत्ति नहीं होनी चाहिये। मैं उन्हें उपयुक्त ही समझता हूं।"

अब महाराज ने कहा, "मैं सेठ युगलकिशोर के नाम पर आपत्ति नहीं करना चाहता, परन्तु पण्डित विश्वेश्वरनाथ के विषय में यह कह सकता हूं कि वह हमारे राज्य के सर्वश्रेष्ठ विद्वान हैं तथा उनकी सेवाओं से निश्चय ही राज्य का तथा प्रजा का कल्याण होगा।...

"इसपर भी इस विषय में आप अपनी सम्मति दें। जो आपका निर्णय होगा, मुझे स्वीकारर्य होगा।" महामात्य ने कहा।

अब इसपर मत लिया गया। राजकुमार का नाम सर्वसम्मति से स्वीकृत हो गया, परन्तु पण्डित विश्वेश्वरनाथ के पक्ष में चार मत थे। महामात्य ने विरोध में मत दिया।

इस निर्णय के उपरान्त महाराज के सचिव को आज्ञा दे दी गई कि वह सम्बन्धित व्यक्तियों को लिखित रूप में सूचना भेजें तथा इस पद के लिए उनकी स्वीकृति ले लें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पण्डित विश्वेश्वरनाथ को यह सूचना उस समय प्राप्त हुई जब महाप्रभु के पत्र का रहस्य जानकर कल्याणी राजकुमार से भेंट करने जाने के लिए तैयार हो रही थी। कल्याणी और नंदिनी अपने आगार में थीं कि राज्य का एक प्रतिहार एक मुहर-लगा पत्र पण्डित जी के लिए लेकर आया। पण्डित जी ने पत्र लिया और खोलकर उसे पढ़ने लगे। पत्र में लिखा था—मंत्रि-मण्डल का यह निर्णय है कि मंत्रि-मंडल का विस्तार किया जाय और मंत्रियों की संख्या पांच से बढ़ाकर सात कर दी जाय। इस निर्णय के साथ यह भी निश्चय किया गया है कि दो नये मंत्रियों में एक आप हों। अतः मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि आप इस पद के लिए अपनी स्वीकृति प्रदान करें जिससे विधिवत् घोषणा की जा सके।

पण्डित जी वह पत्र लेकर बैठकगृह में आ गये। कल्याणी तथा नंदिनी भी राज्य के प्रतिहार के आगमन की सूचना प्राप्त कर वहीं आ गई थीं। वे यह जानने आई थीं कि आज विशेष बात क्या है?

पण्डित जी ने उन्हें वहां देखकर नन्दिनी से कहा, "जाओ, विष्णु की माता जी को बुला लाओ।"

नन्दिनी समझ गई कि कुछ विशेष सूचना है जो पण्डित जी सबसे पूर्व अपनी पत्नी को देना चाहते हैं। अतः वह रामेश्वरीदेवी के आगार में उनको बुलाने चली गई।

रामेश्वरी कुमकुम के साथ बैठी उससे बातें कर रही थी। रामेश्वरी कह रही थी, "देखो बेटी! कभी कोई व्यक्ति अपनी सामर्थ्य तथा योग्यता से अधिक प्राप्त करना चाहता है तो उसकी स्थिति उस व्यक्ति के समान हो जाती है जो एक लम्बी खाई को लांघना चाहता है, परंतु उसके पास सामर्थ्य नहीं है। वह बीच में गिरेगा ही।"

कुमकुम ने कहा, "माता जी! मैं निष्काम भाव से अपने में योग्यता उत्पन्न कर रही हूं। इससे मुझे राज्य प्राप्त होता है अथवा भिक्षा के लिए कमण्डलु, यह मेरी चिन्ता का विषय नहीं है। यह परमात्मा के अधीन है। वही कर्मफल का देनेवाला है।"

इस प्रकार बातें हो रही थीं जब नन्दिनी वहां पहुंची। उसने रामेश्वरी से कहा, "गुरु जी बुला रहे हैं।"

"किसको?" कुमकुम ने पूछ लिया।

"माता जी को।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामेश्वरीदेवी उठकर बाहर जाने लगी तो कुमकुम ने पूछ लिया, "मैं साथ आंऊ क्या?"

नन्दिनी ने कह दिया, "मुझे विदित नहीं कि तुम्हें वहां आना चाहिये अथवा नहीं।"

रामेश्वरी ने एक क्षण विचारकर कहा, "आओ कुमकुम! मां-बेटी में कोई भेद-भाव नहीं हो सकता।"

तीनों उत्सुकता से बाहर बैठकगृह में पहुंचीं तो पण्डित जी ने हाथ में पकड़ा हुआ पत्र पढ़कर सुना दिया। नन्दिनी समाचार सुनकर उछल पड़ी। वह भागी-भागी पूजागृह में गई और वहां से चन्दन-पात्र, जिसमें चन्दन घिसा पड़ा था, उठा लाई। उसने पंडित जी को तिलक लगाना चाहा तो पंडित जी ने उसे रोकते हुए कहा, "यह क्या कर रही हो, नन्दिनी? मैंने अभी यह दायित्व स्वीकार नहीं किया।"

नन्दिनी अंगूठे पर चन्दन लगाये उनका मुख देखती रह गई। रामेश्वरी ने कह दिया, "परन्तु आप इसे अस्वीकार कैसे कर सकते हैं?"

पंडित जी ने कहा, "मैं महाराज से मिलकर उनसे सम्मति करने के उपरान्त ही यह पद स्वीकार करूंगा। कल ही महाराज तथा राजकुमार सहमत हुए हैं और राजकुमार की स्वीकृति मिलने पर आज महाराज ने यह घोषणा की है। मेरे विषय में महाराज ने संकेत तक नहीं किया था।"

"चर्चा तो अवश्य थी," नन्दिनी ने मुस्कराते हुए कहा, "यद्यपि आपको बताना आवश्यक नहीं समझा गया था। माता जी का कहना ठीक ही है जो महाराज ने ठीक समझा, उसे अस्वीकार नहीं किया जा सकता।"

अब रामेश्वरी ने पुनः कहा, "देखिये, अब आपका महाराज से मिलने जाने का समय हो चुका है। आप जाइये और महाराज को आशीर्वाद दीजिये तथा यह पद स्वीकार कीजिये। मैं समझती हूं कि ब्राह्मण का जन्म लोक-कल्याण के निमित्त ही होता है और तनिक भी लोक-कल्याण का अवसर प्राप्त हो तो हमें पीछे नहीं हटना चाहिये।"

"इसपर भी नन्दिनी का तिलक राजप्रासाद से लौटाने के उपरान्त ही स्वीकार करूंगा।"

पंडित जी राजप्रासाद को जाने के लिए तैयार होने अपने आगार में चले गये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस नई परिस्थिति से कल्याणी के मन में यह विचार उत्पन्न हुआ कि यह पंडित जी की सूझबूझ पर उनको पुरस्कार प्राप्त हो रहा है। अवश्य इन्होंने महाराज के सम्मुख कुछ ऐसी बातें कही होंगी, जैसे महाप्रभु के विषय में उन्होंने उसे कही हैं। उसे भी राजकुमार के प्रासाद में जाना था। अतः वह भी राजप्रासाद के लिए चल पड़ी।

आज पुनः दोनों साथ-साथ चले तो बात कल्याणी ने ही आरम्भ की। उसने कहा, गुरुदेव! जब से मंत्रि-पद के लिए आपको पत्र प्राप्त हुआ है, आप तभी से गम्भीर विचार में लीन हो गये हैं क्या मंत्रि-पद अत्यन्त कठिन कार्य है?''

''हां'', पंण्डित जी ने गम्भीर भाव में ही कहा, ''प्रायः क्षत्रिय-वर्ग के लोग हठधर्मी होते हैं। बाह्मण का कर्त्तव्य है कि वह उन्हें सन्मार्ग दिखाये। इसका प्ररिणाम यह होता है कि ब्राह्मण तथा क्षत्रिय में विरोध उत्पन्न हो जाता है। मैं अपना हित प्रदर्शन करनेवाले महाराज से विरोध का प्रदर्शन करना उचित नहीं मानता। यदि कभी ऐसा अवसर आया तो अत्यन्त कठिनाई उत्पन्न हो जायेगी। इसके कारण मैं अनिश्चित-मन हूं।''

''गुरुदेव! तब आप मंत्रि-पद छोड़-छाड़ पृथक् हो जाइयेगा। यदि यहां रहने में कठिनाई हो तो हरिद्वार चले जाइयेगा।''

पण्डित जी मुस्करा दिये, परन्तु उन्होंने कुछ कहा नहीं।

कल्याणी ने आगे कहा, ''और यह भी तो हो सकता है कि आपके कारण लोक-कल्याण होने लगे तो महाराज आपका विरोध ही न कर सकें!''

''ठीक है, परन्तु देखता कौन है कि करनेवाले के मन के क्या भाव हैं? अब तुम्हीं बताओ, महाप्रभु को राज्य-कार्य में हस्तक्षेप की क्या आवश्यकता है?''

''परन्तु गुरुदेव! राजकुमार के विवाह में रुचि लेना क्या राजनीति है?''

''हां। यदि राजा की पत्नी बौद्ध मतावलम्बी हो जाए तो राजा भी बौद्ध हो जाता है, और जब राजा बौद्ध होगा तो राज्य स्वयमेव बौद्ध हो जायेगा जैसे मगध का राज्य है। मगध का राज्य और अवन्ति-राज्य, दोनों राजा द्वारा शासित हैं। इसपर भी दोनों में अन्तर है। एक में पीले वस्त्रों को धारण करके राज्य को अंगूठा दिखाया जा सकता है और यह मगध में व्यापक रूप से हो रहा है। अवन्ति में ऐसा नहीं हो सकता। राजा भी धर्म का उल्लंघन करते हुए भयभीत रहता है।''

दोनों राजप्रासाद के भीतर पहुंचे तो दोनों का मार्ग भिन्न-भिन्न हो गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कल्याणी राजकुमार के प्रासाद में गई तो वहां बहुत-से लोग एकत्रित हो रहे थें। वे सब राजकुमार को उसके मंत्री बनने के उपलक्ष्य में बधाई देने आये थे। इनमें प्रायः ऐसे लोग थे जिन्हें राज्य कार्य में राजकुमार से कार्य पड़ने की सम्भावना हो सकती थी।

कल्याणी पीत वस्त्रों में थी। इस कारण सभी उपस्थित लोगों का ध्यान उसकी ओर चला गया। राजकुमार ने भी उसे देखा तो उसके समीप पहुंचकर पूछने लगा, "कोई सन्देश है?"

"जी!"

"तो आओ, भीतरी आगार में आ जाओ।"

भीतर पहुंचकर कल्याणी ने अपने चोगे में से पत्र निकालकर राजकुमार को देते हुए कहा, "महाप्रभु चाहते हैं कि आप यह पत्र मेरे चले जाने के उपरान्त पढ़ें।"

राजकुमार ने पत्र अपने उत्तरीय के नीचे रख लिया और पूछा, "कुमकुम के विषय में?"

"वह अभी भी आपके नाम की माला का जाप करती है, परन्तु उसका कहना है कि आप उसकी माता से विवाह के विषय में निर्णय करें।"

"देखो भगिनी! तुम्हारी चतुराई इसी बात में है कि तुम उसे माता-पिता की बाधा पार करने के लिए तत्पर करो। मैंने मंत्रि-पद इसीलिए स्वीकार किया है कि इससे मैं उनपर बल डाल सकूं जिससे वे मेरा उससे विवाह स्वीकार कर लें।"

"कुमार! मैं यत्न कर रही हूं और जब भी मुझे अवसर मिलता है मैं आपके रूप, पद और आपके उज्जवल भविष्य का चित्र उसके मन पर अंकित करने का यत्न करती रहती हूं।"

"ठीक है। अच्छा, अब तुम जा सकती हो। शुक्रवार के दिन मैं पुनः प्रतीक्षा करूंगा।"

राजप्रासाद से निकलकर कल्याणी विहार की ओर चल दी। मार्ग में वह विचार कर रही थी कि उसका जीवन कितना छलनामय है! वह आई थी पण्डित विश्वेश्वरनाथ से शिक्षा प्राप्त करने, और कार्य करने लगी है गुप्तचर का। इस समय उसे स्मरण हो आया कि पण्डित जी ने उसे महाप्रभु का कार्य करते रहने का आग्रह किया है। पण्डित जी का कहना था कि इससे उनको लाभ हो रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह विचार करने लगी कि उनको क्या और किस प्रकार लाभ हो सकता है? उसके पूर्ण विचार का निष्कर्ष यह निकला कि अगले दिन पण्डित जी से मिलकर पूछे कि किस प्रकार वह सत्य तथा धर्म का आश्रय लेते हुए वर्तमान जीवन को चला सकती है।

विहार में पहुंचकर नियमानुसार वह महाप्रभु के आगार में जा पहुंची। महाप्रभु के पास उस समय कुछ अन्य बौद्ध भिक्षु भी बैठे थे। महाप्रभु ने कल्याणी को देखा तो सभी को विदा करके एकान्त में उससे पूछने लगे, "कुमार से मिली हो?"

"हां प्रभु! आज विशेष बात यह है कि राजकुमार मंत्रि-मण्डल में सम्मिलित कर लिये गये हैं।"

"ओह! परन्तु क्यों?"

"भगवन्! यह मैं कैसे जान सकती हूं? मंत्रि-मण्डल का विस्तार हुआ है। दो नये मंत्री नियुक्त हुए हैं। एक राजकुमार राहुल तथा दूसरे पण्डित विश्वेश्वरनाथ।"

"ओह! तो पण्डित विश्वेश्वरनाथ भी मंत्रि बना लिए गये हैं?"

"हां प्रभु! मेरे सम्मुख ही उनको नियुक्ति-पत्र मिला था और उन्होंने पत्र पढ़कर अपनी पत्नी को सुनाया था। राजकुमार के विषय में मुझे उनके निवास-स्थान पर पहुंचकर विदित हुआ था। उनको बधाई देने के लिए कई लोग वहां पहुंचे हुए थे।"

महाप्रभु के मुख से निकल गया, "यह बहुत बुरा हुआ! हमारी योजना को यह विध्वंस कर देगा।"

"महाप्रभु! हमारी क्या योजना है?"

"मुझे नगर की यात्रा करनी पड़ेगी।"

"भगवन्! मुझसे यह कार्य नहीं हो सकेगा क्या?"

"नहीं। अब पत्र द्वारा समझने-समझाने की बात नहीं रही।"

कल्याणी चुपचाप बैठी रही। कुछ क्षण विचारकर महाप्रभु ने कहा, "अब तुम जाओ। कल प्रातःकाल राजप्रासाद जाने से पूर्व मुझसे मिल लेना।"

कल्याणी अपने अगार में चली गई।

सौमित्र मन में विचार कर रहा था कि यह पण्डित बहुत ही चतुर व्यक्ति है। किसी-न-किसी प्रकार यह बौद्ध समिति की योजना का ज्ञान प्राप्त कर गया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है और उसका विरोध कर रहा है। राजकुमार पाटलिपुत्र की यात्रा के लिए तैयार था और अब मंत्री बन जाने के उपरान्त उसके पांव में बेड़ियां पड़ गई हैं। अब वह अवन्ति छोड़कर जा नहीं सकेगा।

इस रात्रि महाप्रभु भली-भांति सो भी नहीं सके। उन्हें कुछ ऐसा प्रतीत होने लगा था कि उनका प्रयास विफल हो रहा है।

प्रयास क्या था?

महाप्रभु चाहते थे कि जिस प्रकार मगध-राज्य में राज्याश्रय से बौद्ध धर्म का विस्तार हुआ है, उसी प्रकार अवन्ति में भी हो। जिस प्रकार मगध में राजकोष का मुख्य अंश बौद्ध विहारों को स्थापित करने तथा उनके संचालन इत्यादि में व्यय होता था, इसी प्रकार अवन्ति में हो। अवन्ति-राज्य में बौद्ध सम्प्रदाय का वह सर्वेसर्वा था, अतः अवन्ति-राज्य पर बौद्ध प्रभाव हो जाने से अवन्ति का महाराज उसकी मुठ्ठी में होगा।

कभी-कभी उसके मन में विचार उठता था कि सारा प्रयास किस निमित कर रहा है? बौद्ध जीवन-मीमांसा यह है कि जगत् शून्य से उत्पन्न हुआ है और शून्य में अन्ततः विलीन हो जायेगा। तो वह इस शून्य से उत्पन्न जगत् को शून्य में विलीन होने से रोकने का प्रयास किस निमित कर रहा है? क्या उसका यह प्रयास निरर्थक नहीं?

परन्तु प्रभुत्व प्राप्त करने की भावना उसे अपने कार्य की ओर अग्रसर कर रही थी।

पण्डित विश्वेश्वरनाथ जब महाराज के सम्मुख उपस्थित हुए तो उन्होंने राज्य के सचिव का पत्र उनके सम्मुख रख दिया। महाराज ने मुस्कराते हुए कहा, ''यह हमारे कहने से ही आपको भेजा गया था। हम इस विषय में जानते हैं।''

पण्डित जी ने कहा, ''परन्तु महाराज! मैं आपके पुरोहित-पद से च्युत कर राज्य का सेवक बनाया जा रहा हूं और वह भी बिना मुझसे सम्मति लिये।''

''तो अब हम सम्मति ले लेते हैं।''

''महाराज! मैं अपने पद में गिरावट पसन्द नहीं करता।''

''परन्तु पण्डित जी! मैंने तो आपके उपदेश के अनुसार ही आचरण किया है। आप कई बार कह चुके हैं कि पद की श्रेष्ठता का अनुमान इस बात से नहीं होना चाहिये कि वह नाम से कितना उच्च है, प्रत्युत इस बात से होना चाहिये कि उससे लोक-कल्याण कितना होता है।...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आप ऐसा ही हमें कई बार बताते रहे हैं। इसी के आधार पर आप हमें प्रेरणा देते रहे हैं कि हम महाराज-पद का त्याग न करें। इसी बात का अनुसरण करके हमने आपको एक व्यक्ति के पुरोहित के पद से हटाकर पूर्ण राज्य का पुरोहित बनाना चाहा है।"

"परन्तु महाराज! मेरी स्थिति में अन्तर हो जायेगा। मैं एक अवैतनिक कल्याणकर्ता रहने के स्थान अब राज्य का सेवक बन जाऊंगा। जैसे एक सेवक के बन्धन होते है, वैसे ही राज्य के मंत्री पर भी बन्धन होंगे।"

"हां, कुछ बन्धन तो हैं ही जिनकी परिधि में मंत्री को रहना पड़ता है। कदाचित् एक सामान्य सेवक से मंत्री पर बन्धन अधिक ही होता है, परन्तु भगवन्! वे बन्धन वेतन के साथ सम्बन्ध नहीं रखते, न ही मंत्री के व्यक्तित्व के साथ। वे तो उसके कल्याणकारी होने से सम्बन्धित हैं।"

पण्डित विश्वेश्वरनाथ अपनी ही युक्तियों को महाराज के मुख से सुन मुस्कराकर बोला, "महाराज! जो उपदेश मैं आपको देता रहा हूं, वह आपके जन्म, आपकी शिक्षा और आपके कर्म, जिसके लिए आप इस संसार में आये हैं, के अनुरूप था। आप एक शासक के पुत्र हैं और मैं एक निर्धन ब्राह्मण का पुत्र हूं। दोनों के जन्म, जाति और कर्मों के अन्तर है। इस कारण वे बातें जो आपके लिए उपयुक्त हैं, मेरे लिए उपयुक्त नहीं भी हो सकतीं।...

"महाराज! मैं ब्राह्मण हूं तथा निर्भीकता से किसी विषय पर अपनी सम्मति देने का स्वभाव रखता हूं, जबकि आपका कर्तव्य है कि आप अधिक-से-अधिक लोगों की सुविधा का ध्यान रखें। अतः मैं समझता हूं कि मैं इस राज्य-कार्य के योग्य नहीं हूं। मैं सत्य-असत्य के विषय में स्पष्ट शब्दों में अपना मत प्रकट करता हूं। इससे कोई प्रसन्न होता है अथवा रुष्ट होता है, मुझे इसकी चिन्ता नहीं रहती। इसी कारण मुझे यह पद स्वीकार करने में संकोच हो रहा है।"

"देखिये विद्वतवर! हमने इस प्रस्ताव को रखते समय इन सब बातों पर विचार किया है और इस परिणाम पर पहुंचे हैं कि अपने मंत्रि-मण्डल में चाटुकारी न करनेवाला कम-से-कम एक मंत्री तो हो जो हमें वास्तविकता का दर्शन कराता रहे। इस प्रकार आपका यह गुण मंत्रि-मण्डल के लाभ में ही होगा। साथ ही हम यह भी जानते हैं कि आप अपनी निर्भीक सम्मति देकर उसके स्वीकृत न होने पर रुष्ट नहीं होंगे।...

"इस पद पर आपका कोई वेतन नहीं होगा। राज्य की ओर से आपको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ प्राप्त नहीं होगा। हमारे पुरोहित होने के नाते आपको दक्षिणा मिलती ही रहेगी। वह आपसे कोई छीन नहीं सकता। अतः आपका निर्भीकतापूर्वक सत्य-असत्य तथा हित-अहित में भेदभाव करना आपके लिए कुछ हानि-लाभ की बात नहीं होगी।...

"जहां तक कार्य का प्रश्न है, हमने आप पर राज्य का कार्यभार न डालने का ही निश्चय किया है। आप केवल मंत्री होंगे, अर्थात् परामर्श दाता। आप राजा के पुरोहित होने के साथ-साथ राज्य के पुरोहित होंगे। आप प्रत्येक विषय पर ऐसे ही मत दे सकेंगे जिस प्रकार हमें देते हैं।"

पण्डित विश्वेश्वरनाथ को ऐसा प्रतीत हुआ कि महाराज मंत्रि-मण्डल में अपने विचारों को युक्तियुक्त ढंग से रखने के लिए तथा उनका विरोध सफल न हो, इस कारण अपना पक्ष प्रबल करने में उसकी सहायता मांग रहे हैं। अतः वह अब इन्कार नहीं कर सके। उन्होंने अपनी स्वीकृति लिखित रूप में अपने निवास पर जाकर भेजने का वचन दे दिया।

पण्डित जी अपने निवास पर पहुंचे तो उनकी पत्नी रामेश्वरीदेवी तथा अन्य प्राणी उत्सुकता से उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। पण्डित जी बैठकगृह में प्रविष्ट हुए तो रामेश्वरी ने पूछ लिया, "क्या कर आये हैं?"

पण्डित जी ने कहा, "मैं मंत्रि-पद स्वीकार कर आया हूं।"

"ईश्वर का धन्यवाद है कि उसने आपको सुमति दी है।"

पण्डित जी ने मुस्कराते हुए कहा, "यही तो देखना है कि यह ईश्वरीय कृपा का परिणाम है अथवा मेरे किसी जन्म के कर्मफल का बन्धन है। इतना मैं स्पष्ट कहकर आया हूं कि मेरा जीवन पूर्ववत् चलता रहेगा। यह पाठशाला तथा यह निवास पूर्ववत् रहेगा। निवास पर प्रबन्ध तुम्हारा ही रहेगा।"

पण्डित जी की स्वीकृति राज्य के पास पहुंची तो सचिव ने तुरन्त पण्डित जी की सुरक्षा के लिए दो सैनिक तथा एक प्रतिहार उनके राजकीय कार्यों के लिए भेज दिये। निवास के बाहर सैनिक तैनात कर दिये गये तथा प्रतिहार निवास के द्वार पर बैठ गया। आठ प्रहर में चार बार सैनिक तथा प्रतिहार बदलने लगे।

पण्डित जी ने अपने कार्यक्रम में थोड़ा-सा परिवर्तन कर दिया। प्रातः पूजा के उपरान्त दो घड़ी-भर का समय प्रजा से भेंट के लिए नियत कर दिया। सप्ताह में दो बार प्रातः मंत्रि-मण्डल की बैठक होती थी। सप्ताह में इन दो दिनों के अतिरिक्त प्रतिदिन दो घड़ी-भर प्रजा से वह भेंट करने लगे। इसके उपरान्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठशाला का कार्य चलता था।

पाठशाला के कार्य में सहायता के लिए उन्होंने रामी को नियुक्त कर लिया। वह प्रायः पंडित जी के निवास पर आने लगी।

सोमवार तथा बृहस्पतिवार के दिन मंत्रि-मंडल की बैठक होती थी। इसके अतिरिक्त कोई आवश्यक बात होती हो कभी भी विशेष बैठक बुला ली जाती थी।

राजकुमार तथा पंडित विश्वेश्वरनाथ के मंत्रि-मण्डल में सम्मिलित हो जाने पर मंत्रियों के कार्यों में भी परिवर्तन किया गया। पंडित जी धर्म-व्यवस्था के कार्य पर नियुक्त हुए। उनका कार्य यह देखना था कि प्रजा में तथा राज्य के कर्मचारियों में धर्म का पालन भली-भांति हो रहा है अथवा नहीं। साथ ही, जहां कहीं पालन-योग्य धर्म में स्पष्टीकरण की आवश्यकता होती थी, पंडित जी उसपर अपने विचार रखते थे तथा उनके अनुसार व्यवस्था की जाती थी। दूसरे शब्दों में, वह प्राचीन स्मृतियों में धर्म-व्यवस्था की व्याख्या करते थे और उनके पालन किये जाने का निरीक्षण करते थे।

अब न्यायधीश केवल व्यवस्था देते थे और सेनाध्यक्ष उस व्यवस्था का पालन करता था। व्यवस्था का निश्चय विश्वेश्वरनाथ करते थे।

राजकुमार को राज्य की सीमाओं की सुरक्षा का प्रबन्ध सौंपा गया। राज्य की भीतरी सुरक्षा का प्रबन्ध सेनाध्यक्ष के अधीन ही था। साथ ही, नागरिकों की प्रत्येक प्रकार की सुरक्षा का दायित्व भी उसको सौंपा गया।

यह प्रबन्ध अभी पूर्ण ही हो रहा था कि महाप्रभु सौमित्र पंडित विश्वेश्वरनाथ से भेंट करने आ पहुंचे। महाप्रभु को कल्याणी ने बताया था कि पंडित जी प्रति प्रातः प्रजा से दो घड़ी-भर मिलते हैं। जो उनसे भेंट करना चाहते हैं, वे अपना नाम-धाम तथा कार्य लिखकर उनके पास भिजवा देते हैं। पंडित जी भेंट के इच्छुक व्यक्तियों की याचिका देखकर, जिनका कार्य आवश्यक समझते हैं, उनसे तुरन्त भेंट करते हैं तथा अन्य लोगों को भी मध्याह्न के समय मिलते हैं। इस सूचना पर महाप्रभु एक प्रातः उनके द्वार पर जा पहुंचा। उसने अपना नाम लिखा तथा कार्य लिखा—बौद्ध सम्प्रदाय के विषय में कुछ आवश्यक सुविधाओं के सम्बन्ध में।

पंडित जी ने महाप्रभु को भीतर बुलवाया तथा आदर-सहित बैठा कर पूछ लिया, "कहिये भगवन्! मैं क्या सेवा कर सकता हूं?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं आपको अपने सम्प्रदाय की एक प्रतिलिपि देना चाहता हूं। साथ ही आपसे आग्रह करना चाहता हूं कि उस आचार-संहिता के अनुसार ही आप धर्म-व्यवस्था दें। बौद्ध संघ इसके लिए आपका अत्यन्त आभारी होगा।" इतना कहकर महाप्रभु ने आचार-संहिता की एक प्रतिलिपि पंडित जी के सम्मुख रख दी।

पंडित जी ने प्रतिलिपि लेकर कुछ-एक बातों को पढ़ा तथा कहा, "भगवन्! मैं इसे मंत्रि-मण्डल में उपस्थित कर दूंगा। मंत्रि-मण्डल इस पर विचार करेगा, तदनन्तर हम आपको इसके परिणामों की सूचना भेज देंगे।"

"आप इनके विषय में क्या समझते है?"

"इनमें से कुछ-एक बातें व्यक्तिगत हैं। हम, मेरा अभिप्राय है कि मंत्रि-मण्डल उनमें हस्तक्षेप नहीं करेगा। जो बातें समष्टि से संबन्ध रखती हैं, वे राज्यनियम के अन्तर्गत आयेंगी। कहां तक और कितनी आयेंगी, इस विषय में जो निर्णय होगा, आपको लिखकर सूचित कर देंगे।"

"इस विषय में एक अन्य निवेदन करना चाहता हूं।"

"आज्ञा कीजिये।"

"हमारे विहार की एक भिक्षुणी कल्याणी आपके विद्यालय में विद्याध्ययन के लिए आती है। वह हमारी इस आचार-संहिता का विरोध कर रही है। आप उसे अपने गृह में संरक्षण दे रहे हैं।"

"तो ऐसी भिक्षुणी के लिए आपकी आचार-संहिता क्या उपाय बताती है?"

"हम उसे विहार की न्यायपीठ के सम्मुख उपस्थित कर देते है।"

"आप यह कर सकते हैं। परन्तु यदि वह भिक्षुणी, आपके विचारानुसार अपराधिनी, यदि यह समझे कि उसके साथ अन्याय किया जा रहा है, तो राज्य के न्यायालय में याचिका उपस्थित कर सकती है। उसकी याचिका पर न्यायधीश निर्णय देगा कि आपकी न्याय-पीठिका ने उसको जो दण्ड दिया है, उचित है अथवा अनुचित है। उसका निर्णय सर्वमान्य होगा।" इस विषय में मंत्रि-मंडल भी कुछ नहीं कर सकेगा।"

"हम चाहते हैं कि आपके मंत्रि-मण्डल को अपने राज्य के विधि-विधान में हमारे सम्प्रदाय को विधि-विधान स्वीकार करना चाहिये।"

"यह कैसे सम्भव है? यदि आपके विहार की आचार-संहिता को राज्य की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आचार-संहिता में स्थान दिया गया तो फिर अन्य सम्प्रदायों की आचार-संहिता भी स्वीकार करनी पड़ेगी। यह सम्भव नहीं। हां, आपकी आचार-संहिता की ऐसी बातें जिन्हें उपयुक्त समझा जाता है, तथा जिनका अन्य मतों से विरोध नहीं, उन्हें स्वीकार करके प्रजा में प्रचारित किया जा सकता है।''

''परन्तु पंडित जी! मगध-राज्य में ऐसा ही है जैसा मैं निवेदन कर रहा हूं। विहार में रहनेवालों के लिए विहार के अपने नियम-उपनियम हैं और विहारों में उनके अनुसार आचरण होता है।''

''यह अवन्ति में नहीं हो सकेगा।''

महाप्रभु यह जानते थे कि पंडित जी इसे स्वीकार नहीं करेंगे। वह इसे एक बहाना बनाकर राज्य के बौद्ध उपासकों को राज्य के विरुद्ध करना चाहता था। अतः वह पंडित जी से कहकर कि इसका लिखित उत्तर हमें प्राप्त होना चाहिये, लौट गया।

प्रजा से भेंट के समय के उपरान्त पंडित विश्वेश्वरनाथ पाठशाला में चले आये। वहां कल्याणी अभी भी कार्य में लीन थी। पंडित जी उसे कार्य को देखने आये तो पूछने लगे, ''कल्याणी! महाप्रभु से लड़ पड़ी हो क्या?''

''नहीं गुरु जी! मैं तो उनसे नहीं लड़ी, प्रत्युत वह मुझसे लड़ पड़े हैं।''

''क्यों?''

''कल शुक्रवार था और मैं राजकुमार से भेंट करने गयी थी। राजकुमार ने पाटलिपुत्र जाने का कार्यक्रम रद्द कर दिया है। मैंने महाप्रभु से राजकुमार का निर्णय बताया तो महाप्रभु कहने लगे कि मैं अपना कार्य भली-भांति नहीं कर रही और वह मुझसे रुष्ट हो गये।''

''राजकुमार ने पाटलिपुत्र जाने से इन्कार क्यों किया है?''

''कुछ दिन पूर्व मैं राजकुमार के पास कुमकुम का एक पत्र लेकर गई थी। इस पत्र में कुमकुम ने राजकुमार को मंत्री बनने के उपलक्ष्य में बधाई दी थी। कुमकुम ने वह पत्र मेरे सम्मुख ही लिखा था। पत्र के ऊपर उसने सम्बोधन किया था, 'परमप्रिय राजकुमार!' राजकुमार इस सम्बोधन पर अति प्रसन्न हुए थे। दह कुमकुम का अपनी ओर झुकाव देखकर सन्तुष्ट हुए तो उन्होंने मुझे इसके लिए पुरस्कृत किया था। अगले दिन उन्होंने मुझे नये पीले कौशेय वस्त्र भेंट में दिये थे।...

''विहार के नियमानुसार मैंने वे वस्त्र महाप्रभु के पास जमा करा दिये थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगली बार जब मैं राजकुमार से भेंट करने गई तो मैंने पुराने फटे वस्त्र ही पहने हुए थे। राजकुमार के पूछने पर जब मैंने बताया कि वे वस्त्र विहार में जमा करा दिये हैं तो राजकुमार ने महाप्रभु को पत्र लिखा कि वह वस्त्र मुझे लौटा दिये जायें। इस पर महाप्रभु मुझसे रुष्ट हो गये।"

"पंडित जी ने कहा, "महाप्रभु तुम पर अनुशासन की कार्रवाई करना चाहते हैं।"

"मैने कभी भी अनुशासन भंग नहीं किया।"

"परन्तु कल्याणी! वह तुम पर यदि झूठा आरोप लगाकर तुम्हें किसी प्रकार का दण्ड देना चाहें तो क्या करोगी?"

"मैं विहार से भागने का यत्न करूंगी।"

"भागकर कहां जाओगी?"

"मैंने यहां माता जी से बात की है। वह कहती हैं कि राज्य के शरणार्थी-गृह में मेरे निवास का प्रबन्ध हो सकेगा।"

"यह ठीक है। मैं प्रयत्न करूंगा कि यदि तुमपर अनुशासनिक कार्रवाई की जाय और तुम्हें कुछ दण्ड मिले तो राज्य के न्यायालय में उसके विरुद्ध याचिका कर दी जाय। परन्तु मैं यह सम्मति दूंगा कि अनुशासन लगने से पूर्व ही विहार छोड़ दो। यह अधिक सुरक्षित होगा।"

: 6 :

उस सांयकाल कल्याणी विहार में गई तो अगले दिन नहीं आ सकी। पंडित जी समझ गये कि उसे विहार में रोक लिया गया है। पंडित जी ने अपने गुप्तचरों से पता करने के लिए कहा। सूचना मिली कि कल्याणी विहार में बन्दी बना ली गई है। उसके विरुद्ध अनुशासन भंग करने का आरोप है।

इसपर पंडित जी ने सेनाध्यक्ष को, जो राज्य के भीतर शान्ति स्थापित करने के लिए नियुक्त था, सूचित कर दिया।

सेनाध्यक्ष ने न्यायालय में एक याचिका प्रस्तुत कर दी कि बौद्ध विहार में एक स्त्री, अन्यायपूर्ण ढंग से बन्दी बनाकर रखी गई है; विहार के अधिकारियों को आदेश दिया जाय कि उसे न्यायालय में उपस्थित करें जिससे न्यायालय को विश्वास हो सके कि उसके साथ अन्याय नहीं किया गया।

सेनाध्यक्ष ने इसके साथ ही यह याचिका की कि इस बात का निर्णय होना चाहिये कि किसी संस्था अथवा स्थान के नियम किसी व्यक्ति के मौलिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिकारों का हनन कर सकते हैं अथवा नहीं?

इस पर न्यायालय ने यह आदेश कर दिया कि कल्याणी को एक प्रहर के भीतर उपस्थित किया जाय अन्यथा राज्य के सैनिक विहार में प्रवेश कर कल्याणी को जीवित अथवा मृत, जैसी भी वह मिलेगी ले जायेंगे।

न्यायधीश का आदेश सुनकर महाप्रभु भयभीत हो गये। उन्हें महाप्रभु नारायण का बन्दी बनाया जाना स्मरण हो आया। विवश होकर उन्होंने कल्याणी को न्यायालय में उपस्थित कर दिया।

जब कल्याणी न्यायालय को चली तो महाप्रभु भी उसके साथ चल पड़े। उन्हें देख बहुत-से बौद्ध उपासक तथा प्रजागण भी न्यायालय में आ पहुंचे। वे यह जानना चाहते थे कि सैनिकों का विहार में प्रवेश तथा बौद्ध भिक्षुणी को बन्दी बनाना न्यायधीश उचित ठहराता है अथवा नहीं?

जब कल्याणी न्यायधीश के सम्मुख उपस्थित हुई तो न्यायालय का भवन प्रजागण से खचाखच भरा हुआ था। न्यायाधीश ने उससे पूछा, "देवी! तुम्हारा नाम क्या है?"

"कल्याणी।"

"तुमने भिक्षुणी के वस्त्र क्यों धारण किये हैं?"

"मैं आज से सात-आठ वर्ष पूर्व भिक्षुणी बनी थी और विहार में रहती थी। पीछे मुझे ज्ञात हुआ कि विहार बौद्ध संघ का एक केन्द्र तो है, परन्तु विहारवासियों का आचरण महात्मा बुद्ध के कहे-अनुसार नहीं है। इस कारण मैंने विहार को छोड़ने तथा पंडित विश्वेश्वरनाथ जी से विद्याध्ययन करने का निश्चय कर लिया। जब मैंने महाप्रभु सौमित्र से अपना निश्चय बताया तो महाप्रभु का कथन था कि विद्याध्ययन के लिए विहार को छोड़ने की आवश्यकता नहीं है; मैं विहार में रह सकती हूं और नित्य पंडित जी के निवास पर जाकर शिक्षा प्राप्त कर सकती हूं। इस प्रकार पांच वर्षों से मैं नित्य पंडित जी से अध्ययन के लिए उनके निवास पर जाती हूं। इस पर भी मैं रहती विहार में ही थी।...

"कुछ सप्ताह हुए मुझे महाप्रभु ने राजकुमार से मिलने तथा उनका कार्य करने का आदेश दिया। तब से निरन्तर सप्ताह में दो बार मैं राजकुमार से भेंट करने जाती रही हूं तथा राजकुमार जो कार्य बताते थे, वह करती रही हूं।...

"महाप्रभु को सन्देह हो गया कि मैं राजकुमार का कार्य भली-भांति नहीं कर रही। इसपर उन्होंने मुझे विहार से बाहर निकलने से मना कर दिया। मैंने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब महाप्रभु से कहा कि मैंने कार्य में कोई ढील नहीं की तथा मुझे बाहर न जाने देना अनुचित है और मैं विद्याध्ययन के लिए जाना चाहती हूं, तो महाप्रभु ने मुझे विहार के एक आगार में बन्दी करने का आदेश दे दिया। मैं पूरा एक दिन तथा चार प्रहर उस आगार में बन्द रही। आज मध्याह्नोपरान्त मुझे उस आगार से निकालकर यहां लाया गया है।''

अब न्यायधीश ने पूछा, ''तुम राजकुमार का क्या काम किया करती थीं?''

''वह कार्य किसी भी प्रकार से राज्य-नियम के विपरीत नहीं था। इस कारण मैं समझती हूं कि वह यहां विचारणीय नहीं है। यह राजकुमार का कार्य था। अतः यदि न्यायधीश आवश्यक समझते हैं तो यह उनसे पूछ सकते हैं।''

''परन्तु तुम जब विहार के नियमों का पालन नहीं करती थीं तो वहां रहती क्यों थीं?''

कल्याणी का उत्तर था, ''भिक्षुओं के अतिरिक्त भी कुछ सेवक विहार में रहते हैं। उनपर भी विहार के नियम लागू नहीं होते। मैं स्वयं को एक सेवक मानकर वहां रहती थी। विहार के महाप्रभु की इसमें स्वीकृति थी।''

''देवी! हमें यह सूचना मिली है कि महाप्रभु के साथ तुम्हारा यौन सम्बन्ध है। क्या यह सत्य है?''

''मैं इसका उत्तर नहीं दे सकती। कारण यह कि यदि ऐसी कोई बात है तो यह मेरा और महाप्रभु का निजी व्यवहार है। इसमें कोई विवशता नहीं थी।

न्यायधीश ने निजी प्रश्न छोड़कर सीधा पूछ लिया, ''तुम यहां से विहार को लौटना चाहती हो?''

''नहीं।''

''क्यों?''

''अकारण मेरे स्वतंत्र विचरण के अधिकार को छीनकर मुझे बन्दी बना लिया गया था। मैंने अपनी जानकारी में कोई अपराध नहीं किया था।''

अब न्यायधीश ने महाप्रभु से पूछ लिया, ''क्या आपको इस स्त्री की इच्छा के विपरीत कुछ कहना है?''

महाप्रभु कह नहीं सके कि वह उसे विहार में रहने के लिए विवश कर सकते हैं। अतः न्यायधीश ने कल्याणी को स्वतंत्र घोषित कर दिया।

स्वतंत्र किये जाने पर जब कल्याणी न्यायालय से बाहर निकली तो महाप्रभु उसके साथ ही बाहर निकल आये। सब उपस्थित जनसमुदाय महाप्रभु को उसके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पीछे-पीछे जाते देखकर हंसने लगे।

कल्याणी नगर की ओर घूमी तो महाप्रभु उस ओर धूम पड़े। इस पर कल्याणी मार्ग में ही खड़ी हो गई और महाप्रभु से पूछने लगी, "आप किस ओर जा रहे हैं?"

"जिस ओर तुम जा रही हो।"

"परन्तु क्यों?"

"इस कारण कि यदि तुम्हें कहीं आश्रय न मिले तो मैं तुम्हें पुनः विहार में चलने का निमंत्रण दे सकूं।"

"भगवन्! आप अपने विहार में जाइये और यदि आपने मुझे किसी प्रकार भी विवश किया तो तनिक पीछे देख लीजिये।"

महाप्रभु ने घूमकर देखा। दो सुभट्ट क्लयाणी की सुरक्षा के लिए उसके पीछे-पीछे आ रहे थे। इसपर भी महाप्रभु भयभीत नहीं हुए और बोले, "भगिनी! मैं विवश नहीं कर रहा। मैं तो निमंत्रण दे रहा हूं। मैं समझता हूं कि तुम्हें कहीं आश्रय प्राप्त नहीं हो सकेगा। यह हमारे संघ की ही विशेषता है कि हम सबको आश्रय देते हैं।"

कल्याणी बिना कुछ बोले पुनः चलने लगी। वह सीधी सेठ युगलकिशोर के निवास-स्थान पर जा पहुंची।

सेठ का निवास-स्थान एक बहुत ही विशाल भवन था। निवास के बाहर एक संरक्षक नियुक्त था। कल्याणी के पूछने पर संरक्षक ने बताया कि सेठ जी भीतर नहीं हैं। हां, सेठ की पत्नी मन्दाकिनी देवी हैं। इस पर कल्याणी भीतर प्रविष्ट हो गई। महाप्रभु भी भीतर चले गये। सेठ जी के निवास पर दोनों बिना रोक-टोक पहले भी जाते थे और संरक्षक को यह विदित था। अतः उसने उन्हें रोका नहीं। दोनों राजकीय सुभट्ट बाहर ठहर गये।

गृह के बैठकगृह में महाप्रभु जी विराजमान हुए। कल्याणी गृह सेविका के साथ मन्दाकिनी के आगार में चली गई।

मन्दाकिनी ने कल्याणी का स्वागत किया और पूछा, "कब मुक्त हुई हो?"

"न्यायालय से सीधी इस ओर ही आ रही हूं।"

"पंडित जी के पास पाठशाला में नहीं गई? वहां माता जी तुम्हारी प्रतीक्षा में बैठी हैं।"

"मैं अपने इस झमेले में गुरु जी का सम्बन्ध प्रकट नहीं करना चाहती थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब वह मंत्रि-पद पर हैं। इस कारण व्यर्थ में उनकी निन्दा हो सकती है। कदाचित् महाप्रभु इसी कारण मेरे पीछे-पीछे आये हैं और इस समय बैठकगृह में विराजमान हैं।"

"परन्तु देवी! यहां भी तुम सेठ जी की अनुमति से ही रह सकोगी। मैं तुम्हारे यहां आने पर प्रसन्न हूं, परन्तु सेठ जी के अवन्ति राज्य से बाहर विशेषतया मगध-राज्य में कई नगरों में व्यापारिक सम्बन्ध हैं। इस कारण बौद्ध संघ का रोष वह सहन कर सकेंगे अथवा नहीं, कह नहीं सकती।"

"तो मैं जाऊं?" कल्याणी ने निराश हो पूछा।

"कहां जाओगी?"

"मैं राजकुमार के पास जाना चाहूंगी। यदि वह भी मुझे आश्रय न दे सके तो क्षिप्रा में डूब मरूंगी। परन्तु अब मैं विहार में पुनः नही जाऊंगी।"

"देखो भगिनी! तुम्हें आत्म-हत्या करने की आवश्यकता नहीं है। अभी तुम यहीं विश्राम करो। सेठ जी आयेंगे तो हम विचार कर लेंगे। उज्जयिनी बहुत बड़ा नगर है। यहां कहीं-न-कहीं प्रबन्ध हो ही सकेगा।

"तो आप महाप्रभु से मिलेंगी? वह बाहर बैठकगृह में बैठे हैं।"

"हां परन्तु तुम यही विश्राम करो। मैं उनसे मिलकर आती हूं।"

मन्दाकिनी बाहर बैठकगृह में आई। महाप्रभु वहां विराजमान थे। मन्दाकिनी ने हाथ जोड़ प्रणाम किया तो महाप्रभु ने आशीर्वाद दिया। मन्दाकिनी ने पूछ लिया, "महाप्रभु! आज इस समय कैसे कष्ट किया है?"

"देवी! विहार की एक विद्रोही भिक्षुणी इस भवन में आश्रय के लिए आई है। मैं देखना चाहता था कि एक बौद्ध उपासिका बौद्ध विहार से विद्रोह करने वाली भिक्षुणी को आश्रय देती है अथवा नहीं।"

"परन्तु महाप्रभु! क्या बौद्ध उपासिका भी संघ का एक अंग है? क्या वह किसी अन्य स्थान पर दान-दक्षिणा अथवा किसी अनाश्रित को आश्रय नहीं दे सकती?"

"दे सकती है, परन्तु बौद्ध विहार के अध्यक्ष की स्वीकृति प्राप्त करके। देवी! महाराज अशोक भी बौद्ध संघ की अनुमति प्राप्त किये बिना बौद्ध धर्म-विरोध को आश्रय नहीं दे सकते।"

"परन्तु भिक्षुणी बौद्ध धर्म की विरोधी नहीं है। उसने केवल विहार से विद्रोह किया है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"दोनों में कोई अन्तर नहीं है।"

"तो भगवन् सुनिये! जहां तक अतिथि का प्रश्न है, इसका निर्णय घर के स्वामी करेंगे। परन्तु अपने विषय में मैं यह कह सकती हूं कि मैं आपके धर्म की उपासिका नहीं रहूंगी।"

"मेरे धर्म से क्या अभिप्राय है?" महाप्रभु ने पूछा।

"आप बौद्ध संघ द्वारा नियुक्त यहां के विहार के अध्यक्ष हैं। मैं आपके द्वारा संचालित विधि के बन्धन से स्वयं को मुक्त समझती हूं। मैं बौद्ध धर्म और बौद्ध जीवन-मीमांसा को तो मानती हूं, परन्तु बौद्ध संघ के अनुशासन से स्वयं को स्वतन्त्रत कर रही हूं।"

मन्दाकिनी का यह कथन महाप्रभु समझ नहीं सके। वह स्वयं बौद्ध धर्म और बौद्ध संघ में भेद नहीं मानते थे। मन्दाकिनी ने उनके सम्मुख एक नया विचार उपस्थित किया था। वह यह कि बौद्ध धर्म तथा बौद्ध संघ दोनों पृथक्-पृथक् हैं, अतः वह इस पृथकता को समझने के लिए मन्दाकिनी का मुख देखने लगे।

मन्दाकिनी ने महाप्रभु को अपने मुख पर देखते पा कह दिया, "महाप्रभु! बौद्ध संघ एक संस्था है। इस संस्था के अपने नियम-उपनियम हैं। परन्तु बौद्ध धर्म इन नियमों-उपनियमों से हटकर एक जीवन-मीमांसा है। वह जीवन-मीमांसा मुझे पसन्द है। उस जीवन मीमांसा को स्वीकार करने से मुझे कौन रोक सकता है? मैं सत्य कथन करती हूं, मैं मन से तथा शरीर से शुद्ध एवं पवित्र रहती हूं! मैं पर-वस्तु पर चोर दृष्टि नहीं रखती। मैं सबके साथ सम-व्यवहार रखती हूं। परन्तु बौद्ध संघ तथा विहार के नियम मैं स्वीकार नहीं कर सकती। किसी को संरक्षण देने, किसी की सहायता करने तथा कहीं भी स्वतन्त्रतापूर्वक विचरने का अधिकार मेरा निजी है। यदि विहार इसमें हस्तक्षेप करेगा तो मैं विहार की उपासिका नहीं रहना चाहती।"

महाप्रभु विचार करने लगे कि मन्दाकिनी के इस कथन का प्रत्युत्तर किस प्रकार दें। कुछ विचारक उन्होंने कहा, "मैं सेठ जी की प्रतीक्षा करना चाहता हूं।"

"आप विराजिये। यह गृह भी सेठ जी का ही है। वह आते होंगे। तब तक मैं आपके लिए जलपान भेजती हूं।"

इतना करके मन्दाकिनी उठकर बैठकगृह से बाहर को चली गई।

महाप्रभु को ऐसा प्रतीत हुआ कि उज्जयिनी में इस सब विद्रोह का मूल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पण्डित विश्वेश्वरनाथ है। इन बौद्ध भिक्षुओं तथा उपासकों का मस्तिष्क उसने ही बिगाड़ा है। अतः सबसे पहले उससे ही निपटना चाहिये।

इस समय गृह सेविका उनके लिए दूध तथा मिष्ठान लेकर आ गई। सेविका ने दूध इत्यादि महाप्रभु के सम्मुख रखा और चली गई। परन्तु महाप्रभु के मन में एकाएक ग्लानि उत्पन्न हो गई और वह बिना कुछ ग्रहण किये उठा और बैठकगृह से बाहर निकल गया।

अभी वह निवास-स्थान के द्वार पर ही पहुंचा था कि सेठ युगल किशोर आ पहुंचे। महाप्रभु सौमित्र ने सेठ जी को देखा तो जाते-जाते रुक गये और सेठ जी को आशीर्वाद देकर बोले, "मैं आपकी ही प्रतीक्षा कर रहा था।"

"तो भगवन् मैं आ गया हूं। आइये, कुछ जलपान लिया प्रतीत नहीं होता। आपके ओष्ठ शुष्क प्रतीत हो रहे है।"

महाप्रभु ने सेठ जी के इस प्रश्न का उत्तर नहीं दिया। वह चुप-चाप सेठ ही के पीछे-पीछे बैठकगृह की और चल पड़े। सेठ जी ने महाप्रभु को बैठक गृह में आदर-सहित बैठाया। वहां चौकी पर एक ओर मिष्ठान्न तथा दूध का पात्र पड़ा देख सेठ जी ने कहा, 'कदाचित् यह आपके लिए ही आया पड़ा है।"

महाप्रभु ने कहा, "हां, परन्तु इस गृह का अन्न लेने से पूर्व आपसे कुछ जानकारी प्राप्त करनी आवश्यक थी।"

"तो महाप्रभु! आप इस गृह से कुछ रुष्ट प्रतीत होते हैं।"

"मैं तो नहीं, परन्तु गृहस्वामिनी बौद्ध संघ से अवश्य कुछ रुष्ट प्रतीत होती हैं।"

"हां, इसका कुछ ज्ञान मुझे है। वह उपासिका तो है, परन्तु संघ के व्यवहार को पसन्द नहीं करती।"

"तो सेठ जी! क्या आप भी बौद्ध संघ तथा धर्म, दोनों में अन्तर देखने लगे हैं?"

"अन्तर तो है ही। भगवन्! एक दिन पण्डित विश्वेश्वरनाथ बात रहे थे कि 'धर्म' आचरण का नाम है और संघ उस आचरण का प्रचार करने का साधन है। साधन कभी कुण्ठित अथवा विकृत भी हो सकता है। उस अवस्था में साध्य को साधन से पृथक् करना उचित हो जाता है। साध्य तथा साधन सदैव पृथक्-पृथक् होते हैं। यही इसी प्रकार है जैसे लकड़ी तथा लकड़ी का चीरने-फाड़नेवाला कुल्हाड़ा। कुल्हाड़ा कुण्ठित हो तो दूसरा लिया जा सकता है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परन्तु लकड़ी तो वही रह सकती है।''

सेठ जी के आगमन की सूचना भीतर पहुंच चुकी थी। और सूचना मिलने पर मन्दाकिनी भी बाहर बैठकगृह में आ गई। मन्दाकिनी ने आते ही कहा, ''आप आ गये हैं। महाप्रभु कब से आपकी प्रतीक्षा में बैठे हैं।

''आओ मन्दाकिनी! तम भी महाप्रभु की बात सुन लो।''

मन्दाकिनी इसी कारण तो आई थी; अतः वह भी एक ओर बैठ गई।

महाप्रभु ने कहा, ''सेठ जी! एक भिक्षुणी कल्याणी विहार से विद्रोह कर आपके निवास-स्थान पर आश्रय लेने पहुंची हुई है।''

''आह!'' सेठ जी ने कहा, ''तभी बाहर दो सुभट्ट रक्षा के लिए नियुक्त किये गये हैं। मैं यह समाचार प्राप्त कर चुका हूं कि वह न्यायालय द्वारा मुक्त घोषित की जा चुकी है। मैं चिन्तित था कि वह कहां आश्रय के लिए गई होगी। परन्तु भगवन्, आप उसके पीछे-पीछे यहां क्यों आये हैं? इससे आप इस आरोप का समर्थन कर रहे हैं कि आपका उससे सम्बन्ध बना हुआ था।''

''सेठ जी! हमारे इस सम्बन्ध का विहार के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है।''

''परन्तु आपसे तो है! आप ही उसके पीछे-पीछे चलकर यहां आये हैं, विहार चलकर नहीं आया।''

''तो आप भी मेरा निजी व्यवहार विहार से सम्बन्धित कर रहे हैं?''

''भगवन्! जब आप कल्याणी के भिक्षुणी होने से विहार के अनुशासन की बात करते हैं तो मैं भी आपके साथ उसके सम्बन्ध की बात पूछ रहा हूं।''

''सेठ जी! हम चित्त की निर्लेपता को अधिक महत्व देते हैं। शरीर के कार्यों की चिन्ता नहीं करते।''

''तो भिक्षुणी को आप चित्त की मलिनता का दण्ड दे रहे थे अथवा शरीर की मलिनता का? क्या अपराध उसने किया था कि आपने उस बन्दी बना रखा था?''

महाप्रभु समझ गये कि सेठ युगलकिशोर का मस्तिष्क भी पण्डित विश्वेश्वरनाथ ने बिगाड़ रखा है। अतः वह रुष्ट होकर उठ खड़ा हुआ और बैठकगृह से बाहर निकल गया।

: 6 :

महाप्रभु के चले जाने पर पति-पत्नी दोनों हंस पड़े। हंसते हुए सेठ जी ने पूछा, ''किसलिए हंसी हो, देवी?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं आपको हंसते देख हंस पड़ी थी। आपकी हंसी ही मुझे हंसा रही थी।"

सेठ जी ने कहा, "मुझे हंसी इस कारण आई थी कि न्यायधीश ने जब इस महापुरुष से पूछा कि आपको इसके स्वतन्त्र किये जाने पर क्या आपत्ति है तो यह कुछ उत्तर नहीं दे सका था। मैं यह समझा हूं कि कल्याणी ने अब इसकी भोग्या बनने से इन्कार किया होगा और यह उसपर अपना अधिकार समझकर उसे बन्दी बना के विवश करना चाहता होगा। गृहस्थी एक बार जिससे भोग करते हैं, उसके प्रति कृतज्ञता अनुभव करते हैं तथा उसे पूज्या मानकर उसकी भेंट-पूजा करते हैं, परन्तु ये लोग तो उसे अपनी सेविका अथवा क्रीत दासी के तुल्य समझने लगे हैं। मैं इस विडम्बना को देख हंसा था।"

मन्दाकिनी ने गम्भीर होकर कहा, "यह महाप्रभु तो स्त्री के भोग को दूध-मिष्ठान्न खाने के तुल्य मानते हैं। खाओ और भूल जाओ। यह तो चरित्रहीन तथा पाखण्डी प्रतीत होता है।"

"अब कल्याणी का क्या किया जाये?"

"आप बताइये। आप उसे संरक्षण देंगे क्या?"

"मैं समझता हूं कि उसे आश्रय देना चाहिये। पण्डित जी की पाठशाला में यह जो कार्य करती थी, वही यहां भी कर सकेगी।"

"तो आप भी अपना एक पुस्तकालय निर्माण करना चाहते हैं?"

"वह तो करना ही पड़ेगा। जब तुम शास्त्राध्ययन में रुचि लेने लगी हो तो पुस्तकें लिखवानी ही पड़ेंगी।"

इस प्रकार कल्याणी सेठ युगलकिशोर के निवास पर आश्रय पा गई मन्दाकिनी ने इसकी सूचना पण्डित जी, नन्दिनी तथा कुमकुम इत्यादि को दी तो पण्डित जी से स्वीकृति प्राप्त करके कुमकुम और नन्दिनी उससे मिलने आ गईं। कुमकुम ने कल्याणी को बताया, "राजकुमार का प्रतिहार कल तीन बार आपके विषय में पूछने आ चुका है।"

कल्याणी ने कहा, "मैं कल निश्चय नहीं कर सकी थी कि उनके पास जाऊं अथवा नहीं। पहले मैं महाप्रभु के आदेश पर जाती थी, अब मैं उनके अधीन नहीं हूं। अब मैं राजकुमार से मिलने जाऊं भी तो किस निमित्त?"

"परन्तु राजकुमार तो आपको स्मरण कर ही रहे हैं।"

"कुमकुम! तुम चाहती हो कि मैं उनके पास जाऊं?" कल्याणी ने मुस्कराकर पूछा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"भगिनी! मेरी कुछ भी इच्छा नहीं है। मैं तो तुम्हारे प्रश्न पर प्रतिक्रिया बता रही थी और यह सूचना दे रही थी कि राजकुमार तुमसे भेंट के इच्छुक हैं।"

कल्याणी को कुमकुम के कथन पर विस्मयं हुआ। वह उसका मुख देखती रह गई।

कुमकुम ने अनुभव किया कि कल्याणी उसक कथन का मिथ्या अर्थ लगा रही है, इस कारण उसका समाधान करने के लिए उसने कह दिया, "भगिनी! मैं राजकुमार का आदर करती हूं और उनसे विवाह की इच्छुक भी हूं, परन्तु तुम्हारा उनसे मिलने जाना अथवा न जाना, इससे सम्बन्धित नहीं। यह तुम्हारी इच्छा पर है। इसका मेरी भावना से कोई सम्बन्ध नहीं है। मैं तो एक भले व्यक्ति की इच्छा का आदर करने की बात कह रही थी।"

"परन्तु कुमकुम!" कल्याणी ने कहा, "उनका मुझे बुलाना इसी निमित्त तो है? अथवा मेरा उनसे क्या सम्बन्ध हो सकता है? किसी समय वह यह जानना चाहते थे कि तुम उनके साथ भागकर पाटलिपुत्र चल सकोगी अथवा नहीं? परन्तु जिस दिन से वह मंत्रि-मण्डल में सम्मिलित हुए हैं, अब वह स्वयं पाटलिपुत्र नहीं जाना चाहते। वह राज्य छोड़कर जाने में कल्याण नहीं समझते। अब तो वह तुम्हारे व्यस्क होने की प्रतीक्षा में हैं।...

"तुम्हारे उस दिन बधाई के पत्र को पढ़कर वह अति प्रसन्न हुए थे। वह तुमसे केवल यह वचन चाहते हैं कि सूर्य टरे, चन्द्र टरे परन्तु तुम्हारा उनसे विवाह का संकल्प नहीं टल सकता।"

"तो भगिनी! उनसे कह देना कि मैं मन से स्वयं को उनकी विवाहिता मानती हूं। मन ने संकल्प लिया है और संकल्प टल नहीं सकता। इसपर भी मेरा यह निश्चय है कि मैं अपने पति के घर बिना अपने तथा उनके बड़ों की अनुमति के नहीं जाऊंगी। मैं मन से उनकी पत्नी हूं परन्तु हमारा मिलन राज्य एवं समाज की रुचि के बिना नहीं हो सकता।" इतना कहते-कहते कुमकुम की आंखें तरल हो उठीं।

कल्याणी ने यह देखा तो पूछ लिया, "और कौन-कौन तुम्हारे विवाह में बाधा बन रहा है?"

"यह मैं नहीं बताऊंगी। इसक लिए राजकुमार को गुरु जी से पता करना चाहिये।"

कल्याणी ने बात बदल दी। उसने न्यायालय से अपनी मुक्ति के उपरान्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाप्रभु के व्यवहार तथा सेठ जी से वार्तालाप का विवरण सुना दिया।

अब नन्दिनी ने कहा, ''हमें विदित हुआ है कि महाप्रभु कोई अन्य योजना चला रहे हैं जिससे अवन्ति-राज्य में संघ की प्रतिष्ठा स्थापित हो सके।''

''मैं भी कुछ ऐसा ही समझती हूं। महाप्रभु यह समझते हैं कि बौद्ध धर्म बौद्ध संघ के उद्देश्यों की पूर्ति में साधन है, जबकि सेठ जी यह मानते हैं कि बौद्ध धर्म साध्य है और बौद्ध संघ साध्य की उपलब्धि के लिए साधन है। महाप्रभु इसके विपरीत मानते हैं। वह स्वयं बौद्ध धर्म को नहीं मानते। इसी कारण तो उन्होंने मुझे बौद्ध उपासनाओं में सम्मिलित होने की छूट दे दी थी।''

''मैं समझती हूं यही उनकी भूल है। वे संघ को मुख्य मान रहे है तथा धर्म को गौण।''

कुमकुम तथा नन्दिनी गईं तो कल्याणी ने मन्दाकिनी से कुमकुम के राजकुमार के प्रति विचार बताये।

इस पर मन्दाकिनी ने बताया, ''प्रजा में यह चर्चा विस्तार पा रही है। सेठ जी भी कह रहे थे कि प्रजागण इस विवाह को स्वीकार नहीं करेंगे। वह कुमकुम को रखैल बना सकता है, परन्तु पटरानी नहीं।

''भले कुमकुम विदुषी, चरित्रवती तथा अति सुन्दर हो?''

''देखो कल्याणी!'' मन्दाकिनी ने कहा, ''व्यक्ति-व्यक्ति में बुद्धि का अन्तर है, क्योंकि प्रत्येक में बुद्धि भिन्न-भिन्न होती है। इस कारण प्रजा की सामूहिक बुद्धि प्रायः मूर्खतापूर्ण होती है, क्योंकि व्यक्ति प्रायः निम्न कोटि की बुद्धि का स्वामी होता है।...

सेठ जी कह रहे थे कि ''प्रजा की सामूहिक बुद्धि की मान्यता बौद्ध संघ की विशेष बात है। यह एक प्रमुख कारण है कि वह संघ की किसी भी बात को अपनी बुद्धि से परखकर ही स्वीकार करते हैं। प्रजा के सामूहिक मत को वह कभी स्वीकार नहीं करते। वे दो-चार विद्वानों की बात को प्रजा के सामूहिक मत से ऊपर मानते हैं।''

कल्याणी ने पूछ लिया, ''मुझे राजकुमार से मिलने जाना चाहिये क्या? और यदि जाऊं तो कुमकुम के मन की बात बताऊं अथवा नहीं?''

''मैं समझती हूं कि अवश्य जाना चाहिये और उनको सम्मति देनी चाहिये कि राज्य प्रजा पर ही किया जाता है। अतः या तो स्वयं प्रजा के अनुकूल बनकर रहें अथवा प्रजा को अपने अनुकूल बनाकर रहें। इस समय बौद्ध संघ प्रजा को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राज्य के विरुद्ध करने का यत्न कर रहा है। इस कारण दोनों में संघर्ष होना स्वाभाविक है। इस संघर्ष में सेना सहायक नहीं होगी। सेना भी तो प्रजा का एक अंग है। सेना को प्रजा से पृथक् अधिक समय तक नहीं रखा जा सकता।...

"प्रजा को सन्मार्ग दिखाने के लिए प्रजा के शिक्षक-वर्ग को राजा के अनुकूल अथवा राज्य के अधीन रखना आवश्यक है। अतः कल्याणी! तुम्हें राजकुमार के पास जाना चाहिये और उन्हें बौद्ध संघ की इस विशिष्टता का ज्ञान कराना चाहिये जिससे वह किसी संघर्ष के समय राज्य का तथा प्रजा का कल्याण कर सकें।"

कल्याणी ने कुछ विचारकर कहा, "विहार में जब भी महाप्रभु से इस विषय में चर्चा किया करती थी, वे भी यही कहा करते थे कि संघ जनमत को सन्मार्ग दिखाने के लिए निर्मित हुआ है। उनका कहना था कि जो लोग संघ की महिमा मानते हैं, वे देश में शान्ति-व्यवस्था में सहायक होते हैं।"

"महाप्रभु की विचारधारा में एक दोष था। वह यह कि संघ विद्वानों का मिलन-स्थल नहीं है। संघ में सम्मिलित होनेवाले जन प्रायः समाज की निम्न श्रेणी के ही हैं अथवा वे लोग हैं जो बिना विशेष परिश्रम किये भोग प्राप्त करना चाहते हैं। परिश्रमी तथा बुद्धिशील व्यक्ति संघ में सम्मिलित नहीं होते। वे बौद्ध उपासक तो हो सकते हैं, परन्तु संघ के संचालक नहीं।...

"मैं तो अब बौद्ध उपासक भी नहीं रही।" मन्दाकिनी ने कहा, "सेठ जी अभी स्वयं को बौद्ध उपासक मानते हैं। इसपर भी हम दोनों में इस विषय पर विवाद नहीं होता। हम दोनों में तीन अटूट कड़ियां हैं। वे हैं हमारे दो पुत्र तथा एक पुत्री।"

कल्याणी मन्दाकिनी का मुख देखती रह गई।

इसी समय राजकुमार का प्रतिहार कल्याणी को ढूंढता हुआ वहां आ पहुंचा। वह पण्डित विश्वेश्वरनाथ की पाठशाला में गया था तथा वहां उसे बताया गया था कि कल्याणी सेठ युगलकिशोर के निवास पर रह रही है। अतः वह यहां आ पहुंचा था। जब वह कल्याणी के सम्मुख उपस्थित हुआ तो उसने मौखिक सन्देश दिया, "राजकुमार भगिनी कल्याणी से मिलना चाहते हैं।"

"कब?" कल्याणी ने पूछा।

"पूर्ववत् निश्चित दिन और निश्चित समय पर।"

"ठीक है। मैं उपस्थित हो जाऊंगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगले मंगलवार के दिन कल्याणी चौथे प्रहर के आरम्भ में राजप्रासाद में राजकुमार के कक्ष में जा पहुंची। राजकुमार उत्सुकता से उसकी प्रतीक्षा में अकेला बैठा था।

कल्याणी को देखकर राजकुमार ने प्रसन्न चित्त से कहा, "मुझे प्रसन्नता है कि भगिनी ने आने का कष्ट किया है।"

"राजकुमार! जब आपने स्मरण किया तो इन्कार कैसे कर सकती थी? अभी तक मैं महाप्रभु के कार्य से श्रीमान के पास आती थी। अब महाप्रभु का कार्य मेरे द्वारा सम्पन्न नहीं हो सकता, इस कारण आने में संकोच था।"

"देवी! मैं तुम्हारा आभारी हूं कि तुमने न्यायालय में यह कहा है कि तुम्हारा मुझसे मिलना राज्य-नियमों के विरुद्ध नहीं था और राजकुमार का कार्य तुम्हारे बन्दी बनाये जाने से सम्बधित नहीं है। तुम्हारे प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करने के लिए मैं तुमसे भेंट का इच्छुक था।"

"परन्तु राजकुमार!" कल्याणी ने कहा, "वह प्रयोजन, जिससे आप मेरी सेवाएं चाहते थे, अब मैं सिद्ध नहीं कर सकूंगी। अब मैं पाठशाला को नहीं जाती। अतः कुमकुम से भेंट भी नहीं हो सकती।"

"तो सेठ जी के गृह पर तुम्हारा क्या कार्य है?"

"कार्य वही जो पाठशाला में था। मैं सेठ जी के लिए पुस्तकों की प्रतिलिपि बना रही हूं।"

"तो सेठ जी का अपना पुस्तकालय भी है?"

"हां। उनके पास पुस्तकों का अच्छा भण्डार है और अब वह अन्य स्थानों से पुस्तकों की प्रतिलिपियां तैयार करने के लिए भी ला रहे हैं।"

"तब यदि मैं अपना पुस्तकालय निर्माण करूं तो तुम वह कार्य क्या यहां आकर कर सकोगी?"

कल्याणी ने मुस्कराते हुए कहा, "आपका पुस्तकालय तो है और वात्स्यायन जी वहां कार्य करते ही हैं।"

"परन्तु भगिनी! मैं उस पुस्तकालय में तुम्हारी नियुक्ति नहीं कर सकता। वह पुस्तकालय रामी देवी जी के अधीन है।"

"राजकुमार! आप जो सेवा मुझसे चाहते हैं, उसका आदेश कीजिये। बिना आपके पुस्तकालय में कार्य किये भी मैं सेवा करने का यत्न करूंगी।"

"मैं चाहता हूं कि तुम कुमकुम से पूर्ववत मिलती रहो और उसके मन में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरे प्रति अनुराग बढ़ाती रहो।''

''राजकुमार! कुमकुम आपसे उत्कट प्रेम करती है, परन्तु वह आपसे विवाह तभी स्वीकार करेगी जब महारानी उसे स्वीकार करेंगी।''

''किन्तु महारानी जी मेरा उससे विवाह स्वीकार नहीं करतीं। उनका स्पष्ट कथन है कि राज-पद के लिए उससे विवाह का विचार त्यागना पड़ेगा। मैं उसे अविवाहित पत्नी बना सकता हूं, परन्तु तब वह पटरानी नहीं बन सकेगी और यह मुझे स्वीकार नहीं है।''

''और राजकुमार को क्या पसन्द है?''

''मैं उसके लिए राज-पद छोड़ने को भी तैयार हूं। यदि वह स्वीकार करे तो मैं उसे लेकर अवन्ति-राज्य से बाहर चला जाऊंगा और कहीं भी एक साधारण प्रजा की भांति रह सकूंगा।''

''राजकुमार! आपका यह विचार शुभ है, परन्तु जहां तक मैं समझती हूं कुमकुम इसे स्वीकार नहीं करेगी। वह अपने स्वार्थ के लिए आपको इतने बड़े त्याग की सम्मति नहीं देगी।''

''तो मुझसे विवाह को वह अपना स्वार्थ समझती है? यह तो मेरी उत्कट अभिलाषा है।''

''आपको ही नहीं उसकी भी यही अभिलाषा है। परन्तु यह लोकहित के विरुद्ध है। वह चाहती है कि आप महाराज बनें और लोकहित-कार्यों में संलग्न रहें। उसका आपके साथ विवाह यदि इसमें बाधक है तो वह इसे स्वीकार नहीं करेगी।''

''मैं चाहता हूं कि तुम हम दोनों के बीच एक कड़ी बनी रहो। मुझे बताया गया है कि मेरा पण्डित जी के निवास-स्थान पर जाना उचित नहीं है। अतः मैं इस विषय में तुम्हारी सेवाएं चाहता हूं।''

''ठीक है, मैं तत्पर हूं।''

कल्याणी अब नियमपूर्वक मंगल तथा शुक्रवार के दिन राजकुमार से मिलने के लिए आने लगी और उसका सन्देश कभी मौखिक तथा कभी लिखित कुमकुम के पास ले जाने लगी।

: 7 :

महाप्रभु के हाथ में अभी एक मोहरा और था जिसका वह प्रयोग करना चाहता था और जिससे वह सफलता की आशा कर रहा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साप्ताहिक उपासनाओं में महामात्य की पत्नी सर्वप्रिया भी भाग लिया करती थी। महाप्रभु नारायण के एक-दो बार सर्वप्रिया से बात की थी तथा उसे प्रेरणा दी थी कि वह अपनी लड़की पद्मा का विवाह राजकुमार से करने का यत्न करे। परन्तु तब पदमा इसमें सफल नहीं हो सकी थी। साथ ही महाप्रभु के व्यवहार के कारण, विशेषतया नन्दिनी के साथ, वह महाप्रभु के प्रयास में रुचि लेना छोड़ बैठी थी।

अब कल्याणी द्वारा अपनी योजना में असफल होने पर महाप्रभु सौमित्र ने सर्वप्रिया की ओर ध्यान दिया। कल्याणी के विहार छोड़ जाने के दो सप्ताह उपरान्त एक बार जब सर्वप्रिया उपासना में सम्मिलित होने के लिए आई तो उपासना के उपरान्त उसे महाप्रभु का सन्देश मिला। एक भिक्षु उसके समीप आकर बोला, ''भागिनी! महाप्रभु आपसे मिलना चाहते हैं।''

''कब और कहां?''

''जब और जहां देवी अनुमति दें।''

सर्वप्रिया ने एक क्षण विचार किया और कह दिया, ''आज मध्याह्न के समय भोजन के लिए महाप्रभु मेरा आतिथ्य स्वीकार करें तो मैं अनुगृहीत हो सकूंगी।''

कल्याणी तथा उससे पूर्व नन्दिनी की दुर्घटनाओं के कारण विहार की निन्दा विस्तार पा रही थी और सर्वप्रिया स्वयं किसी प्रकार की किंवदन्ती में कारण नहीं बनना चाहती थी। अतः वह विहार में महाप्रभु के आगार में उनसे मिलना नहीं चाहती थी। इसी कारण उसने एक सामान्य उपासक की भांति महाप्रभु को भोजन के लिए निमंत्रण दे दिया।

उसी दिन मध्याह्न के समय महामात्य रामानुज, सर्वप्रिया तथा महाप्रभु में बातचीत हो गई।

बात महाप्रभु ने ही आरम्भ की। उसने कहा, ''महाराज अशोक ने बौद्ध धर्म को राजकीय पद प्रदान करके इस भारत देश तथा बाहरी देशों की प्रजा का भारी कल्याण किया है। इस समय पचास सहस्र से अधिक विहार स्थापित हो चुके हैं। यहां अवन्ति-राज्य में भी प्रतिवर्ष एक नया विहार स्थापित हो रहा है।

''संघ द्वारा लोककल्याण दो प्रकार से हो रहा है। प्रजागण संघ के संरक्षण में आकर सुख अनुभव करते हैं। उनके और राज्य के मध्य संघ एक कड़ी बन गई है। जहां प्रजा संघ द्वारा राज्य से सुविधाएं प्राप्त करती है, वहां राज्य भी प्रजा पर संघ द्वारा नियंत्रण रखता है।...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"लाखों अपराधी दण्डमुक्त होकर साधु-स्वभाव बने हैं और राज्य को अब बन्दीगृह तथा न्यायालय बनाने की आवश्यकता नहीं रही। संघ अपराधियों को सन्मार्ग दिखाने का अवसर प्राप्त कराता है और अपराधी शान्तिप्रिय नागरिक बनकर सुख तथा शान्ति का जीवन व्यतीत करते हैं।...

"इसी उद्देश्य से हम इस राज्य में भी संघ की महिमा स्थापित करने का यत्न कर रहे हैं। इसी निमित्त हम अवन्ति-राज्य के प्रतिष्ठित प्रजागण की सहायता की अपेक्षा रखते हैं।"

"महाप्रभु!" सर्वप्रिया ने प्रश्न किया, "आपकी योजना क्या है? वह यदि आप स्पष्ट करें तो हम देखेंगे कि उसमें किस प्रकार सहायक हो सकते हैं।"

"संघ का प्रभाव राज्य तथा प्रजा पर संघ के उपासकों द्वारा ही होता है। इसी कारण मैं आपसे यह सहयोग चाहता हूं कि आप राज्य को संघ के अनुकूल बनाने का यत्न करें जिससे यहां भी उसी प्रकार की व्यवस्था स्थापित हो सके जैसी मगध में है।...

"मगध राज्य में जब भी कोई व्यक्ति अपराध करता है, राज्य उसे बौद्ध गुरुओं के पास सुधार के निमित्त भेज देता है। बौद्ध गुरु तथा बौद्ध उपासक उसे प्रेरणा देते हैं कि वह अपनी अपराध-प्रवृति का त्याग कर दे। जब वह इस बात का आश्वासन देता है कि वह धर्म का पालन करेगा तो न्यायालय उसे मुक्त कर देते हैं और वह श्रेष्ठ नागरिक का जीवन व्यतीत करने लगता है। इस प्रकार राज्य के दण्ड विधान का प्रयोग वहां न्यूनतम है तथा प्रजा धर्म-परायण बनती जा रही है।...

"परन्तु यहां अवन्ति में राज्य बौद्ध संघ का सहयोग लेने के स्थान इसका विरोधी होता जा रहा है। इसका सबसे बड़ा कारण है राज्य के नये आमात्य विश्वेश्वरनाथ। वह एक श्रेष्ठ वक्ता है तथा अपनी अति कुशल वाणी से राज्याधिकारियों के मन मलिन कर रहा है।"

"तो भगवन्! आप इसका क्या उपाय बताते हैं?"

"उपाय है किसी प्रकार इस पण्डित को पद से हटाया जाये। रामी नाम की महारानी की निजी सेविका है। उसका महारानी पर भारी प्रभाव है। उसी के कहने पर महाराज ने पण्डित को मंत्रि-मण्डल में सम्मिलित किया है। इस पण्डित के कई शिष्य हैं जो इस समय गुप्तचरों का कार्य कर रहे हैं। प्रायः सभी वरिष्ठ अधिकारियों पर इन गुप्तचरों की दृष्टि है तथा उनके विषय में सूचना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पण्डित को प्राप्त होती रहती है। यह पण्डित प्रतिदिन महाराज से भेंट करता है तथा उन अधिकारियों के विरुद्ध महाराज के कान भरता है। इस प्रकार वह स्वयं को राज्यहित में प्रकट करता रहता है।...

"वस्तुतः यह राज्य-हित नहीं है। राज्यहित इस बात में है कि किसी प्रकार राज्य-विरोधी राज्य के अनुकूल बन जायें, न कि राज्य के विरोधी तथा शत्रु बनें।...

"राजकुमार के मंत्रि-मण्डल में सम्मिलित होने से हमारा विचार था कि महाराज इस ब्राह्मण के प्रभाव से मुक्त हो जाएंगे, परन्तु महाराज ने इसे मंत्रि-मण्डल में सम्मिलित करके मंत्रि-मण्डल के प्रायः सभी सदस्य इसके प्रभाव में कर दिये हैं। परिणाम यह हुआ है कि प्रजा का पक्ष दुर्बल पड़ गया है।"

अभी तक जो वार्तालाप चल रहा था वह सर्वप्रिया तथा महाप्रभु के मध्य था। महामात्य रामानुज केवल दर्शक के रूप में चुपचाप बैठा था। अब उसने वार्तालाप में भाग लेते हुए कहा, "महाप्रभु! राजनीति स्त्रियों के वश की बात नहीं होती।"

"ठीक है, महामात्य! मैं तो आपको ही ये सब बातें बता रहा था। यह देवी तो केवल सूत्रधार का कार्य कर रही हैं। ये नाट्यकार को नाटक खेलने में रुचि लेने की प्रेरणा दे रही हैं।"

महामात्य हंस पड़ा। हंसते हुए कहने लगा, "यह नाटक जिसमें आपने इन देवी को सूत्रधार कहा है, "मैं समझ रहा हूं। मैं अनुभव कर रहा हूं कि आप एक योग्य नाट्यकार नहीं हैं। भगवन्! आप मेरे आगार में आइये। मैं पृथक् में आपसे इस विषय में बात करूंगा। हम कोई ऐसा मार्ग ढूंढेंगे जिससे आप अपने धर्म-कार्य के लक्ष्य में तथा राज्य के प्रति अपने कर्तव्य में अग्रसर हो सकेंगे।"

महामात्य तथा महाप्रभु दोनों महामात्य के निजी आगार में चले गये। वहां महाप्रभु को बैठाकर तथा उनके सम्मुख स्वयं बैठकर महामात्य ने कहा, "देखिये भगवन! जितने भी सांसारिक कार्य हैं, वे स्वार्थ-सिद्धि के निमित्त ही होते हैं। यह एक पृथक् बात है कि व्यक्ति, परिवार तथा समाज इन तीनों के स्वार्थ का समन्वय होना चाहिये।...

"आपका भी प्रयास स्वार्थ-सिद्धि के निमित्त है। इसमें आपका निजी स्वार्थ भी है तथा बौद्ध संघ का स्वार्थ भी है। दोनों की दिशा एक है, अतः दोनो में समन्वय है। इसी प्रकार मेरा स्वार्थ तथा राज्य का स्वार्थ अथवा समाज का स्वार्थ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक ही दिशा में है। तभी मैं राज्य के हित में दिन-रात संलग्न रहता हूं, क्योंकि राज्य-हित में ही मेरा हित भी सम्मिलित है।...

"हमें देखना यह है कि आपका हित, अर्थात् बौद्ध संघ का हित और मेरा हित, अर्थात् राज्य का हित परस्पर अनुकूल हो जाएं और हम एक-दूसरे के सहायक बन जाएं।"

महाप्रभु ने महामात्य का आशय समझकर कहा, "आप ठीक कहते हैं। बताइये, आप किस प्रकार संघ को अपने अनुकूल चाहते हैं? तब मैं देखूंगा कि हम किस प्रकार सहयोग कर सकते हैं?"

"देखिये महाप्रभु! आपको विदित है कि हमारी एक कन्या है। हम चाहते थे कि उसका विवाह राजकुमार से सम्पन्न हो जाय। परन्तु इसमें सबसे प्रमुख बाधक हैं विश्वेश्वरनाथ। इन पण्डित जी का इतिहास मैंने जानने का यत्न किया है।...

"रामी की विधवा मां रामकुट्टी गांव की पण्डित जी के गृह में सेवा कार्य करती थी। रामी का जन्म इन्हीं दिनों हुआ।...

"जब रामी महाराज के सेवक मोहन की पत्नी बनकर उज्जयिनी में आई तो महारानी की निजी सेविका बन गई। इन्हीं दिनों कुमकुम का जन्म हुआ। कुमकुम इतनी गुणवन्ती है कि वह मोहन की सन्तान नही हो सकती। अतः यह बात निश्चित ही है कि वह महाराज की सन्तान है।...

"रामी कुमकुम को उच्च शिक्षा देकर राजकुमार से उसका विवाह करना चाहती है जिससे वह राज्य की महारानी बन सके। यह उसकी योजना है और इस योजना में सहायता देने के लिए ही रामी अपने वास्तविक पिता पण्डित जी को राजधानी में लायी है तथा अब उसे मंत्रि-मण्डल में सम्मिलित करने में सफल हो चुकी है। अब उनकी योजना में राजकुमार का विवाह कुमकुम से होना शेष है तथा उसके उपरान्त महाराज को तपस्या के लिए वन में भेजकर राजकुमार को महाराज बना दिया जायेगा और तब रामी और पण्डित विश्वेश्वरनाथ अवन्ति के वास्तविक शासक बन जायंगे। महाप्रभु! अब बताइये, इस स्थिति को किस प्रकार परिवर्तित किया जा सकता है?"

महाप्रभु इस रहस्योद्घाटन पर आश्चर्यवत् महामात्य का मुख देख रहा था। उसे पण्डित विश्वेश्वरनाथ तथा रामी का अब तक का सारा कार्य स्पष्ट षडयंत्र समझ में आने लगा था। कुछ विचारकर उसने कहा, "महामात्य! आप एक कार्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कीजिये। अपनी लड़की को उसकी मां के साथ बौद्ध उपासनाओं में भेजा करिये। वह उपासिका बन जायेगी, तब हमारा बौद्ध संघ उसकी सहायता कर सकेगा। यह देख लीजिये कि बौद्ध संघ के पीछे सम्पूर्ण मगध-राज्य की शक्ति भी कार्य करेगी।''

''ठीक है, महाप्रभु! लड़की मां के साथ उपासनाओं में सम्मिलित होने विहार में पहुंचा करेगी। आप योजना बनाइये और फिर जो उचित होगा किया जायेगा।''

रामी तथा कुमकुम के जन्म का रहस्य विदित हो जाने से महाप्रभु बहुत प्रसन्न था। उसने अपने मन में एक योजना बना ली और उसके अनुरूप कार्य करने लगा। उस योजना के अनुसार अगली साप्ताहिक उपासना में प्रथम बार महाप्रभु ने अपने प्रवचन में कहा, ''शासक अथवा राजा एक चरित्रवान, कुलीन और निष्ठावान् व्यक्ति होना चाहिये। जब भी चरित्रहीन तथा नीचकुलोत्पन्न व्यक्ति के हाथ में शासन आता है, प्रजा में असन्तोष तथा अव्यवस्था उत्पन्न हो जाती है।

''राज्य की लालसा अत्यन्त प्रबल होती है, परन्तु जब नीच लोगों के हाथ में सत्ता आती है तो वे अपने निजी स्वार्थ के लिए प्रजा का शोषण करने लगते हैं तथा उनपर घोर अत्याचार करते हैं। अतः प्रजा का यह कर्त्तव्य हो जाता है कि यह सजग रहे और यह सदैव ध्यान में रखे कि शासक-वर्ग में सम्मिलित लोग आदर्श व्यक्ति हों तथा स्वार्थी, लोभी और नीच कुल के लोग उनपर प्रभावी न हो सकें।''

इस दिन के प्रवचन के उपरान्त विहार की एक भिक्षुणी रेणु कुछ क्षण बाद महाप्रभु के आगार में जा पहुंची। उसने कहा, ''महाप्रभु! आपके प्रवचन के उपरान्त विहार के भिक्षु-भिक्षुणियों में आपके प्रवचन की प्रतिक्रिया की जानकारी देने के लिए मैं आई हूं।''

''हां, तो बताओ।'' महाप्रभु ने कहा।

''प्रायः सभी लोग आपके प्रवचन को बौद्ध मत के विपरीत समझते हैं।''

''मैंने क्या बात बौद्ध मत के विपरीत कही है?''

''आपने कुलीन तथा नीच जातियों का उल्लेख किया है। यह हमारे सिद्धान्तों के विपरीत है। हम सब मानवों की एक ही जाति मानते हैं। हमारे मत में कोई नीच जाति नहीं है।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाप्रभु मुस्कराकर चुप कर रहे।

रेणु ने आगे कहा, ''भिक्षु ऐसा समझ रहे हैं कि आपका संकेत विहार से बाहर किसी विशिष्ठ व्यक्ति की ओर है।''

''भगिनी रेणु! सबका अनुमान्य सत्य है। देखों, बताता हूं। इस समय अवन्ति में बौद्ध सम्प्रदाय का विरोध अति प्रबल हो रहा है। हमारी प्रगति न केवल रुक गई है, प्रत्युत एक ऐसा गुट वन रहा है जो हमें अवन्ति से निःशेष करने के लिए कटिबद्ध हो रहा है। मैंने यह चर्चा इसी निमित्त आरम्भ की है जिससे यह चर्चा नगरभर में हमारे उपासकों द्वारा विस्तार पा जाय। तब लोग स्वभाववश इस चर्चा का लक्ष्य जानने का यत्न करेंगे। तब मैं कुछ रहस्य प्रकट करूंगा जो मैं किसी विश्वस्त अधिकारी से जानकर आया हूं। परिणाम यह होगा कि प्रजा ऐसे दुष्ट लोगों के विरुद्ध हो जायेगी जो हमारा विरोध करने में जुटे हुए हैं। तब समय होगा जब बौद्ध-मीमांसा की महिमा इस राज्य में बढ़ेगी। मैं कल्पना कर रहा हूं कि शीघ्र ही कदाचित दो वर्ष में इस अवन्ति-राज्य मे भी मगध ा-राज्य की भांति हमारा प्रभुत्व हो जायेगा।'' रेणु महाप्रभु का मुख देखती रह गई।

महाप्रभु ने आगे कहा, ''तुम नित्य राजधानी में भिक्षाटन के लिए जाया करो और देखो कि प्रजागण क्या चर्चा करते हैं। उस चर्चा को तुम अति विस्तार दे सकती हो। तुम्हारा रूप और मधुर वाणी तुम्हारी सहायक होगी। इससे जहां बौद्ध मत का विस्तार होगा, वहां प्रजा में राज्य के प्रति असन्तोष फैलेगा और राज्य को विवश होकर संघ की शरण में आना पड़ेगा।''

''महाप्रभु! वे क्या बातें हैं जिनका प्रचार करना होगा?'' रेणु ने पूछ लिया।

''वह समय पर मैं बताऊंगा। अभी उसका समय नहीं आया।''

रेणु को विहार में आये कभी कुछ ही मास हुए थे। वह अवन्ति के ही वट गांव की निवासिनी थी। विधवा हो जाने के कारण तथा जीवन-यापन का कुछ प्रबन्ध न होने के कारण वह आश्रय के लिए विहार में आ पहुंची और दीक्षा लेकर भिक्षुणी बन गई थी। इन्हीं दिनों कल्याणी की घटना घटी तो महाप्रभु ने रेणु से वही कार्य लेना आरम्भ कर दिया जो कल्याणी से लिया करते थे।

: 8 :

विहार में भी तथा उपासकों द्वारा प्रजा में भी चर्चा के विस्तार की सूचना पण्डित विश्वेश्वरनाथ को भी मिली। उसं यह समझने में विलम्ब नहीं लगा कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह चर्चा कुमकुम तथा रामी के साथ सम्बन्धित हो सकती है। इस पर भी पण्डित जी यह जानते थे कि स्थिति इसके सर्वथा विपरीत है। रामी कुमकुम का विवाह राजकुमार से पसन्द नहीं करती थी। उसके मन में यह बात थी कि दोनों बहन-भाई हैं। यद्यपि यह बात रामी ने कुमकुम को बताई नहीं थी क्योंकि इसके पीछे राजनैतिक कारण थे, इसपर भी वह निश्चित मानती थी कि दोनों का विवाह नहीं होना चाहिये। यद्यपि पण्डित जी ने राजकुमार को आश्वासन दिया था कि वह कुमकुम को अपनी रखैल बनाकर रख सकता है, परन्तु विवाह के उपरान्त। उसपर भी उनके मन में इस विषय में एक ऐसी योजना थी जो राजकुमार के विवाह के उपरान्त ही वह चलाना चाहते थे।

जब से कुमकुम को उस यह ज्ञान हुआ था कि उसके राजकुमार से विवाह के कारण राजकुमार को सिंहासन से वंचित होना पड़ेगा, उसने राजकुमार से भेंट करनी बन्द कर दी थी। वैसे वह उससे उत्कट प्रेम करती थी, परन्तु उस प्रेम का मूल्य राज्यसिंहासन वह अत्यधिक मानती थी। यही कारण था कि राजकुमार ने कुमकुम तक सन्देश पहुंचाने के लिए कल्याणी की सेवाएं ली थीं।

पण्डित जी को भय था कि अति प्रेमवश राजकुमार राज्य छोड़ने के लिए तैयार न हो जाय। इस कारण जब भी अवसर मिलता, वह उसे प्रेरणा देते रहते थे कि राज्य द्वारा लोक कल्याण का कोई अवसर उसे त्यागना नहीं चाहिए। साथ ही वह उसे आश्वासन देते रहे थे कि राज्य -प्राप्ति के तथा विवाह कर लेने के उपरान्त यदि वह चाहेगा तो अपनी द्वितीय पत्नी के रूप में कुमकुम को साथ रख सकेगा।

एक दिन सायं जब पण्डित जी महाराज से भेंट करने आये तो राजकुमार भी महाराज के समीप उनके बैठकगृह में बैठा हुआ था। पण्डित जी ने आशीर्वाद दिया और अपने लिए निश्चित आसन पर बैठ गये। उन्होंने पूछ लिया, "राजकुमार! आज क्या बात है? विशेष चिन्तित प्रतीत होते हैं?"

"गुरु जी! मैं कभी-कभी विचार करता हूं कि राज-परिवार क्यों इतने बन्धनों में जकड़ा गया है? हम भी क्यों वह सब-कुछ नहीं कर सकते जो एक सामान्य गृहस्थी कर सकता है?"

पण्डित जी ने इस प्रश्न को चर्चा का साधन बना लिया। उन्होंने पूछा, "राजकुमार! आजकल आपके कितने निजी सेवक हैं?"

राजकुमार पण्डित जी का आशय समझा नहीं। इसपर भी उसने कह दिया,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"एक विचार से बारह हैं, परन्तु एक अन्य विचार से देखा जाय तो तीस के लगभग हैं।"

"ये दो श्रेणियां किस प्रकार हैं?"

"गुरु जी! मुझे इस समय राज्य-कोष में से एक सहस्र मुद्राएं प्रतिमास प्राप्त होती हैं। उनमें से ही मैं अपने निजी सेवकों को वेतन देता हूं। बारह सेवक राजप्रासाद में मेरे कक्ष की सफ़ाई इत्यादि तथा उसका प्रबन्ध करते हैं। परन्तु इनके अतिरिवत कुछ प्रहरी, प्रतिहार मेरे अंगरक्षक, लिपिकार इत्यादि हैं। ये सेवक भी मेरे निमित्त हैं, परन्तु इनका वेतन राज्य-कोष से पृथक् दिया जाता है। इनकी नियुक्ति भी राज्य ही करता है।"

"ये सारे सेवक केवल आपकी रक्षा तथा सेवा के लिए नियुक्त हैं। इन सबके वेतन इत्यादि व्यय का स्रोत भी एक ही है, अर्थात् राज्यकोष।"

"यह तो है!" राजकुमार ने कहा, "जो धन मुझे मिलता है, वह भी राज्य-कोष से ही मिलता है तथा कर्मचारियों को वेतन भी राज्य-कोष से मिलता है।"

"इसी कारण मैं उन सबको आपका निजी सेवक ही मानता हूं। परन्तु राजकुमार! एक सामान्य नागरिक के गृह पर इतना कुछ व्यय नहीं होता। एक नागरिक की पत्नी, उसके बच्चे तथा उसके माता-पिता, इन सबके लिए एक-दो सेवक ही पर्याप्त होते हैं आपके ऊपर इतना भारी व्यय किस निमित्त किया जाता है?"

"मैं इसे इस कारण समझता हूं कि मैं राज्य की विशिष्ट सेवा करता हूं।"

"क्या विशेष सेवा करते है?"

इस प्रश्न ने राजकुमार को विचार करने पर विवश कर दिया। उसने विचार किया कि वह मंत्रि-मण्डल का सदस्य है और मंत्रित्व कार्य जटिल है, जिसमें उसे दिन-रात संलग्न रहना पड़ता है। परन्तु तब उसे ध्यान आ गया कि राज्य के अन्य मंत्री भी तो हैं। सेनाध्यक्ष के निजी सेवा में केवल तीन कर्मचारी हैं और उसकी सुरक्षा इत्यादि के लिए केवल छः सैनिक उसके गृह पर नियुक्त हैं। इस प्रकार वित्त-मंत्री के भी केवल चार सेवक मिले हैं। इस कारण यह विचार उसके मन में टिक नहीं सका कि मंत्री होने के नाते राज्य उसपर इतना भारी व्यय कर रहा है।

उसे मौन देखकर पंडित जी ने कहा, "राजकुमार! आप प्रजा की कई प्रकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से सेवा करते हैं। कुछ के विषय में आप जानते हैं और कुछ के विषय में नहीं जानते हैं। ये सेवाएं अदृश्य हैं। यद्यपि आप इनके विषय में नहीं जानते, इसपर भी इनका प्रभाव प्रजा पर पड़ता है।...

"ये अदृश्य सेवाएं हैं—आपका अपने व्यवहार तथा विचारों से प्रजा का नेतृत्व करना। समाज का एक ढांचा है वर्णाश्रम धर्म का।" पंडित जी ने समझाया, "प्रजा वर्णाश्रम-धर्म-व्यवस्था पर आरूढ़ है, इस कारण प्रजा में सामाजिक व्यवस्था बनी हुई है। प्रजा अपेक्षा रखती है कि प्रजा के नेतागण तथा शासक इत्यादि भी यह व्यवस्था बनाये रखें। जब भी प्रजा अनुभव करती है कि प्रजा के शासक इस व्यवस्था को भंग कर रहे हैं तो प्रजा में असन्तोष बढ़ता है। इस असन्तोष को शासक-वर्ग अपनी सेना अथवा सुभट्टोंके बल पर कुछ काल के लिए दबा सकता है, परन्तु अधिक काल के लिए नहीं। जब भी प्रजा को अवसर मिलेगा, प्रजा ऐसे शासक को पदच्युत कर देगी। अतः शासक का कर्तव्य हो जाता है कि प्रजा की सामाजिक व्यवस्था को अपने आदर्श व्यवहार से बनाये रखे।"

पण्डित जी के कथन पर राजकुमार में मन में विचार उठा कि उसे अपने मन की समस्या स्पष्ट कर देनी चाहिये। उसने पूछ लिया, "गुरु जी! महाराज की पत्नी अर्थात् महारानी किस बर्ण की स्त्री होनी चाहिये?"

"क्षत्रिय स्वभाव की।" पंडितजी ने कहा।

"और यह स्वभाव गुण-कर्म से सम्बन्ध रखता है अथवा जन्म से?"

"गुण-कर्म से। परन्तु राजकुमार! भारत देश में कुछ शताब्दियों से ऐसी प्रथा है कि उच्च वर्ण जन्म से माने जाते हैं। इसमें कुछ तथ्य तो है कि क्षत्रिय की सन्तान क्षत्रिय-स्वभावयुक्त होती है, ब्राह्मण की सन्तान ब्राह्मण-स्वभाव की। परन्तु यह अनिवार्य नहीं है; इसके विपरीत भी होता देखा गया है। इस कारण एक क्षत्रिय को क्षत्रिय-पद प्राप्त करने के लिए क्षत्रिय-स्वभाव रखना ही आवश्यक नहीं है, प्रत्युत अन्य लोगों के मन पर अपने व्यवहार से यह स्पष्ट करना भी आवश्यक है।"

"देखिये गुरु जी! मेरी माता जी समझती है कि कुमकुम एक कहार की कन्या है, परन्तु मैं जानता हूं कि वह अपनी शिक्षा-दीक्षा से तथा अपने व्यवहार से एक उच्च वर्ण की कन्या है। इसपर भी मेरा उससे विवाह वर्जित है। ऐसा क्यों?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कुमार! यह कारण कि हमारी समाज के ब्राह्मण इस प्रथा को वर्जित समझते हैं। वे ब्राह्मण की सन्तान को ब्रांह्मण तथा क्षत्रिय की सन्तान को क्षत्रिय मानते हैं। इसमें दोष किसका है, इस प्रथा को माननेवालों का अथवा प्रथा को वर्जित न करनेवालों का, यह इस समय विचारणीय नहीं है। इस समय विचारणीय यह है कि यह प्रथा समाज में विद्यमान है और प्रजा नहीं चाहती कि इस प्रथा की अवहेलना हो। इसकी अवहेलना आप नहीं कर सकेंगे। यह है अदृश्य सेवा जिसका पालन शासक को करना पड़ता है। तभी वह शासक बना रह सकता है।"

राजकुमार इसपर चुप कर गया। इसपर भी उसका मन शान्त नहीं था। वह विचार कर रहा था कि जब वह यह मानता है कि गुण-स्वभाव से वर्ण होते हैं तो उसे यह किसी भी मूल्य पर स्वीकार करना चाहिए। यदि पह ऐसा नहीं करेगा तो यह उसके अपने साथ अन्याय होगा और समाज के साथ भी अन्याय होगा, क्योंकि समाज को इसके ज्ञान कराना भी आवश्यक है।

उसके मन में इस विषय पर कई प्रकार के संकल्प तथा विकल्प उठ रहे थे, परन्तु उसने इस विषय में किसी को कुछ बताने की आवश्यकता नहीं समझी। वह अपने मन में एक योजना बना रहा था जो वह किसी को भी बताना नहीं चाहता था।

: 9 :

सौमित्र ने विहार की उपासना में जो प्रवचन दिया था, उसकी सूचना महामात्य को भी प्राप्त हुई थी। इसके उपरान्त विहार की चर्चा की सूचना भी महामात्य को मिली। महामात्य के कई निजी कर्मचारी प्रजा में चलनेवाली चर्चा की सूचना भी उसे दे रहे थे।

महामात्य जानता था कि महाप्रभु का प्रयास है अवन्ति में गण-राज्य स्थापित करके संघ द्वारा उसपर नियंत्रण करना। परन्तु महामात्य का अपना विचार ऐसा नहीं था। वह जानता था कि गण-राज्य स्थापित होने पर तथा बौद्ध संघ का उसपर प्रभुत्व होने पर देश में अव्यवस्था इतनी विस्तार पा जायेगी कि तब मगध को हस्तक्षेप करना पड़ेगा और यह असम्भव नहीं कि एक दिन अवन्ति राज्य मगध में विलीन हो जाये। वह ऐसा नहीं चाहता था। अतः वह अपनी योजना महाप्रभु से स्वतन्त्र रूप में चलाने लगा और महाप्रभु द्वारा फैलाये जा रहे विक्षोभ का लाभ उठाने की सोचने लगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्वप्रिया विहार की हलचल की सूचना उसे दे रही थी। एक दिन उसने सूचना दी कि महाप्रभु ने रामी, कुमकुम तथा पण्डित विश्वेश्वरनाथ के विषय में रहस्योद्घाटन कर दिया है तथा साथ ही महाराज एवं राजकुमार की निन्दा भी की है। इस पर महामात्य का मन बहुत विक्षुब्ध हो उठा। यह उसकी योजना के विपरीत था। उसने कहा, "महाप्रभु अत्यन्त मोटी बुद्धि का व्यक्ति है।"

"किस प्रकार?" सर्वप्रिया ने पूछा।

"इस प्रचार से तो प्रजा राजा के तथा राजकुमार के विरुद्ध हो जायेगी। यहां गणराज्य तो स्थापित हो सकेगा, परन्तु हम भी बौद्ध संघ के अधीन हो जाएंगे।'

"हम क्यों उसके अधीन हो जाएंगे?"

"गणराज्य में सामान्य बुद्धि के लोग, जो प्रजा को बहका तो सकते हैं परन्तु निर्माण कुछ नहीं कर सकते, शासक बन जाएंगे। साथ ही, इन शासकों को बौद्ध संघ की नीतियों के अनुकूल चलना होगा, अन्यथा संघ उनका भी विरोध करके उन्हें पदच्युत कर देगा। वस्तुतः बौद्ध संघ का राज्य हो जायेगा। हमारा लक्ष्य यह नहीं है। हम चाहते हैं कि राजकुमार का पद्मा से विवाह हो और वह महारानी बन सके। यह गणराज्य बनने से सम्भव नहीं होगा।"

"तो भगवन्! आप क्या करेंगे?"

"प्रजा राजकुमार का विवाह कुमकुम से सहन नहीं करेगी। कारण यह है कि कुमकुम नीच वर्ण की है। साथ ही, दोनों एक ही पिता की सन्तान होने से भाई-बहन हैं। जहां तक मेरी जानकारी है, दोनों इस बात को नहीं जानते। परन्तु अब वे जान जाएंगे और तब कदाचित् राजकुमार भी इस विवाह को पसन्द नहीं करेगा। मैं यह बात राजकुमार के कानों में डालना चाहता हूं, परन्तु इसका प्रबल प्रमाण मेरे पास नहीं है। वही मैं ढूंढ रहा हूं।"

सर्वप्रिया को अपने पति की योजना उचित प्रतीत हुई। अतः वह घटनाओं के स्वाभाविक गति से चलने की प्रतीक्षा करने लगी।

बौद्ध विहार में महाप्रभु के रहस्योद्घाटन से नगर-भर में चर्चा विस्तार पाने लगी थी। प्रजा में भी दो पक्ष हो गये थे। एक पक्ष इसकी घोर निन्दा कर रहा था तो दूसरा पक्ष पूछता था कि इसका प्रमाण क्या है? बौद्ध विहार से निकलने वाले समाचार सत्य नहीं हो सकते। इसके प्रमाण में इस पक्ष के लोग नन्दिनी तथा कल्याणी के उदाहरण प्रस्तुत कर देते थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस चर्चा की गूंज राजप्रासाद में भी पहुंची। इसपर महाराज विचार करने लगे कि अब राजकुमार के विषय में कुछ निर्णय हो जाना चाहिये। अतः एक दिन मंत्रि-मण्डल की बैठक में उन्होंने प्रश्न उपस्थित कर दिया। उन्होंने कहा, "हम चाहते हैं कि राजकुमार के विवाह का निश्चय हो जाना चाहिये।"

महामात्य रामानुज ने पूछ लिया, "तो महाराज ने इस विषय में कोई सम्बन्ध विचार किया है?"

"यह कार्य मंत्रि-मण्डल का है।"

"तो महाराज! इस विषय में मेरा एक सुझाव है।"

"क्या?"

"मैंने राजकुमार के लिए एक लड़की का प्रस्ताव रखा था। उसपर विचार किया जा सकता है।"

राजकुमार को विदित था कि महामात्य की पत्नी अपनी लड़की पदमा को लेकर राजप्रासाद में उपस्थित हुई थी। उसने उसमें अपनी अरुचि प्रकट की थी। अब पुनः वही प्रस्ताव उपस्थित होने पर उसने कह दिया, "मेरा प्रश्न यह है कि क्या राजकुमार का विवाह मंत्रि-मण्डल के विचार का विषय है? यह विवाह करनेवाले का निजी विषय नहीं है क्या?"

उत्तर महामात्य ने ही दिया। उसने कहा, "राजकुमार की पत्नी ही समय पर महारानी बनेगी। वह पूर्ण प्रजा की पूज्या होगी। अतः यह विषय राज्य से सम्बन्धित होने के कारण मंत्रि-मण्डल के विचार का विषय है ही।

महाराज ने पूछा, "और पण्डित विश्वेश्वरनाथ जी इस विषय में क्या सम्मति देते हैं?"

पंडित जी ने कहा, "मैं महामात्य के विचारों का समर्थन करता हूं, परन्तु इसके साथ ही मैं यह मानता हूं कि राज्य के प्रति उत्तरदायित्व के साथ-साथ राजकुमार के निजी विचारों का भी आदर होना चाहिये। राजा भी एक मानव होता है। इस कारण उसकी भावनाओं का भी आदर होना चाहिये। राजकुमार की रुचि तथा राज्य का कल्याण, इन दोनों में समन्वय होना चाहिये।"

"परन्तु पण्डित जी!" राजकुमार ने पूछा, "यदि प्रजा राजा अथवा उसकी होनेवाली पत्नी को पसन्द न करे तब क्या होगा?"

"एक बात इस अवस्था में सरल ही है कि प्रजा की रुचि के अनुकूल राजा अपनी पत्नी का निर्वाचन करे। राजा उस पटरानी से कम-से-कम एक सन्तान,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो राज्य का उत्तराधिकारी हो, उत्पन्न करे। तब वह अपनी रुचि की लड़की से विवाह कर सकता है, परन्तु इस द्वितीय पत्नी की सन्तान राज्यधिकारिणी नहीं हो सकती।"

"राजा अपनी रुचि की पत्नी से पहले विवाह क्यों न करे?"

"पहले विवाह करने की अवस्था में इस पत्नी से सन्तान पहले हो सकती है और प्रजा उसे नापसन्द कर सकती है। परिणामस्वरूप प्रजा में असन्तोष व्यापक हो सकता है। यह कहा जाता है," पंडित जी ने आगे कहा, "कि महापद्म के परिवार के अन्तिम शासक घनानन्द की सन्तान चन्द्रगुप्त थी और अवैध थी। उसने घनानन्द की हत्या करके राज्य हस्तगत कर लिया था।"

"परन्तु इसमें हानि क्या है?" राजकुमार ने कहा, 'मैं समझता हूं कि चन्द्रगुप्त घनानन्द की अपेक्षा अति योग्य शासक था।

"शासन में जो कुछ विशेषता थी," विश्वेश्वरनाथ का कहना था, "वह पंडित विष्णुगुप्त के कारण थी। उसमें चन्द्रगुप्त का कोई हाथ नहीं था।"

"पंडित जी! यहां भी कोई विष्णुगुप्त उत्पन्न हो सकता है।"

इस दिन की बैठक का कोई परिणाम नहीं निकला। केवल यह हुआ कि इस दिन मध्याह्नोपरान्त महामात्य की पत्नी सर्वप्रिया, महारानी से भेंट करने आ पहुंची। उसने यह प्रस्ताव रख दिया कि राजकुमार के पद्मा के साथ विवाह की घोषणा कर दी जाय। महारानी ने राजकुमार को भी बुला लिया। जब उसके सामने यह प्रस्ताव रखा गया तो उसने स्पष्ट कह दिया, "मैं यह विवाह स्वीकार नहीं करूंगा।"

महारानी दुर्गा ने पूछ लिया, "क्यों?"

"माता जी!" राजकुमार ने कहा, "जिस लड़की को मैंने पसन्द किया है उसकी तुलना आप पद्मा से कर लें—रूप, रंग, शिक्षा, ज्ञान तथा बुद्धि में। मैं समझता हूं कि इनमें से किसी भी बात में वह कम नहीं है। मैं यदि विवाह करूंगा तो उसी से करूंगा।"

"राजकुमार!" सर्वप्रिया ने पूछ लिया, "वह कौन है जिसे आप इस देश की पटरानी बनाना चाहते हैं?"

"एक है। उसका नाम है कुमकुम। मैं उसी से विवाह करूंगा और यदि महाराज अथवा मंत्रि-मण्डल उसे स्वीकार नहीं करेगा तो मैं राज्य पर अधिकार का त्याग कर दूंगा।" इतना कहके राजकुमार उठकर अपने कक्ष में चला गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसके चले जाने पर सर्वप्रिया भी उठकर बिना कुछ कहे चल दी।

महारानी ने उसी समय महाराज को बुला भेजा। महाराज आये तो महारानी ने सर्वप्रिया तथा राजकुमार की बात बता दी। महाराज ने कहा, "हम इसमें कुछ नहीं कर सकते।"

महारानी का कहना था, "मैं समझती हूं कि राजकुमार को अब कुमकुम के जन्म की बात बता देनी चाहिये।"

"हम एक अन्य बात का विचार कर रहे हैं।" महाराज ने कहा।

"क्या?"

"यदि रामी और कुमकुम चाहें तो राजकुमार का कुमकुम से विवाह हो जाय। यदि प्रजा इसे स्वीकार नहीं करेगी तो हम किसी अन्य बालक को गोद लेकर उसे युवराज घोषित कर देगे।"

"यह कुछ उचित प्रतीत नहीं हो रहा।" महारानी का कहना था।

"तब क्या किया जा सकता है? हम अपना दोष राजकुमार को बताने के लिए तैयार हैं, परन्तु हमें सन्देह है कि इससे भी राजकुमार कुमकुम से विवाह का विचार नहीं त्यागेगा। प्रजा भी उसका विवाह स्वीकार नहीं करेगी। इसी कारण हम इस विषय में मौन रहना चाहते हैं। साथ ही इस समय प्रजा में बौद्ध प्रचार के कारण असन्तोष विस्तार पा रहा है। यदि राज्य को बौद्ध संघ के हाथ का खिलौना बनने से रोकना है तो राजकुमार को पद से हटाकर किसी अन्य को युवराज घोषित करना पड़ेगा।"

महारानी इस सम्भावना पर गम्भीर हो गई। कुछ विचारकर उसने महाराज से कहा, "आप इस समय पंडित विश्वेश्वरनाथ जी को बुलाइये और उनसे सम्मति लीजिये।"

पंडित जी को बुलाया गया। जब वह आये तो उनके सम्मुख वस्तुस्थिति रखकर महाराज ने कहा, "राजकुमार यदि कुमकुम से विवाह नहीं भी करता, तो भी प्रश्न यह है कि वह किससे विवाह करे? वह महामात्य की लड़की से विवाह अस्वीकार कर गया है। इसका परिणाम यह होने जा रहा है कि महामात्य बौद्धों से मिलकर राज्य में विप्लव खड़ा करना चाहता है। अतः समस्या यह हो गई है कि महामात्य की लड़की से विवाह अथवा विद्रोह?"

पंडित जी ने कहा, "आप राजकुमार को बुलाइये। उससे सम्मति करके ही आप निर्णय लें।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजकुमार को भी बुलाया गया। उसके सम्मुख वस्तुस्थिति रखी गई। महाराज का कहना थ, "बौद्ध विद्रोह का कारण यह है कि कुमकुम एक छोटी जाति की कन्या है। इस बात की आड़ में बौद्ध लोग प्रजा को भड़का रहे हैं। दूसरी ओर महामात्य चाहते हैं कि पदमा से तुम विवाह स्वीकार कर लो। देखो, जहां तक मेरी जानकारी है महामात्य इस समय तुम्हारे उनकी पत्नी को सर्वथा इन्कार करने के उपरान्त कुछ षड्यन्त्र करने में संलग्न है। पिछले कुछ दिनों से उनके निवास पर संदिग्ध व्यक्तियों का आगमन बहुत बढ़ गया है। अब तुम बताओ कि तुम क्या चाहते हो?"

"पिता जी!" राजकुमार ने आंखें नीची कर कहा, "मैं राज्य पर से अपना अधिकार छोड़कर किसी गांव में जाकर साधारण जीवन व्यतीत करना चाहता हूं। कुमकुम को मैंने सन्देश भेजा है और वह भी मेरे साथ गांव जाने को तैयार है। वह केवल यह चाहती है कि उसके माता-पिता उसका कन्यादान करें। इसके लिए मैंने उसके पिता मोहन से बात करने के लिए उसे अपने कक्ष में बुला भेजा है।"

इस स्थिति में विवश होकर मुझे अपना उत्तराधिकारी किसी अन्य को बनाकर उसे युवराज-पद देना पड़ेगा।"

"पिता जी! मुझे राज्य-भोग की लालसा नहीं है। मैं कुमकुम को साथ लेकर किसी अज्ञात स्थान पर चला जाऊंगा।"

"अच्छी बात है। तुम कल प्रातः तक अपना निश्चय बता देना। मैं कल मंत्रि मण्डल की बैठक में अपने निर्णय की घोषणा करना चाहता हूं।"

"मैंने अपना निश्चय बता दिया है। मेरे निश्चय में बाधा है केवल कुमकुम का अल्पायु होना। इसी कारण उसके माता-पिता की स्वीकृति आवश्यक है। यदि उसके माता-पिता मान गये तो मंत्रि-मण्डल से कल ही अपना त्यागपत्र देकर मैं पृथक् हो जाऊंगा।"

राजकुमार उठकर गया तो महाराज और महारानी एक दूसरे का मुख देखने लगे। आज पहली बार महाराज के मन में यह विचार उठा कि वह दिन वास्तव में दुर्भाग्य का दिन था जिस दिन रामी उनके राजप्रासाद में आई थी।

महारानी ने कुछ विचारकर सेविका को भेज रामी को बुला लिया। रामी आ तो गई परन्तु उसका मुख विवर्ण हो रहा था। उसे अपनी बात बताने के स्थान महारानी ने पूछ लिया, "क्या बात है देवी! तुम्हारा मुख विवर्ण क्यों हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहा है?''

''महाराज! मैंने आपसे कई बार निवेदन किया है कि मुझे इस बात की स्वीककृति दी जाए कि मैं कुमकुम को उसके जन्म का रहस्य स्पष्ट कर दूं आप राजनैतिक कारणों से इसे पसन्द नहीं करते थे। साथ ही आपका अनुमान था कि राजकुमार उसे बिना विवाह के अपनी पत्नी बनाकर रखना स्वीकार कर लेगा। इस बात के लिए मैंने कुमकुम को भी तैयार कर लिया था। वह समझ चुकी थी कि वह द्वितीय श्रेणी की रानी रहेगी और उसकी सन्तान का राज्य पर कोई अधिकार नहीं होगा।

''परन्तु महाराज! अब जो समस्या उत्पन्न हुई है वह दो कारणों से है। एक ओर बौद्ध विहार से यह निरन्तर प्रचारित किया जा रहा है कि कुमकुम और उसके माता-पिता नीच जाति के हैं और राज्य हस्तगत करने का षड्यंत्र कर रहे हैं। दूसरी बात यह हो रही है कि इस समय महामात्य के सैकड़ों सेवक नगर-भर में घूम-घूमकर यह विख्यात कर रहे हैं कि मैं पण्डित विश्वेश्वरनाथ जी की लड़की हूं और कुमकुम आपकी सन्तान है, साथ ही राज्य में यह अनाचार हो रहा है कि राजकुमार का उसकी बहन कुमकुम के साथ विवाह किया जा रहा है; यह भारतीय धर्म तथा प्रथा की हत्या करके किया जा रहा है। वे सेवक आपको दुराचारी तथा धर्मभ्रष्ट घोषित कर रहे हैं। इस समय नगर में इतना असन्तोष फैला हुआ है कि कुछ भी अनिष्ट की सम्भावना की जा सकती है। कुमकुम के पिता मुझसे विवाद कर रहे हैं और सारा दोष मुझपर डाल रहे हैं।''

महाराज तथा महारानी गम्भीर विचार में पड़ गये।

रामी ने महाराज के मुख पर देखा। उसे आभास हुआ कि वह कुछ निश्चय लेने जा रहे है। अब उसने धीरे से कहा, ''महाराज! मैं समझती हूं कि जो भी आप निर्णय लें, तुरन्त लें, अन्यथा कुछ भी अनिष्ट हो सकता है। इसमें कुमकुम और पण्डित जी इत्यादि भी लपेट में आ सकते हैं। इसी निमित्त मैं कुमकुम से मिलने जाना चाहती थी कि आपका सन्देश मिला और मैं इस ओर चली आई हूं।''

महाराज ने अपने क्षत्रिय-स्वभाव से अपने व्यवहार का तुरन्त निश्चय कर कहा, ''रामी देवी! अब तक जो भूलें हमने की हैं, उनका निराकरण होना चाहिये। हम समझते हैं कि तुम तुरन्त कुमकुम से मिलकर उसे उसके जन्म का रहस्य प्रकट कर दो और साथ ही उसे लेकर किसी गुप्त स्थान पर चली जाओ। यह उसकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुरक्षा के लिए अत्यावश्यक है। दूसरी ओर हम महामात्य का प्रबन्ध करते हैं।''

रामी तुरन्त उठी ओर महाराज तथा महारानी को प्रणाम करके राजप्रासाद से निकलकर पंडित जी की पाठशाला को चल दी।

: 10 :

नगर में वास्तव में हलचल मच रही थी—उससे बहुत अधिक, जिसकी सूचना महाराज को मिली थी। प्रायः हर चौराहे पर लोग खड़े चर्चा कर रहे थे और इन लोगों में महामात्य के सेवक महाराज के अधर्मी तथा अनाचारी होने की घोषणा कर रहे थे। महामात्य के सेवकों का कहना था कि प्रजागण को चाहिये कि महाराज के व्यवहार पर अपना रोष प्रकट करे तथा उन्हें विवश करे कि रामी, कुमकुम और पंडित विश्वेश्वरनाथ को बहिष्कृत करें।

सेठ युगलकिशोर अपने व्यावसायिक कार्यालय में बैठा अपने कार्य में व्यस्त था कि उसे भी नगर की हलचल की सूचना मिली। उसने पूर्ण विवरण जाना और तुरन्त अपने कर्त्तव्य का निश्चय करके अपने निवास-स्थान को लौट पड़ा।

अपने गृह पर पहुंचकर उसने कल्याणी तथा मन्दाकिनी को बताया, ''मेरे कार्यालय में मेरे एक विश्वस्त कर्मचारी ने आकर बताया है कि नगर के चौराहे-चौराहे पर प्रजा की भीड़ एकत्रित है और नगर के कुछ ब्राह्मण तथा बौद्ध भिक्षु प्रजा को भड़का रहे हैं। उनका कहना है कि रामी देवी पंडित विश्वेश्वरनाथ की अवैध सन्तान है और उसकी मां पंडित जी की रखैल थी। साथ ही, रामी महाराज शूरसेन की रखैल है और कुमकुम रामी की महाराज से सन्तान है। अब रामी और पंडित विश्वेश्वरनाथ मिलकर षड्यंत्र कर रहे हैं कि राजकुमार का कुमकुम के साथ विवाह हो जाए जिससे सारा राज्य हस्तगत कर सकें। इस प्रकार नीच जाति की स्त्री की अवैध सन्तान को महारानी बनाने का षड्यंत्र रचा गया है। साथ ही भाई-बहन का विवाह करके अनाचार फैलाया जा रहा है। प्रजा को कहा जा रहा है कि वह राजप्रासाद पर पहुंचकर प्रदर्शन करे। साथ ही यह सूचना भी है कि पंडित विश्वेश्वरनाथ के गृह पर धावा बोलकर उन्हें अपने गृह से तथा बाद में नगर से भागने पर विवश कर दें। मुझे ऐसा प्रतीत हो रहा है कि बौद्ध भिक्षु कुमकुम का अपहरण करके उसे पहले अपने विहार में और पीछे अवन्ति से बाहर भेजना चाहेंगे।''

''तो क्या किया जा सकता है?''

''मैं इसी कारण यहां भागा चला आया हूं कि यदि आप चाहो तो कुमकुम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की रक्षा का प्रबन्ध कर सकती हो। जहां तक महाराज तथा राजकुमार की बात है, हम कुछ नहीं कर सकते। कुमकुम को बचाया जा सकता है, वह भी यदि अविलम्ब यत्न किया जाए।''

मन्दाकिनी ने कुछ विचारकर कहा, ''यदि आप कहें तो मैं उसे अपने साथ रथ पर बैठाकर अपने भाई के गृह पर छोड़ आ सकती हूं।''

कल्याणी ने कहा, ''मैं उसके साथ जाऊंगी।''

''ठीक है। मैं विचार कर रहा था कि नन्दिनी को उसके साथ भेज दिया जाए। यदि कल्याणी जा सकती है, तब भी ठीक है।''

मन्दाकिनी ने तैयार होने में विलम्ब नहीं किया। उसने कुछ धन लिया और रथ निकलवाकर तुरन्त विद्यालय की ओर चल दी। कल्याणी उसके साथ थी।

मन्दाकिनी के भाई का गृह अवन्ति-राज्य से बाहर था और उज्जयिनी से डेढ़ प्रहर के अन्तर पर था। उसका विचार था कि कुमकुम को वहां छोड़कर रात्रि से पूर्व लौट आयेगी।

विद्यालय के मार्ग में मन्दाकिनी और कल्याणी ने अनुभव किया कि वास्तव में लोगों में उत्तेजना है। स्थान-स्थान पर झुण्ड-के-झुण्ड चर्चा कर रहे हैं। उसे भय था कि कही उनको विलम्ब न हो जाए।

कुमकुम और नन्दिनी अपने आगार में बैठी स्वाध्याय कर रही थीं। पंडित जी उस समय राजप्रासाद की ओर गये हुए थे। महाराज का प्रतिहार उन्हें बुलाकर ले गया था।

कल्याणी ने कुमकुम ओर नन्दिनी को नगर की स्थिति बताई तो कुमकुम ने पूछ लिया, ''यह सब कैसे हुआ?''

''प्रजा में यह विख्यात हो रहा है कि तुम वास्तव में महाराज शूरसेन की पुत्री हो और तुम अपने भाई राजकुमार से विवाह करना चाहती हो जो कि अधर्म है।''

''परन्तु क्या यह सत्य है?''

''सत्य अथवा असत्य हम कुछ नहीं जानतीं। यह नगर में विख्यात हो रहा है। यह सम्भावना है कि प्रजागण इस पाठशाला पर आक्रमण कर पंडित जी को यहां से भगा देंगे और तब तुम्हारा अपहरण कर तुम्हें विहार में भेज दिया जायेगा।''

जब कल्याणी कुमकुम को स्थिति समझा रही थी, मन्दाकिनी भी माता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामेश्वरीदेवी के पास पहुंचकर उन्हें परिस्थिति की गम्भीरता से परिचित कर रही थी। रामेश्वरी ने तुरन्त निश्चय किया कि किसी प्रकार कुमकुम को यहां से हटा देना चाहिये। अतः वह मन्दाकिनी को लेकर स्वयं कुमकुम के आगार में चली आई।

कुमकुम ने रामेश्वरीदेवी को आते देख पूछ लिया, "माता जी! नगर में मेरे विषय में जो किंवदन्ती है, क्या यह सत्य है?"

"देखो कुमकुम! इस विषय में चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है। मैं तो तुम्हें यह कहने आई हूं कि अभी कुछ दिनों के लिए तुम यहां से टल जाओ।"

"माता जी! यह मैं इस कारण पूछ रही हूं कि यदि यह सत्य नहीं तो मैं राजकुमार के साथ ही यहां से जाना चाहती हूं। उनका सन्देश मुझे मिला है कि उन्होंने राज्य त्याग दिया है और मुझे लेकर कहीं अन्यत्र चले जाना चाहते हैं। परन्तु यदि यह किंवदन्ती सत्य है कि हम दोनों भाई-बहन हैं, तब मैं राजकुमार जी को बताये बिना यहां से लुप्त हो जाना चाहती हूं।"

रामेश्वरीदेवी ने गम्भीर होकर कहा, "एक बार तुम्हारी माताजी ने यह स्वीकार किया था कि तुम महाराज शूरसेन की पुत्री हो। यही कारण है कि वह तुम्हें राजकुमार से विवाह की अनुमति नहीं दे रही थीं। यह रहस्य कई राजनैतिक कारणों से वह प्रकट नहीं होने देना चाहती थी। कदाचित् महाराज भी नहीं चाहते थे।"

कुमकुम ने अत्यन्त दुःख अनुभव करते हुए कहा, "इसपर भी मां को मुझे यह बताना चाहिये था।" इतना कहकर कुमकुम उठ खड़ी हुई और कहने लगी, "मैं इसी समय यह गृह छोड़कर जा रही हूं। मेरा गन्तव्य स्थान किसी को भी, विशेषतया राजकुमार जी को विदित नहीं होना चाहिये।"

नन्दिनी ने कुमकुम को कहा, "मैं तुम्हारे साथ चल रही हूं।"

कल्याणी और नन्दिनी में बातचीत हुई। कल्याणी राजकुमार को पूर्ण स्थिति से अवगत करने के लिए उज्जयिनी में ही रुक गई और नन्दिनी तथा कुमकुम मन्दाकिनी के साथ उसके रथ में बैठकर रोहतास गांव की ओर चल दीं।

उनके जाने के पश्चात् कल्याणी ने सेठ युगलकिशोर द्वारा प्राप्त पूर्ण सूचना तथा नगर की हलचल बतानी आरम्भ कर दी। इस पर रामेश्वरीदेवी को पंडित जी के विषय में चिन्ता लगने लगी। पंडित जी अभी राजप्रासाद से लौटे नहीं थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक प्रहर पश्चात् पंडित जी लौटे तो रामेश्वरीदेवी ने बताया कि कुमकुम और नन्दिनी मन्दाकिनी के साथ चली गई हैं। पंडित जी ने कहा, ''जो बात मैं आज से पांच वर्ष पूर्व कह रहा था, वह अब करनी पड़ी है। वह भी राज्य को विप्लव के द्वार पर खड़ा करके। यदि कुमकुम को उसके जन्म का रहस्य तभी बता दिया जाता तो ऐसा कुछ नहीं होता।

पंडित जी ने गृह की सुरक्षा के लिए मिले दो प्रतिहारों में से एक को सेनाध्यक्ष के पास भेज दिया। उन्होंने यह मांग की कि कुछ दुष्ट लोगों द्वारा उनके गृह पर आक्रमण का भय है, अतः गृह तथा उनके परिवार की सुरक्षा के लिए कुछ सशस्त्र सुभट्ट नियुक्त कर दिये जाएं।

सेनाध्यक्ष को यह सूचना भी मिली थी कि पंडित जी के निवास स्थान के साथ-साथ राजप्रासाद पर भी भीड़ द्वारा घेराव किया जानेवाला है। अतः उन्होंने पचास सुभट्ट पंडित जी के निवास-स्थान पर भेज दिये तथा दो सौ सुभट्टों को राजप्रासाद की सुरक्षा के लिए नियुक्त कर दिया। इसके साथ ही सैनिक शिविर से एक सहस्र अश्वारोहियों को नगर में स्थान-स्थान पर भ्रमण करके शान्ति स्थिर रखने के लिए नियुक्त कर दिया।

जब रामी पंडित जी के निवास पर पहुंची, राज्य के सैनिक पहुंच चुके थे। परन्तु साथ ही एक भिक्षु भद्रायण के नेतृत्व में लगभग पांच सौ लोग पंडित जी के गृह के बाहर एकत्रित हो गये थे। गृह के बाहर पचास सुभट्ट कमर में खड्ग लटकाये तथा हाथों में भाले लिये किसी भी आक्रमण के लिए तैयार खड़े थे। उन्हें देख लोगों की भीड़ कुछ अन्तर पर ही खड़ी हो गई और विचार करने लगी कि अब उन्हें क्या करना चाहिये? भीड़ में केवल कुछ ही लोगों के पास लाठियां थीं।

इस समय भीड़ में से एक व्यक्ति आगे आया और भिक्षु भद्रायण से पूछने लगा, ''भन्ते! अब बताइये, हम क्या करें?''

भिक्षु भद्रायण भी सुभट्टो को प्रतिरोध के लिए तत्पर देख शान्त हो गया था। पूछे जाने पर उसने कहा, ''मैं किसी भी प्रकार की हिंसा नहीं चाहता।''

''तो हमें यहां किसलिए एकत्र किया गया है?''

''हम यहां अपराधियों को पकड़कर संघ की शरण में भेजने के लिए आये थे।''

''उनकी इच्छा से अथवा बल पूर्वक?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इच्छा से तो कोई भी न्यायधीश के सम्मुख नहीं जाता।"

"परन्तु भन्ते! बलपूर्वक कार्य के लिए प्रेरित करना भी तो हिंसा का एक रूप है! अब तो वह भी सम्भव नहीं। ये सुभट्ट हमारा प्रतिरोध करने के लिए खड्ग-भाले लिये तैयार हैं।"

भिक्षु भद्रायण भी समझ नहीं सका कि अब क्या करे। तभी उसने देख कि सुभट्टों के नायक ने सुभट्टों को कुछ आदेश दिया है। वह समझा कि उन्हें भीड़ पर आक्रमण करने के लिए कह रहा है।

सुभट्टों को देखकर भीड़ में से लोग भयभीत हो इधर-उधर खिसकने लग गये थे। वह व्यक्ति जो आगे बढ़कर भिक्षु से बात करने लगा था, लोगों से कहने लगा, "चलो भाई, चलो! यह भिक्षु हमें बहकाकर ले आया है। यदि पंडित जी दुराचारी हैं तो अपने कर्मों का फल भोगेंगे। हम क्यों परेशान हों?"

इतना कहकर वह अपने कुछ साथियों को लेकर जाने लगा। उसे देख कर अन्य लोग भी अपने-अपने घरों को लौटने लगे।

पंडित विश्वेश्वरनाथ अपने गृह की छत पर खड़ा होकर भीड़ को छंटते देखकर मन में सन्तोष अनुभव कर रहा था। एकाएक उसने देखा कि भीड़ में रामी खड़ी है। रामी गृह की ओर आना चाहती थी कि भीड़ को वहां एकत्रित होते देख उसमें जा खड़ी हुई थी। पंडित जी ने एक प्रतिहार को बुलाकर कहा, "वह देखो, भीड़ में एक स्त्री फूलदार साड़ी पहने खड़ी है। उसे बुला लाओ। कदाचित् सुभट्टों को देखकर वह भीतर आने से भयभीत है।"

प्रतिहार गया और रामी को बुलाकर ले आया। पंडित जी ने पूछा, "रामी! तुम यहां कैसे?"

"गुरु जी! मैं कुमकुम से मिलने आई थी, परन्तु यहां भीड़ देखकर यह जानने के लिए ठहर गई थी कि देखूं ये क्या करते हैं।"

"रामी! यह सब झगड़ा कुमकुम के कारण ही है। प्रजागण उसका विवाह राजकुमार से नहीं चाहते और इसका विरोध करने के लिए घेराव कर रहे थे। परन्तु मन्दाकिनी देवी इस सम्भावना पर पहले ही आ गई थी। वह कुमकुम को अपने साथ ले गई है। वह उसे अपने भाई के पास रोहतास गांव छोड़ने चली गई है। रोहतास गांव विदिशा राज्य में है और विदिशा बौद्ध राज्य है। इसी कारण उसका वहां जाना हमें गुप्त रखना चाहिये।"

रामी को इससे सन्तोष अनुभव हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: 11 :

भीड़ का दूसरा लक्ष्य था राजप्रासाद। लोग महाराज तथा राजकुमार का घेराव करके उनसे वचन लेना चाहते थे कि राजकुमार का विवाह रामी कहारिन की लड़की से नहीं होगा।

घेराव की सूचना सबसे पहले राजकुमार को प्राप्त हुई थी। उसे बताया गया कि सहस्रों नागरिक राजप्रासाद के द्वार पर भीतर आने के लिए उतावले खड़े हैं और सैनिकों ने उन्हें द्वार पर रोक रखा है।

राजकुमार इस सूचना पर महाराज से मिलने उनके कक्ष में चला गया।

राजप्रासाद के द्वार पर भीड़ का नेतृत्व करनेवाले एक भिक्षु ने भीतर आकर महाराज से भेंट करने की इच्छा प्रकट की तो द्वारपाल ने पूछा, ''भेंट हो सकती है, परन्तु कौन भेंट करेगा?''

भिक्षु ने कहा, ''हम सब भेंट करना चाहते हैं।''

द्वारपाल का कथन था, ''सब भीतर नहीं जा सकते। आप में से कोई एक व्यक्ति जा सकता है और महाराज के सम्मुख अपनी मांग रख सकता है।

भिक्षु द्वारपाल का मुख देखने लगा। इस समय भीड़ की अगली पंक्तियों में खड़े लोगों ने घोष कर दिया, ''हम सब मिलना चाहते हैं!''

द्वारपाल ने कहा, ''आपमें से एक अथवा दो व्यक्ति जो मिलना चाहते हैं अपना नाम दे दें। महाराज की स्वीकृति आने पर आप भीतर जा सकेंगे, परन्तु यदि बल-प्रयोग किया जो राज्य के सुभट्ट इसका प्रतिकार करेंगे।'' इतना कहकर द्वारपाल ने राजप्रासाद के द्वार पर नियुक्त सशस्त्र सुभट्टों की ओर संकेत कर दिया।

भीड़ का ध्यान सुभट्टों की ओर गया तो उन्होंने देखा कि दो सौ सुभट्ट हाथ में भाले लिये तैयार खड़े हैं।

इसके साथ ही द्वारपाल ने राजप्रासाद के भीतर प्रांगण की ओर संकेत कर दिया।

भीड़ ने देखा कि भीतर प्रांगण में एक सहस्र सैनिक पंक्ति-बद्ध नियुक्त हैं।

इस संकेत के उपरान्त द्वारपाल ने कहा, ''इस पर भी यदि आपका कोई प्रमुख है तो उसे भीतर जाने की स्वीकृति प्राप्त हो सकती है।''

भिक्षु ने विचार किया कि वह स्वयं भीतर जाये और महाराज से भेंट करके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रजा की मांग महाराज के सम्मुख प्रस्तुत कर दे। अतः उसने अपना नाम लिखकर भीतर भेज दिया।

महाराज तथा महारानी को भी सूचना मिल चुकी थी कि नगर में विद्रोह हो गया है और लोगों की भीड़ राजाप्रासाद की ओर चली आ रही है। राजकुमार भी उनके पास आ पहुंचा था और सब यही विचार कर रहे थे कि क्या किया जाय, जब प्रतिहार भिक्षु धनानन्द का नाम लेकर आया कि वह महाराज से भेंट करना चाहता है। महाराज ने स्वीकृति दी तो प्रतिहार उसको बैठक में ले आया। महाराज तथा राजकुमार दोनों उससे मिलने बैठक में आ पहुंचे।

भिक्षु ने 'संघं शरणं गच्छामि' का घोष किया और महाराज की आज्ञा की प्रतीक्षा करने लगा।

महाराज ने पूछा, "बैठिये भदन्त! कैसे कष्ट किया है?"

भिक्षु ने बैठकर कहा, "महाराज! नगर की सम्पूर्ण प्रजा, बौद्ध भिक्षु तथा प्रतिष्ठित जन आपसे यह मांग करने आये हैं कि राजकुमार का विवाह रामी कहारिन की लड़की कुमकुम से नहीं होना चाहिये।"

"क्यों?" राजकुमार ने पूछ लिया।

"कुमार! जन-गर्जन में कारण बताना कठिन होता है। यह प्रजा की मांग है।"

अब महाराज ने कहा, भदन्त! तुम पीत वस्त्रों से बौद्ध भिक्षु प्रतीत होते हो। भगवान् तथागत का वचन है कि सब मनुष्य समान हैं, फिर तुम किस प्रकार यह मांग कर सकते हो कि कुमकुम कहारिन की सन्तान होने से नीच कुल की है?"

महाराज के इस कथन पर भिक्षु झेंप गया। इसपर भी उसने कह दिया, "महाराज! यह प्रजा की मांग है। इसमें युक्त का प्रश्न नही है।"

"तो सुनो!" महाराज ने कहा, "राजकुमार का विवाह मंत्रि-मण्डल के अनुमति से ही होगा। अतः प्रजा को चाहिये कि अपनी मांग मंत्रिमण्डल के सम्मुख रखे।"

"परन्तु महाराज! महामात्य ने यह घोषणा की है कि राजकुमार मंत्रि-मण्डल की सम्मति नहीं मान रहे ।"

"अब बौद्धों का समर्थन देखकर वह मान जाएंगे। राजकुमार जानते नहीं थे कि राजनीति की आंधी में बौद्धों के मानव-समता तथा अहिंसा के सिद्धान्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वायु के बवण्डर में तिनके की भांति उड़ जाएंगे। भन्ते! जाओ प्रजागण को आश्वासन दे दो कि मंत्रि-मण्डल की इच्छा का पालन राजकुमार करेंगे। उन्हें अपनी मांग मंत्रि-मण्डल के सम्मुख रखनी चाहिये, और यह भी प्रजा को कह दो कि यदि राजकुमार ने मंत्रि-मण्डल का निर्णय स्वीकार नहीं किया तो वह युवराज-पद से हटा दिये जाएंगे।''

इस आश्वासन पर भिक्षु घनानन्द लौट गया और राजप्रासाद के बाहर एकत्रित भीड़ को महामात्य के गृह पर चलने की बात कहने लगा।

रात्रि कि द्वितीय प्रहर के आरम्भ में महामात्य ने एक अत्यावश्यक बैठक मंत्रि-मण्डल के सदस्यों की अपने निवास-स्थान पर बुला ली। इस बैठक की सूचना महाराज को नहीं होने दी गई।

पांचों सदस्य उपस्थित तो हुए, परन्तु सेनाध्यक्ष ने कह दिया, ''श्रीमान महामात्य! आपकी यह बैठक अनियमित है। कारण यह है कि दो सदस्यों की इसकी सूचना नहीं भेजी गई है। मंत्रि-मण्डल के अध्यक्ष महाराज हैं और उनको भी इस बैठक की सूचना नहीं भेजी गई। प्रथा यह है कि मंत्रि-मण्डल अपनी सम्मति महाराज को देता है और महाराज उस सम्मति के अनुसार आदेश प्रसारित करते है।...

''अतः यदि आपने केवल विचार-विनिमय करना है तो ठीक है, परन्तु हम उसपर कार्रवाई नहीं कर सकेंगे।''

महामात्य की योजना यह थी कि किसी प्रकार सेनाध्यक्ष उसके पक्ष में जो जाय तो रातोंरात विप्लव किया जा सकता है। अतः उसने कहा, ''सेनाध्यक्ष! जब महाराज ही मंत्रि-मण्डल का विरोध करने लग जाये तो क्या किया जा सकता है?''

''अभी तक ऐसा कोई अवसर नहीं आया।''

''आया तो है! मंत्रि-मण्डल राजकुमार का विवाह एक दासी की पुत्री से स्वीकार नहीं करता और महाराज इस विवाह को आशीर्वाद देना चाहते हैं।''

''इसका कोई प्रमाण नहीं है।''

''प्रमाण तो है। अभी तक वह दासी महाराज तथा महारानी की कृपापात्र है। राजकुमार के सन्देश प्रतिदिन दासी की पुत्री को भेजे जा रहे हैं और षड्यंत्र रचा जा रहा है।''

सेनाध्यक्ष यह तो जानता था कि महामात्य अपनी लड़की का विवाह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजकुमार से करना चाहता है परन्तु महामात्य ने जो आरोप लगाये थे, उसका कोई उत्तर उसके पास नहीं था। उसने कहा, "मैं समझता हूं कि महामात्य को कुछ भ्रम हो गया है। अभी तक कोई ऐसी बात नहीं हुई जिसमें महाराज मंत्रि-मण्डल के स्पष्ट निर्णय का विरोध किया हो। अतः मैं इस अवैध बैठक में सम्मिलित नहीं हो सकता।"

इतना कहकर सेनाध्यक्ष उठकर महामात्य के गृह से बाहर निकल गया।

इस पर भी शेष चार मंत्रियों ने एक प्रस्ताव पारित करके उस पर हस्ताक्षर कर दिये। इस प्रस्ताव में उन्होंने निर्णय लिया कि राजकुमार ने एक नीच जाति की कन्या से विवाह करके उसे पटरानी बनाने का यत्न किया है, इस कारण मंत्रि-मण्डल के हम चार सदस्य यह चाहते हैं कि राजकुमार राहुल को उत्तराधिकार से वंचित किया जाय। साथ ही पण्डित विश्वेश्वरनाथ राजकुमार का पक्ष ले रहे हैं और राज्य पर नियंत्रण रखने का षड्यंत्र रच रहे हैं, इस कारण उन्हें मंत्रि-मण्डल की सदस्यता से वंचित किया जाय और उनकी गतिविधियों पर जांच बैठाई जाय।

यह प्रस्ताव उसी समय विशेष दूतों के हाथ महाराज के पास भेज दिया गया।

महाराज अभी सोने की तैयारी कर रहे थे कि उन्हें महामात्य का दूत मंत्रि-मण्डल का निर्णय देने आ पहुंचा। महाराज ने वह निर्णय लिया और उस पढ़ा। पढ़कर उन्होंने तुरन्त अपना आदेश लिख दिया, "हम मंत्रि-मण्डल के निर्णय को स्वीकार करेंगे, परन्तु मंत्रि-मण्डल की यह बैठक अवैधानिक है। हम आदेश देते हैं कि कल प्रातः हमारे बैठकगृह में मंत्रि-मण्डल की बैठक हो। मंत्रि-मण्डल जो भी निर्णय लेगा, हम उसके अनुसार कार्रवाई करेंगे।"

महाराज का यह आदेश उसी समय महामात्य के पास भेज दिया गया।

इसी समय कल्याणी राजकुमार के कक्ष में मिलने पहुंची हुई थी। उसने राजकुमार को बताया, "राजकुमार! कुमकुम किसी अज्ञात स्थान को चली गई है।"

"किसके साथ गई है?"

"अपनी सखी नन्दिनी के साथ।"

राजकुमार को भय हो गया कि कहीं वे विहार में ने चली गई हों। उसने पूछा, "कहां जा सकती हैं?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पता नहीं।" कल्याणी का उत्तर था।

"क्या बौद्ध विहार जा सकती हैं?"

"कुछ कहा नहीं जा सकता।"

"कुमकुम की माता साथ में हैं?"

"नहीं। उनको भी इसका ज्ञान नहीं है।"

"मेरे सेवक ने मुझे बताया है कि नगर में यह चर्चा है कि वह मेरी बहन है?"

"राजकुमार! चर्चा तो हमने भी सुनी है, परन्तु इसकी पुष्टि तो महाराज अथवा कुमकुम की माता जी ही कर सकती हैं।"

"और तुम यह सब बताने किसलिए हमारे पास आई हो?"

"कुमकुम जाने से पूर्व यह सन्देश छोड़ गई थी कि आपको यह सूचना दे दी जाय कि वह अज्ञात स्थान को चली गई है और उसकी खोज न की जाय।"

कल्याणी की बातें सुनकर राजकुमार का मुख पीत-वर्ण हो गया था। वह किंकर्तव्यविमूढ़ हो रहा था। अचानक उसने कहा, "अच्छा, अब तुम जा सकती हो। मुझे भी कुछ ऐसा ही पग उठाना पड़ेगा।"

"कैसा पग, राजकुमार?"

"अभी मैं कुछ नही बता सकता।"

दिन निकलने तक नगर में शान्ति प्रतीत होने लगी थी। सबसे विचित्र बात यह थी कि महाराज का पक्ष लेनेवाले भी अब आगे आ रहे थे। जहां कहीं लोगों की भीड़ एकत्र होती तथा उसमें उत्तेजना फैलती, पण्डित विश्वेश्वरनाथ के दूत उससे कहने लगते, "जो कुछ भी महाराज के विरुद्ध कहा जा रहा है, वह बौद्ध भिक्षु ही कह रहे हैं। ये भिक्षु वही हैं जिन्होंने भिक्षुणी नन्दिनी तथा कल्याणी को विहार में बन्दी बनाकर रखा था। विहारों में जो दुराचार होता है, उससे कौन परिचित नहीं! भिक्षु विश्वसनीय नहीं हो सकते।"

महामात्य को महाराज का लिखित आदेश प्राप्त हुआ तो वह विचार करने लगा कि इस स्थिति में क्या किया जाय? उसकी योजना असफल होती दिखाई पड़ रही थी। सबसे पूर्व सेनाध्यक्ष उसके पक्ष में नहीं हो सका। नगर में प्रयत्न करने पर भी उपद्रव नहीं हो सका। पण्डित विश्वेश्वरनाथ पाठशाला में सुरक्षित बैठा था। उसका अनुमान था कि क्षत्रिय-वर्ग महाराज तथा राजकुमार का विरोध करेगा, परन्तु सेनाध्यक्ष के साथ-साथ सैनिक भी महाराज के प्रति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निष्ठावान् बने हुए थे।

अभी भी वह आशा कर रहा था कि मंत्रि-मण्डल के बहुमत उसके साथ है और बहुमत के निर्णय के अनुसार महाराज ही राजकुमार को राज्यधिकार से वंचित कर देंगे। तब अवसर आयेगा कि महामात्य अवन्ति में गणराज्य स्थापित करके, स्वयं गणपति बन सके।

महाराज की आज्ञा आने पर उसने अपने पक्ष के चारों मंत्रियों को अपने निवास पर एकत्रित होने के लिए सूचना भेज दी। मंत्रि-मण्डल में जाने से पूर्व वह उन्हें अपने पक्ष में दृढ़ कर लेना चाहता था।

परन्तु उन मंत्रियों में से कोई भी उसके निवास-स्थान पर नहीं आया। उन सबको महाराज की सूचना मिल चुकी थी कि मंत्रि-मण्डल की बैठक राजप्रासाद में हो रही है। अतः महामात्य के सन्देश पर सबने उत्तर भेज दिया कि अब वे राजप्रासाद में ही मिलेंगे। वास्तव में तीनों मंत्री अनुभव कर रहे थे कि महामात्य का पक्ष सर्वथा न्यायपूर्ण नहीं है। साथ ही महाराज ने यह आश्वासन दे दिया था कि मंत्रि-मण्डल का निर्णय उन्हें पूर्णतया मान्य होगा।

मंत्रियों के आने से इन्कार करने पर महामात्य को निराशा हुई। नगर से भी उसे सूचना मिल रही थी कि अब प्रजा में से लोग महाराज के पक्ष में होते जा रहे हैं, विशेषतया बौद्धों के हस्तक्षेप के कारण लोग विक्षुब्ध हो उठे हैं। बौद्धों के प्रति प्रजा के मन में असन्तोष है।

द्वितीय प्रहर के आरम्भ में मंत्रि-मण्डल की बैठक आरम्भ होने वाली थी। अतः महामात्य तैयार होकर राजप्रासाद के लिए अपने गृह से निकला। उसके निकलते ही बीस सुभट्ट उसके आगे-पीछे होकर उसके साथ चलने लगे। महामात्य इससे घबराया। उसने समझा कि उसे बन्दी बनाया जा रहा है। उसने उनके नायक से पूछ लिया, "तुम लोग किसकी आज्ञा से यहां आये हो?"

"सेनाध्यक्ष कृष्णदेव जी की।"

"क्या आज्ञा है?"

"सभी मन्त्रियों को सुरक्षा के साथ राजप्रासाद तक लाया जाय। प्रजा में बड़ी उत्तेजना है। उस उत्तेजना के कारण आपको हानि न हो, इसीका हमें ध्यान रखना है।"

सेनानायक के इस कथन पर महामात्य को सन्तोष हो गया।

महाराज के बैठकगृह में मंत्रि-मण्डल के अन्य सदस्य भी उपस्थित थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केवल राजकुमार उनमें नहीं था। शेष छः मंत्री जब एकत्र हो गये तो महाराज की अनुमति प्राप्त करके सचिव ने इस बैठक के लिए विचार-विनिमय का विषय बता दिया। विचारणीय विषय दो थे—एक नगर में हलचल तथा दूसरा राजकुमार के विषय में।

जब सचिव विषय की घोषणा कर चुका तो महाराज ने कहा, "विचार आरम्भ करने से पूर्व हम यह आपको बताना चाहते हैं कि कल मध्याह्न पूर्व से पण्डित विश्वेश्वरनाथ जी के गृह से कुमकुम लापता है। यह सूचना मिली है कि वह एक रथ पर सवार होकर विदिशा के रोहतास गांव को गई थी। यह हमारे राज्य की सीमा के पार है। उसके साथ नगर के सेठ नगर के सेठ युगलकिशोर की पत्नी भी थीं।...

"सेठ युगलकिशोर की पत्नी आज लौटी हैं तथा उन्होंने यह सूचना दी है कि रात्रि में वह अपनी सखी नन्दिनी और कुमकुम के साथ एक ही आगार में सोई थीं, परन्तु प्रातःकाल वे दोनों अपने आगार में नहीं मिलीं। वे वहां से भी लापता हो गई हैं। राज्य की ओर से उनकी खोज का प्रबन्ध करने के उद्देश्य से सेठ की पत्नी लौट आई हैं और उन्होंने यह याचना की है कि उनकी खोज की जाये। यह सन्देह किया जा रहा है कि वे किसी विहार में बन्दी बना ली गई हैं अथवा उन्होंने आत्महत्या कर ली है।...

"दूसरा समाचार यह है कि राजकुमार अपने कक्ष में नहीं हैं। सूचना यह प्राप्त हुई है कि आज प्रातः वह बौद्ध विहार में पहुंचे थे। वहां पहुंचकर उन्होंने महाप्रभु से दीक्षा ले ली है और वह बौद्ध भिक्षु बन गये हैं। राजकुमार की माता विहार में उनसे मिलने गई हैं, परन्तु अभी तक लौटकर नहीं आईं।"

महाराज के इस कथन पर पण्डित विश्वेश्वरनाथ ने कह दिया, "इस अवस्था में राजकुमार के विषय में कुछ भी विचार करना अव्यावहारिक होगा।"

महाराज ने पुनः कहा, "राजकुमार के राजप्रासाद से बाहर जाने तक की सूचनां यह थी कि राजकुमार यह वचन दे चुके थे कि यदि वह कुमकुम से विवाह करेंगे तो राज्य पर से अधिकार त्याग देंगे। इसके साथ यह भी सूचना मिली है कि उन्होंने कुमकुम से विवाह का विचार त्याग दिया था। इसपर भी वह विहार में क्यों गये तथा वहां जाकर क्या बात हुई है कि बौद्ध भिक्षु बन गये हैं, इस विषय में जांच हो रही है।"

इसके उपरान्त सभी मंत्रियों ने यही निर्णय लिया कि राजकुमार का विषय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छोड़कर दूसरे विषय पर विचार किया जाय। अब महामात्य ने कहा, ''रात्रि को नगर में शान्ति रही है। आज प्रातः भी किसी प्रकार की दुर्घटना की सूचना नहीं हैं। सैनिक नगर में स्थान-स्थान पर नियुक्त हैं। लोग अपने साधारण दैनिक कार्यों में संलग्न है। अतः इस विषय में कोई विशेष चर्चा करने की आवश्यकता नहीं है। जो हलचल मची थी, मैं समझता हूं कि महाराज के इस आश्वासन पर कि मंत्रि-मण्डल का निर्णय उन्हें मान्य होगा तथा राजकुमार यदि मंत्रि-मण्डल के निर्णय के अनुसार नहीं चलेंगे तो राज्य पर से अधिकार त्याग देंगे, अब हलचल का कोई कारण नहीं रहा।''

इस प्रकार मंत्रि-मण्डल की बैठक समाप्त हो गई।

: 12 :

ज्यों ही मन्दाकिनी रोहतास गांव से लौटी तथा उसने सूचना दी कि कुमकुम लापता हो गई है, रामी एक भाड़े का रथ लेकर स्वयं रोहतास गांव की ओर चली गई। मध्याह्न की चली वह सूर्यास्त के समय ही वहां पहुंची और वहां पहुंचते ही उसने जांच-पड़ताल आरम्भ कर दी।

मन्दाकिनी के भाई ने रामी के पहुंचने से पूर्व यह पता कर लिया था कि पिछली रात्रि भोजन के उपरान्त नन्दिनी गृह से बाहर निकली थी। उसने एक रथ बीस स्वर्ण देकर भाड़े पर लिया था। मध्य रात्रि के उपरान्त वह और कुमकुम चुपचाप घर से निकलीं और नियुक्त रथ पर बैठकर उत्तर की ओर चली गई हैं। यह अनुमान है कि वे हरिद्वार को गई हैं।

रामी उस रात्रि रोहतास गांव में ठहरी और अगले दिन प्रातः उत्तर दिशा में हरिद्वार की ओर चल दी। जाने से पूर्व उसने एक व्यक्ति को उज्जयिनी की ओर पण्डित विश्वेश्वरनाथ के पास अपनी यात्रा का लक्ष्य-स्थान तथा कुमकुम की जो सूचना मिली थी, उसका विवरण भेज दिया।

पण्डित जी को जब रामी का पत्र मिला तो उन्होंने मोहन को बुलाया और उसे रामी के पीछे हरिद्वार जाने की प्रेरणा दे दी। मोहन सीधा महाराज से अवकाश लेने गया और महाराज के कारण पूछने पर उसने पण्डित जी को प्राप्त सूचना दे दी और कहा कि पण्डित जी चाहते हैं मैं हरिद्वार जाऊं और उनको ढूंढ़ूं, यदि किसी प्रकार के अनिष्ट की सम्भावना है तो उन्हें बचाने का प्रयास करूं। महाराज ने उसे जाने की स्वीकृति दे दी।

महारानी दुर्गा को जब यह सूचना मिली कि राजकुमार विहार को गये हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और सम्भावना यह है कि वे बौद्ध भिक्षु बन गये हैं तो तुरन्त अपने रथ पर सवार हो वह विहार जा पहुंचीं।

पहले तो उन्हें विहार में प्रवेश की अनुमति नहीं मिली, परन्तु जब महारानी ने अपने साथ आये सशस्त्र सैनिकों की ओर संकेत किया तो उन्हें भीतर ले-जाकर प्रतीक्षालय में बैठा दिया गया तथा राजकुमार उनके सामने उपस्थित कर दिया। राजकुमार ने महारानी को देखा तो अपनी झोली आगे कर दी और मुख से कहने लगा, "भिक्षां देहि।"

परन्तु राजकुमार के मुख से स्वर नहीं निकले। उनका गला रुंध गया था।

महारानी ने हाथ के कंगन निकालकर राजकुमार की झोली में डाल दिये और फिर कहा, "कुमार! एक क्षत्रिय का यह कर्तव्य नहीं है। तुम अपने व्यवहार से अपनी मां को असति सिद्ध कर रहे हो। यह सत्य नहीं है। तुम एक क्षत्रिय की ही सन्तान हो और क्षत्रिय भिक्षा नहीं मांगा करते।"

"मां!" राजकुमार कुछ कहना चाहता था, परन्तु पुनः कुछ कह नहीं सका। उसका गला आंसुओं से भर गया था।

बात महारानी ने ही की। उसने कहा, "मूर्ख मत बनो, राजकुमार! तुम्हारा व्यवहार मेरी कोख को लज्जित कर रहा है। चलो यहां से और चलकर महाराज से बात करो। यह स्मरण करो कि आज तक तुम्हारी किसी इच्छा का विरोध नहीं किया गया। अपनी स्थिति समझो और तदनुसार कर्तव्य का स्वयं निश्चय करो। परन्तु तुम्हारा व्यवहार तुम्हारे स्वयं के लिए शोभाजनक नहीं है।"

कुमार अनिश्चित-मन था। उसका विचार था कि उसकी मां को कुमकुम के व्यवहार में और उसके इस व्यवहार में कारण का ज्ञान नहीं है। अतः उसने कहा, "मां! अब मेरा यहां से जाना असम्भव है, और फिर मैं किसलिये जाऊं? तुम लोगों ने..." बात पूरी करने से पूर्व वह पुनः फूट पड़ा।

मां ने उसकी बांह को पकड़ा और अपने साथ चलने के लिए विहार के द्वार की ओर खेंचा।

समीप खड़े भिक्षुओं ने घोष किया, "संघं शरणं गच्छामि!"

कुमार के मन में इस समय बवंडर-सा उठ रहा था। इस बवंडर में उसे अनुभव हो रहा था कि कहीं दूर कोने में कुमकुम का शव पड़ा है और उसके समीप उसकी मां रामी देवी खड़ी विलाप कर रही है। इस विलाप में तथा मन के बवण्डर में उसे भिक्षुओं का घोष 'संघं शरणं गच्छामि' सुनाई नहीं पड़ा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महारानी दुर्गा सैनिक संरक्षण में वहां आई थी। सैनिक रथ के समीप खड़े प्रतीक्षा कर रहे थे कि महारानी क्या आज्ञा देती हैं। उन्हें देख भिक्षुवर्ग शान्त था तथा महारानी द्वारा कुमार को खेंचने का विरोध नहीं कर रहा था।

महारानी ने कुमार को रथ पर खेंचकर चढ़ाया और ज्योंही दोनों उसपर बैठे, सारथि ने रथ चला दिया। अश्वारोही सैनिक भी रथ के साथ-साथ लौट चले। राजपथ पर चल रहे नागरिक कुमार को पीत वस्त्रों में बैठे देख विस्मय कर रहे थे कि यह क्या नाटक हो रहा है!

इस समय तक मंत्रि-मण्डल की बैठक समाप्त हो चुकी थी। जब महारानी का रथ राजप्रासाद के द्वार से भीतर प्रविष्ट हुआ, सुभट्टों तथा सैनिकों एवं अन्य कर्मचारियों ने राजकुमार को पीत वस्त्रों में देखकर यह अनुमान लगाया कि पिछली रात की हलचल में बौद्ध लोग राजकुमार को पकड़कर विहार में ले गये थे और उसे विवश करके बौद्ध भिक्षु बना लिया था। अब महारानी सैनिकों की सहायता से छुड़ाकर लायी है।

प्रजा में से जिस-जिसने राजकुमार को पीत वस्त्रों में रथ में जाते देखा था, प्रायः सबके मन की प्रतिक्रिया यही थी कि बौद्धों ने मिथ्या प्रचार करके उनको भड़काकर राज्य के विरुद्ध किया है। इससे उनके मन में बौद्धो के विरुद्ध भावना बनने लग गई थी। वे लोग अपने परिचितों तथा मित्रों से यही चर्चा कर रहे थे। इस प्रकार धीरे-धीरे पूर्ण नगर में चर्चा होने लगी थी।

इनके साथ ही मंत्रि-मंडल की बैठक में हुए निर्णय के अनुसार यह घोषणा की जा रही थी कि राजकुमार का विवाह कुमकुम से नहीं हो रहा तथा महाराज ने आश्वासन दिया है कि मंत्रि-मंडल के निर्णय के अनुसार तथा प्रजा की रुचि के अनुसार ही राज्य-कार्य का संचालन किया जायेगा। इस प्रकार पूर्ण नगर के वातावरण महाराज के अनुकूल होता जा रहा था।

मंत्रि-मंडल की बैठक के उपरान्त महाराज तथा पंडित विश्वेश्वरनाथ महाराज के बैठकगृह में बैठे महारानी की प्रतीक्षा कर रहे थे। पंडित जी का अनुमान था कि राजकुमार ने यह समझा होगा कि कुमकुम विहार को चली गई है। उसे ढूंढने वह भी वहां चला गया होगा।

इस समय तक मन्दाकिनी रोहतास गांव से कुमकुम को लापता होने का समाचार लेकर आ चुकी थी तथा पंडित जी के निवास पर पहुंच चुकी थी।

चिन्तित मन से वे दोनों शान्त बैठे महारानी की प्रतीक्षा कर रहे थे। राज्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के कुछ अश्वारोही सैनिक महारानी की रक्षा के लिए साथ गये थे, अतः महाराज को आशा थी कि शीघ्र ही महारानी लौट आयेंगी अथवा उनकी सूचना आयेगी।

उन्हें अधिक देर तक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी। महारानी कुमार को भिक्षुओं के-वे वस्त्रों में लेकर सीधा महाराज की बैठक में आ पहुंचीं। राजकुमार अपना मुख नीचे किये हुए था।

उसे इस अवस्था में देखकर महाराज का मुख क्रोध से तमतमा उठा। वह राजकुमार को क्रोध में कुछ कहना चाहते थे, परन्तु महारानी के संकेत पर चुप कर रहे।

बात पंडित जी ने आरम्भ की। उन्होंने कहा, "राजकुमार! यह पीले कर्दम में लिपटकर पीले हो आये हो?"

राजकुमार ने मुख उठाकर धीरे से कहा, "गुरु जी! मुझे इस सब पर लज्जा लग रही है।"

"ठीक है, कुमार! परन्तु तुम वहां पहुंचे कैसे?"

"मुझे कल्याणी ने यह सूचना दी थी कि कुमकुम लापता है तथा उसके साथ नन्दिनी भी लापता है। इसपर मुझे सन्देह हुआ कि दोनों बौद्ध विहार में शरण लेने जा पहुंची हैं। मैं उनको ढूंढने वहां जा पहुंचा। कुमकुम के बारे में पूछने पर महाप्रभु ने अनभिज्ञता दर्शाई और मुझे वचन दिया कि कुमकुम को ढूंढकर लाने में वह मुझे पूर्ण सहयोग देंगे। सम्पूर्ण देशभर में बौद्ध विहार उसकी खोज करके ढूंढ लेंगे, अतः मुझे उनके धर्म का उपासक बन जाना चाहिये। मैंने स्वीकृति दी तो मुझे दीक्षा दे दी गई। दीक्षा लेने के उपरान्त मैं विचार ही कर रहा था कि कुछ दिन मैं भी विहार में ही रहूं कि उसी समय महारानी जी वहां पहुंच गई। मैं स्वयं उनके सम्मुख नहीं आना चाहता था, परन्तु जब महारानी ने बौद्ध भिक्षुओं को सैनिकों का भय दिखाया तो उन्होंने मुझे उनके सामने लाने का निर्णय कर लिया। वे मेरे पास आये और कहने लगे कि यदि मैं पीत वस्त्र धारण कर लूं तो महारानी समझेंगी कि मैं बौद्ध भिक्षु बन चुका हूं और तब मुझे विहार से बाहर ले-जा नहीं सकेंगी; प्रजा भी महारानी के इस कार्य की निन्दा करेगी।

"मुझे पीले वस्त्र लाकर दे दिये गये। मैं नहीं जानता कि क्यों मेरा मन भ्रमित हो गया था। मैंने भी वस्त्र पहन लिये और माता जी के सम्मुख आ उपस्थित हुआ। माता जी मुझे पकड़कर यहां ले आई हैं।"

महाराज का क्रोध शान्त हो चुका था। उन्होंने उसी समय ताली बजाई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
बैठक के बाहर द्वार के समीप खड़ा एक प्रतिहार भीतर आया तो महाराज ने कहा, "राजकुमार को इनके आगार में ले जाओ!" इसके उपरान्त महाराज ने राजकुमार से कहा, "जाओ, उचित वस्त्र परिवर्तन करके आओ। हमें तुमसे आवश्यक सम्मति करनी है। तुम्हारे इन वस्त्रों में तुमसे सम्मति नहीं ली जा सकती।"

अब पंडित जी ने कहा, "राजकुमार! कुमकुम कहां है, यह हम पता कर रहे हैं। अभी तक की सूचना के अनुसार वह रोहतास गांव को गई थी। हमने वहां कुछ गुप्तचर उसकी रक्षा के लिए भेजे हैं और शीघ्र ही उसके विषय में पूर्ण जानकारी प्राप्त हो जायेगी।"

"परन्तु गुरु जी!" राजकुमार ने पूछा, "क्या यह किंवदन्ती सत्य है कि वह मेरी बहन है?"

"हां कुमार! इसी कारण हम तुम्हें उसके साथ विवाह की अनुमति नहीं दे रहे थे। हमारा विचार था कि तुम्हारा कहीं अन्यत्र विवाह हो जाने पर तुम्हें इसकी जानकारी दी जायेगी। यह तो महामात्य के स्वार्थ ने समय से पूर्व सब रहस्य को प्रकट कर दिया प्रतीत होता है। उसे यह जानकारी कहां से प्राप्त हुई है, यह हम नहीं जान सके।"

"परन्तु कुमकुम का क्या होगा?"

"हम तो उसे भी उसके जन्म का रहस्य बता देना चाहते थे और फिर पीछे तुम लोगों पर उचिंत व्यवहार का निश्चय करने का दायित्व छोड़ देते।"

"और आप आशा करते थे कि तब भी हम परस्पर विवाह के लिए तैयार होते?"

"मुझे विश्वास था कि तुम यह विवाह स्वीकार नहीं करोगे। परन्तु समय से पूर्व रहस्योद्घाटन से कई अन्य बिगाड़ उत्पन्न होने की सम्भावना देख हमने यह रहस्य प्रकट नहीं किया था। हम चाहते थे कि तुम्हारा विवाह किसी सुन्दर क्षत्रिय कन्या से हो जाता और तब यह रहस्य प्रकट होता। महामात्य की कन्या यदि सुन्दर होती तो कदाचित् तुम्हें उससे विवाह स्वीकार कराने में कठिनाई न होती।"

"मैं स्वयं रोहतास गांव जाकर कुमकुम से बात करना चाहता हूं।"

"हमें आशा करनी चाहिये कि एक-दो दिन में वह स्वयं ही यहां आ जायेगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्ण योजना में बाधा यह उपस्थित हुई कि समाचार के अनुसार कुमकुम रोहतास से भी लापता हो चुकी थी। रामी तो उसी समय रोहतास गांव जा चुकी थी। पीछे रामी का समाचार मिला कि वह भी हरिद्वार जा रही है। तब पंडित जी ने मोहन को उसके पीछे जाने की प्रेरणा दे दी। महाराज ने राज्य का एक रथ मोहन को दे दिया जिससे वह शीघ्रातिशीघ्र हरिद्वार पहुंचकर सबका पता प्राप्त कर सके।

मोहन दो मास के उपरान्त उज्जयिनी लौटा। वह सीधा पंडित विश्वेश्वरनाथ के निवास-स्थान पर पहुंचा और उसने पंडित जी को अपनी पूर्ण खोज का वृत्तान्त सुना दिया। उसने कहा, "हरिद्वार पहुचकर मैं रामी तथा कुमकुम को ढूंढने लगा। दोनों में से कोई भी वहां नहीं मिली। हरिद्वार एक छोटा-सा ही स्थान है। कोई वहां छिपकर नहीं रह सकता।

"परन्तु एक दिन मुझे एक रथवान मिला जो हमारे इस देश की भाषा में बोलता था। वह एक भोजनगृह में किसी से अपनी भाषा में बात कर रहा था। मैंने उससे पूछ लिया—'कहां के रहनेवाले हो?' उसने जब बताया कि वह विदिशा का रहनेवाला है तो मैंने पूछ लिया, 'इस ओर कैसे आगमन हुआ है?' इसपर उसने बताया कि वह रोहतास से एक स्त्री को लेकर यहां आया था। वह स्त्री एक धर्मशाला में ठहर गई थी और फिर एक दिन वहां से भी लापता हो गई। वह रथवान हरिद्वार में टिका हुआ था, इस आशा से कि कदाचित् वह स्त्री अथवा कोई अन्य यात्री विदिशा की ओर जानेवाला मिल जाये तो वापसी का भाड़ा उससे प्राप्त हो जायगा।...

"उस रथवान से उस धर्मशाला का पता पूछकर जहां वह स्त्री जाकर ठहरी थी, मैं उस धर्मशाला में चला गया। धर्मशाला में रहने वाले एक पण्डे से पता चला कि उज्जयिनी की रामी नाम की स्त्री अपनी लड़की को ढूंढती हुई वहां आई थी। उसकी लड़की सप्तर्षि-आश्रम में रहती मिली तो वह भी उसके पास रहने चली गई है।...

"इसपर मैं सप्तर्षि आश्रम में पहुंचा। वहां मां तथा बेटी, दोनों संन्यासियों के भगवे पहरावे में मिल गईं। मेरे बहुत प्रयास करने पर भी वे लौटने को तैयार नहीं हुईं और आपके नाम एक पत्र देकर उन्होंने मुझे यहां वापस भेज दिया है।"

मोहन ने पत्र दिया तो पंडित जी ने पत्र लेकर पढ़ा। पत्र रामी का था। रामी ने लिखा था, "पूजा गुरूदेव! कुमकुम मेरे यहां पहुंचने से पूर्व ही नन्दिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के साथ यहां पहुच गई थी। यहां वह एक सन्त के आश्रम में पहुंचकर संन्यास की दीक्षा ले चुकी थी। मुझे उसे ढूंढने में कई दिन लग गये। लड़की से मेरी बातचीत हुई है। उसने स्पष्ट कह दिया है कि इस जन्म में वह अब विवाह नहीं करेगी। वह राजकुमार से विवाह कर नहीं सकती क्योंकि वह उसका भाई है, परन्तु उसके प्रति इतने वर्षों तक पति की भावना रखने के कारण वह अब किसी अन्य को पति स्वीकार नहीं कर सकती।...

"गुरु जी! मैंने उसे बहुत समझाने का यत्न किया है, परन्तु इसका और तो कोई परिणाम नहीं निकला, हां, यह हुआ है कि मैं भी संन्यास लेकर यहां रहने लगी हूं।...

"गुरुदेव! मेरा आपसे निवेदन है कि महारानी जी से मुझे बहुत धन मिला है। आपने भी वह सारा धन, जो मैंने गुरु-दक्षिणा के रूप में आपको दिया था, मुझे अपनी लड़की मानकर लौटा दिया था। मेरा वह सारा धन सेठ युगलकिशोर जी के पास पड़ा है। वह सारा धन आप तथा भाई विष्णु विचार कर किसी ध ार्म-कार्य में लगा दें। केवल इतना धन सेठ जी के पास जमा रहने दें जिसका पचीस स्वर्ण वार्षिक लाभ मुझे यहां प्राप्त होता रहे जिससे हम दोनों मां-बेटी बिना भिक्षा अपना निर्वाह कर सकें तथा ईश्वर-चिन्तन में लीन रह सकें।"

OOO

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री गुरुदत्त के सर्वाधिक चर्चित उपन्यास

स्वाधीनता के पथ पर	(स्वाधीनता आन्दोलन 1930 से 35 का काल)
पथिक	(स्वाधीनता आन्दोलन 1935 से 40 का काल)
स्वराज्यदान	(स्वाधीनता आन्दोलन 1940 से 46 का काल)
विश्वासघात	(स्वाधीनता आन्दोलन 1946 से 47 का काल)
देश की हत्या	(स्वाधीनता आन्दोलन 1947 से 48 का काल)
दासता के नए रुप	(1948 से 49 का काल)
सदावत्सले मातृभूमे	(1949-.... का काल

श्री गुरुदत्त की समाजिक रचनाएं

अनदेखे वन्धन
आवरण
अन्तरिक्ष में
आकाश पाताल
इवलीस
कला
घर की वात
आशा निराशा
अपने पराए
कामना
गुंठन
चंचरीक
ज़िन्दगी
जीवन ज्वार
न्यायाधिकरण
नए विचार नई वातें
नगर परिमोहन
नास्तिक
पंकज
परिमल
परिवर्तन
पड़ोसी
प्रवंचना
प्रतिशोध
प्रारब्ध और पुरुषार्थ
प्रेयसी
वन्धन शादी का
भगवान भरोसे
भाग्य का सम्बल
भूल
भूत और भविष्य
ममता
मायाजाल
मै न मानूँ
यह संसार
यात्रा का अंत
लालसा
विकार
विलोम गति
विकृत छाया
स्वार्थ
सव एक रंग
सभ्यता की ओर
स्नेह का मूल्य
संस्कार
सफलता के चरण
सर्वमंगला
साहित्यकार
सुमति

www.hindisahityasadan.com
2 वी डी चैम्वर्स,10/54 डी वी गुप्ता रोड,करोल वाग पुलीस स्टेशन के पास,नई दिल्ली-05
E-mail: indiabooks@rediffmail.com Tel : 23553624, 23551344, 09213527666

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री गुरुदत्त की इतिहास पर रचनाएं

भारतवर्ष का संक्षिप्त इतिहास
इतिहास में भारतीय परम्पराएं

श्री पी एन ओक की खोजपूर्ण रचनाएं

भारत का द्वितीय संग्राम "आज़ाद हिन्द फौज की कहानी"
भारतीय इतिहास की भयंकर भूलें (डीमाई बड़ा साईज़ नये टाईप में)
क्या भारत का इतिहास भारत के शत्रुओं द्वारा लिखा गया है ?
विश्व इतिहास के विलुप्त अध्याय
ताजमहल मन्दिर भवन है
ताजमहल तेजोमहालय शिव मन्दिर है
भारत में मुस्लिम सुल्तान भाग (2 भाग)
आगरा का लाल किला हिन्दू भवन है
फतहपुर सीकरी हिन्दु नगर है
लखनऊ के इमामबाड़े हिन्दू भवन हैं
दिल्ली का लाल किला लाल कोट है
वैदिक विश्व राष्ट्र का इतिहास (4 भाग)
कौन कहता है अकबर महान था ?
हास्यास्पद अंग्रेज़ी भाषा
क्रिश्चियनिटी कृष्ण नीति है
आरोग्य सौन्दर्य तथा दीर्घायु (व्यायाम व सूर्य नमस्कार)
ज्योतिष स्वयं शिक्षक - फल ज्योतिष
Lucknow's Imambaras are Hindu Building
Christianity is Chrisn-Nity
The Taj Mahal Is A Temple Palace
World Vedic Heritage 2 vols.
Some Missing Chapters Of World History
Some Blunders of Indian Historical Research
Who Says Akbar Was Great ?
Agra Red Fort is a Hindu Building

www.hindisahityasadan.com
2 बी डी चैम्बर्स, 10/54 डी बी गुप्ता रोड, करोल बाग पुलीस स्टेशन के पास, नई दिल्ली-05
E-mail : hindisahityasadan@gmail.com Tel : 23553624, 23551344, 09213527666

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री गुरुदत्त की ऐतिहासिक पुस्तकें

परित्राणाय साधूनाम (महाभारत पर आधारित सम्पूर्ण उपन्यास)
वैशाली विलय (वहती रेता)
अस्ताचल की ओर (3 भाग)
खण्डहर बोल रहे हैं (3 भाग)
अमृत मन्थन (राम कथा-1)
परम्परा (राम कथा-2)
अग्नि परीक्षा (राम कथा-3)
जमाना वदल गया (4 भाग)
दो लहरों की टक्कर (2 भाग)
विक्रमादित्य साहसांक
युद्ध और शान्ति
कुमकुम
पत्रलता
दिग्विजय
वाम मार्ग
लुढ़कते पत्थर
गंगा की धारा
सागर तरंग
मेघवाहन
भैरवी चक्र
महाकाल
अवतरण

श्री गुरुदत्त की राजनीतिक रचनाएं

वर्तमान दुर्व्यवस्था का समाधान..... हिन्दू राष्ट्र
राष्ट्र राज्य और संविधान
हिन्दुत्व की यात्रा
धर्म संस्कृति और राज्य
मनुष्य और समाज
भारत में राष्ट्र
भगनाश
प्रजातंत्र अथवा वर्णाश्रम व्यवस्था
भारत गांधी नेहरु की छाया में
धर्म तथा समाजवाद
बुद्धि बनाम बहुमत
स्व अस्तित्व की रक्षा (2 भाग)
मैं हिन्दू हूँ (राजनैतिक संस्मरण)
भाव और भावना (संस्मरण)
भाग्यचक्र (संस्मरण)

www.hindisahityasadan.com
E-mail: indiabooks@rediffmail.com Tel : 23553624, 23551344, 09213527666

Central Library
167894
Gurukula Kangri University, Haridwar

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इतिहास एवं ऐतिहासिक तथ्यों पर आधारित प्रकाशन

तेजपाल सिंह धामा की रचनाएं

गुरु गोबिन्द सिंह
महारानी दुर्गावती
रानी अवन्तीबाई एवं 1857 की क्रान्ति
शेरे पंजाब महाराजा रणजीत सिंह
हमारी विरासत — अर्थात दिव्य भारत का गौरवशाली इतिहास
मनुर्भव — अर्थात् विजयी विश्व हिन्दुत्व हमारा
अजेय अग्नि — अर्थात महारानी कर्मदेवी की शौर्यगाथा
अग्नि की लपटें — अर्थात महारानी पदमिनी की बलीदान गाथा
पृथ्वीराज चौहान एक पराजित विजेता
अखण्ड आर्यवर्त — अर्थात चन्द्रगुप्त चाणक्य कथा
पंक से पंकज — अर्थात महर्षि वाल्मिकी कथामृत
नल नील अभियान "श्री राम सेतु निर्माण"
गौ का गोरव — गौ का विश्वकोष

वीर सावरकर साहित्य

हिन्दुत्व के पंच प्राण
हिन्दुत्व
मोपला — मोपला विद्रोह कथा
गोमांतक — पुर्तगालीयों द्वारा गोमांतक (गोवा) भूमि पर जघन्य अत्याचार की कथा
प्रतिशोध — मरहटों द्वारा पानीपत पराजय के प्रतिशोध पर आधारित
अमर सेनानी सावरकर — शिवकुमार गोयल
महामना सावरकर — हरि बाबू देसाई
लोकोत्तर द्रष्टा सावरकर — हरि बाबू देसाई

Central Library
167694
Gurukula Kangri (Deemed University) Haridwar

बलराज मधोक की रचनाएं

पाकिस्तान का आदि और अंत (नए कवर में नया संस्करण)
कश्मीर जीत में हार (नए कवर में नया संस्करण)
कश्मीर जीत या हार (नए कवर में नया संस्करण)
जिन्दगी का सफर लद्दाख से दिल्ली
जिन्दगी का सफर स्वतन्त्र भारत की राजनीति का संक्रमण काल
जिन्दगी का सफर दीनदयाल उपाध्याय की हत्या से इन्दिरा की हत्या तक
पंजाब समस्या और समाधान
भारत और संसार

www.hindisahityasadan.com
2 बी डी चेम्बर्स, 10/54 डी बी गुप्ता रोड, करोल बाग पुलीस स्टेशन के पास, नई दिल्ली-05
E-mail : hindisahityasadan@gmail.com Tel : 23553624, 23551344, 09213527666

081
167694
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

GURUKUL KANGRI LIBRARY

	Signature	Date
Access No.		
Class No.		
Cat No.		
Tag etc.		
E.A.R.		
Recomm. by.		
Data Ent. by		
Checked		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

वर्ग संख्या R 089.9143 GUR-K आगत संख्या 167894

पुस्तक विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित 30वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापस आ जानी चाहिए। अन्यथा 50 पैसे प्रतिदिन के हिसाब से विलम्ब शुल्क लगेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुदत्त

शिक्षा : एम. एस.सी.

प्रथम उपन्यास ''स्वाधीनता के पथ पर'' से ही ख्याति की सीढ़ियों पर जो चढ़ने लगे कि फिर रुके नहीं।

विज्ञान की पृष्ठिभूमि पर वेद, उपनिषद् दर्शन इत्यादि शास्त्रों का अध्ययन आरम्भ किया तो उनको ज्ञान का अथाह सागर देख उसी में रम गये।

वेद, उपनिषद् तथा दर्शन शास्त्रों की विवेचना एवं अध्ययन अत्यन्त सरल भाषा में प्रस्तुत करना स्व. गुरुदत्त की ही विशेषता थी।

उपन्यासों में भी शास्त्रों का निचोड़ तो मिलता ही है, रोचकता के विषय में इतना कहना ही पर्याप्त है कि उनका कोई भी उपन्यास पढ़ना आरम्भ करने पर समाप्त किये बिना छोड़ा नहीं जा सकता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुदत्त

8-12-1894 से 8-4-1989

कुमकुम

इसी उपन्यास में से –

कुमार ! मैं समझता हूँ कि तुम्हारा सम्मतिदाता कोई बहुत ही कम शिक्षित तथा अल्पबुद्धि का स्वामी है। वह यह भी नहीं जानता कि राज्य क्या है और राजा का कर्तव्य क्या है।

राज्य एक ऐसा संस्थान है जो दुष्टों से भले लोगों की रक्षा करता है। जो राजा यह न कर सके वह राज्य का अधिकारी नहीं। उसे सत्ताहीन करना ही धर्म है।

ISBN No.: 81-88388-85-0

हिन्दी साहित्य सदन

2 बी.डी. चैम्बर्स, 10/54, देश बंधु गुप्ता रोड,
करोल बाग, दिल्ली-110 005
फोन : 23553624, 23551344 ई-मेल : indiabooks@rediffmail.com

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar